

DAMAGE BOOK

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_178914

UNIVERSAL
LIBRARY

॥ श्रीः ॥

जंगल में टार्जन

अत्यन्त रोचक उपन्यास

अनुवादक

श्री परमानन्द खत्री एम० ए०



प्रकाशक

लहरी बुक डिपो

काशी

१९५०

३-६-१६-३-४-०-०-११४-३-५१

प्रकाशक

दुर्गाप्रसाद खत्री

लहरी बुक डिपो, काशी

दूसरा संस्करण—५०० प्रति

(सर्वाधिकार प्रकाशक के आधीन है)

दुर्गाप्रसाद ख

भारत जीवन प्रेस, का

जंगल में टार्जन°

उपन्यास

—०—

टार्जन का प्रथम प्रेम

जंगली पेड़ों की घनी छाया में बैठी टीका देखने में अतीव सुन्दरी मालूम पड़ती थी। उसके अंग अंग से सुघराई टपकी पड़ती थी—कम से कम टार्जन की आँखों में तो वह ऐसी ही जँचती थी जो उसके ठीक ऊपर की ओर पेड़ों की एक डाल पर बैठे लालायित नेत्रों से उसकी ओर देख रहे थे।

टार्जन—जिनके सुन्दर तथा सुडौल शरीर के हर एक अंग से कुर्तीलापन दिखाई दे रहा था—पेड़ों की हरी हरी पत्तियों के बीच बैठे मानो वनदेवता ही मालूम पड़ रहे थे। उन्हें देख कर कोई भी इस बात को नहीं कह सकता था कि बचपन में उन्होंने किसी भयङ्कर भद्दी बेडौल अप-सुन्दरी का दूध पीया होगा और उसे पी कर ही वे इतने

जङ्गल में टाजेन

हृष्ट पुष्ट हुए होंगे । अब तक सिवाय एप-बन्दरों के न तो किसी मनुष्य से उनका साथ ही हुआ था न वे किसी युवती के हाव कटाक्षों के शिकार ही बने थे ।

अपने पूर्व पुरुषों के सम्बन्ध में भी उन्हें कुछ मालूम न भला क्या जानें कि वे जान क्लेटन लार्ड ग्रेस्टोक हैं । लार्ड सभा में उनके लिये भी एक कुर्सी निर्धारित है ।

सुन्दरता क्या वस्तु है इसकी भावना उनके हृदय मनुष्यों की अपेक्षा भिन्न थी । अपनी माता काला नाम से बढकर खूबसूरत वे किसी को भी नहीं समझते थे—अपनी को सुन्दरता की प्रतिमा दिखाई देती है ।

परन्तु काला की अर्ध-मृत्यु हो चुकी थी और उसकी भर ही इस समय उनके हृदय में बाकी बच गई थी । हाँ सुन्दरता अवश्य धीरे धीरे उनके हृदय पर अपना अधिपत्य थी । बचपन से ही टीका खेल में उनकी साथिन थी साथ खेल खा कर बड़े हुए थे और अब तक भी निःप्रकार के खेलों में सम्मिलित रहा करते थे । यही अन्य एप बन्दरियाओं की अपेक्षा टीका की ओर उनका झुकाव जा रहा था ।

परन्तु आज उनकी इस भावना ने एक नया ही रंग मालूम क्यों टीका के अंग अंग की सुघराई की ओर विशेष रूप से आकर्षित हो रहा था और उसके समान रंग निगाह में और कोई भी नहीं दिखाई दे रही थी !

टार्जन ने अपने सिर की लटों को एक ओर हटा कर अपना सिर खुजलाना शुरू किया । टीका की रूप-सुधापी एक प्रकार का नशा सा मालूम होने लग गया था । क्रमशः भदे शरीर का टीका की अद्भुत सुन्दरता से मिलान करने का

के सुन्दर कड़े कड़े बालों से सुशोभित शरीर को देख कर द्वेष होने ला । अपने चिकने और बालों से रहित शरीर को देख रह रह कर निम्न में घृणा ही पैदा होती थी ।

उन्होंने से उन्हें इस बात की पक्की आशा थी कि किसी न किसी पर भी इसी प्रकार के सुन्दर रोयें निकल आवेंगे पर ला को फलीभूत न होते देख अब उन्होंने उस आशा का त्याग कर दिया था ।

ला के तेज और नुकीले दाँतों की ओर देखा । अपने मुकावले में एक दम बेकार मालूम पड़ने लगे । सुडौल नाक की अपेक्षा सुगं के चोंच की तरह आगे नी नाक उन्हें बड़ी ही बदसूरत जँचने लगी । बड़ी कोशिश बनाते पर भी टीका के चेहरे ऐसी रंग बिरंगी लकीरें नहीं पड़ पाती थीं ।

बड़ा ही सुन्दर दृष्ट पुष्ट बन्दर उन्हें धीरे धीरे टीका की ओर देखा । करचक की जाति के अन्य एप बन्दर इस समय

जंगली के नीचे अथवा डालों पर बैठे फलों तथा छोटे छोटे को पकड़ पकड़ कर खा रहे थे किन्तु उन लोगों की ओर से कम टाग नहीं था । उनमें से कितने ही एप बन्दर कितनी ही बगल से होकर गुजरे और उनकी ओर टार्जन का ध्यान गया, परन्तु इस कारण है कि इस एप बन्दर को टीका देख उनके हृदय में एक एक क्रोध का आविर्भाव हो उठा । उन्होंने उस एप बन्दर को टीका के बगल में जा कर उनके अंग की प्रत्येक नसें मानों फड़कने लगने । बन्दर अन्य कोई नहीं टाग था जिसके साथ टार्जन के एक भारी हिस्सा बीत चुका था । दोनों एक साथ ही खेले हारों में शामिल हुए थे, नदी किनारे बैठ तथा कीड़ों को

पानी में फेंक उनकी लालच में ऊपर आती हुई मिशा मछलियों को अपने हाथों से पकड़ चुके थे।

दोनों ने एक साथ मिल कर कितनी ही बार अन्य एप बन्दरों पर भी विजय प्राप्त की थी और न्यूमा सिंह को छकाया था। आज तक ऐसा कोई भी दिन नहीं आया था जब इन दोनों में कभी झगड़े झमेले व नौबत आई हो, परन्तु आज ! आज उसी टाग को टीका के बगल में बैठते देख उनका समूचा शरीर इस प्रकार रोमाञ्चित क्यों हो रहा था ?

कुछ देर तक वे चुपचाप अपने स्थान पर बैठे टाग का क्रमशः टीव के समीप पहुँचना देखते रहे। उन्होंने उसके सुडौल पंजों को टीका के पीठ तथा कन्धे पर धीरे धीरे घूमते देखा और तब वे चुपचाप जमीन पर कूद उन दोनों की ओर बढ़े।

जैसे ही वे उन दोनों के समीप पहुँचे उनके ऊपरी होंठ विचित्र रूप से सिकुड़ गये और उनके बीच से भयंकर गुराहट निकली। टीका अपने स्थान से थोड़ा उठी और टार्जन की ओर ध्यान से देखने लगी, परन्तु वह इस समय टार्जन के हृदय में मचलते हुए न्यूमा सिंह को समझ रही थी अथवा नहीं इसे भला कैसे था ? तब ही जब टार्जन ने हो टार्जन की ओर एक बार ध्यान से देखा वह टीग की ओर घूमी और उसके चौड़े कानों को अपनी सुन्दर नोकरी मछलियों से खुजलाने लगी।

टार्जन ने यह बात देखी, और यह भी देखा कि अब टीका उनकी वह बालपन की संगिनी टीका नहीं रही। अब वह चपलता के साथ ही साथ अब उसमें यौवन-सुलभ गम्भीरता का सा प्रभाव था और वास्तव में अब वह एक अद्वितीय सुन्दर मछली थी। टार्जन ने दर्ज की कि उसे अपना बनाने के लिये वे टाग तो क्या किसी भी ताँबे वर से ताकतवर एप बन्दर से भी जीवन रहते तक युद्ध कर सकते हैं।

अपने कन्धे टाग की ओर घुमा तथा भवें टेढ़ी कर के टार्जन की धीरे टाग की ओर बढ़ने लगे। उनका चेहरा बगल की ओर घूमा हुआ

था किन्तु उनकी आँखें बराबर उसकी लाल लाल आँखों से मिली हुई थीं तथा उनके गले से निकलती हुई गुराहट क्रमशः बढ़ती जाती थी।

टाग भी उठ खड़ा हुआ। उसके समूचे शरीर के रोंगटे खड़े हो गये और गले से गुराहट की आवाज निकलने लगी।

एप बन्दरों की बोली में टार्जन बोले, “टीका टार्जन की है !”

टाग ने उत्तर दिया, “नहीं, टीका टाग की है !”

थाका, नुमगो, गुन्डो तथा अन्य एप बन्दरों ने भी इनकी गुराहट सुनी और अपनी अपनी निगाहें उठा कर एक बार इन दोनों की ओर देखा। उनमें से कितने ही तो बैठे ऊँघ रहे थे फिर भी वे लोग इतना प्रवश्य समझ गये कि शीघ्र ही इन दोनों में युद्ध होने वाला है। इस युद्ध को उन्होंने उस सूनसान समय में होने वाली एक अद्भुत चहल पहल समझा।

टार्जन के कन्धे पर उनका घास का बना रस्ता लपेटा हुआ रक्खा था और उनके हाथ में अपने उसी पिता का शिकारी छुरा था जिसके सम्बन्ध में उन्हें कुछ भी मालूम न था। टाग के छोटे से दिमाग में लोहे के उस चमकते टुकड़े के प्रति बढ़ी ही श्रद्धा थी। इसी तेज लोहे से टार्जन टबलट की हत्या कर चुके थे और बोल्लानी गोरिल्ला की जान ले चुके थे। टाग को ये सभी बातें मालूम थीं, अस्तु वह बढ़ी ही सावधानी से आगे बढ़ रहा था और टार्जन के चारों ओर चक्कर काट कर वह अन्दर सने का मौका देख रहा था। पर टार्जन भी पूरे उस्ताद थे और हर ङंग से अपने को बचाये आगे बढ़ रहे थे।

टीका के अब तक के छोटे जीवन में ऐसी कोई भी घटना नहीं घटी कि दो एप बन्दर उसके लिये आपस में युद्ध करने के लिये तैयार हों। सने अन्य एप बन्दरियाओं के लिये कितने ही एप बन्दरों को आपस में झूझराबी करते अवश्य देखा था, किन्तु स्वयं अपने लिये उन्हें लड़ते खाने का उसके लिये यह पहला ही मौका था। बहुत दिनों से वह

किसी ऐसे मौके की प्रतीक्षा में भी थी और यह देख उसे बड़ी भारी प्रसन्नता हुई कि आखिर वह दिन उसे देखने को मिल ही गया ।

पिछले पैरों के बल बैठी हुई वह दोनों ही को तरह तरह की ऊँची नीची बातें कह कह कर चिढ़ाने लगी । तमाशा देखने वाले सभी एप बन्द उसकी बातें सुन खिलखिला उठे । टाग को बड़ा ही क्रोध चढ़ आया और वह तेजी के साथ टार्जन की ओर झपटा, परन्तु फुर्तीले टार्जन उछल कर एक ओर हट गये और उसी समय पीछे घूम कर टाग के समीप जा पहुँचे । वे इस समय अपना शिकारी छुरा अपने सिर के ऊपर की ओर उठाये हुए थे । टाग के समीप पहुँचते ही उन्होंने उसका एक भरपूर वार टाग की गर्दन पर किया । यद्यपि उसका वार बचाने के लिये टाग बड़ी ही फुर्ती के साथ पीछे घूमा, फिर भी छूरे एक हलका घाव उसकी गर्दन पर लग ही गया ।

लाल लाल खून पर निगाह पड़ते ही टीका के मुँह से प्रसन्नता की एक चीख निकली । प्रसन्नता तथा गर्व से अपना सिर ऊँचा कर के उसने एक बार अपने चारों ओर देखा ।

यदि टीका इस समय अपने इस वृथा अभिमान में भरी हुई न होती तो कदाचित् उसे अपने ठीक ऊपर की ओर होने वाली पत्तियों की हलकी खड़खड़ाहट अवश्य सुनाई दे गई होती । यह खड़खड़ाहट पत्तियों में हवा लगने के कारण नहीं हुई थी । यदि उसने एक बार भी अपनी निगाह ऊपर उठाई होती तो उसे एक लम्बा तथा फुर्तीला शरीर अपने ठीक ऊपर की ओर बैठा अवश्य दिखाई दे जाता, जिसकी दो गोल तथा चमकीली आँखें उसकी ओर ध्यान से देख रही थीं ।

अपने गले में लगे घाव की तकलीफ से टाग एक बार जोर से गुर्रा कर पीछे की ओर हट गया । टार्जन उसे भली बुरी बातें सुनाते हुए पुनः उसकी ओर बढ़े । उनके हाथ में इस समय भी वही शिकारी छुरा था ।

इन लोगों का तमाशा देखने के लिये टीका भी अपने स्थान से हट कर इन लोगों की ओर बढ़ी ।

टीका के ऊपर वाली डाल बोझ से एक बार नीचे की ओर झुकी । टाग इस समय अपने स्थान पर ही खड़ा टार्जन के छुरे से बचने का उपाय सोच रहा था । उसके मुँह से निकलता हुआ फेन नीचे जमीन पर गिर रहा था । वह सोच रहा था कि यदि एक बार भी उसका पंजा टार्जन के मुलायम मांस तक पहुँच सका तो फिर उसकी विजय में कुछ भी संशय नहीं रह जायगा ।

इधर टार्जन भी सत्र तरह से सावधान थे । वे जानते थे कि टाग से बराबर का युद्ध कर के वे कदापि विजय नहीं प्राप्त कर सकते । उनके सफेद दाँत टाग के नुकीले तथा पैने दातों का किसी प्रकार भी मुकाबला नहीं कर सकते थे । अपने शत्रु के चारों ओर उछल कूद कर तथा उस पर छुरे का वार करके ही वे उसे अधिक हानि पहुँचा सकते थे और यही वे कर भी रहे थे ।

छुरे की बार बार चोट खा कर टाग भयंकर रूप से गुर्गा रहा था और टार्जन प्रसन्नता से उसके चारों ओर नाचते हुए बराबर उसके ऊपर गालियों की वर्षा कर रहे थे ।

बीच बीच में रह रह कर दोनों सुस्ताने भी लग जाते थे । एक बार वे दोनों इसी प्रकार सुस्ता रहे थे कि सहसा टाग की निगाह टार्जन पर से हट कर सामने की ओर जा पड़ी । एकाएक उसके चेहरे का भाव बदल गया । क्रोध उसके चेहरे से एक दम हवा हो गया और उसका स्थान भय ने ग्रहण कर लिया ।

एक जोर की चीख मार कर, जिसका मतलब प्रत्येक एप बन्दर समझ गया, टाग पीछे की ओर घूमा और तेजी के साथ एक ओर को भागा । किसी को उससे सवाल करने की भी अब कोई आवश्यकता

नहीं रह गई थी। उसकी एक चीख नै ही एप बन्दरों के प्रधान शत्रु के उस स्थान पर होने का सूचना उन सभी को दे दी थी।

टार्जन भी अपनी जान बचाने की इच्छा से एक ओर भागे और ठीक इसी समय चीते की भयानक गुर्राहट किसी एप बन्दरिया की भय-भीत चीख से मिली हुई उनके कानों में पहुँची। टाग ने भी वह आवाज सुनी किन्तु न तो वह ठहरा ही न उसने घूम कर पीछे की ओर ही देखा।

परन्तु टार्जन के सम्बन्ध में यह बात न थी। उन्होंने यह जानने की इच्छा से पीछे की ओर घूम कर देखा कि कहीं एप बन्दरों में से किसी पर तो चीता नहीं हमला कर रहा है किन्तु जिस दृश्य पर उनकी निगाह पड़ी उसे देख वे व्याकुल हो उठे।

वह चिल्लाहट टीका की थी जो सामने की ओर वाली पेड़ों की कतार की ओर दौड़ी जा रही थी। उसके ठीक पीछे की ओर एक कद्दावर चीता उछलता हुआ उसकी ओर बढ़ रहा था। चीता इस समय जल्दबाजी में न था। वह अपने शिकार की ओर से बिल्कुल निश्चिन्त था और उसे विश्वास था कि पेड़ पर चढ़ने के पहले ही वह उसे अपने कब्जे में कर लेगा।

टार्जन समझ गये कि अब टीका की जान नहीं बच सकती। उन्होंने चिल्ला कर टाग तथा अन्य एप बन्दरों को टीका की सहायता करने के लिये कहा और स्वयं भी अपना घास वाला रस्ता हाथ में ले कर चीते के पीछे दौड़े। वे अच्छी तरह जानते थे कि यदि एप बन्दर एकत्रित हो जाँय तो चीता तो क्या न्यूमा सिंह भी उनका मुकाबला करने की हिम्मत नहीं कर सकता।

टाग तथा अन्य एप बन्दरों ने उनकी आवाज सुनी परन्तु कोई भी टीका की सहायता के लिये नहीं आया। चीते और टीका के बीच का फासला अब तेजी से कम होता जा रहा था।

चीते के पीछे दौड़ते हुए टार्जन ने चीते का ध्यान बँटाने के लिये

उसे कितनी ही बार ललकारा और कड़ी कड़ी बातें सुनाईं परन्तु चीते का ध्यान इस समय केवल अपने शिकार की ओर हो था। टार्जन भी तेजी के साथ उसके पीछे दौड़े जा रहे थे और समीप भी होते जा रहे थे फिर भी वे भली भाँति जानते थे कि उनके समीप पहुँचने के बहुत पहले ही चीता अपने शिकार को पकड़ लेगा। टार्जन के दाहिने हाथ में इस समय उनका घास वाला रस्सा था जिसे वे चीते के ओर फेंकने के इरादे में थे। इस समय का चूकना उन्हें पसन्द न था किन्तु मुश्किल यही थी कि उन दोनों का फासला अभी तक पूरे रस्से की लम्बाई से ज्यादा था फिर भी सिवाय इसके उन्हें और कोई भी उपाय दिखाई नहीं दे रहा था। जिस तरह भी हो उन्हें यह काम करना ही था।

जैसे ही टीका पेड़ के पास पहुँच कर ऊपर की ओर उछली और चीते ने भी उसके साथ ही साथ उछल कर उस पर झपट्टा मारने का इरादा किया—टार्जन के फेंके हुए रस्से का फन्दा उसके गले में जा पड़ा और उनके हाथ के एक ही झटके में वह मजबूती के साथ कस कर उसकी गर्दन में बैठ गया।

उछलते हुए चीते की गति रस्से के खिंचाव के कारण एकाएक रुक गई और वह एक झटके के साथ पीछे को लुढ़क गया परन्तु उसे उठते देर न लगी। क्रोध से उसकी आँखें चमक उठीं, दुम सीधी हो गई, और गले से एक भयानक गुराँहट निकली।

क्रोध और निराशा से भरे हुए चीते ने घूम कर टार्जन की ओर देखा। उसका और टार्जन का फासला इस समय पचीस हाथ से अधिक न था। वह तेजी के साथ उनकी ओर झपटा।

टीका इस समय निरापद थी और टार्जन ने भी पेड़ पर एक निगाह डाल यह बात अच्छी तरह देख ली परन्तु चीता इस समय तेजी के साथ उनकी ओर झपटा आ रहा था। उससे युद्ध करके विजय पाने की आशा टार्जन को बिल्कुल ही न थी और पेड़ों का फासला भी उनसे

इस समय बहुत अधिक था, परन्तु सिवाय खड़े होकर उस क्रोधित जीव का मुकाबला करने के वे और कर ही क्या सकते थे। अपने दाहिने हाथ में उन्होंने अपना शिकारी छुरा ले लिया जो चीते के भयानक पैने दाँतों के सामने यद्यपि केवल खिलौना मात्र दिखाई देता था फिर भी उसे हाथ में लिये टार्जन हिम्मत के साथ उसका मुकाबला करने के लिये डट गये।

पेड़ों के बीच निरापद स्थानों में बैठे एप बन्दर यह सब तमाशा देख रहे थे। बीच बीच में वे रह रह कर चीते को गालियाँ तथा टार्जन को सलाहें देते जाते थे परन्तु उनकी सहायता के लिये पेड़ पर से उतरने की हिम्मत किसी को भी न होती थी। टीका ने भी भय के साथ टार्जन की इस आपत्ति को देखा और उनकी सहायता के लिए एप बन्दरों को ललकारा परन्तु उसकी इस ललकार की ओर भी किसी ने ध्यान न दिया।

अब चीता टार्जन के एक दम समीप पहुँच गया था परन्तु जैसे ही वह उस स्थान पर पहुँचा जहाँ टार्जन खड़े थे, उसने उन्हें अपने स्थान से एक दम लापता पाया। टार्जन चीते से भी अधिक फुर्तीले थे। चीते के समीप पहुँचते ही वे उछल कर एक ओर हट गये और चीता झटका खा कर मुँह के बल जमीन पर आ रहा। टार्जन फुर्ती के साथ पेड़ों की ओर दौड़े।

चीता फौरन ही उठ खड़ा हुआ और तेजी के साथ उनकी ओर झपटा परन्तु इस बार उसे पास की एक झाड़ी का चकर काटना पड़ा। नतीजा यह हुआ कि उसके गले में फँसा हुआ रस्सा उस झाड़ी के चारों ओर का चकर खा कर उसमें अटक गया और चीता रस्सा फँस जाने के कारण रुक गया। दूसरे ही क्षण टार्जन पेड़ों के पास पहुँच कर उस पर चढ़ गये।

पेड़ के ऊपर एक बार निश्चिन्ती से बैठने बाद अब उन्हें किसी बात की भी चिन्ता न रही और उन्होंने बैठे ही बैठे चीते के ऊपर कच्चे

फल तथा लकड़ियाँ तोड़ तोड़ कर फेंकना आरम्भ कर दिया। अन्य एप बन्दरों ने भी इस तमाशे को देखा और टार्जन की देखादेखी चीते को छकाना शुरू किया।

थोड़ी ही देर की मेहनत में चीते ने रस्सा तोड़ डाला। एक बार उसने अपने तंग करने वालों की ओर क्रोध से देखा और तब जंगल के बीच घुस कर लापता हो गया।

आधे ही घंटे बाद एप बन्दर पुनः जमीन पर उतर आये और इस प्रकार उछलने कूदने लगे मानों वहाँ कोई नवीन घटना घटी ही न हो। टार्जन ने अपने पुराने रस्से का बहुत कुछ हिस्सा पा लिया था और अब वे एक स्थान पर बैठ कर उसे पुनः पूरा करने में लग गये थे। टीका भी अब उनके बगल में जा बैठी मानों उसने अपने जोड़े का चुनाव कर लिया था।

टाग ने एक हसरत भरी दृष्टि उन दोनों पर डाली। एक बार उसने उन दोनों के पास आने की हिम्मत भी की परन्तु उन दोनों ने अपने दाँत निकाल तथा क्रोध से गुर्रा कर इस प्रकार उसकी ओर देखा कि वह सहम कर पीछे हट गया। अपनी जाति की रिवाज के अनुसार मादा द्वारा किये हुए चुनाव को वह युक्तिसंगत समझता था और एक बार टीका के द्वारा उसकी जोड़ी का चुनाव हो जाने बाद वृथा विवाद बढ़ाना उसने एक दम बेकार समझा।

अपने रस्से की मरम्मत हो जाने बाद दोपहर के समय टार्जन शिकार करने के इरादे में वहाँ से खाना हुए। अन्य एप बन्दरों की भाँति फल तथा कीड़े मकोड़े खाना उन्हें पसन्द न था। सदा बड़े बड़े जीवों का शिकार करने ही में उन्हें आनन्द भी आता था और उनका पेट भी भरता था।

टाग ने उन्हें जाते देखा और वह बहुत ही धीरे धीरे पुनः टीका की ओर बढ़ने लगा। अन्त में वह उसके बिल्कुल ही समीप पहुँच

गया। अब तक वह बराबर जमीन की ओर ही देख रहा था परन्तु इस समय जैसे ही उसने अपनी निगाह उठा कर टीका की ओर देखा, उसके चेहरे पर उसे क्रोध के भाव जरा भी दिखाई न दिये बल्कि उसके बदले में इस समय वह लालायित नेत्रों से उसकी ओर देख रही थी।

टाग अपनी छाती फुला कर खड़ा हो गया और एक हलकी घराहट उसके गले से निकलने लगी। अपने नुकीले दाँत उसने बाहर निकाले और टीका की ओर देखा। टीका भी इस समय उसके सुन्दर अंगों को देख कर बेतरह मुग्ध हो रही थी।

अब टाग टीका के ओर भी नदजीक चला गया और उसके बगल में जा बैठा। थोड़ी देर बाद जब टार्जन शिकार से लौटे तो उन्होंने दोनों को एक साथ बैठे देखा। टीका इस समय बड़े ही प्रेम से टाग की पीठ खुजला रही थी।

टार्जन का दिल टूट गया। पेड़ पर कूद कर आते समय उन्हें उन दोनों में से किसी ने भी नहीं देखा था। कुछ देर तक वे ध्यान से उन दोनों की ओर देखते रहे और तब पीछे की ओर घूम कर एक ओर को खाना हो गये।

अब टार्जन की तबीयत एक दम से दुःखी हो गई थी और वे टीका से जहाँ तक भी हो सके दूर हो जानें में ही अपनी भलाई समझ रहे थे। प्रेम ने यह पहली ही बार उनके हृदय पर अधिकार जमाया था और यही कारण था कि प्रेमिका के इस तिरस्कार से उनके हृदय पर भारी आघात पहुँचा। टीका पर उन्हें क्रोध भी कम नहीं आ रहा था परन्तु जब उनका ध्यान उसकी अपूर्व सुन्दरता की ओर जाता था तो उनका यह क्रोध एक दम से हवा हो जाता था और उनका हृदय उससे मिलने के लिये व्याकुल हो उठता था।

प्रेम का यह आकर्षण उनके लिये नवीन था। उनकी माता काला भी उन्हें हृदय से प्यार करती थी और उसके बदले में वे भी उसे कम

प्यार नहीं करते थे परन्तु इस प्रेम का अनुभव उन्हें उस समय हुआ जब काला इस दुनिया से उठ गई किन्तु अब वे कर ही क्या सकते थे ।

तब से ले कर इतने दिनों बाद अब टीका पर ही उन्हें प्रेम पैदा हुआ । वे एक ऐसे जीव की खोज में थे जिसकी वे रक्षा करें, जिसके लिये शिकार पकड़ कर लावें, और जिसे वे प्रेम की दृष्टि से देखें, परन्तु इस समय उनका वह सुखस्वप्न भी छिन्न भिन्न हो चुका था । उनके हृदय में इस समय एक विचित्र प्रकार की घबड़ाहट मालूम हो रही थी जिसे वे किसी प्रकार भी समझ नहीं रहे थे । पर इस बात का उन्हें अवश्य अनुभव हो रहा था कि उनका कुछ सम्यन्ध टीका से जरूर है । जितना ही वे टीका का ख्याल करते थे, उसके टाग के बगल में बैठने का ध्यान आते ही उतनी ही अधिक उनकी यह पीड़ा बढ़ती थी ।

टार्जन अपना सिर हिला कर गुर्रा उठे और तेजी के साथ आगे की ओर बढ़े । दो दिन बाद वे उस स्थान से बहुत दूर शिकार खेलते दिखाई दिये । उस स्थान पर अब कभी भी वापस न आने का उन्होंने निश्चय कर लिया था । टीका तथा टाग का एक साथ बैठना वे सहन नहीं कर सकते थे । पेड़ की डालों पर आगे की ओर बढ़ते समय उन्होंने न्यूमा सिंह को एक पेड़ के नीचे बैठे देखा । सेवर सिंहनी बड़े प्रेम से उसके बगल में लेटी उसका मुँह चाट रही थी । उनके मुँह से एक गहरी साँस निकली ।

थोड़ा और आगे बढ़ने पर उन्हें मोंगा के कितने ही साथी एक स्थान पर खड़े दिखाई दिये । उनमें से एक के गले में वे अपने हाथ के रस्से का फन्दा डाला ही चाहते थे कि एकाएक रुक गये और ध्यान से देखने लगे कि वे लोग क्या कर रहे हैं । उन्होंने देखा कि जङ्गली रास्ते के ठीक बीचोबीच वे एक पींजड़ा तैयार कर रहे हैं । उसे तैयार कर लेने बाद उन्होंने उसे हरी हरी पत्तियों से इस प्रकार ढक दिया कि अब उसे देख कोई भी नहीं कह सकता था कि वहाँ का स्थान जरा भी छेड़ा गया है ।

टार्जन सोचने लगे कि आखिर वे लोग किस इरादे से यह काम कर रहे हैं और इस काम को पूरा करने बाद अब अपने गाँव की ओर लौटे क्यों जा रहे हैं !

बहुत दिनों बाद टार्जन ने इन जङ्गलियों की सूरत देखी थी। उनकी माँ काला इन्हीं जङ्गलियों द्वारा मारी गई थी और टार्जन इन लोगों से हार्दिक घृणा करते थे फिर भी इनकी प्रत्येक कार्रवाइयों को देखते रहने का उन्हें चाव पैदा हो गया था क्योंकि उससे उन्हें कितनी ही नई बातों की शिक्षा मिल जाया करती थी।

उनके पीछे पीछे टार्जन भी उनके गाँव में जा घुसे और एक घने पेड़ पर बैठ कर ध्यान से उनकी कार्रवाइयाँ देखने लगे। कितने ही आदमी उन्हें इधर उधर बैठे आपस में बातचीत करते दिखाई दिये। गाँव के एक कोने की ओर जब उन्होंने अपनी निगाह फेंकी तो एक युवक युवती के जोड़े को आपस में बातें करते तथा ठहाका मार कर हँसते देखा।

टार्जन पुनः सोच में पड़ गये। उस रात गाँव की सड़क के ऊपर के ही एक पेड़ पर जब वे रात काटने के लिये सोये तो स्वप्न में भी उन्हें टीका ही टीका की सूरत दिखाई देती रही।

*

*

*

*

टाग अपनी जाति के एप बन्दरों से दूर निकल आया था और अब हाथियों के जाने की एक राह से आगे बढ़ा जा रहा था। सहसा उसे आगे का रास्ता बन्द दिखाई दिया। टाग इस समय पूरी जवानी पर था और उसका स्वभाव बड़ा ही क्रोधी हो गया था। जब उसके कामों में जरा भी बाधा पड़ती थी तो उसके क्रोध का पारा बहुत ही ऊँचे चढ़ जाता था और इस बाधा को दूर करने में वह अपनी पूरी ताकत खर्च कर देता था अस्तु इस समय भी जब उसने अपने आगे का रास्ता बन्द पाया तो वह सामने की ओर लगे पत्तियों के पर्दे पर अपना क्रोध

निकालने लगा । और नतीजा यही निकला कि उसने अपने को लोहे के एक पींजड़े के अन्दर बन्द पाया ।

उसकी उछल कूद सहसा और भी बढ़ गई । फिर भी जिस पींजड़े में इस समय वह फँसा हुआ था उससे बाहर निकलने की उसे कोई भी युक्ति दिखाई नहीं दी । अपने दाँतों तथा पंजों से उसने कितना ही नोचा खसोटा परन्तु उसकी सब मेहनत बेकार गई बल्कि उसके पीछे की ओर का भी एक दर्वाजा गिर पड़ा और वह एक दम से पींजड़े के अन्दर बन्द हो गया, लाचार अधिक उछल कूद करने के कारण थक कर हाँफता हुआ वह एक कोने में बैठ गया ।

सुबह होते ही मोंगा के सैनिकों का एक काफला जङ्गल में उस ओर खाना हुआ जहाँ वे लोग उस पींजड़े को लगा आये थे । टार्जन भी उनके साथ ही साथ आगे बढ़ने लगे ।

जैसे ही मोंगा के सैनिक पींजड़े के पास पहुँचे टाग ने पुनः उछल कूद मचाना शुरू किया । पींजड़े के छड़ पकड़ कर उसने उन्हें जोर जोर से हिलाना शुरू किया और बीच बीच में जोर जोर से गुर्रा कर उन्हें भय भी दिखाना चाहा । उन लोगों ने जब पींजरे में फँसा एक लम्बा चौड़ा एप बन्दर देखा तो वे बड़े ही प्रसन्न हुए । यद्यपि यह पींजरा उन्होंने उसके लिये खड़ा नहीं किया था फिर भी उसमें टाग को बन्द पा उन्हें काफी सन्तोष हुआ ।

पींजरे को खींच कर वे लोग गाँव की ओर ले चले । टार्जन एक ही निगाह में पहिचान गये कि उसके भीतर टाग बन्द है और यह समझने में भी उन्हें देर न लगी कि वे लोग गाँव में पहुँचते ही उसे मार डालेंगे । टार्जन ने विचित्र प्रकार का मुँह बनाया । अब उन्हें विश्वास हो गया कि उनके तथा टीका के प्रेम में कोई भी बाधा न डालेगा ।

जब वे जंगली उसकी निगाहों के ओझल हो गये तो टार्जन अपने स्थान से उठे और टीका की खोज में खाना हुआ ।

रास्ते में उन्होंने एक स्थान पर चीते को अपने बाल बच्चों के साथ बैठे पाया। चीता आनन्द से जमीन पर लेटा हुआ था और उसकी मादा प्रेम से उसका शरीर चाट रही थी। उसकी ओर जरा भी ध्यान न दे वे बराबर तेजी के साथ आगे ही बढ़ते चले गये और बहुत जल्द वहाँ पहुँच गये जहाँ एप बन्दर जमीन तथा पेड़ों पर उछल कूद मचा रहे थे। टीका अकेली जमीन पर से छोटे छोटे कीड़े पकड़ कर खा रही थी। टार्जन शीघ्र ही पेड़ से कूद कर उसकी बगल में जा पहुँचे।

उन्हें एकाएक अपने बीच में कूदते देख पहले तो एप बन्दरों ने खूब ही चिल्लपों मचाई परन्तु जैसे ही उन्होंने टार्जन को पहिचाना सब के सब पुनः अपने कामों में लग गये। टीका के बगल में पहुँच कर टार्जन बोले, “टीका मैं हूँ टार्जन! तुम टार्जन की हो इसीलिये मैं तुम्हारे पास आया हूँ।”

टीका ने टार्जन के शरीर को सूँघा और जब उसे विश्वास हो गया कि वे टार्जन ही हैं तो बोली, “टाग कहाँ है?”

टार्जन ने उत्तर दिया, “उसे गोमन्गानियों ने पकड़ लिया है। वे लोग उसे मार डालेंगे।”

क्षण भर के लिये टीका के चेहरे पर दुःख तथा क्षोभ के लक्षण दिखाई दिये पर फौरन ही वह टार्जन के शरीर से सट गई और अपना शरीर उनके शरीर के साथ रगड़ने लगी। टार्जन, लार्ड ग्रे स्टोक ने—अपनी बाँह उसके कमर में डाल दो।

परन्तु फौरन ही उन्हें अपने इस काम से क्षोभ उत्पन्न हुआ। उन्होंने अपने तथा टीका के शरीर की भिन्नता को देखा। दोनों में बड़ा भारी भेद था। सिंह चीते बन्दर सभी की मादाओं को अपने स्वामियों के साथ किलोल करते वे देख चुके थे परन्तु उनमें तो ऐसा भेद उन्होंने नहीं पाया था। इसमें सन्देह नहीं कि नर तथा मादा में थोड़ा बहुत अंतर अवश्य है। तबो परन्तु उतना नहीं जितना कि उन्होंने अपने तथा टीका में पाया।

टार्जन का माथा चक्कर खाने लगा। वे सोच रहे थे कि इसमें अवश्य कुछ न कुछ भूल है। टीका की कमर पर से उनका हाथ नीचे की ओर लटक गया। वे उठ खड़े हुए और जोर जोर से अपनी छाती पर दुह-त्थड़ मारने लगे। आसमान की ओर मुँह उठा कर उन्होंने अपना मुँह खोला और तब एप बन्दरों के भयानक नाद ने उनके मुँह से निकल कर समूचा जंगल प्रतिध्वनित कर दिया। एप बन्दरों ने आश्चर्य के साथ उनकी ओर घूम कर उनकी इस आवाज का कारण जानना चाहा। न तो उन्होंने किसी को मारा ही था न उनका कोई शत्रु ही आस पास कहीं दिखाई देता था। लाचार वे सब पुनः अपने अपने कामों में लग गये।

टार्जन बिना टीका से कुछ कहे ही उछल कर पेड़ पर जा चढ़े और देखते देखते आँखों से ओभल हो गये। एप बन्दरों ने भी उनकी ओर से अपना ध्यान हटा लिया।

मोंगा के सैनिक टाग के पींजरे को घसीटते हुए पसीने से लथपथ अपने गाँव के करीब पहुँच पेड़ों की आड़ों में बैठे सुस्ता रहे थे। थोड़ी ही दूर आगे बढ़ने पर जंगल खतम हो कर उनका गाँव दिखाई देने लग जाता परन्तु गाँव तक पहुँच जाने पर कदाचित्त वह घटना न घट पाती जो उस समय यकायक घट गई।

टार्जन चुपचाप उनके ऊपर वाले पेड़ की डाल पर छिप कर बैठे हुए थे। उनकी तेज आँखों ने एक बार पींजरे की ओर देखा और तब उन सैनिकों की गिनती करने लगीं। उनका तेज दिमाग इस समय यही सोच रहा था कि जो बाँधनू इस समय उन्होंने बाँधा था उसमें वे कहाँ तक कृतकार्य होंगे।

टार्जन ने उन थके हुए सैनिकों को पेड़ों की छाया में आराम करते तथा अपनी थकावट दूर करते देखा। उनमें से कितने ही तो सो गये थे और कितने बैठे ऊँघ रहे थे। वे चुपचाप बैठे मौके की राह देखने लगे। अन्त

में दो आदमियों को छोड़ बाकी के सभी सो गये। उनमें से केवल एक सैनिक बैठा ऊँघ रहा था।

टार्जन अब तैयार हो गये। इसी समय वह सैनिक जो जाग रहा था अपने स्थान से उठ कर पींजरे के पीछे जा पहुँचा। टार्जन इस समय ठीक उसके ऊपर थे। टाग उस सैनिक को देख धीरे धीरे गुर्रा रहा था। टार्जन को भय हुआ कि कहीं टाग के गुर्राने की आवाज सुन बाकी के सैनिक जाग न उठें।

बहुत ही धीमी आवाज में जिसे वह हबशी बिल्कुल ही नहीं समझ सकता था वे टाग से बोले, “देखो, मैं हूँ टार्जन ! तुम फौरन अपना गुर्राना बन्द करो।”

हबशी जिस समय पींजरे के दर्वाजे की जाँच कर रहा था ठीक उसी समय टार्जन उसके ऊपर कूद पड़े। लोहे के समान मजबूत उँगलियों ने उसका गला दबा दिया जिससे उसके मुँह की चीख मुँह के भीतर ही रह गई। मजबूत दाँत उसके कंधे में जा घुसे और मजबूत पैरो ने उसके शरीर को लपेट लिया।

हबशी ने अपने को छुड़ाने के लिये कितना ही हाथ पैर फटकारा किन्तु नतीजा कुछ भी न निकला। फौरन ही वह जमीन पर गिर कर छटपटाने लगा परन्तु फिर भी उन मजबूत उँगलियों ने उसका गला न छोड़ा। हबशी का चेहरा लाल हो गया, आँखें बाहर निकल आईं और जबान मुँह के बाहर लटक आई।

टाग चुपचाप अपने स्थान पर बैठा हुआ यह सब तमाशा देख रहा था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर टार्जन ने उस हबशी पर किस लिये हमला किया है। वह अभी टार्जन के साथ अपनी लड़ाई नहीं भूला था। इसी समय उसने देखा कि उस हबशी का शरीर निश्चेष्ट हो गया और वह जमीन पर गिर कर टंडा हो गया।

टार्जन उसकी छाती पर से उछल कर खड़े हो गये और पींजरे के

दर्वाजे के पास जा पहुँचे । धीरे धीरे उन्होंने उमका दर्वाजा ऊपर की ओर उठा दिया और टाग बाहर निकल आया । एक बार उसका इरादा हवशियों पर टूट कर उनसे बदला लेने का हुआ पर टार्जन ने उसे ऐसा करने की इजाजत न दी ।

इसके बदले उस हवशी की लाश उठा कर उन्होंने पींजरे के भीतर डाल दी और उसका दर्वाजा बन्द कर दिया । अब एक हलकी मुस्कुराहट उनके होठों पर दिखाई दी । वे जानते थे कि हवशी लोग जागने पर कितने भयभीत होंगे ।

अब टार्जन और टाग कूद कर पास के पेड़ पर जा चढ़े और पेड़ों ही पेड़ों पर आगे की ओर बढ़ने लगे । रास्ते में टार्जन टाग से बोले, “जाओ टीका के पास वापस लौट जाओ ! वह तुम्हारी है । टार्जन उसे नहीं चाहता !”

टाग ने पूछा, “क्या टार्जन को कोई दूसरी मादिन मिल गई है ?”

टार्जन ने सिर हिलाते हुए कहा, “गोमंगानियों के लिये ठीक वैसी ही मादा गोमंगानी है, न्यूमा सिंह के लिये सेबर सिंहनी और चीते के लिये ठीक उसी के जोड़ी की मादिन है । बारा हिरन के लिये, मानू बन्दर के लिये, जंगल के सभी जानवरों तथा चिड़ियों के लिये, ठीक उन्हीं के अनुरूप जोड़ी मिली हुई है ।—केवल टार्जन के लिये कोई भी जोड़ी नहीं है । टाग एप बन्दर है । टीका भी मादिन एप बन्दर है । तुम टीका के पास लौट जाओ । टार्जन अकेला है, और वह अकेला ही रहेगा ।”

टार्जन की गिरफ्तारी

काले सैनिक अफ्रीकन जंगल की गहरी तपस और भयंकर गर्मी में भी अपने काम में लगे हुये थे । जंगली जानवरों के चलने की पगडंडी के बीचोबीच एक गहरा गड्ढा खोदते समय उनके तमाम शरीर से पसीना चू

रहा था फिर भी वे अपने काम में लगे थे। हाँ बीच बीच में वे कभी कभी सुस्ताने के लिये बैठ कर आपस में बातें करने तथा ठठा कर हँसने भी लग जाते थे।

पास के पेड़ों के सहारे भैंसों के चमड़े की बनी उनकी ढालें पड़ी थीं और भालों से वे जमीन खोदने का काम ले रहे थे।

उस ओर से जाता हुआ एक हिरन उनका अट्टहास सुन खड़ा हो गया परन्तु जैसे ही उसकी नाक में उन जंगलियों के शरीर की गंध गई वह भय से व्याकुल हो कर वहाँ से भागा।

वहाँ से लगभग एक सौ गज के फासले पर, घने जंगल के बीच बैठे न्यूमा सिंह ने अपना भारी सिर ऊपर उठाया। सूर्योदय तक न्यूमा सिंह खाना खाने में व्यस्त था और उसका पेट अच्छी तरह से भरा हुआ था। उसकी नींद जल्दी खुलने वाली नहीं थी परन्तु जंगलियों के अट्टहास ने उसे जगा दिया। उसकी नाक में हिरन इसके बाद मनुष्य की गंध गई परन्तु उसका पेट भरा हुआ था अस्तु वह उठ कर घने जंगल में घुस गया।

आस पास के पेड़ों पर रंग बिरंगी चिड़ियाँ विचित्र विचित्र बोलियाँ बोल रही थीं और छोटे छोटे बन्दर उन काले जंगलियों के ठीक ऊपर पेड़ों पर किलकारियें मार रहे थे परन्तु इन सब बातों की ओर जरा भी ध्यान न दे जंगली लोग अपने काम में लगे हुये थे। घोर जंगल के बीच इस समय वे अकेले थे।

परन्तु क्या वास्तव में वे जंगली अकेले थे? नहीं! उनके ठीक ऊपर वाले पेड़ पर से दो तेज आँखें उत्सुकता के साथ उनके प्रत्येक कार्य का निरीक्षण कर रही थीं। टार्जन के हृदय में छिपी हुई जंगलियों के प्रति घृणा का स्थान इस समय उत्सुकता ने ग्रहण किया हुआ था और वे यह समझने के फेर में थे कि आखिर ये लोग कर क्या रहे हैं और ऐसा करने से उनका मतलब क्या है? उनकी माता काला की मृत्यु भी इसी प्रकार के जंगलियों द्वारा ही हुई थी। अस्तु, सभी जंगलियों को वे अपना शत्रु

मानते थे, फिर भी उनका प्रत्येक काम देखने और उसे समझने का उन्हें बड़ा ही शौक था और जब कभी भी उन्हें मौका मिलता था वे अपनी इस इच्छा की पूर्ति किये बिना नहीं रहते थे ।

उन्होंने देखा कि जंगली जानवरों के चलने के रास्ते के ठीक बीचो-बीच में खोदा हुआ वह गड़हा धीरे धीरे बड़ा होने लगा और अन्त में यहाँ तक बड़ा हो गया कि इस समय उसके खोदने में लगे हुये सभी जंगली तक उसमें समा जायँ । वे इतनी मेहनत क्यों कर रहे हैं यह बात टार्जन की समझ में जरा भी नहीं आ रही थी, परन्तु जब उन लोगों ने लम्बी लम्बी लकड़ियाँ काट कर तथा उनका एक एक सिरा नोकीला बना कर गड़हे की सतह में एक दम खड़ा गाड़ना शुरू किया तब तो उनकी बुद्धि और भी चकराई और अन्त में जब गड़हे के ऊपर कमजोर लकड़ियाँ बिछा बिछा कर उन्होंने उसे घास फूस से ढक दिया और आस पास की जमीन और उसमें जरा भी भेद नहीं रह गया तब तो वे इसका मतलब समझने के लिये गहरी चिन्ता में पड़ गये ।

अपना काम पूरा करने के बाद जङ्गलियों ने एक बार संतोष से उस ढके हुए गड़हे की ओर देखा । टार्जन की सधी हुई निगाहों तक में अब आस पास की जमीन तथा उस गड़हे में कोई भेद दिखाई नहीं दे रहा था ।

अपने विचारों में टार्जन इस समय ऐसे लवलीन हो रहे थे कि उन्होंने उन जङ्गलियों को बिना तंग किये हुए ही उन्हें अपने गाँव की ओर लौट जाने की इजाजत दे दी, परन्तु बहुत कोशिश करने पर भी वे उस समस्या को हल न कर सके । जंगल के सभी जानवरों के लिये मनुष्य के कारनामे गहरी समस्या थे, परन्तु शेर हाथी एष अम्बर तथा अन्य जानवर उन समस्याओं को हल करने की ओर अपना ध्यान नहीं देते थे जब कि टार्जन अपने समय का भारी भाग इसी में व्यतीत करते थे ।

जंगलियों के चले जाने के थोड़ी ही देर बाद वे जमीन पर कूद पड़े

और उस गड़हे के किनारे बैठ उसके ऊपर बिछी लकड़ियों में से एक के किनारे की मट्टी उन्होंने हटाई। लकड़ी का सिरा दिखाई देने लगा। झुक कर उन्होंने उसे एक बार सूँघा और तब फिर उसी तरह ढक दिया। इसके बाद पुनः उछल कर पेड़ पर जा चढ़े और तब एप बन्दरों की तलाश में खाना हो गए।

रास्ते में एक स्थान पर उन्होंने न्यूमा सिंह को बैठे देखा। कुछ देर ठहर कर उन्होंने एक फल तोड़ कर उसके चेहरे पर मारा और उसे कितने ही प्रकार की बातें सुना सुनाकर उसका अपमान करने लगे। न्यूमा ने क्रोध तथा नफरत भरी निगाह अपने ऊपर की ओर पेड़ के बीच नाचते हुए उस मनुष्य पर डाली और तब एक गहरी दहाड़ उसके मुँह से निकली, परन्तु अपने पूर्व अनुभव से यह समझ कर कि उस आदमी से बेकार झगड़ा बढ़ाने से कोई लाभ नहीं वह उठ खड़ा हुआ और जंगल में जा घुसा।

टार्जन भी आगे की ओर बढ़े परन्तु अभी वे एक मील से अधिक न गये होंगे कि एक विचित्र प्रकार की गंध उनकी नाक में आई और दूसरे ही क्षण एक विशालकाय हाथी उन्हें एक ओर जाता हुआ दिखाई दिया। टार्जन फौरन ही उसके ठीक ऊपर वाले पेड़ पर जा पहुँचे और एक कमजोर डाल पकड़ कर उन्होंने एक ही झटके में उसे तोड़ डाला।

डाल टूटने की आवाज सुनते ही वह विशालकाय जीव खड़ा हो गया और अपनी पूँछ खड़ी कर तथा सूँड़ ऊपर की ओर उठा इस शब्द का कारण ढूँढ़ने का प्रयत्न करने लगा।

टार्जन ठठा कर हँस पड़े और उसके और भी नजदीक वाली डाल पर आ पहुँचे। इसके बाद जोर से चिल्ला कर उन्होंने कहा, “टैंटर ! टैंटर ! तुम जंगल में सब से भारी और सब से बहादुर जीव हो। मेरे हाथ पैर की जितनी उँगलियाँ हैं उतने सिंह भी तुम्हारी ताकत का मुकाबला

नहीं कर सकते। तुम बड़े बड़े पेड़ों तक को अपनी सूँड़ से उखाड़ कर फेंक देते हो फिर भी एक डाल टूटने की आवाज सुन कर ही तुम भय से खड़े हो गये। यह तुम्हारे लिये भारी लज्जा की बात है !”

एक गरगराहट की आवाज जो न मालूम कोप का चिन्ह था कि संतोष की साँस थी हाथी के मुँह से निकली, उसकी उठी हुई सूँड़ नीचे की ओर झुक गई और पूँछ पुनः नीचे की ओर लटक गई किन्तु आँखें उसकी अभी तक टार्जन को खोज में ऊपर के पेड़ पर पड़ रही थीं। उसे अधिक देर तक मेहनत करनी न पड़ी क्योंकि दूसरे ही क्षण टार्जन कूद कर अपने पुराने मित्र की गर्दन पर जा बैठे और उसके शरीर को हाथों से सुहराने लगे।

इसके बाद वे अपना मुँह उसके कान के समीप ले गये और झुक कर उसमें कुछ कहने लगे। उनकी बोली को हाथी ने समझा अथवा नहीं इसे तो ईश्वर ही जाने परन्तु इतना जरूर था कि वह बड़े ही ध्यान से अपने स्थान पर खड़ा उनके एक एक शब्द को सुनता रहा। असल में अपने मित्र की मीठी आवाज और मुलायम हाथ उसे इस समय बहुत ही आनन्द दे रहे थे।

टैंटर से टार्जन का लड़कपन से ही परिचय था और अक्सर ही दोनों की मुलाकात जंगल में हो जाया करती थी। पहले पहल जब उनकी मुलाकात उससे हुई थी उस समय वह उसे देख बहुत ही डरे थे परन्तु धीरे धीरे उनकी समझ में यह बात आ गई कि टैंटर को उसकी बातें बड़ी ही प्रिय मालूम पड़ती हैं और वह कोशिश करने पर अपने दिल की बहुत कुछ बातें उसे समझा सकते थे और अपने इशारों पर उसे चला सकते थे। उनकी आज्ञा पा कर टैंटर कितनी भी दूर क्यों न हो उनके पास चला आता था, उनकी तेज और तीखी आवाज दूर से ही उसके कानों में पहुँच जाया करती थी और जब वे उस पर सवार हो जाते थे तो जिस ओर भी उनकी इच्छा होती उसे वे ले जा सकते थे और

जो काम भी चाहे करा सकते थे। ऐसा मालूम होता था मानों दोनों ही एक दूसरे की बोली से भली भाँति परिचित हों।

आधे घंटे तक टार्जन टैंटर की पीठ पर बैठे रहे। समय का उन दोनों ही की निगाह में कोई मूल्य न था। दुनिया में सबसे भारी काम उनके लिये अपने अपने पेटों का भरना था और इस काम के लिये टैंटर की अपेक्षा टार्जन को कम मेहनत पड़ती थी। क्योंकि एक तो उनका पेट उसकी अपेक्षा बहुत ही छोटा था दूसरे वे मांस मछली वगैरह भी खा कर अपना पेट भर सकते थे परन्तु हाथी को केवल फल फूल अथवा वृक्षों की डाल वगैरह से ही अपनी क्षुधा निवारण करनी पड़ती थी।

टैंटर के समय का भारी भाग अपना पेट भरने ही में चला जाता था। संसार के सभी जीवों का अधिक समय पेट भरने और खाये हुये भोजन के पचाने में ही व्यतीत हो जाया करता है। वास्तव में यही बात उनके उत्थान में बहुत कुछ बाधक है और वे मनुष्य की भाँति शीघ्र उन्नति नहीं कर सकते।

खैर सो सब जो कुछ भी हो, इन बातों का टार्जन को अधिक ब्याल न था और टैंटर को तो बिल्कुल ही न था। टार्जन केवल इतना ही भर समझते थे कि टैंटर का साथ करने में उन्हें अतुलनीय आनंद मिलता है। उनका हृदय सदा ही किसी ऐसे जीव की खोज में रहा करता था जिसके साथ वे खेल कूद सकें, खा पी सकें, और जिस पर अपने हृदय में छिपे प्रेम की वर्षा कर सकें। एप जाति के बंदरों में उनके जो जो बचपन के साथी थे वे सभी इस समय बड़े बड़े कढ़ावर बंदर हो चुके थे और उनके प्रेम को या तो समझ ही नहीं सकते थे अथवा उसकी कदर करना नहीं जानते थे। हाँ छोटे छोटे एप बंदरों के साथ टार्जन अकसर खेला कूदा करते थे और उन पर प्रेम भी रखते थे। किन्तु उनसे प्रेम करके उनका दिल नहीं भरता था। टैंटर उन्हें उन सभी से कहीं अधिक शान्त गम्भीर तथा समझदार मालूम होता था अस्तु वे उससे अधिक प्रेम करते थे। काला के मरने

बाद अब तक टैंटर से बढ़ कर अधिक प्रेम उन्हें किसी भी जीव पर नहीं हुआ था ।

परन्तु पेट की चिन्ता ने उन्हें पुनः पेड़ों पर पहुँचने के लिये बाध्य किया और वे अपने भोजन की तलाश में आगे की ओर बढ़े । इधर टैंटर उनके ठीक विपरीत दिशा में खाना हुआ ।

एक घण्टे तक टार्जन बराबर आगे ही बढ़ते चले गये । रास्ते में वे फल मूल वगैरह भी खाते जाते थे परन्तु ये चीजें उनकी रुचि के अनुकूल न थीं । केवल मांस ही एक ऐसी वस्तु थी जो उन्हें परम प्रिय थी और बिना कोई पशु शिकार करके खाये कभी भी उनका पेट नहीं भरता था ।

परन्तु इस समय जंगल में घूमते समय टार्जन का ख्याल केवल शिकार की ही ओर न था और भी कितनी ही बातें इस समय उनके दिमाग में घूम रही थीं । उनकी सदा से यह आदत थी कि दो एक दिन अथवा घण्टे की गुजरी हुई बातों को वे बराबर याद कर लिया करते थे । टैंटर हाथी से मुलाकात की बात उन्हें याद आई । जंगलियों के जमीन में गड़्ढा खोद कर फिर उसे ढकने की बात उन्हें याद आई । पुनः वही बात उनके दिमाग में घूमने लगी कि आखिर उन्होंने ऐसा क्यों किया । देखी हुई बातों से वे किसी निश्चित फैसले पर पहुँचते थे और इन्हीं निश्चित फैसलों की सहायता से असली तथ्य पर । कम से कम वे अपने दिमाग से बही काम लेते थे जिसके लिये परमात्मा ने उसकी सृष्टि की है । इससे उन्हें सहायता भी अधिक मिलती थी क्योंकि अन्य मनुष्यों की भाँति दिमागी भूलें उनसे नहीं होती थीं ।

उसी गड़्ढे के सम्बन्ध में विचार करते करते उन्हें अन्तःचक्षुओं के सामने एक नई तस्वीर दिखाई दी । उन्हें ऐसा मालूम हुआ मानों कोई भारी काली शकल धीरे धीरे उसी गड़्ढे की ओर बढ़ी जा रही है । न मालूम क्यों उन्हें भय मालूम होने लगा । उनके जीवन में निश्चय तथा

कार्य एक ही समय में सम्पन्न हो जाया करते थे। फौरन ही पेड़ों के ऊपर ही ऊपर उछलते कूदते वे उसी गड़हे की ओर खाना हुए।

कभी वे जमीन पर कूद कर तेजी के साथ आगे की ओर बढ़ते थे तो कभी नीचे की राह में अड़चन पाकर पुनः पेड़ पर चढ़ जाया करते थे। उनका ध्येय इस समय केवल यही था कि जहाँ तक भी जल्द हो सके उस गढ़े के पास पहुँचना चाहिये। इस जल्दबाजी में अपनी सदा की सावधानी को भी वे एक प्रकार भूल से गये। सहसा वे एक खुले हुए मैदान में पहुँचे जहाँ पेड़ों का कुछ दूर तक एक दम नामोनिशान भी न था। उन्हें इस समय इस बात का भी ख्याल न था कि वहाँ किसी तरह का खतरा भी हो सकता है अथवा नहीं।

अभी उस मैदान का आधा ही रास्ता उन्होंने तय किया होगा कि सहसा उनके कुछ ही गज के फासले पर लम्बी लम्बी घासों के बीच से दस बारह चिड़ियायें निकल कर चहचहाती हुई आसमान की ओर उड़ीं। फौरन ही टार्जन उस ओर घूमे। वे जानते थे कि चिड़ियों का इस प्रकार एकाएक चहचहा कर उड़ जाना किसी प्रकार के जीव के समीप होने का सूचक है।

इसी समय बूटो गैंडा अपने छोटे छोटे पैरों के बल खड़ा हो गया और तेजी के साथ उनकी ओर झपटा। गैंडा बड़ा ही बेवकूफ जानवर होता है। अपनी कमजोर आँखों से दूर तो क्या पास की चीजें भी उसे बड़ी ही मुश्किल से दिखाई देती हैं फिर भी यह कहना बड़ा ही मुश्किल है कि उसका इस तेजी का झपटना पागलपन या क्रोध के कारण होता है अथवा वह भागने की नीयत से ही ऐसा करता है। हाँ यह निश्चित है कि उसकी इस झपट में जो भी पड़ जाय उसे वह इस जोर से ऊपर की ओर उछाल देता है कि फिर उसके जान की खैर नहीं।

आज भी कदाचित् भागत ही समय संयोग से उसका निगाह टार्जन पर जा पड़ी और वह तेजी के साथ टार्जन की ओर झपटा। एक टक

उसकी ओर देखते हुए टार्जन निर्भय चित्त से अपने स्थान पर खड़े रहे । पहले भी कई बार वे गैडों का इसी प्रकार सामना कर के उन्हें उल्लू बना चुके थे ।

जैसे ही उनके पास पहुँच उसने माथा नीचा कर के उन्हें उछालना चाहा बिजली की तरह फुर्ती के साथ टार्जन एक ही छलांग में उसकी पीठ पर जा बैठे और दूसरी छलांग में उसके पीछे की ओर कूद बगल के वृक्षों की ओर दौड़े । अपने को इस प्रकार बेवकूफ बनते देख गैडे को बेतरह क्रोध चढ़ आया और वह पीछे की ओर घूम पुनः तेजी के साथ एक ओर को झपटा परन्तु संयोग से जिस ओर टार्जन गये थे उस ओर न जा कर वह दूसरी ही ओर दौड़ गया । टार्जन को मौका मिला और वे पेड़ पर चढ़ कर तेजी से पुनः अपने गन्तव्य स्थान की ओर चले ।

उनसे कुछ दूर आगे टैन्टर मस्ती के साथ हाथियों के जाने वाले रास्ते पर चला जा रहा था जिससे थोड़ा और आगे रास्ते के बगल की ओर की किसी झाड़ी में छिपा एक काला हवशी ध्यान से कान लगा कर आहट ले रहा था । सहसा उसके कानों में वही आवाज पड़ी जिसके सुनने की प्रतीक्षा में वह वहाँ छिपा बैठा था । कोई हाथी उसी ओर चला आ रहा था ।

इस हवशी के दायें तथा बायें ओर के जंगलों में और भी कितने ही हवशी छिपे बैठे थे । सभी के बीच में यह संकेत फिर गया कि उनका शिकार बहुत करीब आ गया है । फुर्ती के साथ वे उस रास्ते के आस पास के पेड़ों पर जा एकत्रित हुए और उस हाथी के समीप पहुँचने की राह देखने लगे ।

अन्त में उनकी इच्छा पूरी हुई । उन्होंने देखा कि एक खूब ही लम्बा चौड़ा मस्त हाथी उस रास्ते पर चला आ रहा है । उसके मुँह से निकले लम्बे लम्बे दाँत देख उन जंगलियों के मुँह में पानी भर आया और प्रसन्नता के मारे कलेजा धक धक करने लगा ।

जैसे ही वह हाथी उन लोगों के नीचे से हो कर आगे की ओर गुजरा वे सब के सब पेड़ के नीचे जमीन पर आ रहे और जोर जोर से थपोड़ियाँ बजाने तथा चिल्लाने लगे। क्षण भर के लिये हाथी खड़ा हो गया और अपनी सूँड़ तथा दुम ऊपर की ओर उठाये इस भयंकर कोलाहल को सुनता रहा, इसके बाद वह उसी राह फुर्ती के साथ आगे की ओर दौड़ा।

उसके पीछे चिल्लाते हुए हबशी भी तेजी के साथ दौड़े ताकि उसे उस स्थान की जाँच करने का जरा भी मौका न मिलने पावे जहाँ कि उन्होंने जमीन में गड़हा बना रक्खा था। टैन्टर हाथी यदि एक बार भी पीछे की ओर धूम कर शत्रुओं पर हमला करता तो उन्हें भागने की भी शरण न मिलती परन्तु इस समय वह डरे हुए हिरन की भाँति तेजी के साथ आगे की ओर ही भागा जा रहा था—उस ओर जहाँ मृत्यु उसकी बाट जोह रही थी।

इसी समय इन सभी के पीछे पेड़ों पर उछाल मारते हुए जंगल के राजा टार्जन भी गिलहरी की भाँति तीव्र गति से उसी ओर बढ़े आ रहे थे। उनके कानों में हबशियों के चिल्लाने की आवाजें पड़ीं और वे उनका मतलब बखूबी समझ गये। एक बार टैन्टर को सावधान करने के लिये उन्होंने एक बड़ी ही तेज आवाज भी दी परन्तु भय विह्वल टैन्टर हाथी ने उनके इस आवाज की ओर या तो ध्यान न दिया अथवा ध्यान देकर भी खड़े होने या पीछे की ओर घूमने की हिम्मत न की।

अब हाथी मृत्यु के बहुत ही समीप पहुँच चुका था जहाँ जमीन में बने गड्ढे के अन्दर लगे नोकीले खूँटे उसके अपने ऊपर गिरने की राह देख रहे थे और उसके थोड़े ही पीछे काले हबशी भयंकर कोलाहल करते बढ़े आ रहे थे।

हाथीदाँत तथा उस हाथी के मांस मिलने की आशा में वे हबशी लोग इस समय इतने डूबे हुए थे कि उन्होंने ऊपर ही ऊपर तेजी के साथ

आगे बढ़ते हुए टार्जन की ओर निगाह तक न उठाई। टैन्टर ने भी इस ओर ध्यान न दिया यद्यपि टार्जन उसे बहुत जोर जोर के साथ आवाजें दे रहे थे।

थोड़ी ही दूर और आगे बढ़ने पर कदाचित् हाथी की जान न बचती परन्तु बिजली की तेजी के साथ टार्जन पेड़ों ही पेड़ों पर हाथी के सिर पर से होते हुए आगे की ओर बढ़ गये तब और फुर्ती से जमीन पर कूद कर गड़्हे तथा उस विशाल दौड़ते हुए शरीर के बीच में आ खड़े हुए। एक क्षण बाद ही घबड़ाया हुआ हाथी जल्दी में उन्हें न पहचान सकने के कारण शायद उन्हें कुचलता हुआ आगे की ओर निकल जाता किन्तु टार्जन ने उसे जोर के साथ आवाज दी “ठहरो !”

टार्जन को अपने सामने हाथ ऊँचा किये खड़े देख हाथी एक दम से खड़ा हो गया। जमीन पर झुक कर टार्जन ने थोड़ी घास हटा कर उसे वह विशाल गड़्हा तथा उसके ऊपर रखी कमजोर लकड़ियाँ उँगली के इशारे से दिखाईं। हाथी समझ गया।

टार्जन बोले, “भागने की जरूरत क्या है ? क्यों नहीं पीछे घूम कर इन मुट्ठी भर आदमियों को तितर बितर कर देते ?”

परन्तु हाथी ने उनकी इस सलाह की ओर जरा भी ध्यान न दिया। वह असल में इस समय बेतरह घबड़ाया हुआ था। रास्ते के दोनों ओर घना जंगल था जिसमें से हो कर किसी भी पशु अथवा मनुष्य का आगे बढ़ना एक प्रकार से असम्भव ही था परन्तु यह रुकावट हाथी के लिये कुछ भी न थी। वह तेजी के साथ बाईं ओर को घूमा और छोटे छोटे पौधों तथा झाड़ियों को कुचलता तथा कमजोर पेड़ों को तोड़ता हुआ एक ओर को भाग निकला।

उसके इस कायरपन को देख गड़्हे के एक दम किनारे पर खड़े टार्जन के चेहरे पर एक हलकी मुस्कराहट दिखाई दी। अब उनका ध्यान हबशियों की ओर गया। उनके उस स्थान पर आने में अधिक देर न थी अस्तु

टार्जन को जहाँ तक भी जल्द हो सके वहाँ से भाग जाना ही मुनासिब था। उन्होंने अपने बाएँ पैर पर जोर दे कर ऊपर के पेड़ की एक डाल उछल कर पकड़नी चाही परन्तु इसी समय उनके पैर के नीचे की ओर की मट्टी धँसती हुई मालूम पड़ी। उन्होंने दूसरी बार उछलने के लिये अपने शरीर की समूची शक्ति लगा दी परन्तु कृतकार्य न हो सके और तेजी से पीछे वाले गड्ढे में जा गिरे।

दूसरे ही क्षण चिल्लाते हुए हबशी गड्ढे के किनारे पर आ पहुँचे। उन्होंने गड्ढे में टार्जन के गिरने से बने छोटे से छेद को देखते ही समझ लिया कि हाथी उसमें न गिर कर वहाँ से भाग निकला है अथवा एक पैर उस पर रख कर सम्भल गया है और तब वहाँ से किसी दूसरी तरफ भागा है, फिर भी दो चार हबशियों ने गड्ढे में भाँक कर नीचे की ओर देखा। बेहोश टार्जन पर उनकी निगाह पड़ी और भय से चिल्ला कर वे दो कदम पीछे हट गये।

जंगल के इस सफेद शैतान से आस पास के सभी जंगली पूरी तौर पर वाकिफ थे और अच्छी तरह जानते थे कि उसमें दैत्यों के समान शक्ति है अस्तु उन पर निगाह पड़ते ही वे भयभीत हो उठे फिर भी उनमें से कितने ही हिम्मत बाँध कर उस गड्ढे में उतर गये और बेहोश टार्जन को बाहर निकाल लाये।

उनके शरीर पर एक भी घाव का निशान न था। गड्ढे की सतह में गड़े नोकदार खूँटों का जरा भी जख्म उनके शरीर पर कहीं नहीं लगा था बल्कि पीछे की ओर गिरने से एक खूँटे की चोट उनके सिर के पिछले भाग में लगी थी जिससे वे बेहोश हो कर वहीं गिर पड़े थे। हबशियों से यह बात अधिक देर तक छिपी न रही अस्तु बड़ी फुर्ती के साथ उन्होंने होश में आने के पहले ही उनके हाथ पैर मजबूती के साथ बाँध दिये क्योंकि वे जानते थे कि टार्जन के शरीर में कितनी फुर्ती तथा ताकत है।

अभी वे लोग टार्जन को उठाये हुए अपने गाँव की ओर थोड़ा ही

बढ़े थे कि टार्जन की पलकें हिलीं और दूसरे ही क्षण उन्होंने अपनी आँखें खोल दीं। एक बार उन्होंने अपने चारों ओर आश्चर्य के साथ देखा और तब फौरन ही बीती हुई सब बातें उनके मस्तिष्क के सामने आ गईं। अपने खतरे को वे शीघ्र ही समझ गये। जन्म से ही स्वयं अपने बचाव का उपाय सोचने वाले टार्जन के मस्तिष्क में दूसरे से सहायता प्राप्त करने की आशा कभी पैदा ही नहीं हुई थी अस्तु इस समय भी वे अपने लिये बचाव का कोई उपाय सोचने में तल्लीन हो गये।

हवशी लोग उन्हें उठाये लिये जा रहे थे अस्तु जिन रस्तों से उन्होंने उन्हें बाँध रक्खा था उन पर जोर लगाना उन्होंने एक प्रकार से बेकार समझा परंतु हवशियों को शीघ्र ही इस बात का पता चल गया कि टार्जन होश में आ गये हैं। वे जंगली इस समय भूख से व्याकुल हो रहे थे और थके हुए भी थे अस्तु उन्होंने टार्जन को जमीन पर उतार कर खड़ा कर दिया और ढकेल कर आगे की ओर ले चले। रह रह कर वे अपने हाथ के बल्लों की नोकें उनकी पीठ में गड़ा गड़ा कर उन्हें आगे बढ़ने के लिये बाध्य करते थे किन्तु भीतर ही भीतर सभी उनसे डर रहे थे।

जब उन्होंने देखा कि भाले की नोक उनके शरीर में गड़ाने पर भी उन्हें किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता तो उनके भय तथा आश्चर्य की मात्रा और भी बढ़ गई और वे समझ गये कि टार्जन मनुष्य नहीं है और इसी लिए कोई सांसारिक कष्ट भी उसे हो नहीं सकता।

व्यों ही ये लोग अपने गाँव के समीप पहुँचे अपने बल्ले ऊँचे कर तथा चिल्ला के उन्होंने दूर से ही अपने विजय की सूचना गाँव वालों को दी जिसका फल यह हुआ कि उन लोगों के गाँव के फाटक तक पहुँचते पहुँचते तक औरतों मर्दों तथा बच्चों की एक अच्छी खासी भीड़ फाटक के आस पास आ इकट्ठी हुई। ये लोग इन लौटने वालों के मुँह से विजय गाथा सुनने के लिये ही वहाँ एकत्रित हुए थे।

किन्तु जैसे ही उनकी दृष्टि टार्जन पर पड़ी सब के सब घबड़ा कर पीछे हट गये। वे इस जंगल के दैत्य के भय से विह्वल रहा करते थे यद्यपि कितनों ही ने आज तक उन्हें देख न पाया था।

उनकी आँखों के सामने से उनके कितने ही लड़ाके इस प्रकार यका-यक लापता हो चुके थे मानों पृथ्वी उन्हें निगल गई हो किन्तु रात्रि में उनकी लाशें इस प्रकार गाँव की सड़कों पर गिर पड़ा करती थीं मानों वे आसमान से गिरी हों।

यह भयंकर दैत्य रात में यकायक उनकी भोपड़ियाँ में आ घुसता था और कितनों ही का गला घोट तथा कितनों ही के हाथ पैर तोड़ कर फेंकने बाद एक दम लापता हो जाया करता था।

किन्तु इस समय वह इन लोगों के हाथ में था। अब वह भविष्य में उन्हें किसी प्रकार का भी कष्ट न दे सकेगा यह बात धीरे धीरे उनकी समझ में आने लगी। इस जानकारी ने धीरे धीरे उनका भय भी दूर कर दिया। चिल्लाती हुई एक बुढ़िया ने आगे बढ़ कर उनकी खोपड़ी पर एक करारी चपत जमाई। उसकी देखा देखी और भी कितनी ही आगे बढ़ीं और उन्होंने भी उनके सिर, गाल तथा माथे पर चपतें लगाना शुरू किया। औरतों की देखा देखी मर्दों की तथा बच्चों की भी हिम्मत बढ़ी और थोड़ी ही देर में सब के सब टार्जन के ऊपर अपने इतने दिनों का खिया दिली गुब्बार निकालने लगे।

मोंगा सर्दार को भी उनकी गिरफ्तारीका समाचार मिला और वह फौरन ही वहाँ आ उपस्थित हुआ। आते ही उसने जोर से चिल्ला कर लोगों को वहाँ से हट जाने की आज्ञा दी और बोला, “आज रात तक हमें उसकी जान नहीं लेनी चाहिये।”

जंगल में बहुत दूर टैन्टर हाथी अपनी सूँड़ तथा दुम ऊपर की ओर उठाये ध्यान से कुछ सुन रहा था। उसके हृदय में एकाएक उत्पन्न हो जाने वाला भय एक दम लापता हो गया था। ईश्वर ही जाने उसके

दिमाग में इस समय कौन कौन से विचार चक्कर काट रहे थे । सम्भव है वह टार्जन की खोज में हो ! बहुत सम्भव है जंगल के राजा टार्जन द्वारा किये गये श्रहसानों का बदला चुकाने की भावना उसके दिल में आ समाई हो । परन्तु क्या हाथी के जंगली दिमाग में भी प्रत्युपकार की भावना पैदा हो सकती है ? यदि उसे मालूम भी होता कि टार्जन की जान पर खतरा है तो क्या वह स्वयं अपनी जान खतरे में डाल कर उस समय जंगलियों से उनका उद्धार करने का प्रयत्न करता ? लोग जल्दी इस बात पर विश्वास न करेंगे । हाथियों का शिकार खेलने वालों से यदि यह बात पूछी जाय तो सम्भवतः वे एक भी उदाहरण न दे सकेंगे जिसमें जंगल के किसी भी हाथी ने आपत्ति में पड़े किसी भी मनुष्य के प्राणों की रक्षा की हो चाहे उस मनुष्य ने उस हाथी की कितनी भी सहायता क्यों न की हो, अस्तु यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि टैन्टर हाथी भी उस अयानक अवस्था में जंगलियों के हाथ से टार्जन का उद्धार कर सकेगा ।

जो कुछ भी हो, गाँव में जंगलियों के भयंकर कोलाहल की आवाज उसके कानों में पड़ी और वह खड़ा हो गया । एक बार पुनः तेजी के साथ वहाँ से भागने का विचार उसके दिल में पैदा हुआ परन्तु थोड़ा ही आगे बढ़ कर वह पुनः खड़ा हो गया । अपनी सूँड़ उसने ऊपर उठाई और जोर से चिल्ला उठा ।

जंगलियों के उस गाँव में जहाँ सर्दार मोंगा ने टार्जन के पास पहुँच अपने साथियों का कोलाहल इस समय एक दम बन्द कर दिया था हाथी की यह आवाज कदाचित ही किसी जंगली के कानों में गई हो परन्तु टार्जन के तेज कानों ने उसकी वह आवाज सुन ली और उसका मतलब भी समझ लिया ।

इस समय जंगली लोग उन्हें घसीट कर एक भोपड़ी की ओर ले जा रहे थे जिसमें बन्द कर के उनके ऊपर पहरा बैठाने का उन्होंने निश्चय कर लिया था । यह सब उपक्रम इसी लिये था ताकि रात्रि के समय अपनी

प्रथा के अनुसार उनका माँस भून कर वे स्वाद के साथ उसे खा सकें। परन्तु एकाएक टार्जन खड़े हो गये और हाथी की आवाज का उत्तर उन्होंने इतनी तेज तथा कर्कश आवाज में दिया कि उनको घसीट कर आगे ले जाने वाले जंगली लोग भी भय से उछल कर उनसे दूर हट गये। उनके हाथ पैर बँधे होने पर भी जंगली जानवरों की भाँति की उनके मुँह से निकली हुई इस भयंकर आवाज ने उनका कलेजा तक हिला दिया था। परन्तु अब टार्जन को कुछ सन्तोष हुआ और वे लापरवाही की मुद्रा से उस भोपड़ी की ओर बढ़े जिधर कि वे जंगली उन्हें ले जाया चाहते थे।

अपने बरछे ऊपर की ओर उठाये जंगलियों ने टार्जन को चारों ओर से घेर लिया और उन्हें भोपड़ी की ओर ले चले। आस पास के भोपड़ों में टार्जन ने औरतों को आग वाले मट्टी के बरतनों में पानी भर उन्हें गरम करते देखा परन्तु उनका ध्यान उस समय इन बातों की ओर न था। वे बढ़े ही ध्यान से जंगल की ओर से आने वाली टैन्टर की सूक्ष्म आवाज को सुन रहे थे।

अभी तक टार्जन को इस बात का बहुत कम विश्वास था कि हाथी उनकी सहायता के लिये वहाँ तक आने का कष्ट उठावेगा। जितना टैन्टर अपने को नहीं जानता था उससे अधिक वे उसके स्वभाव से परिचित थे। उस विशालकाय शरीर के भीतर कितना डरपोक हृदय छिपा हुआ है इसे टार्जन भलीभाँति समझते थे। अभी थोड़ी देर पहले वे उसे इन गोमंगानियों के डर से भागते देख चुके थे अस्तु ज्यों ज्यों दिन ढलने लगा, थोड़ी बहुत आशा जो उन्हें उसकी ओर से बँधी थी क्रमशः नष्ट होने लगी।

दोपहर भर वे अपने हाथ पैरों के बन्धनों को खोलने का प्रयत्न करते रहे। धीरे धीरे अपने बन्धन उन्हें कुछ ढीले होते दिखाई दिये। उनके चेहरे पर एक हलकी मुस्कराहट दौड़ गई। उन्हें विश्वास हो गया कि यदि वे किसी प्रकार अपने हाथों का बन्धन खोल सके तो रात्रि के भोज के

लिये उन्हें पकड़ कर ले जाने वाले आदमखोरों को अपनी मृत्यु के पहले एक अच्छा सबक सिखा सकेंगे। अभी से उन्हें ऐसा मालूम होने लगा मानों उनकी मजबूत उँगलियाँ हबशियों के गलों के मुलायम मांसों में धँस रही हों और उनके मजबूत दाँत उन्हें चीथ फाड़ रहे हों।

अन्त में उन आदमखोरों का एक झुंड उन्हें मौत के नाच तथा भोज के लिये निश्चित स्थान पर पहुँचाने के लिये उनकी भोपड़ी में आ ही पहुँचा। सभी ने टार्जन को पकड़ कर भोपड़ी के बाहर निकाला और घसीटते हुए एक ओर ले चले।

उन पर निगाह पड़ते ही उपस्थित मण्डली प्रसन्नता से चिल्ला उठी और वे हबशी उन्हें धीरे धीरे गाँव के बीचोबीच गाड़े हुए खूँटे की ओर ले चले।

अभी वे उन्हें बेरहमी से ढकेलते हुए खूँटे के समीप ले जा ही रहे थे कि सहसा टार्जन ने अपने शरीर को अकड़ा कर अपनी कलाईयाँ इस जोर से उमेठीं कि उनके हाथ के बन्धन एक दम खुल गये। फुर्ती के साथ उछल कर वे अपने समीप वाले हबशी पर टूट पड़े और उनके एक ही थप्पड़ ने उसे जमीन पर गिरा दिया। फौरन ही वे एक दूसरे हबशी को जमीन पर गिरा उसकी छाती पर सवार हो गये और उनके दाँत उस आदमी के गर्दन में जा धँसे—परन्तु इसी समय एकाएक लगभग पचास हबशी उन पर टूट पड़े।

उछलते कूदते तथा नोचते खसोटते टार्जन उन लोगों से युद्ध करने लगे। उनकी फुर्ती ताकत तथा हिम्मत आठ दस शत्रुओं को एक साथ ही परास्त कर देने के लिये काफी थी परन्तु एक साथ पचास शत्रुओं से सामना करना उनके लिये कठिन हो उठा। इसमें सन्देह नहीं कि पन्द्रह बीस हबशियों के शरीर जखमी हो गये जिनसे लाल रक्त की धारायें बह कर वहाँ की जमीन तर करने लगीं और दो तीन लाशें भी दिखाई देने लगीं परन्तु क्रमशः वे लोग टार्जन को अपने कब्जे में करने लगे।

किन्तु उन्हें परास्त कर डालने बाद भी उनके हाथ पैरों का बाँधना सहज काम न था और धूर्त मोंगा भी इस बात को बहुत शीघ्र समझ गया । फौरन ही उसने अपने एक आदमी को टार्जन पर बरछे की चोट करने की आज्ञा दी ।

एक कदावर हवशी अपना भारी बरछा सिर की ओर उठाये टार्जन की ओर बढ़ा परन्तु टार्जन अन्य हवशियों से इस तरह गुथे हुए थे कि उसे बिना अपने साथियों को चोट पहुँचाये उन पर बरछे की चोट करने की सुविधा दिखाई नहीं दी ।

कुछ देर तक वह अपने स्थान पर खड़ा मौका ढूँढता रहा और अन्त में उसे इस बात का मौका मिल ही गया । उसका बरछे वाला हाथ ऊपर हवा में ऊँचा हुआ, उसकी आबनूस के रंग की चमकती हुई कलाई के पट्टे उभर आये, परन्तु जैसे ही उसने अपना बरछा टार्जन के शरीर में घुसाना चाहा, पीछे वाले घेरे के पास से आती हुई एक भारी चरमराहट की आवाज हवा में गूँज उठी । उसका हाथ ऊपर ही उठा रह गया और उसने चौंक कर पीछे देखा, साथ ही कितनी और निगाहें भी एक साथ उस ओर उठ गईं जिधर से वह भारी चरमराहट की आवाज आई थी ।

आग की रोशनियों में उन लोगों ने एक काले विशालकाय शरीर को गाँव का घेरा तोड़ कर भीतर की ओर आते देखा और दूसरे ही क्षण क्रोध में भरा हुआ टैंटर हाथी उन लोगों की ओर तेजी के साथ भपटा ।

भय से चिल्लाते हुये हवशी चारों ओर भागने लगे । जिधर जिसने रास्ता पार्श्व सिर पर पैर रख कर भागा । टार्जन से लड़ने वालों में से कुछ तो भाग निकले किन्तु कुछ के सिर पर ऐसा भूत सवार था कि उन्होंने हाथी का आना देखा तक नहीं ।

इन्हीं आदमियों पर चिन्घाड़ता हुआ टैंटर दूट पड़ा । उसकी सूँड़ उन लोगों के शरीरों पर बरसने लगी और बहुत शीघ्र ही जमीन पर गिरे

तथा खून से लथपथ टार्जन पर उसकी निगाह जा पड़ी जो कमजोर होने पर भी अभी तक युद्ध में प्रवृत्त थे ।

लड़ते लड़ते एक लड़ाके ने घूम कर पीछे की ओर देखा । क्रोध में भरे हाथी पर निगाह पड़ते ही वह बड़े जोर से चिल्ला उठा । हाथी ने उस चिल्लाते हुए आदमी के शरीर को सूँड में लपेट लिया और भागते हुये आदमियों के बीच में फेंक दिया ।

टार्जन के शरीर पर सवार एक एक आदमी को टैंटर ने अपनी सूँड से लपेट लपेट कर इधर उधर फेंकना शुरू किया । उनमें से कोई तो सीधे यमलोक पहुँच गये और कोई जमीन पर पड़े कराहने लगे ।

कुछ फासले पर मोंगा ने अपने साथियों को एकत्रित किया । उसकी लालच भरी निगाहें हाथी के कीमती बड़े बड़े दाँतों पर पड़ चुकी थीं । उसने हाथियों को मारने वाले बड़े बड़े भाले ले कर उस हाथी को फौरन ही घेर लेने का हुक्म अपने आदमियों को दिया । परन्तु उनके समीप पहुँचते पहुँचते तक हाथी ने टार्जन को उठा कर अपने माथे पर रख लिया और पीछे की ओर घूम कर जिस राह से आया था उसी राह से जंगल की ओर खाना हो गया ।

हाथी के शिकारी यदि यह कहें कि जंगली हाथी किसी भी आदमी के साथ इस प्रकार का बर्ताव नहीं कर सकता तो उनका कहना भूठ नहीं है परन्तु टैंटर के लिये टार्जन मनुष्य नहीं थे, वह उन्हें भी अपनी ही तरह जंगल का कोई जानवर समझता था ।

इस प्रकार टैंटर हाथी ने टार्जन के प्रति अपना कर्तव्य पूरा किया और उसके इस कार्य से वे दोनों ही पहले से भी अधिक एक दूसरे के प्रति कृतज्ञता तथा मित्रता के पाश में बँध गये ।

बालू के लिये लड़ाई

टीका इस समय एक बच्चे की माँ थी। जंगल के राजा टार्जन को यह देख बड़ी ही प्रसन्नता और साथ ही साथ उत्सुकता भी हुई। टार्जन को टीका बड़ी ही प्रिय थी जिसका प्रधान कारण यह था कि बच्चा होने के पहले तक उसमें से लड़कपन की बू नहीं गई थी और वह उस समय भी टार्जन के साथ लड़कपन की भाँति ही खेलवाड़ किया करती थी।

परन्तु बच्चा होने के साथ ही उसमें एकाएक एक विचित्र परिवर्तन दिखाई देने लगा। खेल खेलवाड़ की ओर से उसकी प्रवृत्ति एक दम हट गई। टार्जन को यह देख दुःख और आश्चर्य दोनों ही हुआ। एक दिन सुबह उन्होंने देखा कि टीका कलेजे से कोई चीज सटाये पेड़ की एक निचली डाल पर बैठी हुई है। वह चीज उन्हें हिलती डोलती भी दिखाई दी। टार्जन को बड़ी ही उत्सुकता हुई। उन्होंने उसके पास जा कर वह चीज ध्यान से देखने का इरादा किया।

टार्जन को अपनी ओर बढ़ते देख टीका ने वह चीज और भी मजबूती से अपने कलेजे के साथ चपका ली और जब टार्जन उसके और नजदीक पहुँचे तो उसने अपने नोकीले दाँत बाहर निकालकर जोर से गुर्रा दिया। टार्जन का आश्चर्य और भी बढ़ गया। इतने दिनों के साथ में अब तक कभी भी टीका का ऐसा व्यवहार उनके देखने में नहीं आया था। सिवाय खेल में मजाक करने के टीका ने कभी भी उन्हें क्रोध में अपने दाँत नहीं दिखाये थे परन्तु इस समय उसके चेहरे से खेलवाड़ के कोई भी चिन्ह प्रकट नहीं हो रहे थे। टार्जन ने अपना सिर खुजलाना शुरू किया और उसे एक ओर टेढ़ा कर के एक टुक टीका की ओर देखने लगे। इसके बाद वे पुनः थोड़ा आगे घसके और साथ ही टीका के गोद वाली वस्तु को देखने के लिये उन्होंने अपनी गर्दन ऊँची की।

पुनः अपने दाँत दिखा कर टीका पहले से भी अधिक जोर से गुर्रा उठी परन्तु इसका ख्याल न कर बड़ी ही सावधानी से अपना एक हाथ आगे बढ़ा कर टार्जन ने टीका के गोद वाली चीज को छूना चाहा । सहसा बड़े जोर से गुर्रा कर टीका उनके ऊपर टूट पड़ी और इसके पहले कि टार्जन अपना हाथ पीछे खींचे उसके पैने दाँत उनकी कलाई में जा धँसे । टार्जन उछल कर दूसरी डाल पर जा चढ़े और उन्हें खदेड़ती हुई टीका भी उनके पीछे दौड़ी ।

पर भला टार्जन की फुर्ती को बेचारी टीका कहाँ पा सकती थी ! और ऊपर से उसका बच्चा उसकी गोद में था, लाचार उसे रुक जाना पड़ा । उससे थोड़े फासले पर रुके हुए टार्जन ने भी आश्चर्य की मुद्रा से उसकी ओर देखा । वे सोच रहे थे कि आखिर टीका का स्वभाव इस प्रकार यका-यक बदल क्यों गया । उस वस्तु को उसने अपनी कलाइयों से ऐसा ढक रक्खा था कि टार्जन इस बात को जरा भी न समझ सके कि आखिर वह है क्या ! परन्तु इस समय जब टीका टार्जन का पीछा करने बाद वापस लौटी तब यकायक टार्जन की निगाह उस वस्तु पर जा पड़ी और सब बातें उनकी समझ में आ गई । उनकी कलाई में भयानक पीड़ा होने पर भी वे मुस्कुरा उठे । आज से पहले भी वे कितनी ही बच्चे वाली एप बन्दरियाओं को देख चुके थे । उन्हें निश्चय हो गया कि ज्यों ज्यों समय बीतता जायगा टीका का सन्देह भी घटता जायगा । फिर भी इस बात का दुःख उनके हृदय से न गया कि उनकी बचपन की माथिन टीका उनसे भय करे और उसे इस बात का सन्देह हो कि वे उसके बच्चे को जिसे एप बन्दरों की भाषा में 'बालू' कहते हैं—हानि पहुँचावेंगे ।

किन्तु इतना सब कुछ होने तथा कलाई में जख्म लग जाने पर भी टार्जन के मन में टाग के इस सद्यःजात शिशु को देखने की इच्छा पहले से भी प्रबल हो उठी । कदाचित् आप यह आश्चर्य करेंगे कि टार्जन ऐसे

बलवान हो कर भी टीका के डर से भाग क्यों गये या अपनी आकाँक्षा पूरी करने के लिये उन्होंने जबर्दस्ती उसके गोद से वह बच्चा छीन क्यों न लिया, वे तो टीका से कहीं अधिक शक्तिशाली थे !—पर यदि आप एप बन्दर होते तो इन बातों का उत्तर आपको अपने आप ही मिल जाता । उन सभी में यह परिपाटी है कि ऐसा ही कोई पागल नर एप बन्दर होगा जो कभी मादा एप बन्दर के ऊपर हाथ छोड़ेगा । एप बन्दरों को यदि अपनी मादाओं को डाँटना भी होता है तो वे बड़ी मुलायमियत से उन्हें फटकार दिया करते हैं ।

टार्जन पुनः धीरे धीरे टीका की ओर बढ़ने लगे परन्तु अब वे पहले की अपेक्षा अधिक सावधान थे । टीका गुर्रा उठी । टार्जन उसे समझाते हुए बोले, “टीका, आखिर तुम मुझसे इतना क्यों डरती हो ? मैं तुम्हारे बालू को किसी तरह की हानि नहीं पहुँचाऊंगा, खाली एक बार मुझे देख लेने दो कि वह कैसा है ।”

टीका ने उत्तर दिया, “भाग जाओ नहीं तो मैं तुम्हें मार डालूँगी !”

टार्जन पुनः बोले, “जरा सा देख भर लेने दो ।”

टीका ने कहा, “मैं कहती हूँ कि भाग जाओ ! देखो दाग आ रहा है, यह बच्चा दाग का है, वह तुम्हें मार डालेगा ।”

पीछे की ओर से आने वाली एक भारी गुर्राहट ने टार्जन को बता दिया कि दाग उनके बहुत ही समीप पहुँच गया है । वे समझ गये कि टीका की गुर्राहट सुन कर ही वह अपने बच्चे की रक्षा करने के लिये उस ओर आ रहा है ।

इसमें सन्देह नहीं कि टीका की तरह दाग भी टार्जन के बचपन के साथियों में था । दोनों ही एक साथ खेले थे और अभी कुछ दिन पहले टार्जन ने दाग की जीवनरक्षा भी की थी, किन्तु एक तो एप बन्दर की याद-दाश्त बहुत ही कमजोर होती है दूसरे पैत्रिक स्नेह के सामने संसार के और

कोई भी भाव अधिक समय तक नहीं ठहर सकते। टाग और टार्जन एक बार युद्ध कर के एक दूसरे के प्रति अपनी शक्ति का प्रदर्शन कर चुके थे और टार्जन विजयी हुए थे परन्तु इस बात को निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता था कि टाग को वह बात याद होगी। फिर यदि याद हो भी तो इसमें सन्देह नहीं कि अपने बच्चे की रक्षा के लिये वह दुबारा परास्त होने की सम्भावना रहने पर भी कभी पीछे न हटेगा।

उसकी गुराहट प्रति क्षण बढ़ती जा रही थी। टार्जन समझ गये कि उसके दिल में क्या है। टार्जन टाग से डरते न थे। वे उससे प्रेम करते थे। उसकी यह प्रवृत्ति केवल अपने बच्चे की रक्षा के ही लिये हुई है इसे भी वे भलीभाँति समझ रहे थे। इसी लिए उससे युद्ध करने की इच्छा उन्हें न हुई। वे कूद कर एक ओर हट गये। टाग ने समझा कि टार्जन ने डर कर ही ऐसा किया है। उसकी हिम्मत बढ़ गई। सम्भव है टार्जन द्वारा एक बार परास्त होने की बात उसे स्मरण हो आई हो, और बदला लेने की ही इच्छा उसके मन में प्रबल हो उठी हो। यह भी हो सकता है कि टीका के सामने मौजूद होने के कारण उसे अपनी वीरता दिखाना आवश्यक मालूम हुआ हो। क्योंकि जङ्गल के सभी जीव अपनी अपनी मादा के सामने अपनी वीरता दिखाने का निरन्तर प्रयत्न किया करते हैं।

जो कुछ भी हो रंग दंग से टार्जन समझ गये कि टाग उनसे युद्ध किये बिना किसी तरह भी न मानेगा। उनके कंधे पर इस समय भी उनका वही घास वाला रस्ता लटक रहा था। बचपन में वह उनके खेलवाड़ की चीज थी परन्तु अब वह युद्ध की सामग्रियों में था। उन्होंने उसका फन्दे वाला सिरा नीचे की ओर लटका दिया और कूद कर पेड़ की एक ऊपरी डाल पर जा चढ़े। टाग ने उनका वहाँ भी पीछा किया जिसे देख वे क्रमशः और भी ऊपर चढ़ने लगे।

जब उन्होंने समझ लिया कि टाग किसी प्रकार भी उनका पीछा न छोड़ेगा तो वे सब से ऊँचे वाली एक ऐसी डाल पर जा चढ़े जो टाग का

बोझ किसी प्रकार भी सम्भाल नहीं सकती थी। टाग उनसे नीचे वाली डाल पर आ कर रुक गया और वहीं से गुराने लगा। टार्जन ने मुँह चिढ़ाना शुरू किया और जब टाग क्रोध से एक दम पागल हो उठा तो उन्होंने अपना रस्सा सभाला और बड़ी ही सावधानी से उसका फन्दा टाग के पिछले पैर में डाल दिया। इससे पहले कि वह उनका इरादा समझे, फन्दा उसके पैर में मजबूती के साथ कस गया।

अब जा कर टाग ने अपनी स्थिति समझी। इसी समय टार्जन ने एक जोर का झटका दिया। टाग का पैर खड़खड़ाया और वह वहाँ से गिर कर जमीन से तीस फीट ऊपर हवा में उलटा झूलता दिखाई देने लगा।

पेड़ की एक मजबूत डाल में रस्से का दूसरा सिरा बाँध कर टार्जन टाग के समीप जा पहुँचे और बोले, “टाग, तुम गैंडे की तरह बेवकूफ हो। अब तुम उस समय तक इसी तरह लटकते रहो जब तक तुम्हारी बुद्धि ठिकाने न आ जाय। तब तक मैं टीका के पास जाता हूँ और तुम यहीं से लटकते लटकते देखा करना!”

टाग उन्हें ऊँची आवाज में बुरा भला कहने तथा धमकाने लगा परन्तु उसकी ओर कुछ भी ध्यान न दे टार्जन टीका के पास जा पहुँचे जिसने फिर प्रथम की ही भाँति अपने दाँत दिखा तथा गुरा कर उनका स्वागत किया।

परन्तु अब टीका भली भाँति समझ गई थी कि टार्जन को डराना धमकाना अथवा रोकना एक दम बेकार है। अस्तु वह उनके पास से दूर भाग चली। जमीन पर कूद कर वह एक ओर को दौड़ी। उसके सामने ही वह खुला मैदान था जिसमें इस समय कितने ही एप बन्दर बैठे अपने अपने कामों में मशगूल थे। टार्जन भी समझ गये कि उसका पीछा करना बेकार है और वह कभी भी उन्हें अपना बच्चा छूने न देगी।

फिर भी न मालूम क्यों बच्चे को गोद में ले कर खिलाने की इच्छा उनके हृदय में निरन्तर बढ़ती ही जा रही थी। वह टीका का बच्चा था

और अभी कुछ दिन पहले टार्जन टीका से प्रेम करते थे । सहसा उनके कानों में टाग की आवाज पड़ी । उसकी डराने धमकाने की आवाज अब धीरे धीरे प्रार्थना के रूप में बदल रही थी क्योंकि रस्से का मजबूत फन्दा अब उसके पैर के रक्त की गति को बन्द कर रहा था जिससे उसका कण्ठ बराबर बढ़ता जा रहा था । उसके आस पास बैठे कितने ही एप बन्दर उसका कण्ठ देख उसे मुँह चिढ़ा रहे थे । टाग ने अपनी ताकत के बल से सभी को तंग कर रक्खा था और सभी उसका इस समय का कण्ठ देख कर आनन्द से मुँह चिचका रहे थे । टार्जन टाग की ओर लौट चले ।

टार्जन को पीछे की ओर वापस जाते देख टीका मैदान के बीचोबीच में रुक गई और अपने बच्चे को कलेजे से लगाकर सन्देहयुक्त दृष्टि से अपने चारों ओर देखने लगी । बच्चा पैदा होने के साथ ही उसे चारों ओर अपने शत्रु ही शत्रु दिखाई देने लग गये थे । और तो क्या बचपन से एक साथ खेले हुए टार्जन तक को वह अपना शत्रु समझने लग गई थी । उससे थोड़ी ही दूर के फासले पर लकड़ी के नीचे से छोटे छोटे कीड़ों को खोद खोद कर खाती हुई बूढ़ी ममगा भी—जिसके मुँह में एक भी दाँत न थे और जो आधी अन्धी हो चुकी थी—इस समय उसे अपने बच्चे का शत्रु ही दिखाई दे रही थी ।

परन्तु जिस समय टीका उन लोगों पर अपनी सन्देहयुक्त दृष्टि डाल रही थी जिनसे भय करने का उसे कोई कारण न था, अपने वास्तविक खतरे को वह जरा भी न समझ सकी । मैदान के दूसरी ओर पास की ही झाड़ियों में छिपी दो चमकदार आँखें बड़े ही ध्यान से उसकी ओर घूर रही थीं । भूख से व्याकुल चीता अपने सामने के इस मुलायम मांस को देख लालच भरी निगाहें उस पर डाल रहा था परन्तु आस पास बैठे मजबूत एप बन्दरों को देख उसके मन में थोड़ी बहुत हिचकिचाहट हो रही थी । वह यही सोच रहा था कि यदि किसी प्रकार वह मादा

एप अपने बच्चे को ले कर उसके थोड़ा और समीप आ जाय तो बस एक ही झपट्टे में वह उस बच्चे को अपने पंजों में दबोच बगल की भाड़ियों में घुस जायगा और आस पास के एप बन्दर उसका कुछ भी न बिगाड़ सकेंगे ।

उसकी दुम का अगला भाग हवा में इधर से उधर नाच रहा था और निचले होंठ नीचे की ओर लटक उसके पीले पीले दाँतों तथा लाल जीभ का दर्शन करा रहे थे, परन्तु इन बातों को न तो टीका ही ने देखा न अन्य एप बन्दरों ने ! टार्जन ने भी इस बात को न देखा । वे टाग से बदला लेने की धुन में मरत उसी की ओर बढ़ रहे थे ।

अन्य एप बन्दरों को टाग के प्रति नफरत भरी निगाहें डालते देख तथा बुरी भली बातें कहते सुन टार्जन बहुत शीघ्र उनके बीच में जा पहुँचे । एक एप बन्दर टाग के बहुत ही समीप पहुँच चुका था । बहुत दिनों से उसे टाग पर इस कारण क्रोध चढ़ा हुआ था कि टाग ने उसे युद्ध में परास्त कर के बहुत ही जल्मी कर दिया था । अब उसने इस बात का बदला लेने का अच्छा मौका देखा और फौरन उसके समीप जा पहुँचा । रस्सा पकड़ कर वह टाग को अपने समीप खींच उसके शरीर में अपने पैने दाँत गड़ाने की तैयारी ही में था कि टार्जन एक छलांग में उसके समीप जा पहुँचे और अपने मजबूत हाथों का एक ऐसा झटका उसे दिया कि वह लुंड मुंड हो कर नीचे लुढ़क गया । बड़ी मुश्किल से उस एप बन्दर ने अपने को जमीन पर गिरने से रोका । परन्तु टार्जन के इस व्यवहार से उसका क्रोध और भी भड़क उठा और वह बदला लेने की नीयत से टार्जन की ओर बढ़ा । लेकिन टार्जन का ध्यान इस ओर न था । इस समय वे टाग को समझा रहे थे कि उसकी कुन्द बुद्धि उनकी तीव्र बुद्धि का किसी प्रकार भी मुकाबला नहीं कर सकती अस्तु भविष्य में महाशक्ति-शाली जङ्गल के राजा टार्जन का उसे कभी भी मुकाबला करने की हिम्मत न करनी चाहिये ।

उनकी यही इच्छा थी कि टाग के मस्तिष्क में यह बात अच्छी तरह

घुसा कर ही तब उसके पैर का फन्दा खोला जाय। परन्तु इसी समय सहसा उन्होंने उस दूसरे एप बन्दर को क्रोध में भरे तेजी के साथ अपनी ओर आते देखा। फौरन ही उनके चेहरे पर भी क्रोध की छाया दिखाई देने लगी। उनके शरीर के रोंगटे खड़े हो गये, होंट पीछे की ओर सरक गये जिनके बीच की दंतपंक्ति साफ दिखाई देने लगी, एक हलकी गुर्राहट उनके गले से निकली, और तब जोर से चीख कर वे तेजी के साथ अपने ऊपर हमला करने वाले एप बन्दर के गर्दन को ओर बूढ़े।

उनके शरीर की फुर्ती तथा ऊपर से गिरने वाले उनके शरीर के बोझ को वह एप बन्दर किसी प्रकार भी सम्हाल न सका और पुनः नीचे की ओर लुड़का। लगभग पन्द्रह हाथ के वह बराबर नीचे ही गिरता गया और इसके बाद सहसा उसका सिर एक डाल के साथ जोर से टकराया जिससे वह बेहोश हो कर पेड़ के नीचे गिर गया।

एक क्षण तक टार्जन जमीन पर निश्चेष्ट पड़ी अपने विपत्ती की देह की ओर देखते रहे। इसके बाद वे तन कर खड़े हो गये। अपनी छाती पर उन्होंने जोर जोर से मुक्के मारने शुरू किये और तब उनके मुँह से एप बन्दरों के विजयनाद ने निकल कर आस पास के जङ्गलों को प्रतिध्वनित कर दिया।

टीका के ऊपर उछलने की तैयारी करता हुआ चीता तक उनके मुँह से निकली हुई उस भयानक आवाज को सुन अपनी दुम दबा कर उसी झाड़ी में कुछ देर के लिये दबक गया और अपनी संदिग्ध दृष्टि चारों ओर डालने लगा। इस समय वह इसी बात को देख रहा था कि उसके भागने की राह में किसी प्रकार की अड़चन तो कहीं नहीं है।

इसी समय टार्जन की ऊँची आवाज गूँज उठी—“मैं एप बन्दरों का राजा टार्जन हूँ ! मैं भारी शिकारी तथा भयंकर लड़ाका हूँ ! जङ्गल का कोई भी जीव मेरा मुकाबला नहीं कर सकता !”

इतना कह कर टार्जन पुनः टांग की ओर बढ़े। पेड़ के ऊपर होने

वाली इस घटना पर टीका की भी निगाह पड़ चुकी थी यहाँ तक कि इस समय अपने प्यारे बच्चे को घास पर रख कर वह उस पेड़ की ओर थोड़ा बढ़ भी आई थी ताकि वहाँ होने वाली कोई भी घटना उसकी दृष्टि से बच न सके। अपने हृदय में अभी तक वह टार्जन के बहादुरी की प्रशंसा करती थी। इस समय उस एप बन्दर पर टार्जन को इस प्रकार विजय पाते देख उसका हृदय गर्व से फूला या नहीं, इसका उत्तर टीका ही पूछने पर दे सकेगी।

इधर चीते ने देखा कि मादा एप बन्दर अपना बच्चा घास पर रखकर एक ओर बढ़ गई है। अपनी गई हुई हिम्मत को मानों वापस बुलाने के लिये वह अपनी दुम पुनः ऊपर हवा में हिलाने लगा। क्योंकि सच तो यह है कि टार्जन के मुँह से निकलने वाली उस भयंकर आवाज ने अभी तक उसको दहला रखा था और उन एप बन्दरों में से किसी पर हमला करने की अपने में पुनः हिम्मत पैदा करने के लिये उसे अभी कुछ समय की आवश्यकता थी।

परन्तु जिस समय चीता अपनी बुद्धि ठिकाने करने के प्रयत्न में था टार्जन उस डाल पर जा पहुँचे जिसके साथ टाग का रस्ता बँधा हुआ था और उसकी गाँठ खोल कर उन्होंने बड़ी ही सावधानी से टाग को पेड़ की एक डाल पर लटका दिया।

टाग फौरन ही उस डाल पर सम्हल कर खड़ा हो गया और अपने पैर का फन्दा निकाल कर उसने एक ओर हटा दिया। क्रोध में भरे होने के कारण टार्जन के प्रति कृतज्ञता के भाव उसमें उस समय जरा भी नहीं रह गये थे। वह इस समय केवल यही सोच रहा था कि अन्य एप बन्दरों यहाँ तक कि टीका तक के सामने टार्जन ने उसकी बेइज्जती की अस्तु उनसे जरूर बदला लेना चाहिए किन्तु इस समय उसका पैर ऐसा शून्य हो रहा था कि कम से कम कुछ समय तक के लिये अपना यह विचार उसे अपने दिल से दूर कर ही देना पड़ा।

टाग को यह समझाते हुए कि वह अपनी कुन्द बुद्धि को बेकार ही अपने से बुद्धिमान लोगों का मुकाबला करने में खर्च कर रहा है टार्जन अपना रस्ता लपेट रहे थे। टीका इस समय उस पेड़ के एक दम नीचे आ पहुँची थी और उत्सुकता से ऊपर की ओर देख रही थी। चीता अपना पेट जमीन पर सटा कर धीरे धीरे आगे बढ़ रहा था। भाड़ी के बाहर निकल कर टीका के 'बालू' की ओर झपटने में उसे अब अधिक विलम्ब न था।

सहसा टार्जन की दृष्टि सामने की ओर जा पड़ी। उनके मुँह के शब्द मुँह में ही रह गये और वे नीचे जमीन पर कूद पड़े। टीका यह समझ कर कि वे कदाचित् उसके बालू की ओर जाया चाहते हैं अपने दाँत निकाल कर बड़े जोर से गुर्रा उठी परन्तु टार्जन उसके बगल से होते हुए आगे की ओर निकल गये और तेजी के साथ उस ओर चले जिधर टीका का बालू घास पर पड़ा हुआ था। टीका की निगाह भी उस ओर घूमी और तब टीका को टार्जन के इस प्रकार फुर्ती के साथ जमीन पर कूदने तथा मैदान की ओर झपटने का कारण मालूम हो गया। चीता इस समय भाड़ियों के बाहर निकल आया था और धीरे धीरे घास पर पड़े उसके बालू की ओर बढ़ रहा था।

भय के कारण जोर से चिल्ला कर टीका भी टार्जन के पीछे दौड़ी। चीते ने टार्जन को आगे बढ़ते देख लिया था। टीका का बच्चा उसके सामने ही पड़ा था। उसे ख्याल हुआ कि कदाचित् टार्जन उसका शिकार छीनने की इच्छा से ही उसकी ओर बढ़ रहे हैं। बड़े जोर से गुर्रा कर वह उनकी ओर झपटा।

टीका की चिल्लाहट सुन टाग भी सावधान हो गया और जमीन पर उतर कर उसकी सहायता के लिये दौड़ा। कितने ही और भी एप बन्दर चिल्लाते तथा गुर्राते हुए उसी ओर दौड़े परन्तु वे सब टीका के बच्चे से

बहुत अधिक फासले पर थे। टार्जन तथा चीता ठीक एक ही समय उस बच्चे के पास जा पहुँचे और उसके थोड़े फासले पर पहुँच एक दूसरे के सामने खड़े हो गये। दोनों ही इस समय अपने अपने दाँत बाहर निकाल कर एक दूसरे को घूरते हुये गुर्रा रहे थे।

चीता बालू पर इसलिये हमला करने से डरता था कि उसके ऐसा करने पर टार्जन को उस पर हमला करने का मौका मिल जायगा और टार्जन भी इसी भय से बच्चे को उसके सामने से हटाते हिचकते थे कि उनके झुकते ही चीता उन पर झपट पड़ेगा। इस प्रकार एक दूसरे को घूरते हुये वे दोनों खड़े ही थे कि टीका भी उनके पास जा पहुँची परन्तु इस समय वह चीते के भय से बहुत धीरे धीरे आगे बढ़ रही थी। अपने चिर शत्रु को सामने पा भय ने उसके मातृस्नेह को भी कुछ समय के लिये दबा दिया था।

उसके पीछे टाग भी बीच बीच में रुकता हुआ धीरे धीरे आगे बढ़ रहा था और उसके भी पीछे की ओर एप बन्दरों का एक भारी दल चीखता चिल्लाता तथा गुर्राता हुआ उसी ओर बढ़ा आ रहा था। चीते की तेज चमकीली आँखें टार्जन पर गड़ी हुई थीं और बीच बीच में रह रह कर वे उन भयानक एप बन्दरों पर भी जा पड़ती थीं जो क्रोध में भरे हुए उसी ओर बढ़े आ रहे थे। विवेक तो उसे पीछे घूम कर पुनः झाड़ियों में घुस जाने की राय दे रहा था परन्तु भूख तथा सामने घास पर पड़ा स्वादिष्ट मांस उसके मुँह में पानी भर रहा था अस्तु वह अपने स्थान पर ही डटा हुआ खड़ा रहा। धीरे धीरे उसने अपना एक पंजा टीका के बालू की ओर बढ़ाया और इसी समय टार्जन बिजली की भाँति उस पर दूट पड़े।

चीता भी फौरन ही सम्हल गया और अपने पंजे की एक ऐसी गहरी चोट उसने टार्जन के चेहरे पर दी कि यदि वे फुर्ती के साथ नीचे को झुक न गये होते तो उनके चेहरे का समूचा माँस ही नुच जाता। उनके पिता

का शिकारी छुरा इस समय उनके हाथ में था । नीचे झुके ही झुके वे चीते की ओर झपटे ।

चीता टीका के बालू को एक दम ही भूल गया । इस समय वह केवल अपने विपत्ती को पंजों से चीथने तथा अपने नोकीले दाँत उसके मांस में घुसाने के फेर में था । उधर टार्जन भी आज से पहले कितनी ही बार इन जानवरों से युद्ध कर चुके थे और अपने खतरे को भली भाँति समझते थे, फिर भी वे मृत्यु से जरा भी नहीं डरते थे और न मृत्यु के भय से उनकी हिम्मत ही में किसी प्रकार की कमी आती थी ।

नीचे की ओर झुके झुके ही वे फौरन चीते के पिछली ओर जा पहुँचे और फुर्ती से उसकी पीठ पर उछल कर अपने दाँत उन्होंने चीते की गर्दन में घँसा दिये । साथ ही उनके हाथ का छुरा भी उसकी बगल में घुस गया ।

चीता उन्हें लिये हुये ही घास पर गिर गया और इधर से उधर लोटता तथा बेतरह गुर्राता हुआ अपने विपत्ती का कोई भी अंग अपने मुँह अथवा पंजों के बीच में लेने का प्रयत्न करने लगा ।

जिस समय टार्जन और चीते में युद्ध हो रहा था टीका ने मौका पाया और अपने बालू को गोद में उठा कर पेड़ की एक ऊँची शाखा पर जा बैठी । अपने बच्चे को छाती से लगाये इस समय वह इन दोनों वीरों का युद्ध देख रही थी, साथ ही चिल्ला चिल्ला कर दाग तथा उसके पास खड़े अन्य एप बन्दरों को भी टार्जन की सहायता के लिये उत्साहित करती जाती थी ।

टीका की लानत मलानत सुन कर दाग तथा उसके अन्य साथी गुर्राते हुए आगे की ओर बढ़े परन्तु युद्ध में प्रवृत्त चीता एप बन्दरों के उस कोलाहल को बिल्कुल ही न सुन सका । सहसा उसने अपनी पीठ झुकभोर कर टार्जन को जमीन पर गिरा दिया और वे उसके पंजों के ठीक नीचे जा पड़े और दूसरे ही क्षण चीते के पिछले पंजे की एक भयंकर चोट ने घुटने तक उनकी समूची जंघा में एक गहरा घाव कर दिया ।

संभवतः रक्त की गंध ने पास ही खड़े एप बन्दरों को अपने आपसे बाहर कर दिया। परन्तु इसका विशेष श्रेय टाग पर ही था। थोड़ी ही देर पहले वह टार्जन पर बेतरह क्रोधित हो उठा था और इसी लिए इस समय कुछ देर तक वह चुपचाप खड़ा इन दोनों के युद्ध को बड़ी ही उत्सुकता से देखता रहा। ईश्वर जाने उसके दिमाग में इस समय कौन कौन से विचार चक्कर लगा रहे थे। अपने को पेड़ में उलटा लटका कर कष्ट पहुँचाने वाले पर। का एक घोर विमर्श आई देख न जाने उसे प्रसन्नता हो रही थी अथवा अपने बच्चे की जान बचाने वाले की ओर वह कृतज्ञता भरी दृष्टि से देख रहा था। पर खैर, वह सब जो कुछ भी हो इस समय टार्जन के शरीर से निकले रक्त की गंध ने उसे पागल सा कर दिया। उछल कर वह चीते के ऊपर जा पड़ा और उसके तेज तथा नौकीले दाँत चीते की गर्दन में जा घुसे।

उसकी देखा देखी अन्य एप बन्दरों ने भी एक साथ ही चीते पर हमला कर दिया और उनकी भयंकर कोलाहल से सम्पूचा जंगल प्रतिध्वनित हो उठा। बड़ा ही हृदय-विदारक दृश्य था। अकेले चीते के शरीर पर लपटे हुए कितने ही भयानक एप बन्दर उसके शरीर की धज्जियाँ उड़ा रहे थे।

पेड़ की डाल पर खड़ी टीका आवेश में आ कर डाल पर नाच रही थी और साथ साथ युद्ध में प्रवृत्त एप बन्दरों को बराबर उत्साहित भी करती जाती थी तथा उसके साथ साथ चिल्लातो हुई पमगा कम्मा आदि अन्य मादाएँ उस भयंकर कोलाहल को और भी ऊँचा कर रही थीं।

दूसरे ही क्षण चीते का क्षत विक्षत शरीर मुर्दा हो कर जमीन पर गिर पड़ा। वहाँ से आगे मील की दूरी पर दोपहर की निद्रा में पड़ा हुआ जंगल का राजा सिंह यकायक इस भयंकर कोलाहल को सुन कर जाग उठा और धीरे से आगे के घने जंगल में घुस कर लापता हो गया।

टार्जन उठ कर सीधे खड़े हो गये। उन्होंने चीते के शरीर पर अपना

बायां पैर रख दिया और उनके मुँह से एप बन्दरों के उसी विजयनाद ने निकल कर समूचे जंगल को प्रतिध्वनित कर दिया । एक के बाद दूसरे एप बन्दरों के मुँह से भी उनकी देखा देखी वैसी ही आवाज निकलने लगी और मादा एप बन्दरों ने जमीन पर उतर कर चीते के शरीर को इधर से उधर उछालना शुरू किया ।

टीका इस समय टार्जन के एक दम समीप थी । उन्होंने घूम कर उसकी ओर देखा । इस समय भी वह अपने बच्चे को बड़े ही प्रेम के साथ अपने कलेजे से चपकाये हुए थी । टार्जन ने पुनः उस बच्चे को गोद में लेने के लिये उसकी ओर अपना हाथ बढ़ाया । वे सोच रहे थे कि शायद पहले की तरह इस बार भी टीका अपने दाँत निकाल जोर से गुर्राउटेगी किन्तु ऐसा न हुआ और इसके बदले टीका ने धीरे से अपना बच्चा उनके हाथ पर रख दिया । इसके बाद वह उनके और नजदीक आ गई और उनके घाव से निकलता हुआ रक्त अपनी जवान से साफ करने लगी ।

टाग भी जिसके शरीर पर बहुत मामूली घाव लगे थे टार्जन के पास आ बैठा और बच्चे को हाथ में ले कर खेलाते हुए टार्जन को ध्यान से देखने लगा, तब वह भी टीका ही की भाँति उनके घाव का रक्त चाट चाट कर साफ करने के काम में उसकी सहायता करने लगा ।

टार्जन का ईश्वर

समुद्र के किनारे वाले अपने पिता के केविन में टार्जन को जो किताबें मिलीं उनमें उनका माथा खराब करने के लिये काफी मसाला भरा पड़ा था । बड़ी कड़ी मेहनत अथर्वसाय तथा सन्तोष के साथ उन्होंने कागज काला करने वाले उन छोटे छोटे कीड़ों का मतलब निकालने का प्रयत्न किया जो विचित्र विचित्र सूत्रों से किताबों के पन्नों पर अपना रंग जमाए हुए

थे। उन्होंने कम से कम इतना अवश्य समझ लिया कि जिस क्रम से वे कीड़े एक साथ बैठाये गये हैं उन हर एक भिन्न भिन्न टुकड़ों का कोई खास मतलब अवश्य है और वे किसी विचित्र ढंग से कुछ बताते हैं जिसका समझना उनकी शक्ति के बाहर है।

टार्जन किसी भी काम को अधूरा छोड़ने वाले जीव न थे। ज्यों ज्यों वे इस सम्बन्ध में माथापच्ची करने लगे, उन काले काले कीड़ों का मतलब समझने की इच्छा उनके चित्त में और भी प्रबल होने लगी। उन्हीं पुस्तकों में एक डिक्शनरी भी थी जिसे उन्होंने बड़े ही मतलब की चीज समझा। वर्षों की मेहनत के बाद तक कहीं जा कर वे उसका मतलब तथा इस्तेमाल समझने लगे। पर अब एक नए ही प्रकार की विचारधारा उनके मस्तिष्क में प्रवाहित होने लगी। यह एक प्रकार से घने जङ्गल के बीच शिकार ढूँढ़ना था। टार्जन और तरह के शिकार ढूँढ़ने में अच्छे सिद्ध-हस्त थे, अस्तु इस शिकार में भी उन्हें उकताहट नहीं हुई।

डिक्शनरी के इन शब्द-समूहों में कुछ शब्द ऐसे थे जिन्होंने उनका ध्यान विशेष रूप से अपनी ओर आकर्षित किया। एक छोटा सा ऐसा शब्द था जिसने खास तौर पर उनका ध्यान अपनी ओर खींचा। यह अंग्रेजी-भाषा का शब्द 'गॉड' (ईश्वर) था। इस तीन अक्षरों के शब्द में पहला अक्षर अन्य दोनों अक्षरों की अपेक्षा बड़ा था अस्तु उसे उन्होंने नर समझा, बाकी के दो अक्षरों को उन्होंने मादा समझा। जंगली कानून के हिसाब से सभी बड़ी तथा मजबूत चीजें नर मानी जाती हैं। डिक्शनरी में इस शब्द के जो अर्थ लिखे थे वे भी बहुत महत्व के थे। सर्व शक्तिमान्, सृष्टिकर्ता, दयानिधि आदि शब्दों से उसका मतलब निकाला गया था किन्तु इसका मतलब हल करने में उन्हें महीनों लग गया।

परन्तु विद्या के इस भण्डार को संग्रह करने में उनका जो कुछ भी समय खर्च हो रहा था उसे वे बेकार गया हुआ कभी भी नहीं समझते थे।

वे समझ गये कि यह ईश्वर संभवतः मंगानियों का राजा है। उन्हें इस बात का निश्चय नहीं था कि उसमें उनसे भी अधिक ताकत होगी। टार्जन अपने समान बलवान और बुद्धिमान जङ्गल में अन्य किसी भी जीव को नहीं समझते थे अस्तु वे भला ईश्वर को एकाएक अपने से भी बड़ा मानने के लिये किस प्रकार तैयार हो जाते ? ऐसा करना मानों उनके लिये स्वयं अपना अपमान करना था।

यद्यपि उनके पास जितनी भी पुस्तकें थीं उनमें से किसी में भी इस ईश्वर की कोई तस्वीर उन्हें नहीं दिखाई दी फिर भी उन्होंने इतना अवश्य मान लिया कि यह ईश्वर कोई बड़ा भारी तथा शक्तिशाली जीव है नहीं तो इन पुस्तकों में उसकी इतनी प्रशंसा कभी भी लिखी हुई नहीं होती। उन्होंने ऐसे स्थानों की तस्वीरें देखीं जहाँ ईश्वर पूजे जाते थे परन्तु ईश्वर की सूरत उन्हें कहीं भी देखने को न मिली। अब उन्हें चिन्ता हुई कि जैसे भी हो इस बात का पता लगाना चाहिये कि वास्तव में ईश्वर है कौन ?

ममगा नामक एप बन्दरी बहुत ही बूढ़ी हो गई थी और संसार की कितनी ही चीजें अब तक उसके देखने में आ चुकी थीं। उन्होंने उसी से सब से पहले ईश्वर के सम्बन्ध में पूछा परन्तु वह इस बारे में कुछ भी ठीक ठीक न बता सकी। उसने अपना यही विचार प्रगट किया कि बिजली पानी का बरसाना आदि सब 'गोरो' से ही आता है—एप बन्दरों की भाषा में 'गोरो' चन्द्रमा का नाम है—और इसका सबूत उसने यह दिया कि एप बन्दरों का दम-दम नाच चन्द्रमा की चाँदनी में ही होता है अस्तु उसे ही ईश्वर कहा जा सकता है। ममगा के सिवाय नुमगो को भी इसका पूरा निश्चय था परन्तु टार्जन के दिमाग में यह बात न जँची और उन्होंने इसे निश्चय करने का पक्का इरादा अपने मन में ठान लिया।

उस रात में वे जंगल के एक बड़े भारी वृक्ष पर जा चढ़े। चन्द्रदेव अपनी पूर्ण कला से आकाश में उदय हो कर अपनी शीतल चाँदनी चारों ओर फैलाए हुए थे। एक मजबूत डाल पर खड़े हो कर टार्जन ने अपना मुँह

उनकी ओर उठाया। इस समय वे जमीन से बहुत ऊँचाई पर थे परन्तु उन्होंने देखा कि वहाँ से भी चन्द्रमा उतने ही फासले पर दिखाई दे रहा है। उन्होंने समझा चन्द्रमा जान बूझ कर उनसे दूर भाग गया है।

जोर से चिल्ला कर टार्जन बोले, “डरो मत गोरो ! मेरे पास चले आओ ! विश्वास रखो टार्जन तुम्हें किसी प्रकार की भी हानि नहीं पहुँचावेगा !”

किन्तु चन्द्रमा उनके समीप नहीं आया। वे पुनः बोले, “यदि तुम्हीं वह ईश्वर हो जो पृथ्वी पर बिजली भेजता है पानी बरसाता है और हवा चलाता है तो यह बात मुझे बता दो।”

परन्तु चन्द्रमा ने उनकी इस बात का भी कुछ उत्तर न दिया। टार्जन को क्रोध चढ़ आया। अपनी छाती फुला कर उन्होंने एक बार लाल लाल आँखों से चन्द्रमा की ओर देखा और तब उनके मुँह से एप बन्दरों के विजयनाद ने निकल कर समूचे जङ्गल को प्रतिध्वनित कर दिया। इसके बाद वे बोले, “नहीं नहीं गोरो ! तुम कभी ईश्वर नहीं हो सकते, तुममें टार्जन के जितनी ताकत नहीं है। टार्जन भारी शिकारी है, भारी लड़ाका है। टार्जन के ऐसा शक्तिशाली संसार में दूसरा कोई भी जीव नहीं है। कायर गोरो ! नीचे उतर आओ और टार्जन से लड़ो ! टार्जन तुम्हें मार डालेगा। हिम्मत हो तो आओ !”

परन्तु चन्द्रमा ने उनकी बातों का कोई भी उत्तर न दिया। संयोग से बादल के एक टुकड़े ने आ कर चन्द्रमा को कुछ देर के लिये ढक लिया। टार्जन समझ गये कि उनसे डर कर ही उसने अपना मुँह छिपा लिया है। वे पेड़ से नीचे उतर आये और नुमगो को जगा कर बोले, “देखी तुमने टार्जन की ताकत ! उसके भय से गोरो ने भी अपना मुँह छिपा लिया !”

नुमगो को नींद आ रही थी। उसने टार्जन को अपने पास से चले जाने के लिये कहा परन्तु टार्जन बोले, “किन्तु मुझे कम से कम यह तो बता दो कि आखिर ईश्वर है कौन और उससे कहाँ पर मुलाकात होगी ?

तुम बहुत बूढ़े हो, तुमने अवश्य उसे देखा होगा ; उसकी सूरत कैसी है ?”

नुमगो ने चिढ़ कर उत्तर दिया, “मैं ही ईश्वर हूँ ! अब चुपचाप सो जाओ और मुझे तंग न करो !!”

टार्जन कुछ देर तक चुपचाप नुमगो की ओर देखते रहे । एक हलकी गुर्राहट उनके मुँह से निकली, उनके धमकीले दाँत नुमगो के कंधे में जा धँसे और मजबूत उँगलियों ने उसका गला जा दबोचा । दो बार जोर से झकझोर कर उन्होंने नुमगो को छोड़ दिया और तब पूछा, “कहो क्या अब भी तुम ही ईश्वर हो !”

नुमगो बोला, “नहीं नहीं ! मैं तो केवल एक गरीब बूढ़ा एप बन्दर हूँ ! तुम गोमंगानियों से जा कर पूछो । उनके भी शरीर तुम्हारे ही समान प्रिना बाल के हैं और वे हैं भी बड़े ही समझदार, अवश्य वे जानते होंगे कि ईश्वर जैन है और कहाँ रहता है !!”

टार्जन के दिल में यह बात जँच गई । उन्होंने नुमगो को छोड़ दिया । मोंगा के गाँव वालों से उनकी गहरी शत्रुता थी फिर भी उनके लिये ईश्वर का पता लगाना आवश्यक था अस्तु वे तेजी के साथ मोंगा के गाँव की ओर बढ़े । उन्हें विश्वास हो गया कि वहाँ उन्हें अवश्य ईश्वर का पता लग जायगा ।

यदि उन्हें वहाँ ईश्वर मिल गया तो वे उससे मुकाबला करने के लिये हर तरह से तैयार भी थे । उन्होंने ईश्वर को देखा नहीं था अस्तु उसका सामना करने के लिये तीर भाले घास के रस्से आदि में कौन हथियार अधिक उपयुक्त होगा यह उनकी समझ में नहीं आ रहा था फिर भी उन्हें विश्वास था कि यदि ईश्वर उनसे लड़ेगा तो वे उसे परास्त किये बिना न छोड़ेंगे । वे ईश्वर से कितने ही सवाल किया चाहते थे और इसके लिये पहले ही से तैयार हो कर आगे बढ़ रहे थे ।

दूसरे दिन शाम को वे मोंगा के गाँव में जा पहुँचे । सदा की भाँति बिना किसी शब्द के वे गाँव के ठीक ऊपर वाले एक विशाल वृक्ष पर जा

बैठे। उनके ठीक नीचे सड़क पर गाँव वालों की गहरी भीड़ जमा थी जिन्होंने अपने चेहरे तथा शरीर पर चित्र विचित्र चित्रकारियाँ बना रखी थीं। टार्जन ने उन्हें इस प्रकार रंगे-झुए आज से पहले न देखा था। उनके बीच में उन्होंने एक जीव को और भी देखा जो बहुत ही लम्बा था। पैर उसके ठीक आदमी की तरह थे परन्तु सिर भैंस का था, एक दुम उसके पीछे की ओर लटक रही थी, और एक हाथ में जीबरा की एक दुम तथा दूसरे में कुछ तीर थे।

टार्जन की तबीयत खिल उठी। उन्होंने सोचा कहीं ऐसा तो नहीं कि संयोग से इस समय ईश्वर ही से उनकी भेंट हो गई हो। वास्तव में यह जीव न तो आदमी है न जानवर अस्तु सिवाय ईश्वर के यह और हो ही कोन सकता है? टार्जन उसके हर एक हाव भाव को ध्यान से देखने लगे। उन्होंने देखा कि उसकी सूरत पर निगाह पड़ते ही जंगली लोग फौरन पीछे हट जाते थे, सम्भवतः उसकी गुप्त शक्ति का उन्हें बढ़ा ही भय हो रहा था।

इसी समय उन्होंने देखा कि वह देवता मुँह से कुछ बोल रहा है और लोग एक दम से चुपचाप खड़े उसकी बातें सुन रहे हैं। टार्जन ने सोचा सिवाय ईश्वर के और किसी में भी इतनी शक्ति नहीं है कि इन जंगलियों के कलेजे में बिना भाले अथवा तीर की सहायता के इतना भय पैदा कर सके अथवा उनका मुँह इस प्रकार बन्द कर सके। ज्यादा बकवादी होने के कारण टार्जन इन जंगलियों को बड़ी ही तुच्छ दृष्टि से देखते थे। छोटे छोटे एप बन्दर भी बड़े बकवादी होते हैं पर शत्रु की सूरत देखते ही भाग जाते हैं। बड़े बड़े विशालकाय एप बन्दर बोलते बहुत कम हैं लेकिन जरा सी उत्तेजना होते ही अपने शत्रुओं पर दूट पड़ते हैं। न्यूमा सिंह अधिक बोलता नहीं परन्तु यही सब देख सुन कर वे बकवादियों से बड़ी घृणा करते थे।

टार्जन ने उस रात में वहाँ सभी बातें ऐसी विचित्र देखीं कि उनमें से

एक भी उनकी समझ में न आई। उन्होंने सोचा कि संभवतः वे सभी बातें ईश्वर से सम्बन्ध रखने वाली होंगी इसी से उनकी समझ में नहीं आई। तीन हवशी युवकों को किसी खास रस्म के अनुसार उन्होंने युद्ध के भालों से आभूषित होते देखा जिसे इन युवकों को प्रदान करते समय वहाँ के जादूगर ने विचित्र विचित्र प्रकार के क्रूर आचरण करके तभी प्रदान किया था।

बड़ी ही दिलचस्पी के साथ उन्होंने उन तीनों युवकों की कलाईयों को चोर उसमें से निकले रक्त से मोंगा के शरीर के रक्त का परिवर्तन होते देखा। उन्होंने यह भी देखा कि जीबरा की दुम पानी के एक बरतन में डुबोई गई और उस जादूगर द्वारा कई बार चारों ओर तथा ऊँचे नीचे घुमाई जा कर उन युवकों के शरीर पर झाड़ दी गई। भला टार्जन को क्या मालूम कि उस जादू के पानी में क्या असर है? यदि उन्हें यह मालूम हो जाता कि जीबरा की दुम द्वारा उस पानी के शरीर पर छिड़के जाने से मनुष्य युद्ध में अजेय हो जाता है तो कदाचित् जीबरा की वह दुम तथा पानी का वह बरतन ही वे वहाँ से लापता कर देते! हाँ इतना उन्होंने अवश्य देखा कि उस दुम वाले ईश्वर के हर एक हाव भाव को देख आस पास खड़े जंगली अफसर बैत की तरह काँप उठा करते थे।

जितना ही टार्जन इन विचित्र बातों को देखते गये उतना ही उनका विश्वास उत्तरोत्तर दृढ़ होता गया कि अवश्य उनके सामने साक्षात् ईश्वर ही खड़ा है। इस विचार के आते ही उनके मन में ईश्वर से दो एक बातें करने की इच्छा पैदा हुई। टार्जन का सोचना और काम करना एक साथ ही होता था।

घेरे के बाहर की ओर समीप में ही एक सिंह जोर से दहाड़ उठा। हवशी लोग चिहुँक उठे और उस स्थान पर भयानक सन्नाटा छा गया। जादूगर भी अपनी तमाम जादूगरी बन्द कर के एक दम सक्ते की सी हालत में पत्थर की मूर्ति की तरह खड़ा हो गया।

आज उसके बड़े ही लाभ का दिवस था। तीनों सुबकों को दीक्षित करने के अवसर पर उसे तीन हृष्ट पुष्ट बकरे, बहुत सा अनाज, तथा माला के कई दाने पुरस्कार में मिलने वाले थे और साथ ही ताँबे की तार का एक टुकड़ा भी मिलने वाला था जो उपस्थित मंडली उसके सम्मान स्वरूप उसे भेंट करने को थी।

न्यूमा सिंह की आवाज अभी उस स्थान पर गूँज ही रही थी कि सहसा वहाँ के भयानक सनाटे को तोड़ती हुई किसी औरत की तीखी आवाज ने उन लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। टार्जन पेड़ पर से कूद कर गाँव की सड़क पर आ खड़े हुये थे। उनके चारों ओर इस समय शत्रु ही शत्रु भरे पड़े थे परन्तु इस बात की उन्हें जरा भी चिन्ता न थी।

क्षण भर तक टार्जन खड़े उस जादूगर की ओर देखते रहे। हर एक आदमी की निगाह इस समय उन्हीं पर थी किन्तु कोई एक अंगुल भी अपने स्थान से हिलता नहीं था मानों सभी को लट्ठा मार गया हो। अपनी मस्तानी चाल से टार्जन धीरे धीरे भैसे के सिर वाले उस जीव की ओर बढ़े।

उसे घेर कर खड़े जंगलियों में भयंकर खलबली मच गई। महीनों से जंगल के इस दैत्य का भय उन्हें पागल बना रहा था। गाँव के बीच से उनकी तैयारी हुई तीरें अकसर लापता हो जाती थीं, उनके योद्धा गाँव में तथा आस पास की पगडंडियों पर अकसर ही मुर्दा पड़े पाये जाते थे और कभी कभी उनकी लाशें गाँव की सड़कों पर ऊपर की ओर से इस प्रकार गिरा करती थीं मानों वे सीधे आसमान से ही चली आ रही हों।

इनमें से दो चार ऐसे भी थे जिनकी निगाह जंगल के इस दैत्य पर पहले भी पड़ चुकी थी और उन्होंने उनका जो हुलिया गाँव वालों को बताया था उससे प्रायः सभी उनकी खूरत शक्ल से परिचित हो गये थे

और इस बात को अच्छी तरह जान गये थे कि उन पर आने वाली उन सब आपत्तियों का कारण वे ही हैं। यदि और कोई मोका होता अथवा दिन का समय होता तो कदाचित् वे लोग उनके ऊपर एक साथ हमला कर देते परन्तु एक तो रात्रि का समय दूसरे जादूगर का आतंक इस प्रकार उन पर छाया हुआ था कि टार्जन पर निगाह पड़ते ही वे सब अपने को जरा भी सम्हाल न सके और जिधर जिसने रास्ता पाया सर पर पैर रख कर भाग निकला। थोड़ी ही देर में केवल एक आदमी को छोड़ कर बाकी सभी लापता हो गये और यह आदमी वही जादूगर था जो काँपते कलेजे से चुपचाप अपने स्थान पर खड़ा भयभीत दृष्टि से टार्जन की ओर देख रहा था।

टार्जन ने उससे सवाल किया—“क्या तुम ईश्वर हो ?”

जादूगर यद्यपि टार्जन के सवाल का अर्थ विल्कुल ही न समझ पाया फिर भी खतरा सिर पर आ गया देख अपने को सम्हाल फुर्ती के साथ चक्कर काटता हुआ वह टार्जन के ठीक सामने आ कर खड़ा हो गया। पैर अपने उसने कुछ फासले पर कर दिये और आगे की ओर झुक कर कुछ बुदबुदाने लगा। इसके बाद जोर से “बू” कह कर वह सीधा तन कर खड़ा हो गया मानों वह टार्जन को डराया चाहता हो, परन्तु उसकी इस जादूगरी का टार्जन पर कुछ भी असर न पड़ा।

टार्जन भी अधिक देर तक चुपचाप खड़े न रहे। वे ईश्वर की खोज में निकले थे और अब यकायक उसे सामने पा भला वे स्थिर कैसे रह सकते थे ? उधर वह जादूगर यह देख कर कि उसके इस मंत्र का उस जंगली दैत्य पर कोई असर न पड़ा दूसरे उपाय में लगा। अपने हाथ वाली जीवरा की दुम पर थूक कर उसने दूसरे हाथ के तीरों को कई बार उसके ऊपर घुमाया और इस बीच धीरे धीरे पीछे हटता हुआ उस दुम से कुछ बातें करता रहा। इसके बाद उसने टार्जन के चारों ओर चक्कर काटना शुरू किया। धीरे धीरे यह चक्कर छोटा होने लगा और जब वह

टार्जन के एकदम समीप आ पहुँचा तो उनके ठीक सामने खड़ा हो कर उसने उनके और अपने बीच में जीबरा की दुम से एक हवाई लकीर खींच दी, इसके बाद बोला—“इस लकीर को तुम किसी तरह भी पार नहीं कर सकते। इसे पार करते ही तुम मुर्दा हो कर जमीन पर गिर पड़ोगे। मेरी माँ साँपिन थी और बाप घड़ियाल ! मैं केवल सिंहों का कलेजा तथा चीतों की अँतड़िया खा कर अपनी भूख शान्त करता हूँ। छोटे छोटे बच्चों का मैं सुबह के वक्त नाश्ता करता हूँ। जंगल के दैत्य मेरे गुलाम हैं। दुनियाँ में मेरे समान ताकतवर कोई दूसरा जादूगर नहीं है। मैं किसी से भी नहीं डरता क्यों कि मैं मर ही नहीं सकता। मैं.....!!”

परन्तु इससे अधिक वह कह न सका। टार्जन को अपनी बनाई लकीर पार कर अपनी तरफ बढ़ते देख वह बेतहाशा भाग खड़ा हुआ।

जादूगर को भागते देख टार्जन को क्रोध चढ़ आया। कम से कम ईश्वर की ओर से जिस प्रकार की धारणा उनके दिल में बैठी हुई थी उसके योग्य तो यह काम था ही नहीं। वे जोर से चिल्ला उठे, “लौट आओ ईश्वर लौट आओ ! टार्जन तुम्हें किसी प्रकार की भी हानि नहीं पहुँचावेगा !!”

परन्तु भला जादूगर को उनकी इन बातों को सुनने की ताब कहाँ थी ? और यदि वह सुनता भी तो भला उनका मतलब ही क्या समझ सकता था ? वह तो भोपड़ियों के आगे की ओर आग पर चढ़े बरतनों तथा अधबुझी अभिराशियों को लाँघता हुआ सीधा अपनी भोपड़ी की ओर भागा जा रहा था।

अब टार्जन बर्दाश्त न कर सके और तेजी के साथ उसके पीछे दौड़े। भला उनकी तेजी को वह जादूगर कहाँ पा सकता था ? अपनी भोपड़ी के दर्वाजे पर पहुँचते पहुँचते तक वह टार्जन द्वारा पकड़ लिया गया। एक मजबूत हाथ उसके कंधे पर पड़ा और भैंस का चेहरा उसके मुँह पर

से खिंच कर उनके हाथ में आ रहा। टार्जन ने एक काले हबशी को दौड़ कर एक भोपड़ी में घुसते देखा।

टार्जन आश्चर्य में डूब गये। क्या यही वह जीव था जिसे वे अब तक ईश्वर समझे बैठे थे? क्रोध में भरे हुए वे भोपड़ी के अन्दर घुस गये। भीतर के अन्धकार में उन्होंने उसे एक कोने में दीवार के साथ चिपके पाया। फौरन ही उसे पकड़ कर वे भोपड़ी के बाहर चाँद की रोशनी में खींच लाये।

जादूगर ने अपने को छुड़ाने का बहुत कुछ प्रयत्न किया परन्तु टार्जन के मजबूत हाथों द्वारा उसकी खोपड़ी पर पड़ने वाली दो चार चपतों ने ही उसका दिमाग ठिकाने ला दिया और वह समझ गया कि छूटने की कोशिश करना बेकार है। उसे बड़े जोर से झकझोरते हुए टार्जन बोले, “हाँ तो तुम्हीं ईश्वर हो! यदि तुम ईश्वर हो तो टार्जन तुमसे कहीं अधिक बड़ा है !!”

उस हबशी के कान में जोर से चिल्ला कर टार्जन बोले, “मैं टार्जन हूँ! जमीन पर, आकाश में, पानी में, टार्जन के मुकाबले का और कोई भी जीव नहीं है। टार्जन ने इन्हीं हाथों से अकेले न्यूमा सिंह तथा चीते को मारा है। मंगानियों में टार्जन सब से अधिक ताकतवर है। टार्जन ईश्वर से भी बड़ा है, देखो !”

इतना कह कर टार्जन ने जादूगर की गर्दन पकड़ ली और उसे जोर से उमेठा। जादूगर मारे दर्द के चीख उठा और तब बेहोश हो कर जमीन पर गिर पड़ा।

उसके ऊपर टार्जन ने अपना पैर रख चन्द्रमा की ओर अपना मुँह उठाया और तब उनके मुँह से एप बन्दरों के भीषण विजयनाद ने निकल कर समूचे गाँव को प्रतिध्वनित कर दिया। इसके बाद उस बेहोश जादूगर के हाथ से जीबरा की टुम को खींच टार्जन गाँव के बीचों-बीच से हो कर एक ओर को रवाना हो गए।

कितनी ही भोंपड़ियों के दर्वाजों की दरार से भयभीत आँखें उनकी ओर देख रही थीं। जंगलियों के सद्गार ने भी जादूगर के साथ उनका व्यवहार शुरू से आखीर तक देख लिया था। उसे इस बात का बहुत बड़ा ख्याल पैदा हुआ। मोंगा बड़ा ही समझदार था। उसने अपने जादूगरों पर आज तक आवश्यकता से अधिक कभी भी विश्वास नहीं किया था। फिर भी वह अच्छी तरह जानता था कि जनता के ऊपर जादूगरों का जो प्रभाव है उससे अपनी हुकूमत के काम में उसे बड़ी भारी सहायता मिलती है। कितनी ही बार जनता पर जादूगरों के इस प्रभाव द्वारा वह लाभ भी उठा चुका था।

मोंगा और जादूगर ने कितनी ही बार एक साथ काम करके अच्छा लाभ उठाया था, परन्तु इस समय यदि गाँव वाले जादूगर की हालत देख पाते तो इसमें सन्देह नहीं कि उसकी आज तक की बनी बनाई शान शौकत घड़ी भर में पानी में मिल जाती। इसके बाद से जनता उस जादूगर की कभी भी इज्जत न करती और न उसका कुछ प्रभाव ही उनके ऊपर रह जाता। इसका प्रतीकार करने के लिये मोंगा को कुछ न कुछ करना आवश्यक था अस्तु अपना भारी बरछा उसने हाथ में ले लिया और बड़ी ही सावधानी के साथ टार्जन के पीछे पीछे खाना हुआ।

टार्जन इस समय गाँव की एक सड़क पर अपनी मामूली चाल से बढ़े जा रहे थे। ऐसा मालूम होता था मानों उन्हें किसी का भी भय न हो किन्तु उनकी सभी इन्द्रियाँ सावधानी के साथ अपना अपना काम कर रही थीं। मोंगा भी चुपचाप पैर रखता हुआ क्षण क्षण में उनके समीप होता जा रहा था। यदि उसके आगे इस समय कोई हिरन भी जा रहा होता तो कदाचित् उसे मोंगा का अपने पीछे आना न मालूम होता।

धीरे धीरे वह टार्जन के एक दम समीप पहुँच गया। अपने हाथ के बरछे को हवा में उठा कर उसने पीछे की ओर ताना। वह अपने तथा गाँव भर के इस शत्रु को हमेशा के लिये इस दुनिया से बिदा कर दिया

चाहता था। इस जोर के साथ वह अपना हथियार अपने इस भयंकर शत्रु पर चलाया चाहता था कि उसका काम हमेशा के लिये तमाम हो जाय।

परन्तु मोंगा का ख्याल ठीक नहीं उतरा। वह यही समझे हुए था कि वह किसी आदमी का पीछा कर रहा है। उसे भला क्या मालूम कि जंगल के अन्य जीवों की भाँति टार्जन को एक छुटी इन्द्रिय भी है जो सूक्ष्म से सूक्ष्म आवाज तथा गन्ध को क्षण भर में पहिचान सकती है। जो बात मोंगा के दिमाग में किसी प्रकार भी नहीं आ सकती थी वही इस समय टार्जन के लिये बड़े ही काम की चीज थी। संयोग से हवा का रुख उसी ओर था जिस ओर टार्जन इस समय बढ़े जा रहे थे और वह अपने साथ साथ पीछे की ओर की सभी तरह की गन्ध टार्जन के नाक तक पहुँचा रही थी और यही कारण था कि टार्जन को फौरन ही इस बात का पता चल गया कि कोई उनका पीछा कर रहा है। हबशी के शरीर से निकली हुई गन्ध ने उन्हें यहाँ तक बता दिया था कि उनका पीछा करने वाला कोई काला हबशी है।

वे उसके पीछा करने का मतलब भी शीघ्र ही समझ गये और इसी लिए जैसे ही मोंगा उनके इतने समीप पहुँचा कि अपने हाथ का भाला उन पर चला सके वे तेजी के साथ पीछे की ओर घूम गये। उनकी यका-यक ऐसी फुर्ती देख मोंगा घबरा गया और उसका चलाया हुआ भाला बहक कर उनके ऊपर से निचल गया, उधर जैसे ही टार्जन मोंगा के ऊपर झपटे मोंगा अपने योद्धाओं को चिल्ला चिल्ला कर पुकारता हुआ तेजी के साथ पास की एक भोपड़ी के खुले हुए दरवाजे की ओर भागा।

किन्तु मोंगा चाहे कितना भी गला फाड़ कर क्यों न चिल्लावे टार्जन को उसके समीप पहुँचते अधिक विलम्ब नहीं लगा। सिंह की तरह दहाड़ मारते हुए टार्जन फौ न ही उसके समीप जा पहुँचे और उनके मुँह से

निकली इस आवाज को सुन मोंगा के शरीर का खून और भी पानी हो गया ।

उसके अन्य साथियों ने भी इन दोनों के मुँह से निकली हुई आवाजें सुनीं और अपनी भोपड़ियों के अधखुले दरवाजों की राह भौंक कर उनकी ओर देखा । और समय होता तो कदाचित वे हाथों में बरछा ताने हुए अपने सद्गार की सहायता को जा पहुँचते, सिंह तक का मुकाबला करने में वे कभी पीछे हटने वाले जीव न थे, परन्तु जङ्गल के इस दैत्य ने उनके दिलों में इतनी भारी दहशत पैदा कर दी थी कि उनमें से कोई भी अपने दरवाजे के बाहर न निकला ।

भय से चीख कर मोंगा जमीन पर अँधे मुँह गिर पड़ा । वह इस समय ऐसा भयभीत हो रहा था कि अपनी रक्षा करने तक की उसे सुधि न रही । वह केवल जमीन पर पड़ा जोर जोर से चिल्ला रहा था और टार्जन उसकी पीठ पर सवार थे, मगर सहसा टार्जन उसके ऊपर से हट कर एक ओर हो गये और उसे पकड़ कर उन्होंने चित्त कर दिया । उसका गला अब टार्जन के ठीक सामने आ गया । टार्जन के हाथ में इस समय उनके पिता का शिकारी छुरा था जिसे मोंगा के गले में भोंकने के लिये उन्होंने जोर से हवा में उठाया ।

मोंगा भय से चीख उठा और एक ऐसी भापा में जिसे टार्जन जरा भी समझ नहीं सकते थे उनसे अनुनय विनय करने लगा । इस समय पहिली बार टार्जन की निगाह मोंगा के चेहरे पर पड़ी । वह सूरत एक बहुत ही बूढ़े आदमी की थी जिसके चेहरे पर बेतरह झुर्रियाँ पड़ी हुई थीं तथा गर्दन का मांस एक दम सूख गया था । उसे देख टार्जन को बूढ़े बन्दरों की याद आ गई मगर आज तक किसी भी जङ्गली जीव की आँखों में उन्होंने ऐसे भय तथा कर्षणा के चिह्न नहीं देखे थे जैसे कि इस समय उन्हें मोंगा के चेहरे पर दिखाई दिये ।

एक क्षण के लिये उनका हाथ हवा में ही रुका रह गया किन्तु ऐसा

क्यों हुआ यह उनकी समझ में न आया। आज तक उनके जीवन में कभी ऐसा नहीं हुआ था। वह बूढ़ा उनकी आँखों में एक निरीह हड्डियों का ढाँचा मात्र दिखाई दिया। शत्रु के प्रति उनके मन में एक नवीन भाव अर्थात् दया का आविर्भाव हुआ।

बिना उसे किसी प्रकार की भी हानि पहुँचाये टार्जन उसकी छाती पर से उठ खड़े हुए और अपना सिर ऊँचे उठाये गाँव की सड़क से होते हुए एक ओर चल दिये। सामने ही एक पेड़ की बहुत ही नीची डाल थी जिस पर वे उच्चक के चढ़ गये और देखते देखते गाँव वालों की आँखों ने ओझल हो गये।

एप बन्दरों की ओर जाती समय रास्ते भर टार्जन उस छिपी हुई शक्ति पर विचार करते रहे जिसने मोंगा की हत्या करने के लिये उठे हुये उनके हाथ को यकायक हवा में ही रोक दिया था। ऐसा मालूम होता था कि उनसे भी भारी किसी शक्ति ने उन्हें मोंगा की हत्या न करने की आज्ञा दी थी, परन्तु वह शक्ति क्या है इसे वे बहुत प्रयत्न करने पर भी समझ न सके। उनकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि आखिर वह कौन सी शक्ति है जो उनके कार्यों पर नियन्त्रण रखती तथा यह बताती है कि उन्हें कौन सा काम करना चाहिये तथा कौन सा न करना चाहिये।

एप बन्दरों की मंडली के पास पहुँच जिस समय टार्जन रात्रि के समय पेड़ की एक ऊपरी मचान पर सोने के लिये गये यही विचार उनके मस्तिष्क में घूम रहा था और इसे सोचते सोचते ही वे गंभीर निद्रा में निमग्न भी हो गये।

जिस समय उनकी आँखें खुलीं, सूर्य भगवान बहुत ऊपर चढ़ आये थे और सब एप बन्दर खाने के फिराक में इधर से उधर दौड़ रहे थे। टार्जन चुपचाप बैठे उनका तमाशा देखने लगे। फूल की एक कली धीरे धीरे अपना मुँह खोल रही थी। उनकी निगाह उस पर पड़ी और वे उत्सुकता से उसे देखने लगे। आज से पहले भी हजारों ही बार वे ऐसा

दृष्य देख चुके थे किन्तु इस ओर उन्होंने अधिक ध्यान नहीं दिया था, पर आज इसमें उन्हें एक नवीनता दिखाई दी। वे सोचने लगे—“इन फूलों को कौन खिलाता है ? कौन उसे छोटी कली से इतने सुन्दर फूल में परिवर्तित कर देता है ? और आखिर ऐसा होता ही किस लिये है। सिंह पहले पहल कहाँ से आया ? सब से पहला पेड़ किसने रोपा ? चन्द्रमा नित्य आसमान पर चक्कर काटता हुआ अपनी चांदनी से संसार के अन्धकार को किसकी आज्ञा से दूर किया करता है ? और सूर्य ! यह पहले पहल कैसे पैदा हुआ तथा इसे किसने बनाया ?

जंगल में रहने वाले सभी जीव पेड़ क्यों न हुए ? पेड़ ही दूसरे जीव क्यों नहीं बन गये ! जंगल के सब जीवों की शक्लें एक दूसरे से क्यों नहीं मिलतीं, उन्हें यह अजीब अजीब रूप किसने दिया, आखिर ये सब आये कहाँ से ?

सहसा एक नया विचार टार्जन के मस्तिष्क में उत्पन्न हुआ। डिक्शनरी में ‘ईश्वर’ शब्द के दिये हुये अर्थों में उन्हें ‘उत्पत्ति करने वाला’ भी एक अर्थ मिला था। अब इस अर्थ का मतलब धीरे धीरे उनकी समझ में आने लगा परन्तु ठीक ऐसे ही समय कुछ दूर से आती हुई किसी की पतली तथा दर्दनाक चीख ने उनका ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया। यह चीख गाजन की थी। गाजन टीका के बालू का नाम था। एप बन्दरों की भाषा में गाजन शब्द का अर्थ लाल चमड़ा है। गाजन के शरीर पर एक विशेष प्रकार के लाल रंग के मुलायम बाल थे अस्तु उसका नाम गाजन पड़ गया था।

चीख के थोड़ी ही देर बाद उसी बच्चे की एक दूसरी चीख उनके कानों में पड़ी परन्तु यह पहले से भी अधिक दर्द भरी थी। टार्जन के शरीर भर में मानो भिजली दौड़ गई। तीर की तरह तेजी के साथ वे उसी ओर चले जिस ओर से वह आवाज आई थी। सामने की ओर उन्होंने किसी एप बन्दर की भयानक गुर्राहट सुनी। वह टीका थी जो अपने बच्चे की

रक्षा करने के लिये तेजी के साथ आगे की ओर बढ़ी जा रही थी। टार्जन समझ गये कि अवश्य वह बच्चा किसी भारी खतरे में पड़ गया है। टीका की आवाज में भय तथा क्रोध दोनों ही का आभास पा कर उन्होंने इस बात का अनुमान कर लिया था।

एक पेड़ से दूसरे पर फुर्ती के साथ उछलते हुए टार्जन इस समय तेजी के साथ आगे की ओर बढ़े जा रहे थे। इस समय तक उस बच्चे की चिल्लाहट बेतरह बढ़ गई थी और चारों ओर से एप बन्दरों का भुगड़ फूटता फाँदता तथा जोर जोर से गुराँता हुआ उसी आवाज की ओर बढ़ा जा रहा था।

परन्तु शरीर में उन सभी से हलके होने के कारण टार्जन सबसे आगे निकल गये और सब से पहले उस स्थान पर पहुँचे जहाँ से उस बच्चे के चिल्लाने की आवाजें आ रही थीं किन्तु वहाँ उन्होंने जो दृश्य देखा उससे उनका समूचा शरीर सिहर उठा, क्योंकि इस समय उनका शत्रु एक ऐसा जीव था जिससे वे जङ्गल के अन्य जीवों की अपेक्षा कहीं अधिक नफरत करते थे।

पेड़ की एक मोटी शाख में चपटा हुआ हिस्टा अजगर टीका के छोटे बच्चे गाजन को अपने शरीर से लपेटे हुए था। तमाम जङ्गल में टार्जन को हिस्टा अजगर से बढ़ कर भयावनी वस्तु और कोई भी नहीं दिखाई देती थी। एप बन्दर भी अजगर से बहुत ही नफरत करते थे और साथ ही वे चीते तथा सिंह से भी अधिक अपने इस शत्रु से भय खाते थे।

टार्जन को भली भाँति मालूम था कि टीका भी अपने इस चिर शत्रु से बहुत अधिक भय खाती थी फिर भी उस स्थान पर पहुँचते ही उन्होंने आश्चर्य के साथ देखा कि टीका यकायक उछल कर उस अजगर के शरीर पर जा दूटी और यद्यपि अजगर ने क्षण भर में ही उसे भी अपने शरीर द्वारा लपेट लिया फिर भी उसके चेहरे से भय के कोई भी चिह्न प्रकट न

हुए बल्कि वह अपने शरीर की सम्पूर्ण शक्ति खर्च कर के अपने बच्चे को उस अजगर के शरीर से निकालने का प्रयत्न करने लगी ।

टीका अजगर से कितना भय खाती है इसे भली भाँति जानने वाले टार्जन को अपनी आँखों पर विश्वास न हुआ । टीका का इस प्रकार यकायक दौड़ कर अजगर के पास पहुँच जाना उन्हें एक विचित्र बात मालूम हुई । टार्जन स्वयं अजगर से बहुत भय खाते थे । अपनी इच्छा से आज तक उन्होंने कभी भी किसी अजगर के शरीर में हाथ नहीं लगाया था । परन्तु इस भय का कारण क्या था इसे वे आज तक नहीं समझ पाये थे । संसार में वे किसी भी जीव से भय नहीं खाते थे फिर इस जीव से उन्हें भय क्यों मालूम होता था ? शायद एप बन्दरों के बीच में रह कर उस जीव से भय करने का उन्हें एक अभ्यास सा पड़ गया था कारण सभी एप बन्दर उससे इसी प्रकार भय खाते तथा नफरत करते थे ।

फिर भी टीका की भाँति टार्जन भी उस अजगर के पास जाते जरा भी न हिचकिचाये । फुर्ती के साथ वे उसके पास जा पहुँचे । परन्तु दूसरे ही क्षण उस अजगर ने उन्हें भी अपने शरीर द्वारा लपेट लिया ।

पेड़ से चिपटा हुआ वह अजगर इन तीनों को इस प्रकार लपेटे हुये था मानों उसे इन लोगों का बोझ कुछ मालूम ही न हो रहा हो किन्तु क्रमशः इनके शरीर पर का दबाव बढ़ता जाता था । उन्हें ऐसा मालूम हुआ मानों उनके शरीर की हड्डी हड्डी तक थोड़ी ही देर में चूर हो जायगी । अपना शिकारी छुरा निकाल कर टार्जन ने मूठ तक अपने उस भयंकर शत्रु के शरीर में घुसेड़ दिया किन्तु वे भली भाँति समझते थे कि अजगर को कारी जल्म पहुँचने के पहले ही स्वयम् उनके प्राण निकल जायेंगे । पर जो कुछ भी हो उन्होंने आशा का परित्याग नहीं किया था और अपनी शक्ति भर उससे युद्ध कर रहे थे ।

अजगर का भारी खुला हुआ मुँह उनके समीप आ पहुँचा । हिरन तक को एक ही घार में समूचा मुँह में रख लेने वाला वह भयंकर जीव

टार्जन को भी अपने मुँह में लेने के लिये उनकी ओर अपना मुँह बढ़ा रहा था जो अब टार्जन के एक दम समीप आ गया था। टार्जन ने फौरन ही एक हाथ से तो उसकी गर्दन पकड़ी और दूसरे हाथ से अपना शिकारी छुरा दस्ते तक उसके दिमाग में घुसेड़ दिया।

अजगर एक बार काँप कर एक ओर को लटक गया और टार्जन के शरीर का दबाव ढीला पड़ गया। अजगर इस समय मृत्यु-चञ्चलता में छटपटा रहा था किन्तु इस हालत में भी दस पंद्रह आदमियों की जान लेने के लिये उसके शरीर में काफी ताकत थी।

बड़ी ही फुर्ती से टीका का शरीर अजगर की लपेट से निकाल टार्जन ने उसे नीचे जमीन पर गिरा दिया और तब उसी प्रकार उसके बालू को भी निकाल नीचे खड़ी टीका के गोद में फेंक दिया किन्तु उनका अपना शरीर अभी तक उस भयंकर जीव की लपेट में पड़ा था। बड़ी ही मुश्किल से वे अपने को स्वतंत्र कर सके और तब स्वयं भी जमीन पर कूद पड़े।

कितने ही एप बन्दरों ने घटनास्थल को चारों ओर से घेर रक्खा था। टार्जन के सुरक्षित अवस्था में जमीन पर कूदते ही सब के सब धीरे धीरे वहाँ से खिसकने लगे और टीका भी एक ओर जा कर जमीन की मट्टी खोद खोद तथा उसमें से कीड़े निकाल निकाल कर मुँह में रखने लगे, मानों उसके बालू पर किसी प्रकार का खतरा आया ही न हो।

टार्जन भी युद्ध खतम होते ही उसे एक प्रकार भूल से गये। एक बार उस मरते हुये अजगर की ओर देख वे उस प्राकृतिक तालाब की ओर बढ़े जिसका स्वच्छ पानी एप बन्दर अपनी अपनी प्यास बुझाने के काम में लाया करते थे। आश्चर्य की बात तो यह थी कि ऐसे भयंकर शत्रु को मारने पर भी टार्जन के मुँह से शत्रु को पराजित करने के समय निकलने वाली वह भयानक आवाज न निकली जो एप बन्दरों के मुँह से ऐसे समय निकला करती है। ऐसा क्यों हुआ इसका कारण कदाचित

वे भी पूछने पर न बता सकते सिवाय इसके कि उनकी निगाह में अजगर जंगली जानवर नहीं था। जंगल के अन्य जीवों से वे उसमें कोई विशेष भेद पाते थे। वे केवल इतना ही समझते थे कि उन्हें उस जीव से दिली नफ़रत थी।

तालाब के किनारे पहुँच टार्जन ने अपनी प्यास बुझाई और पेड़ के नीचे की मुलायम घास पर लेट कर अपनी थकावट दूर करने लगे। इस समय वे अपने तथा अजगर के युद्ध के सम्बन्ध में ही विचार कर रहे थे। उन्हें आश्चर्य हो रहा था कि उन्होंने यकायक अपने को उस दैत्य के समीप ले जा कर जान बूझ के क्यों फँसा दिया। उन्हें ऐसा करने की आवश्यकता ही क्या थी? न तो टीका ही उनकी थी न उसके बालू से ही उनका कोई सम्बन्ध था। वे दोनों ही टाग के थे, फिर उन्हें उनके लिये इस प्रकार अपनी जान खतरे में डालने की क्या आवश्यकता थी? मर जाने पर अजगर का मांस भी उनके खाने में नहीं आ सकता था। बहुत माथापच्ची करने पर भी टार्जन को अपने ऐसा करने का कोई कारण न दिखाई दिया। पर इसी समय सहसा यह बात उनकी समझ में आ गई कि जरूर यह काम भी उन्होंने यकायक उसी अशक्त शक्ति की प्रेरणा से हो कर डाला जिसने उन्हें अकस्मात् गोमंगानी की हत्या करते करते रोक दिया था।

परन्तु आखिर वह है कौन जो उनसे जबर्दस्ती ऐसे ऐसे काम कराता है? अक्षय उसमें उनसे अधिक शक्ति होगी, तभी तो वह उन्हें जबर्दस्ती ऐसे ऐसे कामों में प्रयुक्त करने में समर्थ होता है। किताब में बने छोटे छोटे कीड़ों का कहना है कि ईश्वर सर्वशक्तिमान है। अवश्य उसी ईश्वर का ही यह काम है कि अकस्मात् तथा अकारण ही ऐसे ऐसे काम उसने उनसे करा डाले, और वह भी जरूर ईश्वर ही था जिसकी प्रेरणा से टीका अपना समस्त भय त्याग अजगर के समीप जा पहुँची। अपनी इच्छा से वह कभी भी उसके समीप नहीं जा सकती थी। ईश्वर ही ने उनका छुरा

गोमंगानी के गले में घुसने से रोक दिया। ईश्वर सर्व-शक्तिमान है इसी से वह विचित्र विचित्र काम किया करता है। वह दिखाई नहीं देता पर वह काम ऐसे ऐसे करता है जिसे मंगानी गोमंगानी अथवा दरमंगानी कोई भी नहीं कर सकता।

और फूल ! इन्हें कौन पैदा करता है ? यकायक टार्जन की समझ में सब बातें आ गईं। फूल पेड़ चन्द्रमा सूर्य अथवा जड़ल के सभी जीव उसी ईश्वर के बनाये हुये हैं।

परन्तु वह ईश्वर है कौन या उसकी सूरत कैसी है, इसे वे समझ न सके। हाँ इतना वे अवश्य समझ गये कि जितने अच्छे अच्छे काम हैं वे उसी के द्वारा होते हैं। अच्छी अच्छी जितनी चीजें हैं वे भी सब उसी की बनाई हुई हैं। बूढ़े गोमंगानी पर दया करके उसके हाथ के छुरे को रोकना, अपने बच्चे की रक्षा के लिये टीका को मौत के मुँह में भेज देना, टीका के लिये उनका अपने प्राणों तक की परबाह न करना, यह सब उसी का काम है। फूल पत्ते पेड़ जितनी सुन्दर वस्तुएँ हैं वे सभी उसकी बनाई हुई हैं। सिंह चीता हिरन बन्दर सूअर सभी उसके बनाये हुए हैं। अब टार्जन को ईश्वर मिल गया। दुनिया की सभी सुन्दर तथा भली चीजें उन्होंने उसी की बनाई हुई समझीं, परन्तु एक बात उनकी समझ में भी नहीं आई, वह यह कि आखिर अजगर को किसने बनाया ?

टार्जन का बालू

जड़ल के एक विशाल वृक्ष के नीचे बैठे टार्जन एक नया रस्ता तैयार करने में लवलीन थे। उनके पुराने रस्से का आधा भाग नुची चुर्ची हालत में उनके सामने पड़ा था बाकी का आधा भाग चीता भागते समय अपने साथ ही ले गया था।

उन्हें चीते के उस समय के क्रोध घृणा तथा भय का ख्याल कर

के हँसी आई जब रस्से के भाड़ी में उलझ जाने के कारण वह बेतरह उछल कूद मचा रहा था। परन्तु इस बार वे उससे भी कहीं अधिक मजबूत रस्ता तैयार किया चाहते थे। उसके तैयार होने के पहले ही से उस रस्से के फन्दे में फँसे और बेतरह उछल कूद मचाते हुए न्यूमा सिंह की तस्वीर उनकी आँखों के आगे नाच रही थी। दिन भर किसी न-किसी काम में लगे रहने से उन्हें अधिक आनन्द मिलता था। अन्य एपबन्दर भी अपने अपने कामों में व्यस्त थे और चारों ओर चक्कर काटते हुये अपने भोजन की तलाश कर रहे थे।

भविष्य की चिन्ता उनमें से किसी को भी नहीं सता रही थी। उनकी चिन्ता केवल उसी दिन के भोजन की तलाश में ही परिमित थी। भोजन के बाद आनन्द से सोना और उठने बाद जब भूख लगी तो फिर भोजन की तलाश में निकल जाना, बस इतनी ही भर तो उनका दिनचर्या थी और इसी में वे इतने अधिक प्रसन्न तथा संतुष्ट रहा करते थे जितने कि सभ्य देशों में रहने वाले मनुष्य कदापि न रहते होंगे।

टार्जन अपने काम में व्यस्त थे और टीका का बालू उनके पास बैठा खेलवाड़ में लगा था। टीका अथवा टाग को अपने बालू के सम्बन्ध में टार्जन की ओर से अब रत्ती भर भी सन्देह बाकी नहीं रह गया था। वे उन्हें भयानक चीते के पंजों से उसकी रक्षा करते देख चुके थे और अजगर से बचाते भी देख चुके थे। टार्जन को वे अपनी ही भाँति बल्कि उनसे भी बढ़ कर प्रेम से गाजन को गोद में ले कर खिलाते तथा उसके प्रति प्रेम प्रदर्शित करते वे कितनी ही बार देख चुके थे। अस्तु टार्जन की ओर से वे दोनों ही निश्चिन्त थे बल्कि टार्जन के पास रहते हुए वे उसे कहीं अधिक सुरक्षित समझते थे।

टार्जन का भी गाजन के प्रति प्रेम दिनों दिन बढ़ता जाता था। ज्यों ज्यों वह बड़ा तथा मजबूत होता जाता था टार्जन का हृदय प्रसन्नता से फूलता जाता था। उसके प्रति उनका प्रेम इतना क्यों बढ़ता जाता था

इसे समझने का प्रयत्न कर के भी वे इस बात को अभी तक समझ नहीं पाये थे। वे केवल इतना ही भर जानते थे कि एक समय वे जिस टीका से प्रेम करते थे गाजन उसी टीका का बच्चा था—सम्भव है इसी लिये वे उससे प्रेम करते हों।

चारों ओर कूदते फांदते सहसा गाजन को एक शराबत सूभी। टार्जन को काम में व्यस्त देख उसने उनके नये रस्से का एक सिरा पकड़ लिया और चुपके से एक ओर को बढ़ने लगा। एक हलका झटका देते ही उस का दूसरा सिरा टार्जन के हाथ से छूट गया और तब उनकी निगाह गाजन पर पड़ी।

गाजन को रस्सा हाथ में पकड़े तेजी के साथ भागा जाते देख टार्जन भी उसे डराते तथा धमकाते हुये उसके पीछे दौड़े। गाजन सीधा अपनी माँ की ओर भागा। टीका ने उसे भाग कर अपनी ओर आते देखा और यह समझ कर कि कोई शत्रु उसका पीछा कर रहा है सहसा उसके दाँत बाहर निकल आये और एक हलकी गुर्राहट गले से निकली परन्तु जैसे ही उसकी निगाह टार्जन पर पड़ी वह पुनः अपने काम में लंग गई। टार्जन की ओर से अपने बच्चे के सम्बन्ध में चिन्ता करने की उसे कोई भी आवश्यकता नहीं दिखाई दी।

गाजन दौड़ कर अपनी माँ के गोद में जा बैठा। टार्जन ने उसके पास पहुँच कर रस्सा उसके हाथ से छीन लिया और उसे एक हलकी चपत लगाने बाद पुनः अपने स्थान पर वापस लौट आये। गाजन पुनः उनके पास जा पहुँचा और इधर उधर उछल कूद मचाने लगा, परन्तु अब उसकी ओर से टार्जन विशेष सावधान हो गये क्योंकि उन्हें भय हो गया कि कहीं किसी समय मौका पा कर वह उनका रस्सा चुरा ही न ले जाय।

जो कुछ भी हो, खूब कड़ी मेहनत के बाद अन्त में टार्जन ने अपना वह नया रस्सा तैयार कर ही लिया। पुराने रस्से को तो उन्होंने खेलने

के लिये गाजन के हवाले किया और उस नये रस्से को कंधे पर डाल उसकी मजबूती की जाँच करने के लिये एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर कूदते हुये एक ओर को बढ़े ।

नये रस्से की मजबूती जाँचने तथा भोजन की तलाश में आगे बढ़ते हुये टार्जन को यकायक पुनः गाजन का स्मरण हो आया । न मालूम क्यों गाजन को अपने पास से एक क्षण के लिये भी दूर करना उनके लिये असह्य हो उठता था किन्तु इस प्रेम में भी उन्हें रह रह कर एक बात बड़ी ही खलती थी । वह यह कि चाहे गाजन भी टार्जन से कितना ही अधिक प्रेम क्यों न करता हो पर भूख लगने पर, थक जाने पर, किसी प्रकार का कष्ट होने पर, अथवा भयभीत होने पर, वह फौरन ही भाग कर अपनी माँ के पास ही जाया करता था और इस बात को देख टार्जन के मन में फौरन ही यह भावना उत्पन्न हो जाया करती थी कि क्या ही अच्छा होता यदि उनसे भी इसी प्रकार प्रेम करने वाला कोई ऐसा जीव होता जो सुख दुःख तथा किसी प्रकार की भी आपत्ति आने पर केवल उन्हीं पर भरोसा करता ।

टीका टाग की है और गाजन टीका का ! करचक की जाति के जितने भी एप बन्दर हैं सभी के प्रेम की सामग्रीमाँ हैं जिनसे वे प्रेम करते हैं और जो उनसे प्रेम करती हैं, परन्तु टार्जन के लिये संसार में ऐसी कोई भी वस्तु नहीं और इसी लिये उनकी अन्तरात्मा ऐसे ही किसी व्यक्ति के लिये कभी कभी नितान्त व्याकुल हो उठती थी । सिंह चीतों एप बन्दरों हिरन तथा अन्य कितने ही जानवरों के बच्चों को वे अपने अपने माता पिता के साथ तथा नर मादा को आपस में किलोल करते कितनी ही बार देख चुके थे किन्तु इसी तरह की उनके प्रेम की कोई भी सामग्री न थी और इसका उन्हें महान् दुःख था ।

शिकार की खोज में आगे बढ़ते हुये टार्जन को इस समय बेतरह

भूख लगी हुई थी। सहसा उनकी नाक में होर्दा सूअर की गंध आई। जंगल में सूअर भी सिंह अथवा चीते से कम भयंकर जीव नहीं किन्तु स्वादिष्ट मांस वाला जानवर चाहे कितना ही भयंकर क्यों न हो यदि वह भूखे टार्जन के रास्ते में आ पड़े तो वह किसी प्रकार भी खैरियत से आगे की ओर नहीं बढ़ सकता था। भूख तथा युद्ध के समय चाहे जङ्गल के कैसे भी भयानक से भयानक जीव से उनका सामना हो जाय वे कभी भी न तो पीछे ही हटते थे न हिम्मत ही छोड़ते थे। उस समय उनके चित्त में दया अथवा भय नाम की कोई भी वस्तु नहीं रहती थी बशर्ते कि कोई छिपी हुई शक्ति शत्रु की हत्या करते समय उनके हाथ को यकायक रोक न वे।

अस्तु इस समय अपने पास से एक ऐसे जीव को गुजरते देख जो खूँखार होने पर भी खाने में बड़ा ही स्वादिष्ट था, टार्जन ने फौरन ही अपने रस्से का फन्दा उसके गले में डाल दिया और उसका दूसरा सिरा पेड़ की एक मोटी डाल में मजबूती के साथ बांध देने बाद जमीन पर कूद पड़े। रस्से की मजबूती जाँचने के लिये इससे बढ़ कर मौका उन्हें दूसरा नहीं मिल सकता था। क्रोध में भरा सूअर इधर से उधर दौड़ कर उछल कूद मचाता हुआ उस रस्से को तोड़ने की कोशिश कर रहा था परन्तु वह मजबूत रस्सा उसे हर बार ही भागने से रोक देता था। उसके दाँतों की भयंकर टक्कर से पेड़ के तने की छालें इधर उधर छटक रही थीं जब कि टार्जन ठीक उसके पीछे की ओर जमीन पर कूदे। उनके हाथ में इस समय उनका वही शिकारी छुरा था जिसकी सहायता से वे अब तक अपने कितने ही भयंकर से भयंकर शत्रुओं को यमलोक भेज चुके थे।

टार्जन धीरे धीरे उस सूअर की ओर बढ़े जो अपने शत्रु पर निगाह पड़ते ही फौरन उनकी ओर घूमा। टार्जन के शरीर में चाहे कितनी भी ताकत क्यों न हो पर केवल एक छुरा हाथ में ले कर जंगली सूअर जैसे

भयानक जीव का सामना करना उनके हक में सिवाय पागलपन के और कुछ भी नहीं कहा जा सकता था। परन्तु दूसरों की निगाह में चाहे कुछ भी क्यों न हो जो टार्जन को भली भाँति जानता था उसे उनका ऐसा करना कुछ भी आश्चर्यजनक नहीं मालूम हो सकता था।

अपने स्थान पर खड़ा सूअर इस समय टार्जन को क्रोध भरी निगाहों से देख रहा था। टार्जन उसकी ओर देख कर गम्भीर आवाज में बोले, “मट्टी खाने तथा कीचड़ में लोटने वाले ! तेरे माँस में दुर्गन्ध है परन्तु फिर भी वह स्वादिष्ट है और टार्जन के शरीर की ताकत वो बढ़ाने वाला है। आज मैं तेरा कलेजा खाऊँगा ताकि वह मेरे उस कलेजे में ताकत पहुँचावे जो मेरी पसलियों के बीच में घड़क रहा है !!”

टार्जन की बातें कुछ भी न समझ सकने पर भी सूअर का क्रोध कमशः बढ़ता ही जा रहा था। उसने अपने मुकाबले में केवल एक नंगे तथा कमजोर आदमी को खड़े देखा। कदाचित्त उस आदमी की इस धृष्टता पर उसे बेतरह क्रोध चढ़ आया और वह तेजी के साथ टार्जन की ओर झपटा।

नीचा सिर किये तेजी के साथ उसे अपनी ओर आते देख कर भी टार्जन चुपचाप अपने स्थान पर खड़े रहे। सूअर ने पास पहुँच कर अपने दाँत का वार उनकी जाँघ पर किया। यदि उसका वह वार ठिकाने बैठ जाता तो निश्चय ही उनकी जाँघ नीचे से ऊपर तक चिर जाती, परन्तु बिजली से भी अधिक फुर्ती के साथ टार्जन एक ओर को हट गये और फौरन ही नीचे की ओर झुक कर उन्होंने भरपूर ताकत से अपने पिता का शिकारी छुरा सूअर के कलेजे में भोंक दिया। भयानक ख करता हुआ जंगली जानवर जमीन पर लोट गया, और थोड़ी ही देर बाद सूअर का खून से लथपथ कलेजा टार्जन के हाथ में था।

अपनी भूख बुझा कर आज वे नित्य नियमानुसार निद्रा लेने के लिये

कहीं भी न ठहरे बल्कि बराबर आगे ही की ओर बढ़ते चले गये । आज उनकी तबीयत कुछ अस्थिर सी थी अस्तु मन बहलाने के लिये सीधे मोंगा के गाँव की ओर जाना ही उन्होंने उचित समझा जहाँ के आदमियों को उसी दिन से तंग करने की उन्हें आदत सी पड़ गई थी जिस दिन मोंगा के लड़के कुलोंगा ने उनकी माता काला को जान से मार डाला था ।

मोंगा के गाँव के नजदीक से होकर एक पहाड़ी नदी चक्कर काटती हुई आगे की ओर निकल गई थी । जिस स्थान पर हवशियों की भोष-डियाँ नदी के किनारे बनी हुई थीं उससे कुछ नीचे टार्जन नदी के किनारे पर जा खड़े हुए । यहाँ का दृश्य उन्हें सदा से ही सुहावना मालूम हुआ करता था । दरियाई घोड़ों की उछल कूद का तमाशा देखने तथा किनारे की ओर बालू में बैठे घूप सेकते घड़ियालों को तंग करने में उन्हें बड़ा ही आनन्द मिला करता था । इसके अलावा डराने के लिये यहाँ उन्हें हवशियाँ की औरतें तथा बच्चे भी मिल जाते थे क्योंकि औरतें अक्सर ही अपने बच्चों को लिये बरतन माँजने नदी किनारे आया करती थीं ।

गाँव से कुछ अधिक फासले पर आज उन्हें एक औरत तथा एक छोटा लड़का दिखाई दिया । औरत किनारे का बालू हटा हटा कर घोंघे तथा सीपियाँ तलाश कर रही थी । उसकी आयु तीस वर्ष से अधिक न थी । दाँत उसके बहुत ही नोकीले तथा तेज थे क्योंकि वह उन लोगों में से थी जो आदमियों का माँस खाया करते हैं । बहुत दिनों से इस्तेमाल में आने वाले तांबे के एक भारी कड़े ने उसके होठों को इतना नीचे झुला दिया था कि उसकी नीचेवाली दंतपंक्ति साफ नजर आती थी । नाक में एक छेद था जिसमें काठ की एक मोटी गुल्ली पड़ी हुई थी । कानों में भी धातु के बने भारी भारी गहने लटक रहे थे और नाक के ऊपरी भाग में तरह तरह के निशान गोदे हुए थे । सिवाय घास के एक कमरबन्द के उसके शरीर पर और कोई भी कपड़ा न था । मोंगा के गाँव वालों की

निगाह में इसकी गिनती सुन्दरियों में होती थी यद्यपि वह यहाँ की नहीं थी। मोंगा का एक सैनिक उसे किसी दूसरी जंगली जाति वालों से उस समय छोन लाया था जब उसकी उम्र बहुत ही छोटी थी।

उसके लड़के की उम्र दस वर्ष से अधिक न थी जो काला होने पर भी देखने में भला मालूम होता था। पेड़ के पत्तों के बीच छिपे टार्जन ध्यान से इन दोनों की ओर देख रहे थे। वे सोच ही रहे थे कि जोर से चिल्ला कर उनके बीच में कूद पड़े और उन दोनों के घबड़ा कर चीखने चिल्लाने का तमाशा देखें कि सहसा एक नवीन विचार उनके मस्तिष्क में पैदा हुआ। उनके सामने खड़ा यह बालू काला होने पर भी उनकी सूरत शक से बहुत कुछ मिलता जुलता था। वह काला था तो क्या हुआ अपने ऐसा सफेद आदमी अपने जीवन में उन्हें दूसरा दिखाई भी तो नहीं दिया था अस्तु उनके ख्याल में उनके जैसा सफेद आदमी इस संसार में कदाचित् दूसरा था ही नहीं। उनके मन में उस छोटे बालू को अपने पास रखने और उसे खिलाने पिलाने तथा पाल कर बड़ा करने की इच्छा पैदा हुई। फौरन ही उन्होंने अपने रस्से का फन्दा नीचे की ओर लटकाया। उस लड़के तथा उसकी माँ को इस बात की जरा भी खबर न थी।

जल्द भर तक रस्से का वह फन्दा उस लड़के के सिर के ऊपर लटकता रहा और तब ठीक उसके गले के बीचोबीच जा पड़ा। टार्जन के दाहिने हाथ के एक ही झटके ने उसे उस लड़के की गर्दन में कस दिया। लड़के के मुँह से भय की एक चीख निकली। उसकी माँ ने फौरन घूम कर पीछे की ओर देखा और यह देख उसके शरीर का खून पानी हो गया कि उसका लड़का एक रस्से के सहारे उठता हुआ पेड़ की डाल पर बैठे एक सफेद दैत्य की ओर चला जा रहा है।

क्रोध तथा भय की एक तेज चीख मार कर वह औरत खड़ी हो गई और निर्भय हो कर टार्जन की ओर दौड़ी। यों तो उसका चेहरा पहले

ही से भद्दा था ऊपर से क्रोध ने उसे ऐसा भयानक बना दिया कि वह पूरी पिशाचिनी ही दिखाई दे रही थी ।

उसका बालू बेतरह हाथ पैर मार रहा था परन्तु उसे बगल में दाब कर टार्जन फुर्ती के साथ घने पत्तों के बीच लापता हो गये । उनके ठीक नीचे की ओर खड़ी उसकी माँ चिल्लाती ही रह गई और टार्जन पेड़ों ही पेड़ों पर हवा से बातें करने लगे ।

कुछ दूर निकल जाने पर जब उन्होंने देखा कि उस बच्चे के माँ की आवाज अब उनके कानों में नहीं पड़ रही है तो वे अपने साथ लाये हुए लड़के की सूरत देखने के लिये रुक गये । वह लड़का इस समय भय से एक दम निश्चेष्ट सा हो रहा था ।

टार्जन को अपनी ओर ध्यान से देखते देख उस लड़के ने भी भय-भीत दृष्टि से उनके चेहरे की ओर देखा । उसे अपनी ओर देखते देख टार्जन उससे एप बन्दरों की भाषा में बोले, “मैं जंगल का राजा टार्जन हूँ ! डरो मत, मैं तुम्हें जरा भी हानि नहीं पहुँचाऊँगा । आज से तुम टार्जन के बालू होगे । टार्जन तुम्हारी रक्षा करेगा । जङ्गल की अच्छी से अच्छी चीजें तुम्हें मिलेगी क्योंकि टार्जन जबर्दस्त शिकारी है । तुम्हें किसी से यहाँ तक कि सिंह से भी डरने की आवश्यकता नहीं क्योंकि टार्जन भारी लड़ाका है । काला के लड़के टार्जन का मुकाबला करने वाला इस समय कोई भी नहीं है !”

परन्तु वह लड़का कुछ भी उत्तर न दे थर थर काँपता रहा क्योंकि वह उनकी भाषा जरा भी नहीं समझ सकता था । उनकी आवाज उसे किसी जङ्गली जानवर की गुर्राहट मात्र मालूम हुई । इस सफेद दैत्य के सम्बन्ध में वह बहुत सी कहानियाँ सुन चुका था और जानता था कि इसी ने कुलोंगा तथा मोंगा के कितने ही और लड़ाकों को जान से मार डाला है । यही यह दैत्य है जो चुपचाप उसके गाँव में घुस कर जहरीले तीर चुरा कर

ले जाता है और जिसके भय से बड़े बड़े लड़के भी थर थर काँपा करते हैं। उसे विश्वास था कि वह दैत्य छोटे छोटे बच्चों को खा भी जाता है। जब जब वह बदमाशी करता था उसकी माँ यही कहा करती थी कि यदि वह अपनी बदमाशी बन्द न करेगा तो जङ्गल का यही दैत्य उसे उठा ले जायगा। छोटे टीबो ने अपना सिर हिलाया। वह समझ गया कि अब उसकी जान किसी तरह भी नहीं बच सकती।

टीबो यद्यपि उनकी बात जरा भी न समझ सका पर अपनी जंगली भाषा में वह बराबर टार्जन से यही प्रार्थना करता रहा कि यदि इस बार वे उसे छोड़ दें तो वह फिर कभी भी बदमाशी न करेगा। टार्जन ने अपना सिर हिलाया। उसकी कोई भी बात वे नहीं समझ सकते थे। उन्होंने सोचा इस तरह काम नहीं चल सकता। उस लड़के को जैसे भी हो एप बन्दरों की भाषा सिखानी पड़ेगी तब जा कर कहीं वह बातचीत करने योग्य होगा और वे उसके दिल की बातें समझ सकेंगे। इसके लिये टार्जन ने यही निश्चित किया कि उसे जल्दी से जल्दी एप बन्दरो के पास ले चलना चाहिये। उनके बीच में रह कर वह बहुत जल्द उनकी भाषा सीख जायगा।

टार्जन इस समय पेड़ की जिस शाख पर बैठे हुए थे उसी पर उन्होंने उस लड़के को भी बैठा लिया था। यकायक वे उठ खड़े हुये और उस लड़के को उन्होंने अपने पीछे पीछे आने का इशारा किया परन्तु वह पेड़ की डाल से चपक कर रोने लगा। आज से पहले कितनी ही बार वह पेड़ों पर चढ़ चुका था परन्तु टार्जन की भाँति पेड़ों ही पेड़ों पर उछलते कूदते आगे बढ़ना उसे असम्भव सी बात मालूम हुई और उसे इतना भय मालूम हुआ कि वह सिसक सिसक कर रोने लगा।

टार्जन ने एक गहरी साँस ली। उन्हें इस नये बालू को अभी कितनी ही बातों की शिक्षा देना आवश्यक प्रतीत हुआ। इतने बड़े बालू का इतनी कमजोर-तबीयत होना उन्हें एक आश्चर्य की बात मालूम हुई।

उन्होंने पुनः एक बार टीबो को अपने पीछे पीछे चलने का इशारा किया किन्तु जब उन्हें विश्वास हो गया कि वह ऐसा न कर सकेगा तो उसे अपनी पीठ पर लाद वे आगे की ओर बढ़े । अब टीबो एक दम शान्त हो गया था । उसके समझ में यह बात आ गई थी कि अब उसका बच कर निकल सकना एक दम असम्भव है । अभी भी वह यदि जमीन पर उतार दिया जाय तो उसे आशा न थी कि उस जङ्गल में उसे किसी प्रकार भी अपने माँ बाप के पास तक जाने का रास्ता मिल सकेगा और यदि रास्ता मिल भी गया तो जङ्गल में घूमने वाले सिंह चीते आदि ही उसे कब जीता छोड़ेंगे ।

पर अब तक जंगल के उस सफेद दैत्य ने उसे किसी तरह की भी तकलीफ नहीं दी थी । जंगल में घूमने वाले खूँखार जानवरों से तो वह इतनी भी दया की आशा नहीं कर सकता था अस्तु उसके काम में बाधा डालना उसने बेवकूफी समझा ।

जिस समय टार्जन उसे अपनी पीठ पर लिये तेजी के साथ आगे बढ़े, टीबो ने भय के मारे अपनी आँखें बन्द कर लीं । आज से पहले उसे कभी ऐसा भय नहीं मालूम हुआ था जैसा कि नीचे की जमीन को तेजी के साथ पीछे की ओर भागते देख कर उसे हुआ फिर भी जिस सावधानी से टार्जन उसे पीठ पर लादे आगे बढ़ रहे थे उसे देख वह समझ गया कि जमीन की अपेक्षा वह पेड़ों पर कहीं अधिक सुरक्षित है ।

अन्त में टार्जन उस स्थान पर आ पहुँचे जहाँ एक खुले मैदान में एकत्रित एप बन्दर अपने अपने कामों में लगे हुए थे । अपनी पीठ पर टीबो को लादे हुए ही वे उनके बीच में जा कर खड़े हो गये । जब तक कि टीबो की निगाह किसी एप बन्दर पर पड़े अथवा एप बन्दरों की निगाह टीबो पर पड़े वे उसके एक दम बीच में जा पहुँचे । जैसे ही एप बन्दरों

की निगाह उनके पीठ पर बैठे छोटे गोमंगानी पर पड़ी उनमें से कुछ उत्सुकतावश उसे देखने के लिये गुराँते हुए उसकी ओर बढ़े ।

एक घण्टा पहले टीब्रो कह सकता था कि आज से पहले वह कभी भी इतना भयभीत नहीं हुआ था परन्तु इस समय जो दृश्य उसने अपने सामने देखा उसे देख तो उसे ऐसा मालूम हुआ मानों अब तक उस पर जो कुछ बीत चुकी थी वह एक दम मामूली बात थी । पर इस समय वह यह भी सोच रहा था कि आखिर ऐसे भयंकर जीवों के बीच में टार्जन इस समय ऐसी लापरवाही के साथ खड़े क्यों हुए हैं और इसके पहले कि वे जीव उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर डालें वे वहाँ से भाग क्यों नहीं जाते किन्तु ठीक उसी समय टीब्रो को वह किस्सा याद आ गया जिसे वह अब तक कितनी ही बार सुन चुका था, अर्थात् जंगल का सफेद दैत्य केवल एक सफेद रंग का बिना बालों वाला एप बन्दर है क्योंकि वह अक्सर एप बन्दरों के साथ ही देखा गया है ।

अपने भयभीत नन्त्रों से टीब्रो ने धीरे धीरे अपनी ओर बढ़ते हुए एप बन्दरों की सूरतें देखीं तथा उनके लम्बे लम्बे नोकीले दाँतों और लाल लाल आँखों पर दृष्टि डाली । उनके चेहरों से वह यही समझा कि वे सब के सब उसे फाड़ खाने ही के इरादे में हैं । पर टार्जन ने टीब्रो को अपनी ओर खींच कर कहा, “यह टार्जन का बालू है, इसे जरा भी नुकसान पहुँचाओगे तो टार्जन तुम्हें जान से मार डालेगा !”

इतना कह कर टार्जन ने सब से आगे वाले एक एप बन्दर की ओर अपने दाँत निकाल तथा गुराँ कर देखा । उस एप बन्दर ने कहा, “यह गोमंगानी है और गोमंगानी हम लोगों के शत्रु हैं इस लिये इसे मार डालना ही ठीक है !”

“भाग जाओ गुन्टो ! मैं कह चुका हूँ कि यह टार्जन का बालू है । हट जाओ नहीं तो टार्जन तुम्हें मार डालेगा !” कह कर टार्जन धीरे धीरे गुराँते हुए उस एप बन्दर की ओर बढ़े ।

गुन्टो फौरन ही वहाँ से हट गया। अब टीका की बारी थी। उसे भी टीबो को देख बड़ी ही उत्सुकता पैदा हुई। पर अन्य एप बन्दरों की भाँति उसे देख टार्जन ने अपने दाँत बाहर नह निकाले। बड़े ध्यान से उसे देखती हुई वह आगे बढ़ने लगी। उसके बगल में उसका बालू गाजन था। टार्जन उसे आगे बढ़ने का इशारा करते हुए बोले, “अब टार्जन के पास भी एक बालू है। वह तथा टीका का बालू एक साथ खेल सकते हैं।”

टीका बोली, “लेकिन यह तो गोमंगानी है। यह हमारे बालू को मार डालेगा। इसे यहाँ से ले जाओ टार्जन !”

टार्जन हँस पड़े और बोले, “यह तो एक छोटे से पम्बा चूहे तक को भी हानि नहीं पहुँचा सकता। फिर यह हृद से ज्यादा डरा हुआ भी है। गाजन को इसके साथ खेलने दो।”

परन्तु टीका को अभी तक अपने गाजन की ओर से भय था। क्योंकि अद्भुत बलशाली होने पर भी एप बन्दर भीतर से बड़े ही डरपोक होते हैं। किन्तु टीका को टार्जन पर पूरा विश्वास था। उसने गाजन को टीबो की ओर बढ़ा दिया परन्तु गाजन पीछे हट गया और अपनी माँ की गोद में जा बैठा। उधर टीबो भी गाजन से परिचय बढ़ाने के लिये उत्सुक नहीं दिखाई दिया, अस्तु टार्जन ने कुछ समय के लिये अपने इस इरादे को टाल दिया।

इसके बाद एक हफ्ते तक टार्जन को काम की कमी न रही। जैसा कि वे सोचते थे उससे भी कहीं अधिक टीबो की जिम्मेदारी उनके ऊपर आ पड़ी। एक क्षण के लिये भी वे उसे अकेले छोड़ते डरते थे क्योंकि टीका को छोड़ और किसी भी एप बन्दर की ओर से उन्हें इस बात की निश्चिन्ती न थी कि वे उसे अपने बीच में जिन्दा रहने देंगे। हर समय उन्हें उसकी ओर से सतर्क रहना पड़ता था। जिस समय वे शिकार के लिये जाते थे उन्हें टीबो को भी अपने साथ ही ले जाना पड़ता था। वह

उन्हें मामूली से अधिक बेवकूफ मालूम पड़ता था। जङ्गल के छोटे से छोटे जीव को भी देख वह भय से व्याकुल हो उठता था। ऐसी हालत रहने पर तो उन्हें उसका जीना तक दुश्वार मालूम हुआ। पर जो कुछ भी हो उन्होंने पूरी मेहनत के साथ उसे सिखाना शुरू किया और यह देख उन्हें बड़ी ही प्रसन्नता हुई कि शीघ्र वह एप बन्दरों की भाषा के कितने ही शब्द सीख गया और ऊँची से ऊँची डाल पर बिना भय से चिह्नाये ही कूद कर बैठने लगा परन्तु टीबो में एक बात देख उन्हें विशेष चिन्ता हुई। जङ्गलियों के गाँव में उन्होंने कितनी ही बार लड़कों को आपस में खेलते देखा था और खेल के बीच में वे अकसर जोर जोर से हँस उठा करते थे परन्तु टीबो जब से उनके साथ हुआ तब से अब तक उन्होंने उसे कभी भी हँसते हुये नहीं देखा। कभी कभी उसके चेहरे पर एक हलकी मुस्कुराहट आ जाया करती थी परन्तु खुल कर हँसते उन्होंने उसे कभी भी नहीं देखा।

एक बात उन्होंने और भी देखी। टीबो दिनों दिन दुबला होता जा रहा था। इसके अलावा उन्होंने अकसर उसे सिसक सिसक कर रोते भी देखा। टार्जन उस समय उसे कितनी ही शान्त्वना दिया करते थे परन्तु उसके ऊपर कुछ भी असर नहीं पड़ता था हाँ इतना अवश्य था कि वह अब टार्जन से बिल्कुल ही नहीं डरता था। किन्तु उनके सिवाय जङ्गल का ऐसा कोई भी जीव नहीं था जिससे उसे भय न मालूम होता हो। पेड़ की ऊँची शाखा तक पर बैठने पर उसे झाँझ आती थी और वह उस भयभीत नेत्रों से नीचे जमीन की ओर देखा करता था। रात के समय जब अन्धकार में उसे पेड़ की मंचान पर सोना पड़ता था तो नीचे जमीन पर घूमने वाले सिंहों तथा चीतों की गुर्गहट अथवा खाँसने की आवाज से वह चौंक उठता था और उसे घण्टों तक नींद नहीं आती थी।

टार्जन की समझ में नहीं आ रहा था कि उन्हें क्या करना चाहिये। उनके शरीर में अंग्रेज जाति का रक्त प्रवाहित होने के कारण उनकी

इच्छा नहीं होती थी कि जिस काम को उन्होंने अपने हाथ में लिया है उसे अधूरा ही छोड़ दें किन्तु इस बालू की ओर से जितने बाँधनू उन्होंने बाँधे थे उनके पूरा होने का उन्हें अब जरा भी विश्वास नहीं रह गया था। यद्यपि उन्हें टीबो से कुछ न कुछ प्रेम अवश्य हो गया था किन्तु इस बात को भी वे भली भाँति समझ गये थे कि वह प्रेम इतना तीव्र और प्राकृतिक नहीं है जैसा कि टीका का गाजन के प्रति अथवा अन्य एप बन्दरों का अपने छोटे छोटे बच्चों के प्रति होता है।

उनकी सूरत देखते ही डर जाने के बदले टीबो का उनके ऊपर धीरे धीरे विश्वास बढ़ने लगा। अपने प्रति उसने उनकी सदा ही दया दृष्टि देखी थी परन्तु दूसरों के प्रति वे कैसी क्रूरता से पेश आते थे यह बात भी उसकी निगाहों से छिपी न थी। उसने देखा था कि जैसे ही एक एप बन्दर ने उसके ऊपर झपटने का इरादा किया टार्जन फौरन ही उसके ऊपर जा चढ़े और अपने दाँत उन्होंने अपने विपक्षी की गर्दन में धँसा दिये। पहले तो टीबो को बड़ा ही भय मालूम हुआ परन्तु शीघ्र ही वह मन ही मन उनके शक्ति तथा साहस की प्रशंसा करने लग गया। यदि वह चाहता तो टार्जन से बहुत कुछ सीख सकता और उससे लाभ भी उठा सकता था किन्तु आखिर तो वह एक हबशी का बच्चा था जिनमें बुद्धि की बहुत ही कमी होती है।

जिस समय टार्जन अपने बालू के सम्बन्ध में चिन्ता कर रहे थे, भाग्य-चक्र धीरे धीरे उनका भविष्य अपने हाथ में लेने का उपक्रम कर रहा था। टीबो की माँ मोमाया ने अपने प्यारे बच्चे को खो कर अपने गाँव के जादूगर की बहुत कुछ बिनती की परन्तु इससे उसे कुछ भी लाभ होत दिखाई नहीं दिया। इस काम के लिये उसे उस जादूगर को दो मोठे मोटे बकरे भी देने पड़े किन्तु जब इससे भी उसका बच्चा उसे न मिल और जादूगर ने दोबारा उससे तीन और मोटे मोटे बकरों का सवाल किया तब तो उसे बेतरह क्रोध चढ़ आया। अन्य जाति की होने के कारण

मोंगा के इस जादूगर पर उसे आज तक पूरा विश्वास भी कभी नहीं हुआ था अस्तु उसके दोबारा तीन बकरे माँगने पर उसने उसे इस तरह की कड़ी कड़ी बातें सुनाना शुरू किया कि उसे अपनी जादू के पानी से भरी हँडिया तथा जीबरा की टुम उठा कर भागते ही वन आई ।

उसके सामने से हट जाने पर धीरे धीरे मोमाया का क्रोध कुछ कम हुआ । अब वह नित्य नियमानुसार अपने बच्चे के सम्बन्ध में पुनः विचार करने लगी और कम से कम इस बात का निश्चय कर लेना उसे आवश्यक मालूम हुआ कि उसका बच्चा अभी तक जिन्दा भी है अथवा नहीं ।

हवशियों को मालूम था कि टार्जन आदमी का माँस नहीं खाते क्योंकि उन्होंने कितने ही हवशियों की जानें भले ही ले ली हों परन्तु माँस किसी का भी नहीं खाया था । मरे हुए की लाशें कभी तो गाँव के बीचो-बीच में आसमान से गिरती हुई दिखाई पड़ती थीं और कभी गाँव के बाहर पेड़ों के नीचे पड़ी मिलती थीं । चूँकि अब तक टीबो की लाश कहीं भी दिखाई नहीं पड़ी थी अतः उसे विश्वास होता था कि वह मरा नहीं है ।

अन्त में बहुत विचार करते करते मोमाया को प्रसिद्ध जादूगर बुकावी का ख्याल आया । यह बुकावी पहाड़ों की किसी कन्दरा में रहा करता था और इसके सम्बन्ध में लोगों की धारणा थी कि उसकी कन्दरा में जंगलों के भूत पिशाच भी उसके साथ रहा करते हैं । ऐसे बहुत ही कम हवशी होंगे जिनकी हिम्मत बुकावी की कन्दरा में जाने की पड़ी होगी । सब से अधिक भय लोगों को उन दो लकड़बग्घों का था जो उसके साथ ही उसकी कन्दरा में रहा करते थे और जिनके सम्बन्ध में लोगों की धारणा थी कि वे भी जंगल के प्रेत ही हैं और लकड़बग्घों का रूप धरे उसके साथ साथ रहते हैं । दूसरी बात बुकावी के सम्बन्ध में यह थी कि उसे गलित कुष्ठ था जिसके कारण उसके चेहरे का बहुत कुछ भाग गलता जा रहा था और इस बीमारी के कारण लोग उससे किसी तरह का भी संसर्ग रखना नहीं चाहते थे ।

मोमाया ने यही निश्चित किया कि यदि उसके टीवो का पता कोई लगा सकता है तो वह बुकावी ही है क्योंकि जंगल के दैत्यों से उसका परिचय है और जंगल का ही एक दैत्य उसके बच्चे को उठा कर ले गया है, परन्तु बच्चे का अद्भुत प्रेम भी उसके हृदय में अकेले उस भयानक जङ्गल वाली बुकावी की कन्दरा तक जाने की हिम्मत पैदा न कर रहा था ।

माता का प्रेम इतना तीव्र होता है कि संसार का कोई भी प्रेम उसका मुकाबला नहीं कर सकता । डरपोक से डरपोक औरत के हृदय में भी यह बेहद हिम्मत पैदा कर देता है । मोमाया न तो कमजोर ही थी न पस्तहिम्मत फिर भी वह एक हवशिन थी जो स्वभाव ही से भूत प्रेत से बहुत अधिक भय खाती हैं । जादू तथा जादूगरों में तो इन जंगलियों को हृद से ज्यादा विश्वास रहा करता है । मोमाया की निगाह में भी जंगलों में सिंह चीतों से अधिक भयावने भूत प्रेत रहा करते थे जो तरह तरह की सूत्रें धारण कर मनुष्यों को हृद से ज्यादा हानि पहुँचाने में समर्थ थे ।

एक हवशी से जो एक बार अकस्मात् ही बुकावी की कन्दरा में जा पड़ा था—मोमाया ने उस स्थान का पता पूछा जहाँ पर वह कन्दरा थी । वहाँ किस प्रकार पहुँचा जा सकता है इस बात का भी उसे उसी हवशी से पता चल गया । वह कन्दरा उत्तर की ओर दो पहाड़ियों के बीच में थी जिनके बीच से हो कर एक पहाड़ी नदी बहती थी और जिसके उत्तर ओर की पहाड़ी पर पड़ा एक भारी पथरीला ढोंका दूर से ही दिखाई देता था । इस ढोंके के ठीक नीचे ही बुकावी की कन्दरा थी ।

परन्तु यह सब बता देने पर भी उस हवशी ने उसे ऐसे पागलपन के काम करने से बहुत ही मना किया और उसे समझाया कि यदि वह भाग्य से बुकावी अथवा उसके साथ रहने वाले भूत प्रेतों से बच भी गई तो भी राह के भीषण जंगलों में दिन रात घूमने वाले मांसाहारी जीवों से उसकी जान किसी प्रकार भी नहीं बच सकती ।

उस हवशी ने यहाँ तक किया कि मोमाया के शौहर से भी मोमाया का इरादा जाहिर कर दिया। मोमाया का शौहर उससे बहुत डरता था अस्तु स्वयं तो वह कुछ भी न कर सका हॉ मोंगा से उसने जा कर यह बात अवश्य कह दी। मोंगा ने मोमाया को बुला कर बहुत डराया धमकाया और ताक़ीद कर दी कि यदि वह ऐसा करेगी तो उसे भीषण सजा दी जायगी। वह जानता था कि यदि उसकी जाति के लोग ऐसा करने लगेंगे तो धीरे धीरे उसके आदमियों का विश्वास गाँव के जादूगर पर से उठने लगेगा और ऐसा होने से उसकी हुकूमत में भी बड़ा भारी धक्का लगेगा। बुकावी का नाम वह भी कई बार सुन चुका था और उसकी शक्ति से भली भँति परिचित था। उसने यह भी सोचा कि यदि बुकावी द्वारा मोमाया के बच्चे का पता लग गया तो गाँव के जादूगर की फिर जरा भी इज्जत उसकी प्रजा की निगाह में नहीं रह जायगी।

परन्तु जिस मोमाया ने जंगल के इतने खतरो का भी ख्याल न कर के बुकावी की कन्दरा तक जाने का निश्चय कर लिया था वह भला मोंगा की इन धमकियों से कब डरने वाली थी ! फिर उसे मोंगा से नफरत भी थी। तो भी उसने ऊपर से दिखौआ उसकी बात मान ली और अपनी भोपड़ी में लौट आई।

उसका इरादा दिन के समय ही गाँव से खाना हो जाने का था किन्तु मुश्किल यह थी कि ऐसा होने से मोंगा के कानों तक इस बात की खबर पहुँच जाती और उसका आगे बढ़ना किसी प्रकार भी सम्भव न होता। अस्तु तमाम दिन मोमाया चुपचाप अपनी भोपड़ी में पड़ी रही परन्तु जैसे ही रात्रि का अन्धकार चारों ओर फैला, गाँव का दर्वाजा बन्द होने के कुछ पहले ही वह बाहर निकल कर जंगल में घुस गई। इस समय वह बेतरह डरी हुई थी फिर भी अपना दिल कड़ा कर के उत्तर की ओर बढ़ी। पग पग पर उसे जंगली जानवरों का भय हो रहा था और बीच बीच में रुक रुक कर वह उनकी आहट भी लेने लग

जाती थी फिर भी अपने इरादे से वह पीछे न हटी और अपनी जान का जरा भी मोह न कर के बराबर आगे ही बढ़ती चली गई। सहसा अपने दाहिनी ओर की झाड़ियों में उसे कुछ खड़खड़ाहट की आवाज सुनाई दी और भय से स्तंभित हो कर वह चुपचाप अपने स्थान पर खड़ी हो गई।

धड़कते कलेजे से चुपचाप खड़ी मोमाया सांस लेते भी डर रही थी। इसी समय गद्देदार पैरों पर किसी जानवर के धीरे धीरे उसी ओर बढ़ने की आहट उसके कानों में आई। उसके चारों ओर जंगल के विशाल वृक्ष खड़े हुए थे। उछल कर उसने उनमें से एक की नीची डाल पकड़ ली और ऊपर चढ़ने की कोशिश करने लगी। सहसा अपने बहुत ही समीप से उसे सिंह की भयंकर दहाड़ सुनाई दी और साथ ही किसी भारी शरीर के उसी ओर झपटने का शब्द भी कानों में पड़ा।

परन्तु मोमाया इस समय तक पेड़ की एक ऊँची डाल पर पहुँच चुकी थी और इसके लिये उसने अपने गले में लटकते हुये मनुष्य के उस सूखे कान को धन्यवाद दिया जिसे उसने अपने खास गाँव के जादूगर से उस समय पाया था जब वह एक छोटी सी बच्ची थी। यह कान उसे आपत्ति के समय शत्रुओं से स्वा के लिये मिला था और मोंगा के जादूगर की अपेक्षा वह अपने गाँव से जादूगर पर बहुत अधिक विश्वास रखती थी।

रात भर मोमाया पेड़ के ऊपर ही बैठी रही क्योंकि यद्यपि सिंह थोड़ी देर तक उस पेड़ के नीचे चकर काट कर अन्य शिकार की तलाश में दूसरी ओर चला गया, पर पेड़ से नीचे उतरने की उसकी हिम्मत न पड़ी। जब सूर्य भगवान उदय हो गये तो वह नीचे उतर पड़ी और आगे की ओर बढ़ी।

यह देख कर कि एप बन्दरों का भय टीवों के दृश्य से किसी प्रकार भी कम नहीं होता और मौका पाने पर एप बन्दर उसे कभी भी जिन्दा न छोड़ेंगे दर्जन हमेशा उसे अपने साथ ही रखने लगे थे। आज भी

जब वे भोजन के लिये शिकार की तलाश में निकले तो उन्होंने टीबो को अपनी पीठ पर लाद दिया और पेड़ों ही पेड़ों पर एक ओर खाना हुए।

टार्जन बराबर उत्तर की ही ओर बढ़ते चले गये और एप बन्दरों से उनका फासला दिनों दिन बढ़ने लगा। इस समय उनका जो कुछ भी था टीबो ही था अस्तु केवल उसी को साथ लिये उत्तर दिशा के जङ्गलों में परिभ्रमण करने लगे। शिकार तथा पानी काफी तायदाद में मिलते रहने के कारण एप बन्दरों के झुण्ड में वापस लौटने का उन्हें ख्याल तक भूल गया।

टीबो भी अब एप बन्दरों से दूर रहने के कारण पहले से कुछ अधिक प्रसन्न दिखाई देने लगा। टार्जन जिस समय जमीन पर झूँक उधर कहीं जाते थे वह भी बराबर उनके पीछे पीछे दौड़ता हुआ चलता था। पेड़ों पर भी अब वह उछलता कूदता उनका साथ देता था किन्तु इतना सब होने पर भी उसके चेहरे पर प्रसन्नता के चिह्न टार्जन को कभी भी नहीं दिखाई पड़ते थे। दिनों दिन वह दुबला ही होता जाता था। जिसके कितने ही कारणों में एक यह भी था कि आदमखोर होने के कारण उसे वे माँस प्रिय नहीं मालूम होते थे जिन्हें टार्जन बहुत ही स्वाद से खाया करते थे और जिन्हें वे टीबो को भी खाने के लिये दिया करते थे।

उसकी आँखें एक दम गड़हे में धँस गई थीं, गाल पिचक गये थे, और पसलियों की हड्डियाँ इस प्रकार मांस के ऊपर दिखाई देने लगी थीं कि यदि कोई उन्हें गिनना चाहे तो बड़ी ही आसानी के साथ गिन सकता था। कदाचित् उसके मन लायक भोजन न मिलने के साथ ही सदा उसका भयभीत रहना भी उसकी इस शारीरिक दुर्दशा का कारण रहा हो। टार्जन ने भी उसकी यह हालत देखी और उन्हें इस बात की बड़ी ही चिन्ता पैदा हो गई। उनकी सदा से ही यह इच्छा थी कि उनका बालू दिनों दिन दृष्ट पृष्ठ तथा मजबूत होता जाय परन्तु इसके विपरीत जब उन्होंने उसे बराबर दुबले ही होते देखा तो इस बात का उन्हें बड़ा

ही दुःख होने लगा । केवल एक ही बात में उन्हें उस लड़के की उन्नति होती दिखाई देती थी और वह यह कि वह धीरे धीरे एप बंदरों की भाषा समझने तथा बोलने लग गया था । यहाँ तक कि अब टार्जन धीरे धीरे उससे बातें भी कर लेते थे और जिन शब्दों को वह समझ नहीं पाता था उसे बराबर इशारों से उसे समझाते जाते थे, परन्तु अधिकतर टीबो चुपचाप ही रहता था । चिन्ता के भाव उसके चेहरे से एक क्षण के लिये भी दूर नहीं होते थे और न अपनी माता मोमाया का ख्याल ही उसके चित्त से कभी भूलता था । आपके और हमारे देखने में मोमाया का चेहरा चाहे कितना ही भयानक क्यों न हो परन्तु उसकी निगाह में तो वह मानो सुन्दरता की देवी ही थी ।

शिकार खेलते समय जंगल में आगे की ओर बढ़ते समय टार्जन के दिमाग में अब तरह तरह के ख्याल घूमा करते थे । एक समय जब वे पेड़ों ही पेड़ों पर एक ओर जा रहे थे और टीबो भी उनके पीछे पीछे एक डाल से दूसरी डाल पर उछलता कूदता चला जा रहा था टार्जन की निगाह एक सिंहनी पर पड़ी जिसके मुँह से निकलती आवाज सुन कर ही वे समझ गये कि वह किसी के दुःख में कराह रही है । टार्जन रुक गये और ध्यान से उसकी ओर देखने लगे । वह एक पेड़ के नीचे बैठी हुई थी और उसके दो बच्चे उसके आस पास खेल रहे थे परन्तु उसका ध्यान उन दोनों की ओर न था बल्कि बालों के उस गुच्छे की ओर था जिसे अपने अगले पैरों से दबाये वह करुणस्वर से आर्तनाद कर रही थी । टार्जन ने ध्यान से उसकी ओर देखा, वह उसका एक मरा हुआ बच्चा था जिसके प्रति उसकी ममता यहाँ तक बढ़ी हुई थी कि अपने अन्य बच्चों का जरा भी ख्याल न कर के वह बार बार दुःखित नेत्रों से उसी की ओर निहार रही थी ।

उस भयंकर जीव के हृदय में भी आन्दोलन मचाते हुये वात्सल्य स्नेह को टार्जन अच्छी तरह समझ गये । अभी थोड़ी देर पहले अपने रस्से से वे उसे तंग करने के इरादे में थे परन्तु उसकी ऐसी हालत देख उन्होंने

अपना इसादा पलट दिया। हवशी के लड़के दोनों को साथ रखते रखते वे अच्छी तरह समझ गये थे कि कितनी भारी जिम्मेदारी माँ बाप के ऊपर आ पड़ती है और उसके मुख दुःख का कितना भारी असर माँ बाप पर पड़ता है। उनके हृदय ने इस समय उस सिंहनी के प्रति इतनी अधिक समवेदना प्रगट की जितनी कि आज से कुछ दिन पहले वह कभी भी न करता। उसकी और करुणा से देखते हुये टार्जन की आँखों के सामने यकायक अपने बच्चे के दुःख से बिलखती तथा जंगलों की खाक छानती मोमाया की तस्वीर फिर गई। सिंहनी का दुःख देख कर मोमाया के हार्दिक क्लेश का भी आभास उन्हें मिल गया। इसी समय उनका ध्यान टीका तथा उसके बालू गाजन की ओर भी गया। उन्होंने सोचा कि कैसा आन्तरिक स्नेह उन दोनों माँ बच्चों में है। यदि गाजन दबर्दस्ती उसकी माँ टीका से छीन लिखा जाय तो टीका की क्या दशा हो? टार्जन के मुँह से एक हलकी गुराहट निकली—मानों गाजन खास उन्हीं का कोई हो। येवों यह समझ कर कि अवश्य किसी शत्रु को सामने देख कर ही टार्जन इस प्रकार गुस्सये हैं आँखें फाड़ फाड़ कर चारों ओर देखने लगा और इधर उनकी गुराहट सुन सिंहनी भी उठ कर खड़ी हो गई। उसके दोनों कान ऊपर की ओर उठ गये, दुम इधर से उधर हवा में हिलने लगी, मुँह ऊपर की ओर हो गया जिधर से आती हुई आवाज उसके कानों में पड़ी थी, और हरी पीली आँखें क्रोध से चमकने लगीं। उसके दोनों छोटे बच्चे जो अभी थोड़ी देर पहले कुछ दूर पर खेल रहे थे, भय से सिकुड़ कर उसके पास आ दबके।

एक बार अपना सिर हिला कर टार्जन पेड़ों ही पेड़ों पर होते हुए शिकार की खोज में चल दिये परन्तु समूचा दिन उनकी आँखों के सामने क्रमशः मोमाया, टीका तथा सिंहनी की तस्वीरें फिरती रहीं जिनका वास्तव्य प्रेम एक दूसरे से इतना भिन्न होने पर भी किसी प्रकार कम न था।

बसन्त सफर करते करते तीसरे दिन दोपहर को मोमाया उस गन्धे

बुकाबी की गुफा के पास जा पहुँची। बूढ़े जादूगर ने जंगली जानवरों को अपनी गुफा में घुसने से रोकने के लिये गुफा के मुहाने पर कितने ही पेड़ों की शाखाएँ एक दूसरे में गुथ कर एक प्रकार की जाली सी बना कर रख दी थी, जिसे थोड़ा एक ओर हटा कर मोमाया ने गुफा के भीतर की ओर भाँक कर देखा। उसके भीतर गहरा सन्नाटा देख मोमाया का हृदय काँप उठा। गुफा के बाहर भी चारों ओर एक दम सन्नाटा था फिर भी मोमाया को ऐसा मालूम हुआ मानो कहीं छिपी हुई आँखें उसे घूर घूर कर देख रही हों। एक बार वह पुनः काँप उठी परन्तु शीघ्र ही अपने को सन्नाटा और गुफा में पैर रखने के इरादे से थोड़ा आगे को बढ़ी किन्तु ठीक इसी समय गुफा के भीतर की ओर से आती हुई एक ऐसी आवाज उसके कानों में पड़ी जिसे न तो आदमी की ही आवाज कहा जा सकता था और न किसी जानवर की। वह मानों किसी के मुँह से निकली प्रसन्नता विहीन हँसी थी। भय से काँप कर मोमाया वहाँ से हट गई और तब सीधे जंगल की ओर भागी। गुफा से कई सौ गज दूर निकल जाने बाद तब कहीं जाकर वह अपने को थोड़ा बहुत सन्नाटा सकी। अब वह सोचने लगी, “क्या इतने खतरों को पार करने बाद भी वहाँ तक पहुँचने की मेरी मेहनत इस प्रकार बर्बाद जायगी?” उसने पुनः एक बार उस गुफा के मुहाने के पास जाने का इरादा किया किन्तु फौरन ही भय ने उसे पुनः धर दबाया।

भय से काँपती तथा हृदय में निराशा भरे हुए वह मोंगल के गाँव की ओर वापस लौटी परन्तु कुछ ही कदम आगे बढ़ने बाद वह रुक गई। उसकी निगाहों के सामने इधर उधर कूदते फिरते अपने बालक टोबो की तस्वीर घूम गई। वह पुनः तन कर खड़ी हो गई और उसी गुफा की ओर वापस लौटी जिसमें बुकाबी जादूगर रहा करता था। पुनः गुफा के भीतर की ओर से वही सूखी हँसी सुनाई दी। पर इस बार मोमाया समझ गई कि वह आवाज लकड़बग्घे के गले से निकली हुई है। इस

समय उसका शरीर काँप नहीं रहा था। अपने भाले का मुँह गुफा की ओर कर के उसने जोर से बुकावी को गुफा के बाहर आने के लिये आवाज दी।

परन्तु बुकावी के बदले एक लकड़बग्घे का मुँह गुफा के बाहर निकल आया। मोमाया ने अपने बरछे की नोक उसके मुँह में गड़ा दी। क्रोध से गुर्ग कर लकड़बग्घा पुनः भीतर लौट गया और मोमाया ने पुनः बुकावी का नाम ले कर आवाज दी। इस बार किसी ने टूटी फूटी आवाज में उसका उत्तर दिया परन्तु यह आवाज भी जानवरों की आवाज से किसी प्रकार भिन्न न थी। बुकावी कह रहा था—“कौन बुकावी को पुकार रहा है ?”

उसने उत्तर दिया, “मैं हूँ मोमाया ! इस समय मैं सीधे मोंगा के गाँव से चली आ रही हूँ।”

बुकावी ने पूछा, “तुम क्या चाहती हो ?”

मोमाया बोली, “मैं ऐसा कोई जादू चाहती हूँ जो मोंगा के जादूगर के जादू से अधिक जबरदस्त हो ! जंगल का सफेद दैत्य मेरे बच्चे टीनो को चुरा ले गया है और मैं जानना चाहती हूँ कि वह कहां है और मुझसे उससे किस प्रकार भेंट हो सकती है !”

बुकावी बोला, “बुकावी का जादू बड़ा ही जबरदस्त है ! वह इस काम को कर सकता है पर इसके बदले में पाँच मोटे ताजे बकरे और एक नई चटाई देना पड़ेगा !”

जङ्गलियों में मोल भाव की बड़ी आदत रहती है, अस्तु मोमाया ने उत्तर दिया, “इतने से काम के लिये दो बकरे काफी हैं !”

मोल भाव के बखेड़े ने बुकावी को गुफा के बाहर आने के लिये वाध्य किया परन्तु जैसे ही मोमाया की निगाह कुछ से गले पचे बुकावी के धिनौने चेहरे पर पड़ी वह घबड़ा कर दो कदम पीछे हट गई। सचमुच ही उसका चेहरा हृद से ज्यादा भयंकर था।

उसके दोनों ओर दो लकड़बग्घे खड़े थे जो सम्भवतः सदा उसके साथ ही रहने के अभ्यस्त थे। वह मानों पिशाचों का एक मण्डल मालूम होता था। बुकावी पुनः बोला, “पाँच मोटे ताजे बकरे और एक नई चटाई !”

मोमाया ने उत्तर दिया, “दो बकरे और एक चटाई !” परन्तु बुकावी अपनी माँग पर अड़ा रहा। लगभग आध घण्टे तक बराबर इसी तरह मोल भाव होता रहा जिस बीच में उसके साथी दोनों लकड़बग्घे बराबर गुर्राते तथा सूखी हँसी की आवाज निकालते रहे। अन्त में तीन बकरे तथा एक चटाई पर मामला तय पाया पर उसके साथ में ताँबे की एक तार भी !

बुकावी बोला, “आज रात में जब चन्द्रमा को निकले दो घण्टे बीत जायँ तब तुम आओ। मैं ऐसा जंतर तुम्हें दूंगा जो फौरन तुम्हारे टीबो को तुम्हारे पास खींच ले आवेगा। परन्तु इस बार तीनों बकरे चटाई तथा ताँबे की तार अपने साथ ले कर तभी यहाँ आना !!”

मोमाया बोली, “नहीं, मैं ये चीजें अपने साथ ले नहीं आ सकती। मेरा काम हो जाने पर इन्हें लेने के लिये तुम्हें मेरे साथ मोंगा के गाँव चलना होगा।”

असम्मतिसूचक सिर हिलाता हुआ बुकावी बोला, “तब मैं जंतर नहीं तैयार करूँगा ! जब तक मुझे ये चीजें नहीं मिल जायँगी तब तक मैं तुम्हारी कुछ भी मदद नहीं कर सकूँगा !!”

मोमाया ने उससे कितनी ही अनुनय विनय की परन्तु वह बराबर अपनी बात पर अड़ा ही रहा। लाचार क्रोध से ताव पेंच खाती हुई मोमाया झनक पटक कर वहाँ से लौट पड़ी। उसकी समझ में यह बात नहीं आ रही थी कि किस प्रकार इन चीजों को साथ ले कर वह मोंगा के गाँव से यहाँ तक सही सलामत लौट सकती है, परन्तु कुछ ही दूर

जाते जाते चाहे जैसे भी हो उसने इसे करने का ही निश्चय कर लिया क्योंकि उसे टीबो का उद्धार जो करना था।

टीबो के साथ आगे बढ़ते हुये टार्जन के नाक में बारा हिरन की गंध आई अस्तु उन्होंने टीबो को पेड़ की एक डाल पर पत्तियों की आड़ में छिपा कर बैठा दिया और स्वयं उस ओर वदे जिधर से उन्हें हिरनों की गंध आ रही थी।

अकेले टीबो को बड़ा ही भय मालूम होने लगा। वास्तविक भय से काल्पनिक भय कहीं अधिक कष्टकर प्रतीत होता है। अभी उसे अकेले बैठे अधिक देर नहीं हुई थी कि सहसा उसके कानों में नीचे की ओर पत्तियों के चरमराने तथा किसी के घूमने फिरने की आहट सुनाई पड़ी। अपने समीप की डाल से चिपका हुआ वह टार्जन के जल्द वापस लौटने की ईश्वर से प्रार्थना करने लगा और उसकी भय-विह्वल आँखें उस ओर देखने लगीं जिधर से आती हुई पैरों की आहट अभी अभी उसके कानों में पड़ी थी। क्रमशः वह आवाज उस पेड़ के बहुत समीप आ गई जिसके ऊपर वह बैठा हुआ था और भय से करीब करीब पागल सा हो कर वह एक टक उसी ओर देखने लगा।

सहसा आस पास के झाड़ियों की डालें हटीं और उसके बीच से निकलती हुई किसी औरत पर उसकी निगाह पड़ी। आवेश से चिल्ला कर टीबो जमीन पर कूद पड़ा और तेजी के साथ उस औरत की ओर दौड़ा। मौमाया भय से दो कदम पीछे हट अपना बरछा तान कर खड़ी हो गई परन्तु एक ही क्षण बाद जैसे ही उसकी निगाह अपने प्यारे बच्चे पर पड़ी अपना भाला एक ओर फेंक उसने अपने प्यारे बच्चे को गोद में उठा लिया। मारे प्रसन्नता के इस समय दोनों की आँखों से आँसू निकल निकल कर जमीन पर लुढ़क रहे थे।

अपने पास ही इस आवाज को सुन करीब की एक झाड़ी में सोया हुआ सिंह जाग उठा। झाड़ी के बीच से उसकी निगाह मौमाया तथा

उसके लड़के पर पड़ी। वह समझ गया कि थोड़ा ही आगे बढ़ने पर एक ही छलांग में वह अपने शिकार पर जा पहुँचेगा। अपनी दुम हिला कर उसने एक उबासी ली।

*

*

*

हवा का रुख एक दम से पलट गया और टार्जन के शरीर की गंध हिरन के नाक में जा घुसी। एक बार उसने रुक कर अपने कान खड़े किये और दूमरे ही क्षण टार्जन का शिकार एक दम लापता हो गया। क्रोध से अपना सिर हिला कर टार्जन पुनः पीछे की ओर वापस लौटे। सदा की आदत के अनुसार अपने पैर मावधानी के साथ पेड़ों की शाखाओं पर रखते हुये वे वापस लौट रहे थे कि सहसा किसी औरत तथा बच्चे के एक साथ ही सिसकने की आवाज उनके कानों में पड़ी। बिजली की भाँति तेजी के साथ टार्जन आगे बढ़े।

परन्तु आगे बढ़ते समय टार्जन के कानों में एक दूसरी आवाज भी पड़ी। यह आवाज न तो मोमाया के ही कान में पड़ी थी न टीबो ही के, परन्तु टार्जन के कान हिरन के कानों की भाँति ही तेज थे। उस आवाज के कान में पड़ते ही उन्होंने अपनी पीठ पर लटकता हुआ बरछा अपने हाथ में ले लिया और पहले से भी अधिक फुर्ती के साथ आगे बढ़े।

न्यूमा सिंह ने आगे की ओर झपटने में अधिक तेजी नहीं दिखाई। वह समझ गया था कि अब उसका शिकार किसी प्रकार भी उसकी पहुँच के बाहर नहीं हो सकता अस्तु वह धीरे धीरे झाड़ी के बाहर निकला और लालच भरी निगाहों से अपने शिकार को देखने लगा।

अब मोमाया की निगाह भी उस सिंह पर पड़ी और उसने अपने टीबो को छाती के साथ चिपका लिया। इतना खतरे उठाने बाद अपने बच्चे को पा कर भी मौत को इतने समीप देख उसका कलेजा एक दम बैठ सा गया और वह चीख उठी। उसने अपना भाला सीधा किया और

समूची ताकत खर्च करके उस सिंह की ओर फेंका परन्तु सिंह के कन्धे को छीलता हुआ वह बरछा छटक कर जमीन पर गिर पड़ा। न्यूमा सिंह जोर से दहाड़ उठा और तेजी के साथ मोमाया की ओर झपटा।

मोमाया ने अपनी आँखें बन्द कर लेनी चाहीं परन्तु वह ऐसा कर न सकी। उसने सन्नात मृत्यु को तेजी के साथ अपनी ओर झपटते देखा और इसी समय उसने कुछ और भी देखा। एकाएक एक सफेद दैत्य मानों आसमान से कूद कर उस झपटते हुए सिंह के रास्ते में आ खड़ा हुआ। एक लम्बा चौड़ा मजबूत बरछा उस दैत्य के हाथ में एक बार चमका और तब तेजी के साथ उस सिंह की ओर चला।

क्षण भर बाद ही न्यूमा सिंह अपने पिछले पैरों के बल जमीन पर बैठ अगले दोनों पंजों से छाती में घुसे हुये बछें को बाहर निकालने की कोशिश करता दिखाई दिया। उसके पंजों की चोट ने बछें को टेढ़ा कर दिया। हाथ में अपना लम्बा शिकारी छुरा लिये टार्जन क्रोध से भरे सिंह का चक्कर काट रहे थे। दो बार वह छुरा ऊपर आसमान की ओर उठा और सिंह की पीठ में जा घुसा। बछें की चोट से कमजोर भया हुआ वह सिंह मृत्यु की यन्त्रणा से छटपटाता हुआ जमीन पर लोट गया।

बुकाबी यह सोच कर कि कहीं तीन मोटे ताजे बकरे तथा एक नई चटाई उसके हाथ से निकल न जाय चुपचाप मोमाया के पीछे पीछे चला। वह जानता था कि उसका मन्त्र और यन्त्र वास्तविक कितना गुण रखते हैं और इसी लिये जैसे बने इनाम अपने कब्जे में कर लेना ही उसने बुद्धिमानी समझा।

जैसे ही सिंह का सामना करने के लिये टार्जन उसके सामने आ कर खड़े हुए बुकाबी की निगाह भी सामने के दृश्य पर पड़ी। वह फौरन ही समझ गया कि अवश्य यही वह सफेद दैत्य होगा जिसके सम्बन्ध में मोमाया से मुलाकात होने के पहले भी वह कितनी ही बार कितनी ही तरह की बातें सुन चुका है।

अपने शत्रु उस सिंह को मरा देख अब मोमाया ने भयभीत आँखों से सामने खड़े उस सफेद दैत्य की ओर देखा। यही वह दैत्य था जो उसके टीबो को चुरा कर ले भागा था। अवश्य वह पुनः टीबो को उसके हाथों से छीन लेगा। मोमाया ने टीबो को और भी जोर के साथ अपनी छाती से चिपका लिया। इस बार टीबो को अपने से दूर होने देने के पहले ही अपनी जान दे देने का उसने निश्चय कर लिया था।

कुछ देर तक टार्जन ध्यान से उन दोनों माँ बेटों की ओर देखते रहे। सिसकते हुए टीबो को अपनी माँ के गले से चिमटे देख उनके हृदय में पुनः ध्यान आया कि उनके गले से इसी प्रकार लिपटने वाला संसार में कोई भी नहीं है !

कुछ देर बाद टीबो ने अपना चेहरा ऊपर उठाया। जब उसकी आँखें टार्जन पर पड़ीं तो वह जरा भी भयभीत नहीं हुआ और विनती भरे शब्दों में एप बन्दरों की भाषा में बोला, “टार्जन ! मुझे मेरी माँ मोमाया से अलग मत करो, न मुझे उन एप बन्दरों के पास ही दोबारा ले चलने की कोशिश करो क्योंकि टाग और गुन्टो आदि को देख कर मुझे बड़ा ही डर लगता है। ओ जङ्गल के राजा टार्जन ! मुझे अपनी माँ के साथ रहने दो ! जिन्दगी के अन्तिम दिनों तक हम लोग तुम्हारे आभारी रहेंगे और तुम्हारे लिये नित्य गाँव के दरवाजे के बाहर भोजन रख दिया करेंगे ताकि तुम्हें कभी भूख से तकलीफ न उठानी पड़े !!”

टार्जन ने एक लम्बी साँस खींची और बोले, “अच्छी बात है ! जाओ मोंगा के गाँव में सकुशल वापस लौट जाओ और टार्जन तुम्हारे पीछे पीछे चल कर इस बात का खयाल रखेगा कि जंगल का कोई भी जीव तुम्हें किसी तरह की हानि न पहुँचाने पावे।”

टीबो ने टार्जन की कही बातें अपनी भाषा में मोमाया को सुना दीं और टीबो को गोद में लिये मोमाया सीधे मोंगा के गाँव की ओर खाना हुई। मोमाया के हृदय में इस समय भय तथा प्रसन्नता दोनों एक साथ

ही युद्ध कर रहे थे। आज से पहले वह टार्जन को जंगल का दैत्य समझती थी परन्तु आज से उन्हें वह जंगल का देवता समझने लगी। आज से पहले कभी भी किसी देवता के साथ साथ चलने का सौभाग्य उसे प्राप्त नहीं हुआ था। उसने टीबो को अपनी छाती के साथ चिपकाने बाद प्रेम से उसका मुँह चूम लिया। टार्जन के मुँह से पुनः एक लम्बी साँस निकली। वे आप ही आप बोले, “टीका के लिये टीका का बालू है ! सेबर सिंहनी के लिये उसके बच्चे हैं ! गोमंगानी औरत के लिये टीबो है ! जंगल के सभी जीवों के लिये प्रेम करने की वस्तुएँ हैं परन्तु टार्जन के लिये संसार में कोई भी नहीं है ! न तो कोई बीबी है न बच्चा ! पर उस किताब के काले कोड़े बताते हैं कि टार्जन मनुष्य है और सम्भव है मनुष्य अकेला ही रहने के लिये संसार में पैदा किया गया हो !”

बुकावी ने उन लोगों को जाते देखा और उसके मुँह से भी एक लम्बी साँस निकाली। क्रोध में भरा हुआ इस समय वह बार बार यही बात अपने मन में दुहरा रहा था कि जैसे भी होगा वह मोमाया से तीन मोटे बक्करे एक नई चटाई तथा ताँबे की तार वसूल करेगा।

जादूगर का बदला

इंग्लैंड में हैट पैन्ट तथा हंटिंग कोट से सजे सजाये स्थानापन्न लार्ड ग्रे स्टोक जब अनेक साथियों को लिये चिड़िया के शिकार के लिये आगे बढ़ते थे तो उनके हाथ में अव्वल दर्जे की बन्दूक रहती थी और चिड़ियाओं का शिकार कर के वापस लौटते समय वे जिस गर्व का अनुभव करते थे उसका तो वर्णन करना ही बृथा है। अपने साथ में वे शिकार की हुई इतनी चिड़ियाएँ ले कर लौटते थे जितनी कि कदाचित् वे साल भर में भी खा न सकते बल्कि असल तो यह है कि उनमें से एक भी

चिड़िया उनके खाने में कभी नहीं आती थी, केवल शिकार भर का ही उन्हें शौक था ।

और उधर सुदूर अफ्रीका में असली लार्ड ग्रे स्टोक भी अपने शिकार में व्यस्त थे, परन्तु इनके शिकार का तरीका दूसरा था और शिकार भी निरीह चिड़ियाएँ न थीं । इस असली लार्ड ग्रे स्टोक के पास बन्दूक न थी किन्तु केवल उनकी भूख और अपूर्व ताकत से भरा उनका शरीर था !

जिस दिन एक सजे सजाये टेबुल के पास बैठे लार्ड ग्रे स्टोक कांटे चम्मच से उन लज्जी जानवरों के गोश्त को उठा उठा कर मुँह में रख रहे थे जिनमें से एक भी उनका शिकार किया हुआ न था और पास ही में रखी बोतलों में भरे उस तरल पदार्थ को गिलास पर गिलास भर भर कर गले के नीचे उतार रहे थे जो सिवाय बुद्धि को मन्द कर देने के और किसी प्रकार का भी लाभ नहीं पहुँचा सकता था, और साथ ही कभी कभी बगुले के पंख जैसा सफेद तौलिया अपने बगल से उठा उठा कर अपना मुँह तथा हाथ भी साफ करते जाते थे—उन्हें इस बात का भला क्या पता हो सकता था कि जिस ऐश्वर्य को भोगते हुए वे इस समय लार्ड ग्रे स्टोक बने हुए हैं वह वास्तव में उनका नहीं है और उनके खिताब तथा धन का असली मालिक इस समय सुदूर अफ्रीकन जंगल में अपने ताजे शिकार का माँस खाने बाद उनकी तरह सफेद तौलिया इस्तेमाल न कर के अपना खून भरा हाथ अपनी जाँघ में पोछ कर अपनी प्यास बुझाने के लिये समीप बहती हुई नदी की ओर बढ़ रहा है ।

नदी के समीप पहुँच कर जिस समय असली लार्ड ग्रे स्टोक अर्थात् टार्जन अपनी प्यास बुझा रहे थे जंगल का एक दूसरा जीव भी दबे पाँव उनके पीछे पीछे आकर उनके कुछ ही फासले पर खड़ा हो गया था । वह एक सिंह था जो इस समय उन्हें पानी पीते देख धीरे धीरे गुर्रा रहा था । मगर टार्जन ने अब से बहुत पहले ही, जब कि वह दिखाई भी नहीं दिया था, उसकी आहट सुन ली थी और अब उसे अपने इतने समीप

देखने पर भी वे निश्चिन्ती के साथ जानवरों की भाँति झुक कर मुँह से पानी पी रहे थे। इसके बाद वे खड़े हो गये और जंगली जानवरों की तरह धीरे धीरे कदम रखते हुए एक ओर को हट गये।

न्यूमा सिंह एक मनुष्य को अपने पानी पीने के स्थान पर खड़े पानी पीते देख चुपचाप ध्यान से उनकी ओर देखता रहा था और अब धीरे धीरे गुर्राता हुआ आगे बढ़ रहा था। टार्जन भी गुर्राते हुए धीरे धीरे एक ओर को हटने लगे परन्तु इस समय उनकी निगाह सिंह के चेहरे की ओर नहीं वरन उसके दुम की ओर थी। सिंह की दुम यदि भोंके के साथ अगल बगल की ओर हिलती दिखाई दे तो मनुष्य को सावधान हो जाना चाहिए और यदि वह एक दम सीधी खड़ी हो तो मनुष्य को या तो लड़ने की तैयारी करनी चाहिये या वहाँ से भाग जाना चाहिए, परन्तु इस समय इन दोनों में से कोई भी बात नहीं थी। सिंह चुपचाप अपनी दुम नीचे झुकाये नदी के किनारे जा पहुँचा और ठीक उसी स्थान पर पानी पीने लगा जहाँ अभी थोड़ी देर पहले टार्जन पानी पी रहे थे। संभव है दूसरे ही दिन वे दोनों एक दूसरे के खून के प्यासे हो जायँ परन्तु आज युद्ध की कोई भी आवश्यकता न देख दोनों में से किसी ने भी एक दूसरे की ओर आवश्यकता से अधिक ध्यान न दिया। सिंह को पानी पीता छोड़ कर टार्जन जंगल की ओर वापस लौट आये और पेड़ों पर चढ़ कर सीधे मोंगा के गाँव की ओर खाना हुए।

मोंगा के गाँव गये उन्हें लगभग एक पक्ष बीत गया था। टीबो को उनकी माँ के सपुर्द करने के बाद से अब तक उनकी इच्छा कभी भी उस ओर जाने की नहीं हुई थी क्योंकि उस छोटे लड़के टीबो से थोड़ा बहुत प्रेम हो जाने के कारण उसका बिछोह उन्हें बहुत ही गढ़ाया था और उस गाँव की ओर जाने पर उस बात के पुनः स्मरण होने से उन्हें बेकार ही क्लेश होता।

परन्तु चाहे टीबो से उन्हें कितना ही प्रेम क्यों न हो गोमंगानियों के प्रति उनकी चिर-शत्रुता में अभी तक किसी प्रकार का भी परिवर्तन नहीं हुआ था। अपनी माता काला की हत्या करने वाले हबशियों को वे सदा अपना शत्रु ही समझते थे और उन्हें तंग करने में उन्हें बड़ा ही आनन्द आता था। आज फिर उनके गांव में पहुँच कर कुछ तमाशा करने की इच्छा उनके मन में बलवती हो उठी और इसीलिए वे सोचे उस गाँव की ओर जा रहे थे।

जिस समय वे मोंगा के गांव के समीप पहुँचे ग्रन्थकार भलीभाँति चारो ओर फैला नहीं था। अपने सदा के नियमानुसार वे गांव की सड़क के ऊपर वाले एक पेड़ पर जा बैठे और वहीं बैठे बैठे हबशियों का तमाशा देखने लगे। उनसे ठीक नीचे की ओर पास की एक भोपड़ी में से बेतरह रोने चिल्लाने की आवाजें आ रही थीं। टार्जन को ये आवाजें बड़ी ही कर्णकटु मालूम हो रही थीं अस्तु इस आशा से कि संभव है कुछ देर में वे आवाजें बन्द हो जायँ उन्होंने कुछ समय के लिये वहाँ से हट जाना ही उत्तम समझा, किन्तु दो घंटे बाद जब वे पुनः वापस लौटे तब भी उन्होंने वह आवाज पहले ही की तरह होती हुई पाई।

इस प्रकार की कर्कश आवाज करने वाले पर उन्हें बेतरह क्रोध चढ़ आया और उसका गला घोट कर वह आवाज बन्द कर देने की इच्छा से वे चुपचाप जमीन पर कूद उस ओर बढ़े। भोपड़ियों की आड़ में अपने को छिपाते हुए जब वे उस भोपड़ी के समीप पहुँचे जिसके भीतर से रोने की आवाज आ रही थी तो अन्य भोपड़ियों की भाँति इस भोपड़ी के सामने भी उन्होंने आग बलती पाई। आग के चारो ओर कुछ औरतें भी बैठी हुई उन्हें दिखाई दीं जो स्वयं भी रो रही थीं।

उस समय की उन औरतों की घबड़ाहट का ख्याल कर टार्जन के चेहरे पर एक हलकी मुस्कुराहट आई जब कि वे यकायक कूद कर उनके

बीच जा खड़े होंगे। उन्होंने निश्चय कर लिया था कि उनकी उसी घबड़ा-हट में वे भोपड़ी के भीतर घुस जायँगे और रोने वाले का गला घोट कर जंगलियों के एकत्रित होने के पहले ही विसी पेड़ पर जा चढ़ेंगे।

मोंगा के इस गांव में टार्जन आज के पहले भी कितनी ही बार ऐसा तमाशा कर चुके थे। प्रत्येक बार यकायक उन्हें अपने बीच में पाकर जंगलियों के हवास एकदम गुम हो जाया करते थे और उनकी इस घबड़ाहट और इधर उधर की भाग दौड़ में उन्हें जितना आनन्द मिलता था उतना संसार की और किसी भी चीज में नहीं मिलता था। खाली हत्या करने में अब उन्हें किसी प्रकार का भी आनन्द नहीं आता था। माँतें देखने के वे ऐसे आदी हो गये थे कि अब उन्हें उममें न तो कोई नवीनता ही दिखाई देती थी न किसी प्रकार का आनन्द ही मिलता था। कितने ही हबशियों को जान से मार कर अब तक वे काला की मौत का काफी बदला ले चुके थे अस्तु अब उन्हें इसमें भी कुछ आनन्द नहीं आता था, हाँ उनसे छेड़-खानी करने में अवश्य रोचकता मालूम होती थी और इस काम से कभी भी उनका चित्त ऊबता नहीं था।

वे जोर से चिल्ला कर उन औरतों के बीच में कूदने का उपक्रम कर ही रहे थे कि इसी समय भोपड़ी के दर्वाजे पर एक औरत की शक्ल आ खड़ी हुई। यह शक्ल उसी रोने वाले की थी जिसका गला घोटने की इच्छा से वे पेड़ के नीचे उतरे थे। इसी समय सहसा आग जोर से बल उठी और उसकी चमक उस औरत के चेहरे पर जा पड़ी। उसकी रोशनी में टार्जन ने उस औरत को भलीभाँति पहिचान लिया। वह टीबो की माँ थी परन्तु आग की एक हलकी चमक उस स्थान पर भी जा पड़ी जहाँ टार्जन खड़े हुए थे और उसकी चमक टार्जन के शरीर पर पड़ते ही मोमाया भी उन्हें पहचान गई। जैसे ही टार्जन आगे बढ़े वह भी दौड़ कर उनके पास जा पहुँची। अन्य औरतों ने भी धूम कर टार्जन की सूख

देखी पर उन पर निगाह पड़ते ही सब की सब खड़बड़ा कर उठ खड़ी हुई और जिधर जिसने रास्ता पाया उसी ओर भाग चलीं। मगर यह मोमाया टार्जन के पैरों पर गिर पड़ी और हाथ का इशारा करता तथा रोती हुई इस प्रकार न जाने क्या क्या बोलने लगी कि वे एकदम घबड़ा गये। उसके मुँह से निकला एक शब्द भी उनकी समझ में नहीं आ रहा था पर थोड़ी देर तक वे चुपचाप खड़े उसका भयावना चेहरा देखते रहे। यद्यपि वे उसकी हत्या करने के लिये आये थे पर इस समय उसका इस तरह बड़बड़ाना सुन वे अपने स्थान पर खड़े उसका मुँह ही ताकते रह गये। एक बार उन्होंने अपने चारों ओर सतर्कता से देखा और तब फिर उसकी सूरत देखने लगे। सहसा उनके हृदय के भाव यकायक पलट गये। वे छोटे टीबो की मां की किसी प्रकार भी हत्या नहीं कर सकते थे और न उसकी बेमतलब की बातों को ही सुनने के लिये तैयार थे अस्तु वे पीछे की ओर धूमे और अन्धकार में कहीं विलीन हो गये। दूसरे ही क्षण वे पेड़ों पर उछलते हुए जङ्गल में आगे की ओर बढ़ने लगे और मोमाया के चिह्छाने की आवाज क्रमशः विलीन होने लगी।

आगे बढ़ते बढ़ते जब वे एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जहाँ मोमाया के चिह्छाने की आवाज उन्हें एकदम नहीं सुनाई देती थी तब जा कर उन्हें कुछ शान्ति मिली। उन्होंने सन्तोष की एक गहरी साँस ली और रात काटने के लिये पत्तों तथा डालियों की एक अच्छी जगह देख उसी पर जा लेटे। एक सिंह गुराँता हुआ उस पेड़ के नीचे इधर से उधर चक्कर काट रहा था और ठीक इसी समय उनकी बास्तविक सम्पत्ति पर अधिकार जमाये हुए नकली लार्ड ग्रे स्टोक लन्दन के अपने आलीशान महल में सुन्दर सफेद चादर पर लेटे हुए कमरे की खिड़की के नीचे म्याऊँ म्याऊँ करती हुई बिल्ली की आवाज सुन कर भड़का रहे थे।

सुबह उठते ही टार्जन उस रास्ते पर खाना हुआ जिससे हाल ही में

आगे की ओर गये होर्टा सूअर की गन्ध उन्हें मालूम पड़ी। थोड़ी ही दूर आगे बढ़ने पर उन्हें जमीन पर दो गोमंगानियों के पैरों के चिह्न दिखाई दिये जिनमें एक तो किसी बड़े आदमी का तथा एक किसी छोटे लड़के का था। टार्जन का बचपन ही से स्वभाव था कि किसी भी नई घात को देख वे फौरन ही उसके अन्वेषण में लग जाया करते थे अस्तु इस समय भी वे आगे बढ़ते बढ़ते यकायक रुक गये और नीचे बालू में सूक्ष्म रूप से लिखी किसी कहानी को पढ़ने का प्रयत्न करने लगे। हम और आप जिस बात का प्रयत्न करने पर भी पता न लगा सकते उसे टार्जन एक ही निगाह में समझ गये। उस स्थान पर कितने ही जानवरों के पैरों के निशान एक दूसरे के ऊपर पड़े दिखाई दे रहे थे और हम लोगों की निगाह में वे कुछ भी मतलब नहीं रखते थे परन्तु टार्जन की निगाह में वे सभी अपनी अलग अलग कहानी कह रहे थे। आज से तीन दिन पहले टैन्टर हाथी उस रास्ते से गुजरा था, एक दिन पहले सिंह ने वहाँ किसी जानवर का शिकार किया था, तथा केवल एक ही घंटा पहले होर्टा सूअर उस रास्ते से गुजरा था परन्तु टार्जन का ध्यान इन बातों की ओर न था, वे ध्यान से जमीन पर पड़े गोमंगानियों के पैरों के निशानों को देख रहे थे। उससे उन्हें पता लगा कि एक दिन पहले कोई बूढ़ा आदमी एक लड़के के साथ उत्तर की ओर गया है और उसके साथ दो लकड़बग्घे भी हैं।

टार्जन को अपनी आंखों पर विश्वास न हुआ। एक दूसरे के ऊपर पड़े पैरों के निशान को देख कर उन्हें मालूम हो गया कि ये दोनों जानवर उन दोनों गोमंगानियों का पीछा करते हुए नहीं गये हैं बल्कि इनमें से एक आगे आगे गया है और दूसरा पीछे पीछे। इसके बाद या तो दोनों एक साथ ही आगे बढ़े हैं या आगे पीछे परन्तु बहुत कुछ खोजने पर भी इस बात का कोई कारण उनकी समझ में नहीं आया। विशेष कर जब उन्होंने

देखा कि वे दोनों लकड़बग्घे कुछ दूर तक दोनों गोमंगानियों के अगल बगल हो कर भी गये हैं तब तो उनका आश्चर्य और भी बढ़ गया । इसके बाद उन्होंने यह भी देखा कि छोटा गोमंगानी अपने बगल में चलने वाले लकड़बग्घे के भय से सिकुड़ता हुआ आगे बढ़ा है किन्तु बूढ़े गोमंगानी को जरा भी भय नहीं मालूम हुआ है ।

अब तक तो टार्जन केवल उन दोनों गोमंगानियों के पैरों के निशान की ही जाँच कर रहे थे परन्तु अब थोड़ा और ध्यान देने से उन्हें एक और नई बात का पता चला जिसके मालूम होते ही वे स्तंभित हो कर अपने स्थान पर खड़े हो गये । वह बात उन्हें ऐसे स्पष्ट तौर पर मालूम हो गई मानो किसी मित्र ने उसे उनके लिये ही उस पगडंडी पर हस्कों में लिख रखा हो ।

यह निशान उसी लड़के के पैरों का था जिसे उन्होंने इतने दिनों तक अपना बालू बना कर रखा था ! यकायक उनका ख्याल उसकी माँ मोमाया की ओर चला गया जिसे वे मोंगा के गांव में रोती बिलखती छोड़ आये थे । उसके झोपड़े के सामने बैठ कर रोती हुई औरतों का मतलब भी अब उनकी समझ में आ गया । कोई आदमी उसके लड़के को उठा कर ले गया है और यह समझ कर कि कदाचित् इस बार भी वे ही उसे उठा ले गये हैं उसने उनका पैर पकड़ कर रोना शुरू किया था ।

अब सभी बातें साफ साफ टार्जन की समझ में आ गई । परन्तु उन्हें आश्चर्य यह हो रहा था कि आखिर इस बार उस लड़के को कौन उठा ले गया है ! फिर उस आदमी के साथ साथ ये दो लकड़बग्घे क्यों चल रहे थे ! जो कुछ भी हो उन्होंने इन बातों का पता लगाने का निश्चय कर लिया । निशान कम से कम चौबीस घण्टे पहले के थे । टार्जन उन्हीं के साथ साथ आगे बढ़े । इन निशानों पर जगह बजगह जंगली जानवरों के पैरों के निशान भी पड़े हुये थे और जहाँ पहाड़ी तथा पथरीली जमीन थी

वहाँ तो टार्जन का भी माथा चकरा जाता था क्योंकि वहाँ किसी तरह के निशान दिखाई नहीं देते थे किन्तु ऐसी जगहों पर उनकी अद्भुत घ्राण-शक्ति उन्हें सहायता देती थी और इसीसे वे ठीक रास्ते का पता लगाते हुए आगे की ओर बढ़ने लगे ।

*

*

*

यह आफत टीबो पर दो दिन के अन्दर ही आ गई थी । बुकावी मोमाया तथा उसके लड़के का पीछा करता हुआ सीधा मोंगा के गाँव में उस स्थान पर पहुँचा जहाँ मोमाया नदी के किनारे जा कर अपने बरतन साफ कर रही थी तथा टीबो किनारे पर खेल रहा था । बुकावी को पास की झाड़ी से अकस्मात् निकलते देख वह बेतरह डर गया और चिल्लाता हुआ अपनी मां के पास जा कर उसके शरीर से लिपट गया ।

अपने बच्चे पर कोई भयानक खतरा आया जान मोमाया ने क्रुद्ध सिंहनी की भाँति घूम कर पीछे की ओर देखा । परन्तु जब उसे टीबो के भय का वास्तविक कारण मालूम हुआ तो उसने संतोष की एक गहरी सांस ली । टीबो को अभी तक वह अपने कलेजे के साथ चपकाये हुए थी ।

बुकावी बोला, “मैं तीन बकरे एक चटाई तथा आदमी की कलाई के बराबर ताँबे की तार लेने के लिये आया हूँ ।”

क्रोध से मोमाया ने उत्तर दिया, “तुन्हें देने के लिये मेरे पास न तो बकरे ही हैं न चटाई और न ताँबे की तार ! तुमने मेरे लिये कोई जन्तु तैयार नहीं किया । जंगल के देवता ने स्वयं मेरा लड़का मेरे सुपुट कर दिया ।”

बुकावी बोला, “यह तुम्हारा भ्रम है ! मैं ही ने जंगल के देवता को तुम्हारा लड़का वापस लौटाने की आज्ञा दी थी ।”

मोमाया ठठ कर हँस पड़ी और बोली, “भूटे बेईमान ! फौरन अपना काला मुँह ले कर अपने लड़कबग्घों के साथ अपनी गंदी माँद में

वापस चला जा नहीं तो तेरी मनहूस शकल देख कर सूर्य भी बादलों के पर्दे में अपना मुंह छिपा लेगा !”

बुकावी बोला, “मैं तीन बकरे एक चटाई तथा आदमी की कलाई के बराबर तांबे की तार लेने के लिए तुम्हारे पास आया हूँ। उन्हें देने का तुमने वादा किया था और मैं उन्हें लेकर ही लौटूंगा !”

मोमाया बोली, “तुम्हें इनमें से एक भी चीज न मिलेगी ! दुष्ट बेईमान ! तूने बिना ये चीजें पेशगी लिये जंतर तैयार करने से इन्कार कर दिया था। जिस समय मैं अपने गांव की ओर वापस लौट रही थी जंगल के देवता ने सिंह के मुंह से उद्धार कर के मेरा बच्चा मेरे सुपुर्द कर दिया था। उसी की मदद सच्ची मदद थी और तेरे जंत्र मंत्र में कुछ भी ताकत नहीं है।”

बुकावी ने उत्तर दिया, “मैं तीन बकरे, एक.....”

परन्तु मोमाया ने उसे आगे कहने न दिया। वही बात बार बार सुनते सुनते वह एक दम उकता गई थी। टीबो को छाती से लगाये वह सीधे मोंगा के गांव की ओर चल दी।

दूसरे दिन मोमाया अन्य औरतों के साथ केले के खेत में काम कर रही थी और टीबो जंगल के किनारे वाले मैदान में खेल रहा था। टीबो के हाथ में एक छोटा सा बरछा था और भविष्य में एक अच्छा लड़ाका होने की आशा में इस समय वह बरछा चलाने का अभ्यास कर रहा था।

एकाएक टीबो की निगाह पेड़ के ऊपर उछल कर चढ़ती हुई एक गिलहरी पर जा पड़ी। उसके लड़कपन के खेलवाड़ी दिमाग ने गिलहरी को हटा कटा लड़ाका मान लिया। उसने हाथ का बरछा ऊपर हवा में उठाया और अपने शरीर की समूची ताकत खर्च कर के उसे उस गिलहरी के ऊपर फेंक दिया।

परन्तु उसके हाथ से छूटा हुआ बरछा न तो गिलहरी पर ही गिरा और न उस पेड़ ही पर जिस पर कि वह गिलहरी चढ़ रही थी बल्कि छटक कर सामने वाले जंगल की एक झाड़ी में जा गिरा। वह झाड़ी उस सीमा से कुछ आगे थी जिसके पार जाने की गाँव वालों को मनाही थी परन्तु इस समय चारों ओर औरतें काम कर रही थीं और उस झाड़ी का फासला भी बहुत अधिक न था अस्तु हिम्मत बाँध कर टीबो उस झाड़ी के पास जा पहुँचा और जोर लगा कर उस झाड़ी में फँसे बरछे को बाहर खींचने का उद्योग करने लगा।

परन्तु वह झाड़ी खाली न थी बल्कि उसकी आड़ में तीन जीव छिपे हुये थे। एक तो वही बूढ़ा जिसके कुष्ठ से गले हुए चेहरे तथा जगह बजह गालों तथा नाकों के स्थान पर हो जाने वाले छेदों ने उसे एक दम भयानक बना रक्खा था, और दूसरे उसी के ठीक पीछे की ओर बैठे दो लकड़बग्घे।

टीबो की निगाह इन तीनों पर तब तक न पड़ी जब तक कि वह बरछा निकालने की कोशिश में उस झाड़ी के भीतर न जा घुसा। उसी समय बूढ़े जादूगर उसने टीबो को पकड़ लिया और उसके मुँह पर हाथ रख उसके बाहर निकलती चीख को रोक दिया। टीबो ने बेतरह हाथ पैर मारे परन्तु उस दुष्ट के आगे उसकी एक भी न चली।

दूसरे ही क्षण बुकावी उसका मुँह बन्द किये किये उसे आगे के भयानक जंगल की ओर घसीट ले चला। दोनों लकड़बग्घे इस समय उसके दोनों बगल चले जा रहे थे और कभी चलते चलते आगे कभी पीछे और कभी गुर्गते हुये फिर बगल में हो जाया करते थे।

इन लकड़बग्घों की सूरत ने टीबो को और भी भयभीत कर दिया। उसे उस सफेद देवता की याद आ गई जिसके साथ उसने जंगलों में कुछ दिन गुजारे थे और वह ईश्वर से यही प्रार्थना करने लगा कि वही सफेद

देवता इस समय भी उसके पास आ पहुँचे। अपने इस छोटे से जीवन में उस पर जो जो मुसीबतें गुजर रही थीं वे कदाचित किसी अच्छे भले चंगे मनुष्य के सिर भी अपने जीवन में न पड़ी होंगी।

बूढ़ा बुकावी टीबो से बहुत कम बातचीत करता था। दिन भर ये लोग बराबर उत्तर ही की ओर बढ़े चले गये किन्तु समूचे दिन में उसने कदाचित ही दो ही तीन बार टीबो से बातचीत की हो, और वे बातें भी बराबर दस बकरों तीन चटाई तथा मनुष्य की जाँघ के बराबर लम्बी ताँबे की तार के ही विषय में होती थीं। टीबो समझ गया कि अब उसकी माँ से उसके बदले में वह दुष्ट तीन बकरों की जगह कदाचित दस बकरे वसूल किया चाहता है मगर भला उसकी माँ दस बकरे कहां से दे सकती थी ? अपनी जिन्दगी में उसके पास दो तीन बकरों से अधिक उसे कभी भी दिखाई नहीं दिये थे और गाँव का सरदार मोंगा एक बेकार लड़के के बदले में दस मोटे मोटे बकरे देने के लिये भला कब राजी होगा ! टीबो का माथा चक्कर खाने लगा और वह अपने जीवन से निराश हो गया। उसे निश्चय हो गया कि वह जादूगर अब निश्चय ही उसे मार कर खा जायगा। अन्तर्वेदना से उसकी आँखों में आँसू आ गये और वह इतना धबड़ा गया कि जगह ब जगह ठोकरें खा खा कर जमीन पर गिरने लगा। बुकावी ने उसका कान पकड़ कर जोर से ऐंठ दिया और उस धक्का देता हुआ आगे बढ़ने लगा।

रास्ते का यह समय टीबो को वर्षों के समान मालूम हुआ। खैर ज्यों त्यों कर के रास्ता समाप्त हुआ और बुकावी अपनी गुफा के मुहाने पर पहुँचा जहाँ पेड़ की डालियों की जाली बना कर उसने अपने पीछे इस लिये लगा दिया था कि जंगली जानवर गुफा के भीतर न घुसने पावें।

दर्वाजा एक ओर हटा कर बुकावी ने टीबो को भीतर चलने का इशारा किया। दोनों लड़कबग्घे कूद कर इनके पहले ही गुफा में घुस गये।

रास्ता बिल्कुल अन्धेरा और बहुत ही तंग था। टीबो को भीतर कर के दर्वाजा पुनः पूर्ववत् बन्द करने बाद बुकावी टीबो का हाथ पकड़े आगे बढ़ा।

अन्दर की जमीन बड़ी ही ऊबड़ खाबड़ थी। दोनों तरफ की दीवारों में कितने ही नोकीले पत्थर बाहर निकले हुए थे जिनकी ठोकें खा खा कर टीबो का शरीर जगह बजगह छिल गया मगर बुकावी इस तेजी के साथ आगे बढ़ रहा था मानों किसी जानी बूझी सड़क पर दिन के समय जा रहा हो। रास्ते के हर एक मोड़ तथा बुपाव से वह इस प्रकार परिचित था जैसे कि माता अपने पुत्र के चेहरे से परिचित रहती है पर इस समय वह बड़ी ही जल्दबाजी में भी मालूम पड़ता था और टीबो को निर्दयता के साथ आगे की ओर खींचता लिये जा रहा था। कुष्ठ का रोगी, जिससे लोग नफरत करते डरते तथा सदा दूर रहते थे दया नाम की किसी वस्तु को जानना ही न था। वह परले सिरे का धूर्त चालबाज बेरहम तथा दुष्ट था।

उसके सम्बन्ध की कितनी ही निर्दयता पूर्ण कथायें प्रसिद्ध थीं। गांव में बच्चों को उनकी माताएँ बुकावी का नाम लेकर डराया करती थीं। टीबो भी कितनी ही बार इसी प्रकार डराया जा चुका था परन्तु आज वह भय मानों साक्षात् रूप धारण करके उसके सामने आ खड़ा हुआ था। एक तो घोर अन्धकार, दूसरे उस भयावने जादूगर का साथ, तीसरे शरीर पर लगी चोटों की असह्य पीड़ा, चौथे भविष्य का भय, तथा इन सब के साथ ही साथ उन भयावने लकड़बग्घों की गुराहट, इन सब ने उस छोटे से बालक के शरीर को मानों एक दम शक्तिविहीन सा बना दिया था।

सहसा टीबो को अपने सामने की ओर हलकी रोशनी दिखाई दी और दूसरे ही क्षण वे लोग एक ऐसे चौकोर कमरे में जा पहुँचे जिसमें ऊपर की ओर बनी एक पहाड़ी दरार में से छून छून कर आती हुई हलकी

रोशनी ने उस स्थान को थोड़ा बहुत उजेला कर रक्खा था। दोनों लकड़बग्घे इन दोनों से पहले ही उस स्थान पर जा पहुँचे थे। जैसे ही बुकावी टीबो को साथ लेकर वहाँ पहुँचा वे दोनों लकड़बग्घे अपने तेज नोकरीले दाँत निकाले गुराँते हुए टीबो की ओर बढ़े। दोनों ही भूखे थे और एक ने तो उसके पैर के पास पहुँच उसका मांस ही दाँतों से नोच लेने का इरादा किया। पर बुकावी ने कमरे की गच्च पर पड़ी एक लकड़ी उठा ली और जोर से उस लकड़बग्घे को मारी। वह फौरन वहाँ से भाग कर दीवार के पास जा खड़ा हुआ और जोर से गुराँते लगा। बुकावी पुनः उसकी ओर बढ़ा। क्रोध से लकड़बग्घे के शरीर के समूचे रोंगटे खड़े हो गये। उसकी आँखों से भय तथा क्रोध दोनों हो के भाव प्रगट हो रहे थे परन्तु बुकावी के भाग्य से उनमें भय की मात्रा ही अधिक थी।

दूसरा लकड़बग्घा बुकावी का ध्यान बँटा हुआ देव फौरन ही टीबो के पास जा पहुँचा। टीबो चिल्ला कर बुकावी की ओर दौड़ा। उसने फौरन ही घूम कर पीछे देखा। दूसरे लकड़बग्घे पर निगाह पड़ते ही वह फौरन ही उसकी ओर भी दौड़ा और लकड़ी से पीटता हुआ उसे भी दीवार तक खदेड़ ले गया। दोनों लकड़बग्घे दीवार के साथ साथ कमरे का चक्कर काटने लगे और उनका मालिक गुस्से में भरा हाथ में छड़ी लिये उनके पीछे पीछे घूमने लगा। कभी वह उन्हें छड़ी से पीटता था तथा कभी मालियों की बौछार से उनकी पूजा करता था।

कभी कभी क्रोध में भरे वे जानवर बुकावी के ऊपर झपटने का भी उपक्रम करते थे। उस समय टीबो भयभीत हो कर एक ओर दबक जाता था परन्तु खेरियत इतनी ही थी कि क्रोध के साथ ही साथ उन लकड़बग्घों के हृदय में सदा भय का सञ्चार भी रहता था और वे बुकावी पर झपटते झपटते फौरन ही किसी ओर भाग निकलते थे।

अन्त में बुकावी थक कर खड़ा हो गया और टीबो की ओर देख कर

बोला, “मैं अपने दस बकरे दो चटाई और आदमी की जाँघ बराबर लम्बी ताबे की तार तेरी मां से वसूल करने जाता हूँ। मैं उसे समझा दूँगा कि इतनी चीजें मिल जाने पर मैं उसे ऐसा जंतर तैयार कर के दे दूँगा जिससे तू फौरन उसे मिल जाय। तुझे यहीं ठहरना होगा और उस सामने के रास्ते में मैं इन लकड़बग्घों को बन्द करता जाऊँगा। यदि तूने जरा भी भागने की कोशिश की तो ये दोनों तुझे नोच नोच कर खा जायेंगे।”

इतना कह कर छड़ी उसने जमीन पर फेंक दी और उन दोनों लकड़बग्घों को अपने पास बुलाया। दुम नीचे की ओर दबाये तथा गुरांते हुए वे उसके पास आ खड़े हुए। बुकावी उन्हें हांक कर सामने के रास्ते में ले गया और लकड़ी की बनी एक छोटी जाली उस कमरे तथा रास्ते के बीच में लगा देने बाद यह कहता हुआ वहाँ से चल दिया, “अगर मुझे दसो बकरे तथा बाकी की चीजें न मिलीं तो मुझसे बची हुई तेरे शरीर की हड्डियाँ इन लकड़बग्घों को भी चाटने के लिये मिल जायँगी।”

उसके चले जाने पर टीबो उसकी कही हुई बात का मतलब अच्छी तरह समझता हुआ जमीन पर बैठ गया और दोनों हाथों से अपना मुँह टकने के बाद फूट फूट कर रोने लगा। वह जानता था कि उसकी मां कभी भी दस बकरे न दे सकेगी और वह लौट कर उसे अवश्य खा जायगा। कब तक वह अपने स्थान पर बैठा रहा इसकी उसे जरा भी सुब न थी परन्तु लकड़बग्घों की गुरांहट ने उसे शीघ्र ही होश में ला दिया। वे दोनों दरवाजे के पास पहुँच कर उसे तोड़ने के लिये बेतरह उछल कूद मचा रहे थे। अन्धकार में उनकी पीली पीली आँखें चमकती हुई दिखाई दे रही थीं और अपने दाँतों तथा पंजों से जाली को खसोटते हुए वे बेतरह गुरां रहे थे। टीबो ने जाली को आगे की ओर झुकते टेढ़ा होते तथा चरमराते देखा। वह समझ गया कि अब उसके दूटने में अधिक विलम्ब नहीं है और थोड़ी ही देर में वे दोनों भूखे सिंहों की भाँति उसके ऊपर दूट पड़ेंगे।

धीरे धीरे समय बीतने लगा और रात्रि का घोर अन्धकार चारों ओर फैल गया। कुछ देर के लिये टीबो को भी निद्रा आ गई परन्तु मालूम होता था कि वे भूखे जानवर एक क्षण के लिये भी नहीं सोये। उनकी गुर्राहट तथा सूखी हँसी बराबर उसी तरह जारी थी। ऊपर के छेद में से टीबो को कुछ सितारों की चमक दिखाई दी और कुछ देर के लिये चंद्रमा भी एक ओर से दूसरी ओर जाता नजर आया। अन्त में किसी तरह रात बीती और सुबह की सुफेदी दिखाई देने लगी। टीबो ने पहले दिन सुबह से ले कर अब तक कुछ भी नहीं खाया था। रास्ते में उसे केवल एक बार पानी पीने की इजाजत मिली थी परन्तु अपनी नाजुक अवस्था को देख कर इस समय उसकी भूख तथा प्यास दोनों ही गायब हो गई थी।

इस समय सूर्य के प्रकाश में टीबो को उस कमरे की दीवार में एक दूसरी दरार दिखाई दी। यह दरार ठीक उस स्थान के सामन की दीवार में थी जहाँ वे दोनों लकड़बग्घे उछल कूद मचा रहे थे। यह दरार टीबो के घुसने लायक अवश्य थी परन्तु सम्भव था थोड़ी दूर जा कर वह एक दम सकरी हो गई हो अथवा यह भी सम्भव था कि टीबो उस राह से बाहर निकल ही जा सके। टीबो ने पास पहुँच कर उसके भीतर की ओर झाँका। उसे कुछ भी दिखाई न दिया। आगे अन्धकार में उसने अपना हाथ बढ़ाया परन्तु भीतर जाने की उसकी हिम्मत न पड़ी। फिर वह इस बात को भी भलीभाँति जानता था कि बुकाबो ऐसा बेवकूफ नहीं कि उसके भागने लायक रास्ता खुला छोड़ कर उस स्थान से चला जाय। यह रास्ता या तो आगे जा कर बंद हो गया होगा अथवा उसे किसी खतरे में ले जाकर फँसा देगा।

जंगली लोग स्वभाव से ही डरपोक होते हैं। प्रत्यक्ष चीजों से तो वे सदा डरते ही रहते हैं इसके अलावा बहुत सी अप्रत्यक्ष चीजों की भावना भी उन्हें बेतरह डराया करती है। भूत प्रेत दैत्य पिशाच आदि की भाव-

नाएँ उनके दिमाग में इस तरह जम कर बैठी हुई होती हैं कि वे जहाँ तहाँ इन्हीं के होने के ख्याल से बेतरह डरे रहा करते हैं ।

यही कारण था कि टीबो उस पहाड़ी दरार में घुसने से डर रहा था । यदि उसके भागने के लिये कोई खुला रास्ता भी होता तो भी कदाचित् वह उस रास्ते से यह सोच कर आगे न बढ़ता कि सम्भव है बुकावी ने उस रास्ते पर पहरा देने के लिये कुछ भूत प्रेत नियुक्त कर दिये हों ।

परन्तु इस स्थान के वास्तविक खतरे ने उसके इन ख्याली ग़तरो को एक दम भुला दिया क्योंकि रोशनी होते ही लकड़बग्घों ने उस जाली को तोड़ने का पुनः उद्योग शुरू कर दिया जो उन्हें उनके शिकार से दूर रखने के लिये बाधा-स्वरूप हो रही थी । अपने पिछले पैरों पर खड़े हो कर उ होने अपने पंजों तथा दाँतों से उस जाली को खसोटना तथा काटना शुरू कर दिया और भयभीत आँखों से टीबो ने उसे चरमराते और टूट कर आगे की ओर झुकते देखा । जाली का एक कोना तो एक दम से ही टूट गया था और जो कुछ बचा भी था उसके भी टूटने में अब अधिक देर नहीं दिखाई दे रही थी । टीबो समझ गया कि अब उसका खातमा होने में अधिक देर नहीं है ।

भय से चीख कर टीबो पीछे हटा और दीवार के साथ पीठ सटा कर खड़ा हो गया । एक गुर्राते हुए सिर को उसने जाली के बाहर निकलते देखा । वह जाली अब गिरा ही चाहती थी और उन क्रोध में भरे भूखे जानवरों के उस पर टूट पड़ने और उसकी हड्डी हड्डी तक चबा जाने में केवल कुछ ही क्षण बाकी रह गए थे ।

*

*

*

मोंगा के गाँव के घेरे के बाहर ही बुकावी की मोमाया से भेंट हो गई । उस पर निगाह पड़ते ही मोमाया एक बार तो चौंक कर दो कदम पीछे हट गई किन्तु फिर पौरन ही वह अपने दाँत बाहर निकाल कर उसकी ओर झपटी ।

बुकावी ने शीघ्रता के साथ अपने हाथ के बरछे की नोक उसकी ओर बर दी जिसे देख मोमाया बो लाचार हो कर उससे कुछ फासले ही पर रुक जाना पड़ा। उसने चिल्ला कर पूछा, “सच बता मेरा बच्चा टीबो कहाँ है ?”

बुकावी आश्चर्य का भाव दिखाता हुआ बोला, “तुम्हारा बच्चा ! बला मैं उसके बारे में क्या जानूँ ! मैं तो इतना ही जानता हूँ कि मैंने उसका जंगल के सफेद देवता से उद्धार किया और उसके बदले में तुमने मुझे अभी तक कुछ नहीं दिया। मैं अपना वही इनाम अर्थात् बकरे चटाई और ताबे की तार लेने के लिये इस समय भी तुम्हारे पास आया हूँ।”

मोमाया चिल्ला कर बोली, “सूअर के बच्चे ! तू ही ने मेरे बच्चे को चुराया है ! सीधे से मेरा बच्चा वापस कर दे नहीं तो मैं तेरी बोटी बोटी कटवा कर परिन्दों को खिला दूँगी !”

लाचारी की मुद्रा दिखाता हुआ बुकावी बोला, “तुम बेकार ही इतना लाल पाली हो रही हो ! मैंने एक बार कह दिया कि मुझे टीबो का कुछ भी पता नहीं है। पहिली बार भी तो मैंने उसे नहीं चुराया था। जंगल के सफेद दैत्य ने उसे चुराया था और जब एक बार वह उसे चुरा चुका है तो अवश्य इस बार भी उसी ने उसे चुराया होगा। खैर मुझे इन बखेड़ों से कुछ मतलब नहीं। मैं तो पहिली बार उससे तुम्हारी भेंट कराने के लिये जो मेहनत कर चुका हूँ उसका इनाम लेने तुम्हारे पास पहले भी आया था और अब भी आया हूँ। हाँ यदि वह फिर से लापता हो गया है और तुम मुझे उसका पता लगाने को कहती हो तो इसकी मजदूरी में मैं तुमसे दस मोटे ताजे बकरे तीन चटाई और आदमी की जाँघ के बराबर लम्बी दो ताँबे की तारें लूँगा। बाकी रहा मेरी पहली मेहनत का इनाम सो मैं तुमसे न माँगूँगा। तुम्हीं बताओ तुम्हारे लिये मैं और क्या कर सकता हूँ ?”

मोमाया चिल्ला कर बोली, “दस मोटे ताजे बकरे ! इतने बकरे तो कदाचित्त मैंने देखे भी न होंगे ! माँगा तो तुमने बहुत ही कम है !!”

बुकावी बोला, “दस मोटे ताजें बकरे तीन चटाई और आदमी की जांघ.....”

मोमाया ने हाथ का इशारा कर के उसे आगे बोलने से रोक दिया और बोली, “क्यों बेकार अपना मुँह दुखाते हो ! मेरे पास इतने बकरे नहीं हैं । खैर तुम यहीं ठहरे रहो मैं जा कर अपने आदमी को बुला लाती हूँ क्योंकि इस काम के लिये कोई न कोई इन्तजाम होना तो जरूरी ही है !”

बुकावी एक पेड़ के नीचे जा बैठा । इस समय वह बड़ा ही प्रसन्न था क्योंकि वह जानता था कि इस बार या तो उसे मुँहमांगी रकम ही मिलेगी या फिर बदला ! मोंगा के आदमियों की ओर से उसे जरा भी भय न था क्योंकि यह बात उससे छिपी न थी कि वे लोग उससे डरते तथा साथ ही साथ नफरत भी करते हैं । उसने समझ लिया था कि उसके बदल में कुछ होने के कारण कोई भी उस पर हाथ न उठावेगा और औवल दर्जे का जादूगर होने की ख्याति से कोई उसकी ओर टेढ़ी निगाह से ताकने की हिम्मत न करेगा । वह ऐसा ही कोई उपाय सोच रहा था कि उन लोगों से मिली हुई रकम किस तरह अपनी गुफा तक ले जायगा ।

थोड़ी ही देर बाद मोमाया उस स्थान पर वापस लौट आई । इस समय उसके साथ में तीन आदमी थे । एक तो उस गाँव का सर्दार मोंगा, दूसरा उस गाँव का जादूगर रब्बा केगा, और तीसरा मोमाया का पति इबेटो ! इन तीनों में से कोई भी ऐसा न था जिसकी सूरत देखने ही से भय न मालूम होता हो । फिर इस समय तीनों ही के क्रोध में भरे रहने के कारण उनकी शक्तें ऐसी भयावनी हो रही थीं कि उनकी ओर देखने वाला कोई भी आदमी डर जा सकता था, परन्तु यदि बुकावी इन तीनों को देख कर डरा भी हो तो उसने ऊपर से भय का कोई भी चिह्न प्रगट होने न दिया बल्कि उल्टे उन्हें इस प्रकार घूरने लगा मानों उन पर अपना रोआब जमाया चाहता हो ।

वे तीनों उसके समीप आ पहुँचे और उसे घेर कर खड़े हो गये। मोंगा ने पूछा, “सच बताओ इबेटो का लड़का कहाँ है ?”

बुकावी बोला, “भला मैं इस बात को क्या जानूँ ! अवश्य बही सकेद ऐत्य उसे फिर उठा ले गया होगा। लेकिन यदि मुझे काफी इनाम मिले तो मैं एक ऐसा तेज जंतर बना कर दे सकता हूँ जिससे इस बात का भी पता चल जायगा कि इबेटो का लड़का इस समय कहाँ है, और वह वापस लौट कर अपने माँ बाप के पास भी पहुँच जायगा। पहिले भी वह मेरे बनाए जंतर के जोर से यहाँ वापस लौटा था परन्तु उस बार मुझे उस मेहनत के बदले में कुछ भी इनाम न मिला और शायद इसी पाप का फल इबेटो को भोगना पड़ा है।”

मोंगा बोला, “जंतर मंतर के लिये मेरा जादूगर स्वयं मौजूद है अस्तु मुझे तुमसे वह सभ तैयार कराने की जरूरत ही क्या है ?”

अजीब तरह का मुँह बना कर बुकावी उठ खड़ा हुआ और बोला, “तो अच्छी बात है, आप लोग उससे जंतर तैयार कराइये और देखिये कि इबेटो का लड़का वापस आता है या नहीं ?”

इतना कह कर बुकावी पहले तो कुछ दूर तक चला गया पर इसके बाद घूम कर पुनः बोला, “देखो मैं कहे जाता हूँ कि तुम्हारे जादूगर को कोई तर्कित उस लड़के को कभी भी वापस नहीं ला सकती और मैं इस बात को भी जानता हूँ कि देर होने से तुम्हें वह लड़का भी जिन्दा नहीं मिलेगा। ऐसी हालत में फिर मेरी मेहनत कुछ काम न कर सकेगी। मेरे बाप की जो मरी हुई बहिन है उसके भूत को बुला कर मैंने इन सब बातों का पता लगाया है।”

बात यह थी कि मोंगा अथवा रब्बी केमा को चाहे स्वयं अपने यहाँ तैयार किए हुए जंतर मंतर पर कुछ भी विश्वास न हो फिर भी यह बात भली-भाँति प्रसिद्ध हो चुकी थी कि बुकावी का साथ कितने ही भूत प्रेतों से है जिनसे वह बराबर बातचीत भी किया करता है और उनमें से कम से कम

दो भूत तो लकड़बग्घों का रूप धरे बराबर ही उसके साथ रहा करते हैं। लेकिन इतना सब समझने पर भी वे लोग जल्दी में कोई बात तय करने वाले जीव न थे। इस काम की मजदूरी तय होना जरूरी था और मोंगा आसानी से दस मोटे ताजे बकरे तीन चटाई तथा दो तांबे की तारें एक ऐसे लड़के के बदले में देने के लिये तैयार न था जो लड़का होने के पहले ही मर जा सकता था।

अस्तु मोंगा बोला, “अच्छा पहले तुम कोई ऐसी करामात दिखाओ ताकि हम लोगों को इस बात का विश्वास हो जाय कि तुम्हारे जादू में कुछ ताकत है ! इसके बाद हम लोग मजदूरी के बारे में बातचीत करेंगे। तुम्हारे बाद खड़ा होगा भी अपने जादू की करामात दिखावेगा और इससे यह भी फैसला हो जायगा कि दोनों में से किसका जादू ज्यादा जबरदस्त पड़ता है !”

बुकावी बोला, “मैं इस काम के बदले में दस मोटे ताजे बकरे, तीन चटाई और आदमी की जाँघ बराबर लंबी दो तांबे की तारों से कम नहीं लूँगा और ये चीजें भी मैं पेशगी ही ले लूँगा। बकरे मेरी गुफा तक हाँक कर पहुँचा दिये जाने चाहियें, इसके बाद मैं जंतर तैयार करूँगा और उसके तैयार होने के दूसरे दिन वह लड़का अपनी माँ के पास वापस लौट आवेगा। इससे जल्दी यह काम नहीं हो सकता क्योंकि ऐसा तेज जंतर तैयार करने में काफी समय लगता है।”

मोंगा बोला, “मगर पहले तुम अपने जादू की कुछ करामात तो दिखाओ ताकि हम लोगों को तुम पर कुछ विश्वास जम जाय !”

बुकावी बोला, “अच्छी बात है, तब थोड़ी आग मँगाओ, मैं अभी तुम्हें अपने जादू का तमाशा दिखाता हूँ !”

मोमाया आग लाने के लिये भेज दी गई और जब तक वह वापस न लौटी मोंगा इस काम की मजदूरी के सम्बन्ध में बुकावी से मोल भाव करता रहा। उसने बुकावी को यह बात समझाने की कोशिश की कि दस

बकरे तीन चटाई तथा दो ताँवे की तारें एक लड़के तथा एक भले चंगे योद्धा के बदले में भी बहुत भारी रकम है। उसने यह भी कहा कि वह बड़ा ही गरीब है अस्तु इस काम के लिये दो बकरों से अधिक उसे न लेना चाहिये।

परन्तु बुकावी अपनी माँग पर अड़ा रहा और बराबर यही कहता रहा कि उसका मंत्र बहुत ही जबरदस्त है और जंतर तैयार करने के लिये उसे कम से कम पाँच बकरे तो उन भूतों की ही भेंट कर देने पड़ेंगे जो उस लड़के को खोज लाने में उसकी सहायता करेंगे। ये बातें हो ही रही थीं कि मोमाया आग ले कर लौट आई।

बुकावी ने उसमें से थोड़ी सी आग ले कर अपने सामने रख ली और अपने बगल में लटकती थैली में से एक महीन बुकनी निकाल कर उसमें छोड़ दी। आग में उस बुकनी के पड़ते ही बड़े ही जोर का धूआँ ऊपर की ओर उठा। बुकावी ने अपनी आँखें बन्द कर लीं और इधर से उधर भूमने लगा। इसके बाद अपने हाथ दो चार बार ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर करने बाद बेहोशी का ढोंग रच कर जमीन पर लेट गया। माँगा तथा उसके साथियों पर इन बातों का बड़ा भारी असर पड़ा और रब्बी केगा तो एक दम सकते की सी हालत में हो गया। वह समझ गया कि अब उसकी इज्जत में बढ़ा लगने में अधिक देर नहीं है। मोमाया जिस बरतन में आग लाई थी उसमें अभी भी थोड़ी बहुत आग बची हुई थी। बरतन उठा कर तथा सब लोगों की आँखें बचा कर उसने एक मुट्ठी सूखी पत्तियाँ उसमें डाल दीं और इसके बाद इस जोर से चिल्ला उठा कि सब लोग घबड़ा कर उसकी ओर देखने लगे। बुकावी ने भी जरा देर के लिये अपनी आँखें खोल दीं परन्तु जब उस बूढ़े ने असल मतलब समझ लिया तो इसके पहले कि किसी की निगाह उस पर पड़े उसने फिर उसी तरह बेहोशी का स्वांग रच लिया।

रब्बी केगा ने यह देख कर कि माँगा मोमाया तथा इबेटो दोनों ही

का ध्यान इस समय उसकी ओर है आग के उस बरतन में जोर की फूँक मारी जिनका नतीजा यह हुआ कि पत्तियें आग की गर्मी पा कर झुलसने लगीं और बरतन के मुँह से बहुत अधिक धूँआ निकल कर आसमान की ओर उठा। इस समय रब्बी केगा इस तौर पर आग के इस बरतन को पकड़े था कि किसी की भी निगाह उसके भीतर डाली पत्तियों पर न पड़े।

गांव के जादूगर की यह करामात देख सभी आंखें फाड़ फाड़ कर उसकी ओर देखने लगे। रब्बी केगा भी इस बात को समझ गया और अपनी छाती फुला कर इधर उधर उछलने तथा तरह तरह का मुँह बनाने लगा। इसके बाद अपना मुँह उसने आग के उस बरतन के साथ इस ढंग से सटाया मानों उसके भीतर की आत्माओं से बातचीत कर रहा हो।

यह कांड हो ही रहा था कि बुकावी ने अपनी आंखें खोल दीं। उसे भी इस समय बड़ी भारी उत्सुकता हो रही थी। इस समय किसी का भी ध्यान उसकी ओर न था। पुनः आंखें बंद कर वह बड़े ही जोर से गरज उठा और जब उसे मालूम हो गया कि मोंगा तथा उसके साथी उसी की ओर देख रहे हैं तो अपना शरीर अकड़ा कर जोर से अपने हाथ पैर पटकने लगा। इसके बाद वह अपनी आंखें बंद किये ही किये बोला, “मैं उस लड़के को देख रहा हूँ। वह यहां से बहुत दूरी पर है। वह उस सफेद देव के हाथ नहीं लगा है किन्तु अकेला है और बड़े भारी खतरे में है फिर भी यदि मुझे दस मोटे ताजे बकरे और बाकी चीजें मिल जायें तो मैं अभी भी उसे बचा सकता हूँ।”

रब्बी केगा उसकी बातें सुनने के लिये चुप हो गया था। मोंगा ने उसका ओर देखा। उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि दोनों में से किसका जादू जबरदस्त है। उसने रब्बी केगा से सवाल किया “तुम्हारा जादू क्या बताता है ?”

रब्बी केगा चिल्ला कर बोला, “मैं भी उसे देख रहा हूँ पर वह वहाँ नहीं है जहाँ बुकावी बता रहा है। वह पानी के नीचे मरा हुआ पड़ा है।”

उसकी बात सुन कर मोमाया जोर जोर से छाती पीटने तथा चिल्लाने लगी ।

*

*

*

*

बूढ़े आदमी के पैरों का निशान तथा उसके शरीर की गन्ध के सहारे टार्जन सीधे आगे की ओर बढ़े जा रहे थे । अन्त में वे उस गुफा के मुहाने पर जा पहुँचे जिसमें टीबो तथा वे दोनों लकड़बग्घे बन्द थे । यहाँ पहुँच कर वे खड़े हो गये और ध्यान से उन गुराहट की आवाजों को सुनने लगे जो गुफा के भीतर से आती हुई उनके कानों में पड़ रही थी ।

परन्तु ठीक इसी समय उन जानवरों को गुराहट के बीच उन्हें किसी बच्चे के बिलखने की एक पतली आवाज भी सुनाई दी । अब टार्जन ने एक मिनट भी बर्बाद करना मुनासिब न समझा । गुफा के दरवाजे पर रखवा दरवाजा हटा कर वे फौरन ही भीतर घुस गये । भीतर घोर अन्धकार था परन्तु सदा जंगल के घोर अन्धकार में रहने के अभ्यस्त टार्जन को उस अन्धकार में भी अपने मतलब की सभी चीं साफ साफ दिखाई दे रही थी ।

बड़ी ही फुर्ती किन्तु सावधानी के साथ वे आगे की ओर बढ़ने लगे क्योंकि रास्ता अन्धकारमय तथा साथ ही साथ बड़ा ही घूमघुमौवा था । ज्यों ज्यों वे आगे बढ़ते जाते थे लकड़बग्घों के गुराने की आवाजें और भी स्पष्टरूप से उनके कानों में पड़ती जाती थीं । किसी लकड़ी की चीज पर उनके पंजों की खुरखुराहट भी अब उन्हें साफ साफ सुनाई देने लगी । परन्तु इसी समय किसी बच्चे की चीख ने यकायक उनका ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया । टार्जन ने पहिचान लिया कि अवश्य वह मोमाया के लड़के टीबो की ही आवाज है और इसमें इस वक्त हद दर्जे का भय मिला हुआ है ।

टार्जन तेजी के साथ आगे बढ़े, परन्तु उनकी इस जल्दी में भी किसी

प्रकार की आतुरता न थी। जंगलों में रह कर मृत्यु देखने के वे इतने अभ्यस्त हो गये थे कि अपने किसी परिचित की मृत्यु का भी बहुत अधिक असर उनके चित्त पर नहीं पड़ता था, परन्तु युद्ध की आकांक्षा ने उनका पैर अवश्य तेजी के साथ आगे बढ़ाया। हृदय में वे एक प्रकार से जंगली जानवर ही थे अस्तु उनका जंगली हृदय युद्ध के लिये आतुर हो उठा।

पहाड़ी के बीच के उस बन्द चौकोर कमरे में दीवार के साथ सट कर खड़ा हुआ टीबो भयभीत नेत्रों से जाली तोड़ कर बाहर आने की कोशिश करते हुए लकड़बग्यों की ओर देख रहा था। वह इस बात को अच्छी तरह समझ रहा था कि कुछ ही देर बाद इन भयंकर जीवों के दाँत उसके सुलायम मांस में घुस जायँगे और उसे चीथ चीथ कर खा जायँगे।

अन्त में एक जोर की आवाज के साथ वह जाली टूट गई और वे दोनों जीव तेजी के साथ उस लड़के के ऊपर झपट पड़े। टीबो ने एक बार भयभीत दृष्टि से उन दोनों की ओर देखा और तब दोनों हाथों के बीच अपना मुँह छिपा कर रोने लगा।

कुछ देर के लिये लकड़बग्वे खड़े हो गये। सावधानी तथा कायरता ने उन्हें यकायक आगे बढ़ने से रोक दिया था। अपने स्थान पर ही खड़े वे ध्यान से उस लड़के की सूरत देख रहे थे। क्रमशः वे उसकी ओर बढ़ने लगे।

ठीक इसी समय टार्जन दबे पाँव उस कमरे में जा पहुँचे, परन्तु इतनी सावधानी से आने पर भी उन जानवरों से उनका आना छिपा न रहा। क्रोध से गुर्ग कर वे दोनों उनकी ओर घूमे और साथ ही टार्जन भी तेजी के साथ उनकी ओर झपटे। उनके चेहरे पर इस समय एक हलकी मुस्कराहट थी। कुछ क्षण तक उनमें से एक लकड़बग्वे उनके सामने अड़ा रहा किन्तु इन भीरु जानवरों के लिये उन्हें अपना शिकारी छुरा तक निकालना एक हलकी बात मालूम पड़ी। एक जानवरों की ओर झपट कर अपने दोनों मजबूत हाथों से उन्होंने उसकी गर्दन पकड़ ली और तब उसे

दुम दबा कर कमरे के दूसरी ओर जाते उसके साथी के ऊपर जोर से पटक दिया ।

इसके बाद टीबो के पास पहुँच कर उन्होंने उसे अपनी गोद में उठा लिया । जब टीबो ने लकड़बग्घों के पंजों के बदले किसी आदमी का हाथ अपने शरीर से छूते देखा तो फौरन ही आश्चर्य से अपनी आँखें खोल दीं किन्तु जैसे ही उसकी निगाह टार्जन पर पड़ी सन्तोष की एक हलकी चीख उसके मुँह से निकली और वह उनके शरीर के साथ लिपट गया ।

जिस समय टार्जन टीबो को अपनी गोद में लिये गुफा के मुहाने पर पहुँचे, लकड़बग्घों की उन्हें कहीं पर भी सूत दिखाई न दी । टीबो को वे पास बहते हुए एक झरने के किनारे ले गए और पानी पिलाने बाद तेजी से माँगा के गाँव की ओर खाना हुए । वे जल्दी से जल्दी उस बच्चे को उसकी मिलखती हुई माँ को गोद में दे दिया चाहते थे ।

*

*

*

बुकावी बोला, “नहीं नहीं, न तो वह लड़का मरा ही है और न नदी के नीचे पड़ा है । भला तुम्हारा यह मूर्ख क्या जाने कि जादू किस चिड़िया का नाम है । मगर इसकी धृष्टता तो देखो कि यह बुकावी के जादू को बुरा बता रहा है । बुकावी अभी भी मोमाया के लड़के को भली चंगी हालत में देख रहा है किन्तु वह बहुत दूर और भाँखतरे में है और अगर जल्दी से दस मोटे ताजे दकरे.....”

लेकिन इससे अधिक बुकावी और कुछ भी न कह पाया । उसके ऊपर की ओर के पेड़ पर कुछ खड़खड़ाहट हुई और सभी की निगाहें ऊपर को उठ गईं । जिस समय वहाँ बैठे उस संफेद दैत्य पर उन लोगों की निगाहें पड़ी सभी के शरीर का रक्त जम कर पानी हो गया परन्तु इसके पहले कि वे लोग वहाँ से भागें एक दूसरे चेहरे पर भी उन लोगों की निगाह पड़ी । वह चेहरा टीबो का था जो प्रसन्नता से मुस्कुराता हुआ इन लोगों की ओर देख रहा था ।

और तब टार्जन निर्भय चित्त से उन लोगों के बीच में कूद पड़े। उनके पीठ पर टीबो था जिसे उन्होंने उसकी माँ के सामने जमीन पर उतार दिया। मोमाया इबेटो तथा मोंगा ने उसे चारों ओर से घेर लिया और उससे तरह तरह के प्रश्न करने लगे। थोड़ी ही देर बाद मोमाया क्रोध में भरी हुई बुकावी की ओर घूमी क्योंकि टीबो ने उसकी बदमाशी का सब दाम्तान खोल कर सुना दिया था—परन्तु उसने बुकावी को अपने स्थान पर न पाया। यह समझ कर कि टीबो सब हाल अपनी माँ को सुना देगा उसने पहले ही वहाँ से खिसक जाने में अपनी भलाई समझी थी और तेजी के साथ अपनी माँ की ओर भाग गया था।

अपनी सदा की आदत के अनुसार टार्जन भी अपने स्थान से लापता हो गये थे। अब मोमाया की आँखें रब्बा केगा पर पड़ीं और उसकी आँखों में रब्बा केगा ने कुछ ऐसी बातें देखीं जिन्हें देख उसे अपनी खरियत नहीं मालूम हुई अस्तु वह दो कदम पीछे हट गया।

मोमाया चीख कर बोली, “हाँ तो क्या कहा था तुमने ? मेरा टीबो पानी के नीचे मरा हुआ पड़ा है और वह दूसरा हरामी का पिछा कहता था कि वह बहुत दूर भारी खतरे में है ! जादू ! क्या इसी का नाम जादू है ! अच्छा देखो अब मोमाया अपना जादू दिखाती है !!”

इतना कह कर मोमाया ने जमीन पर पड़ी एक लकड़ी उठा ली और जोर से रब्बा केगा के सिर पर जमाई। चिल्ला कर रब्बा केगा तेजी के साथ वहाँ से भागा। मोमाया भी उसके सिर और कंधे पर लकड़ियाँ मारती हुई पीछे पीछे दौड़ी और गाँव के फाटक तक उसने उसका पीछा न छोड़ा। गाँव के लड़के बच्चे औरत मर्द सभी इस तमाशे को देख प्रसन्न हो रहे थे क्योंकि सभी रब्बा केगा से डरते थे और डर बहुत शीघ्र नफरत में बदल जाता है।

इस प्रकार टार्जन ने अपने शत्रुओं की श्रेणी में आज दो और शत्रु बढ़ा लिये और ये दोनों ही रात भर बैठे उनसे बदला लेने के बाँधनू

बाँधते रहे, किन्तु इन बाँधनुओं को बाँधते समय भी जंगल के उस सफेद दैत्य का भय उनके कलेजे को बैठाता ही जा रहा था ।

युवक लार्ड ग्रे स्टोक यानी टार्जन को उनके इन बाँधनुओं का कुछ भी पता न था किन्तु यदि उन्हें यह बात मालूम भी होती तो कदाचित् वे इसकी कुछ परवाह न करते । वे उस रात भी उसी निश्चिन्ती के साथ सोये जैसे कि रोज सोते थे और यद्यपि उनके ऊपर की ओर किसी महल की छत न थी फिर भी वे लन्दन के अपने सम्बन्धी लार्ड ग्रे स्टोक की अपेक्षा अधिक चैन से ही सो रहे थे जो आवश्यकता से अधिक भोजन और शराब से अपना पेट फुलाने बाद अब तकलीफ से इधर से उधर करवटे बदल रहे थे ।

बुकावी का अन्त

लड़कपन में ही टार्जन ने अन्य बातों के साथ साथ घास का रस्ता बनाना भी सीख लिया था और उनके हाथ का बना रस्ता कैसा मजबूत होता था इस बात की ताईद उनका पोषणकर्ता पिता टब्लट बखूबी कर सकता था । यदि कोई उसे कभी एक मुट्ठी लम्बे तथा बड़े कीड़ों की घूस देता तो सम्भव था कि वह बता देता कि अपने बनाये रस्से की सहायता से टार्जन ने कितनी बार उसे तंग तथा बेइज्जत किया था ।

इतनी बार उस रस्से का फन्दा टब्लट के गले में पड़ा तथा वह हवा में झुलाया गया कि कुछ ही दिनों में वह टार्जन को अपना शत्रु समझने लगा और यदि टार्जन सदैव सतर्क न रहते और उनकी माता काला सावधानी के साथ उनकी देख रेख न करती तो वह न जाने कब का उन्हें जान से मार कर फेंक चुका होता ।

परन्तु रस्से द्वारा इस प्रकार की दिह्लगियाँ करते समय टार्जन भी एक बार बड़ी भारी आफत में फँस गये थे और इस बात से टब्लट को प्रस-

ब्रता तथा संतोष दोनों ही हुआ था परन्तु जब उसने टार्जन को उस खतरे से जीवित निकलते देखा तो क्रोध तथा नैराश्य से उसकी क्या हालत हुई इसे वही जान सकता है ।

बात यह हुई थी कि एक दिन जैसे ही टार्जन ने अपने ऊपर की ओर पेड़ पर बैठे एक साथी पर अपने रस्से का फन्दा फेंका वह फन्दा पेड़ की एक डाल में जाकर अटक गया । जैसे जैसे टार्जन उसे छुड़ाने के लिये झटका देते गये वह और भी कसता गया । आखिर टार्जन उसे छुड़ाने के लिये उसी रस्से को पकड़ कर ऊपर की चढ़ने लगे । अभी वे आधी दूर पहुँचे होंगे कि उनके एक खिलाड़ी साथी ने जमीन पर लटकते हुए उस रस्से के दूसरे सिरे को पकड़ लिया और एक ओर को ले चला । जब टार्जन ने उसे रस्सा छोड़ देने के लिये डांटा तो पहले तो उसने रस्सा ढोला कर दिया परन्तु बाद में फौरन ही पुनः उसे अपनी ओर खींचा । उसके ऐसा करने में टार्जन रस्सा पकड़े हुए ही एक बार हवा में भूल गये और इस भूले में उन्हें कुछ आनन्द मिला अस्तु रस्से पर चढ़ कर उन्होंने उसे उस डाल से छुड़ा लिया और तब उसे लिये दिये एक और ऊँची डाल पर जा चढ़े । यहाँ एक डाल पर उन्होंने उस मजबूती के साथ कस दिया और तब उसी रस्से से नीचे की ओर उतरते हुए उसके दूसरे छोर तक पहुँच गये । इसके बाद एक डाल पर पैर अड़ा कर उन्होंने धक्का दिया और हवा में भूलने लगे । उन्हें इसमें बड़ा ही आनन्द मिला और वे धीरे धीरे पैंग बढ़ाने लगे ।

टार्जन इस खेल में ऐसे मशगूल हुए कि इससे किसी प्रकार उनकी तबीयत नहीं भरती थी यहाँ तक कि उन्हें इसी प्रकार भूलते घण्टों बीत गये । पेड़ों तथा जमीन पर बैठे एप अन्दर अश्चर्य के साथ इस तमाशे को देख रहे थे । टबलट भी एक ओर बैठा हुआ बड़े गौर से इस खेल को देख रहा था ।

अन्त में जिस समय टार्जन पैंग बढ़ाते बढ़ाते एक दम ऊँचे पहुँच गये उनका रस्ता जो बड़ी देर से पेड़ की डाल पर रगड़ते रहने के कारण एक स्थान पर एक दम से घिस गया था एक हलकी आवाज दे कर टूट गया और टार्जन हवा में जोर से उछल कर तेजी के साथ जमीन की ओर गिरे ।

टबलट प्रसन्नता से उछल पड़ा । उसे विश्वास हो गया कि अब टार्जन जमीन पर गिर कर अवश्य मर जायगा और वह सन्तोष के साथ अपना बाकी बचा हुआ जीवन बिता सकेगा ।

टार्जन कोई चालीस फीट की ऊँचाई से जमीन की ओर गिरे पर खैरियत इतनी ही हुई कि वे खुली हुई जमीन पर न गिर कर एक घनी झाड़ी में जा गिरे जिसके कारण उनके शरीर की हड्डी चूर होने से बच गई और सिवाय झाड़ी की एक मोटी डाल द्वारा पीठ पर लगने वाली खरोंच के कारण बेहोश हो जाने के उन्हें चोट अधिक न लगी ।

कुछ ही मिनट बाद उन्हें पुनः होश आ गया और वे उछलते कूदते नजर आने लगे । टबलट क्रोध से पागल हो उठा । टार्जन के जिन्दा बच जाने से उसके तमाम बांधनू एक दम नष्ट हो गये थे परन्तु वह कर ही क्या सकता था । केवल अपना दिल मसोस कर रहा गया ।

परन्तु इस विपत्ति में पड़ कर टार्जन को एक भारी शिक्षा मिल गई । उन्हें मालूम हो गया कि कुछ देर तक एक ही स्थान पर रगड़ खाने से चाहे कितना भी मजबूत रस्ता क्यों न हो टूट जा सकता है और आगे चल कर उनके जीवन में एक दिन ऐसा भी आया कि वही चीज जो उनकी एक प्रकार से जान ले चुकी थी उनकी जान बचाने का कारण हुई ।

अब टार्जन वह लड़के नहीं थे । अब वे काफी बड़े और शरीर से दृष्ट पुष्ट हो गये थे । काला बहुत दिन पहले ही मर चुकी थी और उनकी देख रेख करने वाला इस संसार में कोई भी नहीं रह गया था । वे खुदमुस्तार

थे, उन्हें किसी के देख रेख की आवश्यकता भी नहीं थी, और वे स्वयं अपनी रक्षा करने के लिये काफी समर्थ हो चुके थे।

यों तो अपने जीवन में टार्जन ने अपने कितने ही शत्रु खड़े कर लिये थे परन्तु उनमें से कोई भी उनके हाल के बने शत्रु बुकावी ऐसा दुष्ट दगा-बाज और खूँखार न था। महीनों से बुकावी टार्जन से बदला लेने की इच्छा अपने मन में दबाये बैठा हुआ था और यद्यपि उसे इस बात की आशा बहुत ही कम थी कि वह उनसे बदला ले सकेगा फिर भी वह उस दिन की प्रतीक्षा कर रहा था जब उसे अपने अपमान का बदला चुकाने का समय मिले।

टार्जन के सभी लड़कपन के साथी अब बड़े हो गये थे और उनके साथ घूमने में उन्हें कोई विशेष आनन्द नहीं मिलता था। अब वे अधिकतर अकेले ही जंगलों में इधर उधर घूमने तथा शिकार करने में आनन्द का अनुभव किया करते थे।

इसी प्रकार एक दिन टार्जन उत्तर की ओर शिकार के लिये बढ़े जा रहे थे कि यकायक आसमान बादलों से आच्छन्न हो गया और बड़े जोर की आँधी चलने लगी। आँधी चलने के थोड़ी ही देर बाद मूसलाधार पानी भी बरसना आरम्भ हो गया। अफ्रीका का पानी अन्य देशों की भाँति हलका नहीं बरसता बल्कि ऐसे जोर से गिरता है कि थोड़ी ही देर के पानी में समूचा जंगल जलमय हो जाता है। ऐसा ही पानी इस समय बरस रहा था जब टार्जन एक पेड़ पर घने पत्तों से अपने को छिपाये बैठे हुए थे परन्तु वे पत्ते भला उनकी इस मूसलाधार पानी से किस प्रकार रक्षा कर सकते थे। आँधी भी इतने जोर की थी कि पेड़ों की बड़ी बड़ी डालें तथा कितने ही विशाल वृक्ष भी उखड़ कर जमीन पर गिरते दिखाई पड़ रहे थे।

परन्तु टार्जन को इन बातों की विशेष परवाह न थी क्योंकि वे जानते थे कि यह आँधी पानी अधिक देर तक टिकने वाला नहीं है। अभी वे

इन बातों पर विचार ही कर रहे थे कि बिजली यकायक जोर से चमक कर बड़े ही जोर से कड़की और देखते देखते ठीक उसी पेड़ पर आ गिरी जिस पर कि वे बैठे हुए थे। वह पेड़ कितने ही स्थानों से झूलस गया और उसकी लपट टार्जन के शरीर तक भी जा पहुँची। नतीजा यह हुआ कि वे बेहोश हो कर जमीन पर आ रहे।

पानी और आँधी के बन्द हो जाने पर बुकावी अपनी गुफा से बाहर निकला। वह एक आँख से बिल्कुल ही नहीं देख सकता था न किसी प्रकार की गन्ध ही उसकी नाक में जाती थी। कुछ रोग उसकी समूची नाक तथा एक आँख को ले बीता था और चेहरे का जो कुछ हिस्सा बाकी भी बच गया था वह भी दिनों दिन गलता ही जा रहा था अस्तु इस वर्षा के बाद प्रकृति की शोभा अथवा फूलों की गन्ध का उसे भला क्या आनन्द मिल सकता था फिर भी हवा खाने के नीयत से तथा थोड़ा टहलने के लिये वह अपनी गुफा से बाहर निकला।

बुकावी के दोनों ओर उसके सदा के साथी दोनों लकड़बग्घे खड़े हवा को सूँघ रहे थे कि सहसा उनमें से एक के मुँह से एक गहरी गुर्राहट निकली और वह अपना सिर नीचा किये जंगल में एक ओर को तेजी के साथ झपटा। दूसरा लकड़बग्घा भी उसके पीछे पीछे दौड़ा। बुकावी की उत्सुकता बढ़ी और वह भी हाथ में एक मूठदार छड़ी लिये उसी ओर दौड़ा।

दोनों लकड़बग्घे टार्जन से कुछ गज के फासले पर ही खड़े हो कर जमीन सूँघने लगे। उनके पीछे पीछे बुकावी भी पहुँचा और वहाँ जो दृश्य उसने देखा उसे देख स्वयं अपनी आँखों पर उसे विश्वास न हुआ, परन्तु जब उसे निश्चय हो गया कि उनके सामने वही सफेद दैत्य जमीन पर पड़ा हुआ है तो उसके प्रसन्नता का वारापार न रहा क्योंकि अब तक वह यही समझे हुआ था कि उसे उससे बदला लेने का मौका कभी न मिलेगा।

लकड़बग्घे अपने दाँत बाहर निकालते तथा गुराँते हुए शीघ्र ही टार्जन के पास जा पहुँचे पर बुकावी ने अपने हाथ की लकड़ी से मार कर उन्हें वहाँ से हटा दिया। उसने सोचा सम्भव है अभी भी उस जमीन पर पड़ी बेह में जान बाकी हो। एक बार तो वे खूँखार जानवर क्रोध से बुकावी के ऊपर झपटे परन्तु शीघ्र ही भय ने उनकी हिम्मत पस्त कर दी और वे पीछे हट कर पिछले पैरों के बल जमीन पर जा बैठे। फिर भी उन भूखे जानवरों की आँखों में इस समय तीव्र घृणा के लक्षण दीख रहे थे।

बुकावी ने झुक कर अपने कान टार्जन की छाती के साथ लगाये। दिल की धड़कन वन्द नहीं हुई थी। उसे भीतर ही भीतर बड़ी प्रसन्नता हुई कि अब वह उनसे अपनी बेइज्जती का बदला ले सकेगा। टार्जन के पास ही उनका घास का रस्ता पड़ा हुआ था। कौरन ही उससे उसने उनके दोनों हाथ पीठ के पीछे कस कर बाँध दिये और तब उन्हें कन्धे पर लाद अपनी गुफा की ओर खाना हुआ। बूढ़े और कुष्ठ से पीड़ित होने पर भी बुकावी के शरीर में ताकत अच्छी थी।

दोनों लकड़बग्घे भी बुकावी के पीछे पीछे खाना हुए और गुफा के भीतर बाले घूमघुमौवे रास्ते से होते हुए एक नए ही स्थान पर जा पहुँचे जो चारों ओर पहाड़ी से घिरा हुआ था। यह स्थान वास्तव में किसी पुराने ज्वालामुखी का निचला भाग था जो इस बात से स्पष्ट होता था कि उसके चारों ओर गले हुए पत्थर तथा राख भरी थी।

इस स्थान के चारों ओर पहाड़ियों का ढालुआँ भाग था और जहाँ तहाँ कुछ पेड़ भी दिखाई दे रहे थे तथा ऊपर की ओर लगभग एक सौ फीट की ऊँचाई पर ज्वालामुखी का वह मुँह भी स्पष्ट दिखाई दे रहा था जो अक्सर किसी समय भयंकर अग्नि की ज्वालाएँ उगलता रहा होगा।

बुकावी ने टार्जन को इनमें से एक पेड़ के सहारे खड़ा करके उन्हीं के रस्ते से मजबूती के साथ बाँध दिया। यद्यपि उनके दोनों हाथ उसने खुले छोड़ दिये थे फिर भी रस्ते की गाँठें इस दंग पर बाँधी थीं कि उनके

हाथ गांठों तक किसी प्रकार भी न पहुँच सकें। दोनों जानवर इस समय गुराँते हुए उस पेड़ का चक्कर काट रहे थे जिसमें टार्जन बँधे थे। बुकावी उन जानवरों से नफरत करता था और वे जानवर उससे नफरत करते थे। वह जानता था कि वे दोनों उस समय की प्रतीक्षा कर रहे हैं जब वह एक दम हाथ पाँव से लाचार हो जायगा अथवा जब उनकी नफरत की मात्रा इतनी अधिक हो जायगी कि उनके हृदय में समायें भय को निकाल कर दूर फेंक दे अथवा वही उन दोनों को मार कर फेंक दे, फिर भी दोनों साथी थे, शायद स्वभाव एक सा होने के कारण।

बुकावी स्वयम् भी इन भयंकर जीवों से कम भय नहीं खाता था और यही कारण था वह सदा ही उनका पेट भरा रखने का प्रबन्ध रखता था। जब कभी भी वे जानवर स्वयं अपना पेट भरने का इन्तजाम नहीं कर पाते थे तो उसे खुद जा कर उनके लिये शिकार कर के लाना और उससे उनका पेट भरना पड़ता था किन्तु इतना होने पर भी वह उनके प्रति सदा ही क्रूर व्यवहार करता रहता था जैसा कि उसका स्वभाव था।

उसने उन्हें उस समय से पाल रक्खा था जब वे छोटे बच्चे थे और तभी से उन दोनों को सदा उसके साथ रहने का कुछ ऐसा अभ्यास पड़ गया था कि वे कभी भी अधिक देर के लिये उसका साथ छोड़ कर नहीं जाते थे। जब कभी वे शिकार के लिये कहीं दूर चले भी जाते थे तो कुछ देर बाद पुनः उसके पास ही लौट आते थे। इसका कारण बुकावी यह नहीं समझता था कि उन्हें सदा उसके साथ रहने का अभ्यास पड़ गया है बल्कि उसे विश्वास था कि वे उस समय की प्रतीक्षा कर रहे हैं जिस दिन वे उसके द्वारा किये गये दुर्व्यवहार का बदला ले सकें और यह बदला किस ढंग का होगा इसे भी बुकावी भली भाँति समझता था।

टार्जन को मजबूती के साथ पेड़ में बाँधने बाद बुकावी उन दोनों जानवरों को हाँकता हुआ एक गुफा के अन्दर ले गया और उस रास्ते में पेड़ की शाखाओं का बना एक दर्वाजा इस लिये लगा दिया कि उसकी

अनुपस्थिति में वे दोनों उसके कैदी को किसी प्रकार की हानि न पहुँचा सकें। इसके बाद वह गुफा के बाहर निकल आया और अपने हाथ के एक बर्तन में पास बहते हुये भरने का जल भरने बाद पुनः दरवाजा खोल टार्जन के पास जा पहुँचा। उसके पीछे पीछे दोनों जानवर भी वहाँ पहुँच गये।

अपने साथ लाये पानी से भरे बर्तन को बुकावी ने टार्जन के सिर तथा चेहरे पर उँडेल दिया। टार्जन की पलकें हिलीं और थोड़ी ही देर में उन्होंने अपनी आँखें खोल दीं।

बुकावी उन्हें सम्बोधन करके बोला, “जंगल के दैत्य ! तुम्हारे जादू से मेरा जादू कहीं अधिक जबर्दस्त है नहीं तो तुम मेरे सामने इस दशा में कभी भी न दिखाई देते।”

टार्जन उनकी बातें बिल्कुल ही न समझ सके और इसी लिये उन्होंने उसे कोई उत्तर भी नहीं दिया केवल एक टक बुकावी के चेहरे की ओर देखते रहे। लकड़बग्घे टार्जन के एक दम समीप खड़े थे। उन्होंने उनके गुराँजे की आवाज सुनी किन्तु उनकी ओर देखा तक नहीं। जंगलों में मृत्यु देखने के वे इतने अभ्यस्त हो गये थे कि उन्हें अपनी मृत्यु में भी न तो किसी प्रकार की नवीनता ही दिखाई देती थी न उसका भय ही रह गया था।

बुकावी अभी अपने कैदी को उन जानवरों के हवाले नहीं किया चाहता था अस्तु उसने पुनः उन्हें अपनी लकड़ी से खदेड़ कर दूर कर दिया। हर बार ही वे उसके गले पर झपटने के लिये आगे बढ़ते थे किन्तु कुछ सोच कर रुक जाते थे। टार्जन ने भी इस बात को ध्यान से देखा और समझ गये कि बुकावी तथा वे जानवर एक दूसरे से कैसी नफरत करते हैं।

लकड़बग्घों को कुछ दूर भगा कर बुकावी पुनः टार्जन के पास लौट आया और उन्हें कितनी ही ऊँची नीची सुनाने लगा किन्तु थोड़ी ही देर बाद जब उसे मालूम हो गया कि टार्जन उसकी कोई भी बात नहीं समझते

तब वह लाचार वहाँ से हट कर अपनी गुफा में वापस लौट आया। दोनों जानवरों को उसने बाहर ही छोड़ दिया और दर्वाजे के पास एक चटाई बिछा कर उस पर लेट रहा। यहीं से वह उन दोनों जीवों के हाथ टार्जन की दुर्दशा देख देख अपना बदला चुकाया चाहता था।

दोनों लकड़बग्घे इस समय टार्जन के चारो ओर चकर काट रहे थे। उन्होंने एक बार रस्से पर अपनी ताकत आजमायी किन्तु उन्हें शीघ्र ही पता चल गया कि न्यूमा सिंह तक को बाँधने के लिये तैयार किये हुये रस्से को तोड़ने की ताकत उनमें नहीं है।

परन्तु रस्सों पर जोर लगाते समय उन्होंने देखा कि वे पेड़ के साथ रगड़ खा रहे हैं। बायस्कोप की तस्वीर की भाँति सहसा एक दृश्य उनकी आँखों के सामने फिर गया। उन्होंने एक छोटे लड़के को एक लम्बा रस्ता पकड़े एक डाल के साथ जोर जोर से भूलते देखा, कितने ही एप बन्दरों की भी चारो ओर बैठे उन्होंने उस भूले का तमाशा देखते देखा, और इसके बाद ही उस रस्से को टूटते और उस लड़के को बहुत ऊँचे से तेजी के साथ नीचे की एक झाड़ी में गिरते देखा। टार्जन के चेहरे पर एक हलकी मुस्कुराहट दौड़ गई। उन्होंने रस्से को एक स्थान पर पेड़ के साथ जोर से घिसना शुरू किया।

लकड़बग्घे हिम्मत बाँध कर टार्जन के एक दम समीप चले आये। उनमें से एक ने आगे बढ़ कर उनके पैरों को संघा किन्तु जैसे ही उन्होंने अपने खुले हाथों से उन्हें जोर के साथ एक थप्पड़ लगाया वे फौरन पीछे की ओर हट गये।

गुफा के भीतरी मुहाने पर चटाई पर लेटे हुये बुकावी को निद्रा आ गई। वह जानता था कि उन जानवरों को टार्जन पर हमला करने के लिये हिम्मत बाँधते कुछ समय लगेगा और उस समय की उनकी गुराहट तथा कैदी की चिल्लाहट सुन कर अवश्य उसकी नींद खुल जायगी। इस बीच

में उसने एक नींद खींच लेना ही उचित समझा और इसीलिये पैर फैला कर सो रहा ।

धीरे धीरे दिन ढलने लगा । लकड़बग्घों को अभी गहरी भूख नहीं लगी थी और टार्जन के लड़कपन के रस्ते की अपेक्षा इस समय का उनका रस्ता कहीं अधिक मजबूत था फिर भी जैसे जैसे समय बीतता था और जानवरों की भूख बढ़ती जाती थी पेड़ की रगड़ से घिस घिस कर वह रस्ता भी टूटता जाता था । बुकावी इस समय गहरी नींद का आनन्द ले रहा था ।

आखिर गहरी भूख से व्याकुल हो कर उनमें से एक लकड़बग्घा जोर से गुराँकर टार्जन की ओर झपटा । उसकी गुराँहट सुन कर बुकावी की नींद खुल गई । वह जल्दी से उठ बैठा और तमाशा देखने लगा । उसने भूखे लकड़बग्घे को टार्जन के गले पर झपटते देखा । टार्जन को भी उसने हाथ बढ़ा कर उस गुराँते हुये जानवर की गर्दन पकड़ते देखा और तब उस दूसरे जानवर पर उसकी निगाह पड़ी । परन्तु इसी समय उसने एक और भी विचित्र दृश्य देखा । टार्जन ने एक बार अपने शरीर को ताना, उनके समूचे शरीर के पुट्टे उनके शरीर पर उभरे दिखाई देने लगे, उनकी छाती फूली और वे जोर के साथ आगे की ओर झुके । एक तेज आवाज हुई और वह रस्ता टूट गया । टार्जन एक दम स्वतन्त्र थे । वे फुर्ती से उन दोनों जानवरों की ओर झपटे और तीनों ही जमीन पर लुढ़कते दिखाई देने लगे ।

बुकावी धँवड़ा कर उठ खड़ा हुआ फिर भी उसे इस बात का विश्वास था कि वह सफ़ेद देव खाली हाथ उन दोनों खूँखार जानवरों पर विजय न पा सकेगा । किन्तु बुकावी टार्जन से भली भाँति परिचित न था । टार्जन ने अपने दाहिने हाथ से एक जानवर का गला पकड़ कर उसे जमीन से उठा लिया । इस समय दूसरा उनके गले की ओर बढ़ने की कोशिश कर रहा था । उन्होंने अपना दूसरा हाथ भी बढ़ाया और दूसरे लकड़बग्घे की गर्दन भी अपने मजबूत हाथों से पकड़ ली ।

दोनों जानवरों को अपने दोनों हाथों में उठाये टार्जन धीरे धीरे बुकावी की ओर बढ़ने लगे। बुकावी इस समय दर्वाजा खोल कर अपनी मूठदार छड़ी लिये उनकी ओर बढ़ा आ रहा था। टार्जन ने जोर के साथ उनमें से एक जानवर को उछाल कर बुकावी के ऊपर फेंक दिया और दोनों ही एक दूसरे से चिमटे हुये जमीन पर गिर पड़े। इसके बाद दूसरे जानवर को भी टार्जन ने उछाल कर उसी ओर फेंक दिया। पहला जानवर इस समय अपने पंजों तथा दांतों से अपने मालिक का चेहरा नोच रहा था और अब उस दूसरे ने भी वही काम शुरू कर दिया, पर टार्जन की इच्छा इससे पूरी नहीं हुई। पैर की एक ठोकर मार कर उन्होंने बुकावी के ऊपर सवार जानवरों को दूर फेंक दिया और जादूगर को अपने हाथों में उठा लिया।

भय से बेहोश होते हुये बुकावी ने टार्जन की आँखों में अपनी मृत्यु का संदेश पढ़ लिया। वह अपने दांतों तथा नखों से टार्जन को नोचने खसोटने लगा। उसके भयावने चेहरे को अपने एक दम समीप देख एक बार टार्जन का भी हृदय दहल गया। दोनों लकड़बग्घे इस समय भाग कर गुफा के अन्दर घुस गये थे। पर बुकावी को कब्जे में करते टार्जन को देर न लगी और वे उसे घसीटते हुये उसी पेड़ के पास ले आये जिसके साथ बुकावी ने उन्हें बाँधा था। उन्होंने अपनी जगह उसे उसी पेड़ के साथ कस के बाँध दिया और तब वे उस स्थान से हट गये।

गुफा के भीतर घुसने पर टार्जन को उन लकड़बग्घों की सूरत कहीं भी न दिखाई पड़ी फिर भी वे मन ही मन बोले, “वे लोग अवश्य वापस आवेंगे।”

पेड़ के साथ बाँधा अपने भविष्य को सोचता हुआ बुकावी नीचे से ऊपर तक थर थर काँप रहा था। वह भी बोला, “वे लोग अवश्य वापस आवेंगे।”

दोनों ही का खयाल ठीक निकला, लकड़बग्घे शीघ्र ही वापस लौट आये।

सिंह

नदी के किनारे का एक घनी काँटेदार झाड़ी में बैठा हुआ सिंह किसी शिकार की प्रतीक्षा कर रहा था। उसके थोड़े ही फासले से एक पगडंडी नदी तक गई हुई थी जिससे हो कर जंगल के सभी माँसाहारी तथा शाकाहारी जीव अपनी अपनी प्यास बुझाने के लिये नदी किनारे जाया करते थे।

न्यूमा सिंह इस समय भूखा था, तीन दिन से उसके हाथ कोई भी शिकारी न लगा था, और इसी लिये इस समय वह बड़ी शान्ति के साथ बैठा पानी पीने की इच्छा से हिरन सूअर अथवा किसी अन्य जानवर के उस ओर आने की प्रतीक्षा कर रहा था।

परन्तु इस समय जो जानवर उस ओर पानी पीने के लिये आया वह पक्को जीबरा था। उस पर निगाह पड़ते ही सिंह को बेतरह क्रोध चढ़ आया। जीबरा स्वभाव से ही बड़े होशियार होते हैं और इसी कारण कभी संयोग से ही किसी माँसाहारी जीव के हाथ लग पाते हैं। यदि और कोई जीव होता तो सिंह को इस बात का विश्वास होता कि वह उसके पंजे से नहीं छूट सकेगा परन्तु जीबरा के सम्बन्ध में वह निश्चित रूप से यह बात नहीं कह सकता था।

पक्को जीबरा बहुत ही हट्टा कट्टा था और उसके पीछे पीछे लगभग तीस चालीस बच्चे मादा तथा छोटे मोटे जीबरे चले आ रहे थे। जैसे ही ये लोग नदी के समीप पहुँचे उनका मुखिया यकायक खड़ा हो गया और अपने कान ऊपर की ओर उठा तथा नथुने फैला कर इस बात का निश्चय करने लगा कि कोई माँसाहारी जीव तो आसपास में कहीं नहीं है।

न्यूमा सिंह अपने पिछले पैरों को जमोन के साथ सटाए चुपचाप बैठा उन जीवों पर हमला करने की तैयारी कर रहा था। उसकी आँखों

से अग्नि शिखाएँ प्रगट हो रही थीं और जोश से शरीर की रग रग फड़क रही थी ।

जीबरा थोड़ा आगे बढ़ा, खड़ा हो गया, कान ऊपर कर के सुनने लगा, और तब यकायक पीछे मुड़ कर तेजी के साथ भागा । उसके साथियों ने भी ऐसा ही किया और क्षण भर में ही वह झुण्ड जिधर से आया था उसी ओर लापता हो गया ।

क्रोध से सिंह का समूचा शरीर काँपने लगा फिर भी वह स्थान से हिला नहीं । इन जीवों के स्वभाव से वह भली भाँति परिचित था । उसे अच्छी तरह मालूम था कि ये जीवरे बड़े ही शक्की होते हैं और अकारण भी भाग जाया करते हैं । संभव है थोड़ी ही देर बाद वे पुनः वापस लौटें, सुमकिन है फिर भागें, तथा वापस आवें । इसी प्रकार कितनी ही बार लौटने तथा भागने बाद तब कहीं जा कर उन्हें नदी तक पहुँच कर पानी पीने की हिम्मत होगी । और यह भी सम्भव था कि वे बिल्कुल ही वापस न आवें । न्यूमा इस बात को जानता था अस्तु वह अपने स्थान से जरा भी न हिला ।

आधे घण्टे के भीतर वह झुंड कितनी ही बार उस स्थान पर आया और कितनी ही बार दुम दबा कर वापस लौट गया परन्तु हर बार वह नदी के समीप होता गया । अन्त में डरते डरते सभी के अगुआ ने अपना मखमली नथुना पानी में डुबोया और उसके साथी भी धीरे धीरे आगे बढ़ने लगे । न्यूमा ने भी उनमें से एक दृष्ट पुष्ट जानवर पर अपनी निगाहें जमा लीं ।

सिंह सावधानी के साथ खड़ा हो गया पर इसी समय उसके भारी गद्देदार पैरों के बोझ से किसी पौधे की एक डाल चरमरा उठी । यद्यपि बिना एक क्षण का भी विलंब किए बन्दूक से निकली गोली के समान न्यूमा अपने शिकार पर दूटा, परन्तु उस डाल की जरा सी चरमराहट ही उन

होशियार जानवरों को सतर्क कर देने के लिये काफी थी और न्यूमा के भपटने के साथ ही साथ सब के सब तेजी के साथ भागे ।

जिस जानवर पर सिंह ने अपनी दृष्टि गड़ाई थी वह सब से पीछे था । उसी पर न्यूमा भपटा परन्तु डाल की उस चरमराहट ने न्यूमा के शिकार को सावधान कर दिया था । यद्यपि सिंह के जबर्दस्त पंजों ने उसके पिछले भाग पर पाँच लाल लकीरें बना दीं फिर भी वह तेज जानवर अपनी जान बचा कर भाग ही निकला ।

क्रोध में भरा पर निराश सिंह दहाड़ता हुआ जंगल में धुस गया । इस समय उसे ऐसी तेज भूख लगी हुई थी कि उसे चाहें कोई भी जानवर क्यों न मिल जाय वह उसे छोड़ने वाला न था । सियार अथवा लकड़-बग्वे तक इस समय उसके सामने पड़ कर सही सलामत नहीं निकल सकते थे और इसी मिजाज में वह करचक जाति के एप बन्दरों के झुंड के पास जा पहुँचा ।

इतने सुबह सुबह सिंह के दर्शन जल्दी किसी को नहीं होते क्योंकि वह पिछली रात का शिकार भरपेट खा लेने के बाद उसी के पास लेट कर खुराटे लेने लगता है और खूब धूप निकल आने पर ही उठता है परन्तु भूख से व्याकुल वह सिंह इस समय भी शिकार की तलाश में घूम रहा था ।

सामने के खुले मैदान में एप बन्दर अपने सुबह के भोजन से कुछ देर के लिये निवृत्त हो कर निश्चिन्ती के साथ बैठे अथवा लेटे हुए थे । न्यूमा को उनकी गंध लगी और वह खड़ा हो गया । और कोई समय होता तो कदाचित्त वह इन जीवों की ओर निगाह भी न उठाता क्योंकि न्यूमा भी करचक जाति के इन एप बन्दरों के पैने दाँतों तथा नोकीले पंजों की इज्जत करता था परन्तु इस समय भूख ने उसे पागल बना रक्खा था और उसकी विचार-शक्ति क्षीण हो गई थी ।

जोर से दहाड़ कर वह यकायक उन एप बन्दरों की ओर भपट पड़ा । उसके सामने की ओर दस बारह एप जमीन पर बैठे हुए थे और टार्जन

भी पास के ही एक विशाल वृक्ष पर बैठे सुबह की ठण्डी ठण्डी हवा का आनन्द ले रहे थे। सब से पहले उन्हीं की निगाह न्यूमा पर पड़ी। दहाड़ सुनते ही उन्होंने एप बन्दरों को घबड़ा कर इधर उधर भागते देखा। इस भगदड़ में अपने ही बाल बच्चों को कुचलते हुए वे पेड़ों की ओर भागे जा रहे थे। केवल एक मादा अपने हाल के पैदा हुए प्यारे बच्चे को भागने का अवसर देने के लिये हिम्मत के साथ अपने स्थान पर डटी हुई थी।

टार्जन उछल कर नीचे की डाल पर आ गये और भागने वाले एप बन्दरों को कितनी ही कड़ी कड़ी बातें कह कर शत्रु का मुकाबला करने के लिये उत्साहित करने लगे। यदि एप बन्दर हिम्मत बाँध कर न्यूमा का मुकाबला करने के लिये खड़े हो जाते तो सम्भवतः सिंह को भागते ही बन आती परन्तु उनकी हिम्मत जंगल के राजा सिंह का मुकाबला करने की न हुई। सिंह एक ही छलांग में उस मादा एप के पास जा पहुँचा और उसे अपने पंजे में दबोच कर पास की झाड़ी में घुस गया।

क्रोध में भरी टार्जन की आवाज ने एप बन्दरों में थोड़ा बहुत जोश पैदा कर दिया। उनके भी हृदय में टार्जन के समान ही क्रोधाग्नि प्रज्वलित हो उठी और अपने साथी की दुर्दशा का ख्याल कर टार्जन के साथ ही साथ एप बन्दरों का एक भारी झुंड गुर्राता हुआ उसी ओर दौड़ा जिधर सिंह झाड़ी में घुस कर लापता हो गया था। टार्जन इन सब के आगे आगे थे पर आँखों की अपेक्षा कानों तथा नाक पर अधिक भरोसा रखते थे बड़ी ही सावधानी के साथ आगे बढ़ रहे थे।

सिंह का पता लगाना कोई मुश्किल काम न था क्योंकि उस मादा एप के शरीर से निकला ताजा रक्त रास्ते भर एक लकीर सा बनाता हुआ चला गया था।

इसके पहले कि सिंह का गम्भीर गर्जन इन लोमों के कानों में पड़े

टार्जन को पता चल गया कि वे लोग अब सिंह के बहुत ही समीप पहुँच गये हैं। एप बन्दरों को पीछे आने का इशारा कर के टार्जन पास के ऊँचे पेड़ पर चढ़ गये और उनकी देखादेखी अन्य बन्दरों ने भी उनका साथ दिया। एक क्षण बाद ही न्यूमा सिंह चारों तरफ के पेड़ों पर चढ़े और गुर्राते हुए एप बन्दरों द्वारा घेर लिया गया। सिंह उन सभी के सामने था पर वे सब के सब उसकी पहुँच के बाहर थे। सिंह अपना शिकार अगले दोनों पंजों से दबाये जमीन के साथ चिपका हुआ था। टार्जन ने एक ही निगाह में देख लिया कि उसके शिकार में अब जरा भी जान नहीं है परन्तु उनकी अन्तरात्मा कह रही थी कि जिस तरह भी हो उस मादा की लाश का उस भयंकर जीव से उद्धार करना ही चाहिए। पेड़ पर बैठे ही बैठे टार्जन सिंह को गालियाँ देने तथा पेड़ की डालें तोड़ तोड़ कर उसके शरीर पर फेंकने लगे। अन्य एप बन्दरों ने भी उनकी देखादेखी वैसा ही करना शुरू किया। क्रोध में भरकर न्यूमा सिंह जोर जोर से दहाड़ने लगा। वह भूखा था परन्तु इस हालत में भला वह कैसे अपने शिकार को खा सकता था।

यदि एप बन्दरों को उनकी इच्छा पर छोड़ दिया जाता तो वे कदाचित्त सिंह को आराम के साथ अपना शिकार खाने के लिये छोड़ कर वहाँ से चल देते परन्तु टार्जन दूसरे ही ख्याल के जीव थे। उनका विचार था कि न्यूमा को जिस तरह भी हो उसकी इस धृष्टता की सजा दी जानी ही चाहिए। उसे इस बात की शिक्षा मिलनी ही चाहिए कि यदि उसने कभी किसी मंगानी का शिकार कर भी लिया तो भी उसे उससे अपनी क्षुधा निवृत्त करने का समय नहीं दिया जायगा। मनुष्य का दिमाग भविष्य की चिन्तना में लगा हुआ था परन्तु उसके विपरीत एप बन्दर केवल वर्तमान भर को देख रहे थे और सोचते थे कि जब वह मादा मर ही चुकी तो उसकी लाश को छुड़ाने के लिये इतना प्रयत्न करने से लाभ क्या परन्तु टार्जन बन्दरों के भविष्य की चिन्ता करते हुए सिंह की आदत ही छुड़ा

दिया चाहते थे ताकि वह फिर कभी एप बन्दरों की. और आँख उठा कर भी न देखे ।

अस्तु वे बराबर एप बन्दरों को उत्साहित करते गये और फलतः वे सब के सब भी बराबर पेड़ की डालें तोड़ तोड़ कर सिंह पर फेंकते ही गये, किन्तु यद्यपि सिंह क्रोध में भर कर बीच बीच में दहाड़ उठता था फिर भी अपने शिकार को उसने एक क्षण के लिये भी अपने से अलग न किया ।

टार्जन ने देखा कि उन लोगों की फेंकी हुई डालें सिंह के शरीर पर लगती तो हैं परन्तु उससे उसकी किसी प्रकार की भी हानि नहीं होती अस्तु कोई ऐसी वस्तु उसके ऊपर फेंकी जानी चाहिए जिसका उसके ऊपर असर हो । उन्हें इसके लिये अधिक विचार करना न पड़ा । थोड़े ही फासले पर बहुत से छोटे मोटे पत्थर जमीन पर पड़े हुए थे । अन्य एप बन्दरों को सावधान कर के वे जमीन पर कूद पड़े और कितने ही छोटे बड़े पत्थर एकत्रित कर के तथा उन्हें साथ ले कर वे पुनः उस पेड़ पर वापस लौट आये । वे जानते थे कि अन्य एप बन्दर भी बहुत शीघ्र उनकी देखादेखी काम करने लगेंगे । अब उन्होंने उसमें से एक बड़ा पत्थर चुन कर उस सिंह को और फेंका ।

अपने नोकीले दाँत सिंह अपने शिकार के मुलायम मांस में घँसाया ही चाहता था कि टार्जन का फेंका हुआ पत्थर उसकी कनपटी पर बड़े जोर से आकर बैठा । अन्य एप बन्दर भी अब तक उनकी देखादेखी पत्थर बटोर बटोर कर पेड़ पर आ बैठे थे । पत्थर कनपटी पर बैठते ही सिंह कष्ट तथा क्रोध से व्याकुल हो कर जोर से दहाड़ उठा परन्तु इसी समय एप बन्दरों के फेंके हुए पत्थर उसके शरीर पर लगे और वह क्रोध से पागल हो उठा । लाल लाल आँखें कर के उसने एक बार उन कष्ट देने वालों की ओर देखा, परन्तु वह लाचार था । लगभग आध घण्टे तक उस पर इसी प्रकार पत्थरों की वर्षा होती रही और वह एक ठुकड़ा भी मांस बौच कर अपने मुँह में रख न सका ।

सब से अधिक क्रोध उसे उस बिना रोयें के एप बन्दर पर आ रहा था जिसने यहाँ तक धृष्टता अख्तियार कर ली थी कि जमीन पर कूद कर उससे कुछ गज के फासले तक पहुँच जाता था और वहीं से निशाना ताक ताक कर उसके नाक मुँह आदि पर पत्थर चलाता था। कई बार वह उनके ऊपर झगड़ा भी परन्तु टार्जन इतने फुर्तीले थे कि फौरन ही कूद कर पेड़ पर जा चढ़ते थे।

आखिर सिंह घबड़ा उठा। उस मादा बन्दर का शरीर उसने अपने मुँह में दाब लिया और वहाँ से हट कर खुले मैदान में इस इरादे से जा बैठा कि आस पास में पेड़ न होने के कारण वे लोग उसे अधिक कष्ट न दे सकेंगे। बात भी ठीक थी। पेड़ों से अधिक दूर होने के कारण अब वे लोग उसके ऊपर मनमानी पत्थरों की वर्षा नहीं कर सकते थे।

अन्त में टार्जन को एक युक्ति सूझी परन्तु उसे कार्यरूप में परिणत करने के लिये उन्हें एक साथी की आवश्यकता थी, और वह साथी भी उन्हीं के समान नहीं तो भी काफी हिम्मतवर होना चाहिए था। फौरन ही उनका ध्यान अपने लड़कपन के साथी टाग की ओर गया। टाग काफी दृष्ट पुष्ट था और उसमें हिम्मत की भी कमी न थी। उन्होंने आवाज दी—“टाग !”

टाग ने अपना हाथ रोक कर टार्जन की ओर देखा। टार्जन बोले, “तुम सिंह के पास जा कर उसे तंग करो और इतना तंग करो कि वह अपना शिकार छोड़ कर तुम्हारी ओर झगट पड़े। उसे जितनी देर तक हो सके ममका की लाश से दूर रखना।”

टाग ने सम्मत्तिसूचक सिर हिलाया। पेड़ से एक सूखी हुई डाल तोड़ कर वह जमीन पर कूद पड़ा और सिंह की ओर चला। बीच बीच में वह गुर्राता तथा सिंह को बुरा भला भी कहता जा रहा था। सिंह ने उसकी ओर देखा और उठ खड़ा हुआ। जब टाग और पास पहुँचा तो सिंह की दुम सीधी ऊपर की ओर खड़ी हो गई। टाग की निगाह भी उसकी

दुम पर पड़ी और वह समझ गया कि अब वह हमला किया ही चाहता है अस्तु वह फौरन ही पीछे मुड़ कर एक पेड़ की ओर भागा।

सिंह के पीछे की ओर से टार्जन भी जमीन पर कूद कर ममका के लाश की ओर बढ़े परन्तु सिंह का ध्यान इस समय टाग की ओर था। उसने टार्जन को जमीन पर उतर कर उसके शिकार की ओर बढ़ते नहीं देखा। वह तेजी के साथ टाग की ओर झपटा। टाग यद्यपि उससे कुछ ही गज के फासले पर था पर दौड़ कर वह एक पेड़ के पास पहुँचा और उछल कर एक नीची डाल पकड़ ली। सिंह भी उसकी ओर उछला। टाग से उसका फासला बहुत थोड़ा रह गया था किन्तु टाग सुरक्षित स्थान पर जा पहुँचा।

कुछ मिनटों तक सिंह पेड़ के नीचे खड़ा टाग की ओर क्रोध भरी निगाहों से देखता तथा इस जोर से दहाड़ता रहा कि पृथ्वी काँपने लगी। इसके बाद वह अपने शिकार की ओर वापस लौटा परन्तु पीछे घूमते ही उसकी दुम पुनः सीधी ऊपर की ओर खड़ी हो गई और वह इस बार पहले से भी अधिक तेजी के साथ पीछे की ओर झपटा क्योंकि उसकी निगाह टार्जन पर पड़ी जो खून से लथपथ उसके शिकार को अपनी पीठ पर लादे सामने के एक पेड़ की ओर बढ़ रहे थे।

एक बन्दर पेड़ों पर सुरक्षित स्थानों पर बैठे सिंह को गालियाँ तथा टार्जन को उपदेश दे रहे थे। सूर्य की सुनहरी किरणें मैदान में अपने अपने काम में व्यस्त जीवों पर पड़ कर उनकी शोभा चौगुनी कर रही थीं। सिंह क्रोध से गर्जन करता हुआ अपने शिकार को उठा ले जाने वाले का संहार करने के लिये अपने शरीर की समस्त शक्ति खर्च कर के उसकी ओर झपट रहा था और मृत्यु को एक दम समीप देखते हुए भी अपने कन्धे पर पड़े मृत शरीर के रक्त से लथपथ टार्जन तेजी से सामने के वृक्ष की ओर भागे जा रहे थे।

जिस पेड़ की ओर टार्जन दौड़े जा रहे थे उसी की एक निचली डाल

पर पहुँच कर गुन्द्र नीचे की ओर झुक गया और टार्जन को सावधान करने तथा सलाहें देने लगा ।

“मुझे पकड़ो !” कह कर टार्जन गुन्द्र की ओर उछले । गुन्द्र अपने दोनों पिछले पैरों तथा एक हाथ से डाल को पकड़े नीचे झूल रहा था । उसने फौरन ही टार्जन का ऊपर उठा हुआ हाथ पकड़ लिया । टार्जन के ऊपर मृत मादा एप का भारी बोझ भी लदा हुआ था मगर उस महा-शक्तिशाली गुन्द्र ने केवल अपने एक हाथ से उन दोनों को इतनी फुर्ती तथा झटके के साथ ऊपर खींचा कि टार्जन के हाथ पेड़ की एक डाल से ना सटे और उन्होंने उसे मजबूती के साथ पकड़ लिया ।

पेड़ के नीचे पहुँच कर न्यूमा भी उछला परन्तु गुन्द्र ने ऐसी फुर्ती दिखाई थी कि टार्जन के शरीर में सिवाय शेर के एक पंजे की खरोच लगने के और किसी किस्म का भी घाव लगने न पाया ।

टार्जन ममका का मृत देह ले कर पेड़ की एक ऊँची शाखा पर जा पहुँचे जहाँ तक सिंह का पहुँचना असम्भव था अस्तु वह क्रोध में भरा पेड़ के नीचे इधर से उधर टहलने लगा । शिकार तथा शत्रु से बदला ये दोनों ही वस्तुएँ उसके हाथ से निकल गई थीं अस्तु उसके क्रोध का पारा इस समय बहुत ही ऊँचा चढ़ा हुआ था परन्तु वह लाचार था । उसे तंग करने वाले उसका पहुँच के एक दम बाहर थे और कुछ देर बाद उसे खरी खोटी सुनाते हुए सब के सब पेड़ों ही पेड़ों एक ओर को खाना हो गये ।

उस दिन की घटना पर टार्जन दिन भर गौर करते रहे । वे समझ रहे थे कि जंगल के शक्तिशाली जीव न्यूमा ने यदि करचक जाति के एप बन्दरों को अपना भक्ष्य बनाने का निश्चय कर ही लिया तो फिर थोड़े ही दिनों में एप बन्दरों की क्या हालत हो जायगी । न्यूमा के हमला करते ही एप बन्दर किस प्रकार भयभीत हो कर पेड़ों पर भागे थे यह दृश्य वे अभी तक भूले न थे ।

परन्तु टार्जन लड़कपन से ही चुलबुले थे । उन्हें गम्भीर से गम्भीर

बातों में भी मजाक ही सूझा करता था। अस्तु इतना सोचने के बाद ही अपना शिकार छिन्ते देख हृदय से ज्यादा क्रोधित सिंह का मुखमण्डल याद कर के टार्जन को हँसी आ गई।

लगभग एक हफ्ते बाद एक चीते ने एप बन्दरों के एक बालू को पेड़ के ऊपर से पकड़ लिया और चल दिया। इस बालू को उसकी माँ ने पेड़ पर छिपा कर रख दिया था और स्वयं भोजन की तलाश में पेड़ के नीचे उतर आई थी। चीते को इस प्रकार का काम करके भी सफाई से निकल जाते देख टार्जन को बड़ा ही क्रोध आया। उन्होंने बड़े बड़े एप बन्दरों से कहा कि पन्द्रह दिन के भीतर दो एप जाति के बन्दर सिंह तथा चीते के शिकार बन गये हैं, यदि यही हाल रहा तो कुछ दिनों में एक भी एप बन्दर जीवित न बचेगा।

टाग ने टार्जन की ओर देख कर पूछा, “तब क्या करना चाहिये !”

टार्जन बोले, “यदि हम लोग शत्रुओं की ओर जरा भी ध्यान न दे कर निश्चिन्ती के साथ जंगलों में शिकार खेलते फिरेंगे तो शत्रुओं की बन आवेगी और वे हम लोगों को पकड़ पकड़ कर खाना शुरू कर देंगे। हम लोगों के ऐसी लापरवाही तो मानू बन्दर तक नहीं करता। वे लोग सदा शत्रुओं की ओर से सावधान रहा करते हैं। पक्षी जीवरा तथा वृषी बारह-सिंघे को ही देखो—इनमें से एक बराबर पहरें पर रहता है और बाकी के खाना खाने में मशगूल रहते हैं। किन्तु हम लोग इतने शक्तिशाली हो कर भी ऐसे असावधान रहते हैं कि शत्रु हम लोगों के बीच में घुस कर हमें पकड़ ले जाता है।”

टाग बोला, “तब आखिर इसका उपाय क्या होना चाहिये ?”

टार्जन बोले, “उपाय तो स्पष्ट है, यदि उसके अनुसार काम किया जाय। हम लोगों को करना यह चाहिये कि जब हम लोग शिकार के लिये निकलें तो हममें से दो चार एप बन्दर बराबर पहरें पर रहें जो शत्रु पर निगाह पड़ते ही सब को सावधान कर दिया करें। ऐसा होने से हमारे वे

शत्रु इतने चुपके से हम लोगों के बीच आ कर हमें हानि न पहुँचा सकेंगे।”

एप बन्दरों को टार्जन की राय पसन्द आ गई। उन्होंने पहरे के लिये तीन एप बन्दर ठीक कर दिये और इस बात का भी निश्चय कर लिया कि वे भोजन की तलाश में न तो अधिक दूर जायेंगे न एक दूसरे से अधिक फासले ही पर रहेंगे।

किन्तु टार्जन के लिये यह बात न थी। उन्हें दूर दूर जा कर अकेले शिकार करने में ही आनन्द आता था। वे मनुष्य थे और स्वभाव से ही मजाकपसन्द थे अस्तु घूम घूम कर अपने मन माफिक शिकार करने तथा जंगल के भीषण जीवों को तंग करने में उन्हें एक विशेष प्रकार के आनन्द का अनुभव होता था।

एक दिन वे घूमते फिरते मोंगा के गाँव में जा पहुँचे। अपने नियमित स्थान पर पत्तों को आड़ में बैठ जाने पर उन्होंने अपनी निगाह चारों ओर घुमाई। उनकी निगाह सब से पहले रब्बी केगा पर पड़ी जो पहले ही की तरह भैंसे का चमड़ा ओढ़े इधर से उधर घूम रहा था। एक और चीज पर भी टार्जन की निगाह पड़ी। एक भोपड़ी के सहारे एक सिंह का चमड़ा पड़ा हुआ था जिसके साथ लगा हुआ सिंह का सिर भी अभी तक ज्यों का त्यों कायम था। यकायक एक नवीन विचार उनके हृदय में उत्पन्न हुआ और वे वहाँ से चुपचाप जंगल में निकल आये।

जब शाम हो गई और अन्धकार चारों ओर फैल गया तो वे पुनः गाँव के भीतर की ओर जा पहुँचे। किसी जेवनार का दिन न होने के कारण गाँव में विशेष हलचल नहीं दिखाई दे रही थी और सभी जंगली अपनी अपनी भोपड़ियों में अथवा भोपड़ियों के सामने बैठे आपस में गपशप लड़ा रहे थे।

टार्जन चुपचाप जमीन पर उतर आये और छिपते हुए मोंगा की भोपड़ी के पास पहुँचे। वहाँ उन्हें वह चीज मिल गई जिसकी खोज में उन्होंने वहाँ तक आने की परेशानी उठाई थी। उस भोपड़ी के आस

पास कितने ही थोड़ा बैठे हुए थे परन्तु उनमें से किसी को भी इस बात का पता न चला कि जंगल का वह सफेद दैत्य जिसका नाम तक सुन कर उनका कलेजा बैठ जाया करता है इस समय उनके एकदम समीप आया हुआ है ।

टार्जन ने अपने मतलब की चीज वहाँ से उठा ली और पुनः उसी प्रकार सावधानी से पेड़ पर वापस लौट गये । वहाँ से जंगल में जाना एक मामूली काम था अस्तु इस बात को कोई भी न जान सका कि वे गाँव में कब आये और कब अपना काम कर के निकल गये ।

रात में जब टार्जन सोने के लिये पेड़ की एक मचान पर जा बैठे तो तरह तरह के विचार उनके मस्तिष्क में घूमने लगे । पुनः वही तस्वीर उनकी आँखों के सामने आ गई जब सिंह ने एप बन्दरों पर हमला किया था और वे भयभीत हो कर इधर उधर पेड़ों पर भागते नजर आए थे । वे जानते थे कि सहसा कोई कांड हो जाने से एप बन्दर एकदम घबड़ा जाया करते थे और यदि सदा ऐसा ही हुआ करेगा तो उसका फल क्या होगा इस बात को भी टार्जन पूरी तौर से समझ सकते थे अस्तु इन्हीं बातों पर विचार करते करते टार्जन गंभीर निद्रा में निमग्न हो गये ।

उनके ठीक ऊपर की ओर बैठे मानू बन्दर ने फल खा खा तथा उसके छिलके टार्जन के मुँह पर फेंक फेंक कर टार्जन की नींद खोल दी । टार्जन ने आँखें खोल कर ऊपर की ओर देखा और मुस्कुरा उठे । इस प्रकार पहले भी कई बार मानू बन्दर उन्हें नींद से जगा चुका था । मानू बन्दर और उनमें गहरी मित्रता थी । कभी तो एक दम सुबह मानू बन्दर उनके पास पहुँच जाता था और उन्हें जगा कर बताता था कि बारा हिरन अथवा होर्टा सूअर पास में ही घूम रहे हैं और कभी टार्जन कड़े कड़े फलों के छिलके तोड़ तोड़ कर मानू बन्दर को खाने के लिये दिया करते थे ।

सूर्य भगवान को उदय हुए कुछ समय बीत चुका था और एप बन्दर भोजन की तलाश में निकल गये थे । हाथ का इशारा कर के मानू ने उन्हें बताया कि वे लोग किस ओर गये हैं ।

टार्जन बोले, “आओ मानू मेरे साथ चलो । मैं तुम्हें एक ऐसा तमाशा दिखाऊँगा जैसा तुमने आज तक कभी भी न देखा होगा । उसे देख तुम हँसते हँसते पागल हो उठोगे और दिल खोल कर नाचने लगोगे । आओ मेरे साथ चले आओ ।”

इतना कह कर टार्जन उसी ओर खाना हुए जिधर एप बन्दरों के जाने का मानू बन्दर ने इशारा किया था । उनके पीछे पीछे किलकारियाँ मारता हुआ मानू बन्दर भी खाना हुआ । टार्जन के कंधे पर इस समय वही चीज पड़ी हुई थी जिसे वे पिछले दिन मोंगा के गाँव से चुरा लाये थे ।

एप बन्दर उसी मैदान में घूम फिर रहे थे जहाँ सिंह को पत्थर मार मार कर इन लोगों ने परेशान कर डाला था । निश्चिन्ती के साथ सब के सब अपना अपना भोजन तलाश करने में मशगूल थे । भला अब भी वे निश्चिन्त क्यों न होते ? तीन एप बन्दर तीन ओर से पहरा दे रहे थे फिर उन्हें भला किस बात का डर था । टार्जन ने उन्हें इस बात की शिक्षा दी थी और यद्यपि शिक्षा देने बाद टार्जन कितने ही दिनों तक इधर उधर लापता रहे थे फिर भी टार्जन का उपदेश एप बन्दर भूलते नहीं थे और अभी तक उसी के अनुसार चल रहे थे ।

परन्तु जितना एप बन्दर अपने स्वभाव को नहीं जानते थे उतना टार्जन उनके स्वभाव से परिचित थे । उन्हें निश्चय था कि यदि वे कुछ अधिक दिनों के लिये उनके बीच से लापता हो जायँ तो एप बन्दर संतरियों को पहरे पर बैठाना छोड़ देंगे और पुनः पहले की तरह लापरवाही के साथ इधर उधर घूमने लगेंगे अस्तु आज वे उनके साथ एक दिहृगी करने के साथ ही साथ उन्हें सदा सतर्क रहने का एक पाठ भी पढ़ाया चाहते थे ।

आज गुन्टो मैदान के उत्तरी भाग में पहरे पर बैठाया गया था। पेड़ के नीचे बैठा हुआ वह ध्यान से जंगल की ओर देख रहा था। सब से पहले उसी की निगाह शत्रु पर पड़ी। झाड़ियों के बीच में होने वाली खड़खड़ाहट ने उसके कान खड़े कर दिये और एक क्षण बाद ही उसकी निगाह काले अयाल तथा पीले चमड़ेपर पड़ी। एक सिंह को अपनी ओर बढ़ते देख वह जोर से चीख उठा, “क्रीगा !” यह शब्द एप बन्दरों की भाषा में इस बात का सूचक है कि “खतरा समीप है !”

फौरन ही तमाम एप बन्दर “क्रीगा ! क्रीगा” चिल्ला उठे और पेड़ों पर चढ़ कर सुरक्षित जगहों पर जा बैठे पर इनमें से जो कद्दावर थे गुन्टो की बगल में पहुँच गये।

इसके बाद उस मैदान में धीरे धीरे इन लोगों की ओर बढ़ता एक सिंह नजर आया। सहसा उसके मुँह से एक भारी दहाड़ निकली जिसने समूचे जंगल को कुछ देर के लिये प्रतिध्वनित कर दिया। मैदान के बीचों-बीच आ कर न्यूमा खड़ा हो गया और ठीक इसी समय पास के वृक्षों पर से उसके ऊपर पत्थरों की वर्षा होने लगी। दस बारह बड़े बड़े पत्थर उसके शरीर पर लगे और तब एप बन्दर जमीन पर उतर कर पुनः पत्थर एकत्रित कर लाये और फिर अपने स्थानों पर जा बैठे।

न्यूमा भागने के लिये पीछे घूमा परन्तु उस ओर से भी पत्थरों की ऐसी वर्षा उसके ऊपर हुई कि उसे लाचार होकर अपने स्थान पर ही खड़े रह जाना पड़ा। सहसा एक बड़ा भारी पत्थर हाथ में लिये टाग उसके सामने आ खड़ा हुआ। दूसरे ही क्षण वह पत्थर हवा में उछला और सिंह की कनपटी पर जा बैठा। जंगल का राजा लुण्ड मुण्ड हो कर जमीन पर गिर पड़ा।

गरजते गुराँते तथा चिल्लाते हुए एप बन्दरों ने उसे चारों ओर से घेर लिया। पत्थरों लकड़ियों तथा पैने दाँतों ने उसकी धजी धज्जी उड़ा देने

का निश्चय कर लिया था। एक क्षण बाद ही सिंह का नुचा चुथा शरीर मैदान में पड़ा दिखाई देता।

किन्तु उसे मारने के लिये पत्थर तथा लकड़ियाँ हवा में ऊँची ही रह गई और लम्बे तथा पैने दाँत बाहर निकले ही रह गये क्योंकि इसी समय मानू बन्दर कूद कर उस सिंह के शरीर पर आ खड़ा हुआ और किल-कारियें मारता हुआ इधर से उधर नाचने लगा।

एक क्षण के लिये सभी एप बन्दर स्तम्भित हो कर अपने अपने स्थान पर खड़े रह गये। उन्हें आश्चर्य हो रहा था कि आज मानू बन्दर को यह क्या दिल्लगी सूझी है कि वह इस प्रकार अपनी जान देने के लिये न्यूमा सिंह के शरीर पर उछल कूद मचा रहा है।

एप बन्दर चुपचाप खड़े यह तमाशा देख ही रहे थे कि मानू बन्दर ने सिंह का कान पकड़ लिया और जमीन पर उतर तथा अपने शरीर की समूची ताकत खर्च कर के उसे एक ओर खींचा। सिंह का चमड़ा खिंच आया और उसके नीचे बेहोश पड़े टार्जन पर एप बन्दरों की आश्चर्य भरी निगाहें जा पड़ीं।

बहुत से एप बन्दर तो अपना निश्चित किया हुआ काम पूरा करने के लिये गुराँते तथा दाँत निकाले टार्जन की ओर बढ़े परन्तु टाग ने जो उन सभी में अधिक बुद्धिमान था उन्हें डांट कर ऐसा करने से रोका। वह फौरन ही उछल कर टार्जन के बगल में जा बैठा और जो बन्दर टार्जन को फाड़ने चीयने के लिये आगे बढ़ रहे थे उन्हें अपने अपने स्थान ही पर खड़े रहने लिये चेतावनी देने लगा। उसकी मादा टीका भी अपने लड़कपन के साथी के बगल में जा पहुँची और टार्जन की रक्षा के लिये अपने दाँत बाहर किये टाग का साथ देने लगी। थोड़ी ही देर में कितने ही एप बन्दर जो टार्जन के बचपन के साथी थे चारों ओर से उन्हें घेर कर बैठ गये।

कुछ मिनट बाद जब टार्जन की आँखें खुलीं तो उन्हें अपनी अवस्था

का शान हुआ और उनके चेहरे पर मुस्कराहट दिखाई पड़ने लगी। उनके शरीर पर छोटे मोटे कितने ही जखम लगे थे परन्तु उनके इस काम से करचक जाति की जितनी भलाई हुई थी उसे स्मरण कर वे अपनी तकलीफ को एक दम भूल गये। उन्हें इस बात का गर्व हुआ कि एप बन्दर अभी तक उनकी शिक्षा को भूले नहीं हैं तथा अभी तक ऐसे एप बन्दर भी मौजूद हैं जो समय पड़ने पर उनकी सहायता के लिये प्राण तक देने को तैयार हो सकते हैं। सब से अधिक गर्व उन्हें मानू पर हुआ जिसने अपनी जान खतरे में डाल कर भी उनकी रक्षा की थी।

इन बातों को देख तथा समझ कर टार्जन बड़े ही प्रसन्न हुए। परन्तु खुद उन्हें इस काम से जो शिक्षा मिली थी उसे स्मरण कर लज्जा से उनका चेहरा सुर्ख हो उठा। वे सदा से ही मजाक पसन्द थे परन्तु इस समय अपने जखमों से भरे शरीर को देख कर उन्होंने कसम खाई कि भविष्य में वे इस प्रकार की दिह्लगी कभी न करेंगे। किन्तु क्या वे अपनी आदत को छोड़ सकेंगे ?

स्वप्न

मोंगा के गाँव के लोग जेवनार का आनन्द ले रहे थे और उनके ठीक ऊपर पेड़ की डाली पर बैठे टार्जन उन लोगों का तमाशा देख रहे थे। आज टार्जन को बहुत प्रयत्न करने पर भी कोई शिकार नहीं मिला था अस्तु उन्हें बेतरह भूख लगी हुई थी। कई दिन ऐसे भी निकल जाते थे जब टार्जन को कोई भी शिकार नहीं मिलता था और उन्हें भूखे रह जाने के लिये बाध्य होना पड़ता था और कभी कभी ऐसा भी होता था कि उन्हें आधे पेट भोजन से ही सन्तोष कर लेना पड़ता था।

एक बार तो ऐसा हुआ कि शाकाहारी जीवों में कोई ऐसी बीमारी

फैल गई जिसके कारण कई वर्षों के लिये वे एक दम नापैद हो गये । फिर एक बार जंगल के मांसाहारी जीव विशेष कर सिंह तथा चीते यका-यक इतना बढ़ गये कि उनके भय से शाकाहारी जीव उस जंगल को एक दम ही से त्याग कर किसी दूर प्रदेश में निकल गये ।

संयोग से आज टार्जन को कोई भी शिकार हाथ न लगा था अस्तु वे भूख से व्याकुल उस पेड़ पर बैठे हुए थे और उनके ठीक नीचे हब-शियों की भारी जेवनार में गाँव के बड़े बूढ़े स्त्रियाँ सभी आवश्यकता से अधिक भोजन कर के अपने पेट फुलाये इधर से उधर नाच रहे थे, परन्तु आज जिस माँस से वे लोग अपना पेट भर रहे थे वह हाथी का था !

इसमें सन्देह नहीं कि टार्जन तथा टैन्टर हाथी में बहुत समय से मित्रता चली आती थी और उन्होंने आज तक कभी भी हाथी का माँस नहीं खाया था परन्तु आज गोमंगानियों ने एक हाथी को मार डाला था और उन्हें उसे पका कर खाते देख टार्जन के चित्त में भी यह विचार पैदा हुआ कि आखिर हाथी का माँस खाने में हानि ही क्या है ? पर यदि उन्हें यह मालूम होता कि वह हाथी जिसे खाने में जंगली व्यस्त हैं वास्तव में कई दिन पहले से ही मरा हुआ पड़ा था तो कदाचित् इस सम्बन्ध में उनकी धारणा कुछ दूसरी ही होती । इस समय तो केवल उनकी बढ़ी हुई भूख ने ही उनके हृदय में हाथी का माँस खाने का विचार पैदा किया था !

वे इस समय ठीक भूखे जंगली जानवरों की भाँति हो रहे थे और केवल सतर्कता ही उन्हें अपने स्थान पर रुके रहने के लिये बाध्य कर रही थी । गाँव के बीचो बीच में आग पर चढ़ा हुआ माँस का बरतन इस समय इतने हबशियों से घिरा हुआ था कि टार्जन को उसके पास पहुँच कर फिर सही सलामत वहाँ से लौट आना किसी प्रकार भी संभव नहीं मालूम होता था अस्तु इस समय उनके लिये सिवाय इसके और कोई उपाय न था कि वे तब तक चुपचाप बैठे रहें जब तक कि हबशी लोग खूब मजे में

अपना पेट भर कर मस्त न हो जायँ और यदि इसके बाद भी बरतन में माँस के कुछ टुकड़े बच जायँ तो उन्हें खा कर अपनी भूख बुझावें । परन्तु टार्जन ने देखा कि गोमंगानी लोग तब तक खाना न बन्द करेंगे जब तक खाते खाते उनका पेट फटने न लगे और या फिर एक टुकड़ा भी माँस बरतन में बचा न रह जाय । बीच बीच में वे लोग भोजन का काम बन्द कर के उछलने कूदने तथा नाचने भी लग जाते थे तथा शराब पीने में भी वे कुछ कौर कसर न रखते थे । और ऐसा वे तब तक करते रहते थे जब तक की उनका खाया हुआ भोजन थोड़ा बहुत पच न जाय । इसके बाद वे पुनः बैठ कर माँस पर लम्बे लम्बे हाथ मारने लगते थे । परन्तु इसी प्रकार माँस खाते तथा शराब पीते पीते उनकी यह हालत हो गई कि उन्हें जमीन से उठ कर खड़ा होना तक मुश्किल हो गया किन्तु अब भी वे माँस के बरतन के पास ही जमीन पर पड़े हुए थे और बीच बीच में तब तक खाते ही चले जाते थे जब तक कि बेहोशी उनका हाथ रोक न दे ।

इन सभी का यह तमाशा देखते देखते टार्जन को आधी रात बीत गई । अब हवशी लोग शीघ्रता के साथ निद्रा देवी की गोद में चले जा रहे थे और टार्जन को विश्वास हो रहा था कि अब बहुत शीघ्र ही उन्हें मांस के बरतन के पास पहुँच कर उसमें से मांस के कुछ टुकड़े निकाल ले जाने का मौका मिल जायगा परन्तु इस समय थोड़े बहुत मांस से उनका काम चलने वाला न था । उन्हें पेट भर कर भोजन की आवश्यकता थी और वे बिना अपने मतलब लायक पूरा मांस लिये उस बरतन के पास से टलने वाले जीव न थे ।

अन्त में केवल एक ही योद्धा को छोड़ कर बाकी के सब बेहोश हो गये । उसका भी पेट फूल कर एक दम कुप्पा हो रहा था और चेहरा देखने से ही मालूम होता था कि उसके पेट में पीड़ा हो रही है किन्तु इस हालत में भी वह घुटनों के बल धीरे धीरे घिसकता हुआ मांस के बरतन की ओर

बढ़ा जा रहा था। धीरे धीरे वह मांस के बरतन के पास पहुँच ही गया परन्तु वहाँ पहुँचते पहुँचते तक उसकी यह हालत हो गई कि वह जमीन पर गिर कर हाँफने लगा, फिर भी वह हाथ बढ़ा कर बरतन में से मांस के टुकड़े निकाल रहा था।

टार्जन को निश्चय हो गया कि वह तब तक खाना न बन्द करेगा जब तक कि खाते खाते उसका पेट एकदम फट न जाय। टार्जन ने धृष्टा से अपना मुँह फेर लिया ! ये गोमंगानी भी कैसे धिनौने जीव होते हैं ? परन्तु जंगल भर के जीवा में केवल ये ही ऐसे थे जिनके शरीर की बनावट टार्जन के शरीर से अधिकतर मिलती जुलती थी। उस किताब के वे काले कीड़े बताते थे कि टार्जन मनुष्य थे अस्तु गोमंगानी भी अवश्य किसी जाति के मनुष्य ही होंगे— ठीक उसी प्रकार जैसे छोटे बन्दर, भारी एप बन्दर, तथा विशाल गोरिल्ला एक ही खानदान के जीव हैं चाहे शकल सूरत तथा कद में वे एक दूसरे से कितने ही भिन्न क्यों न हों। टार्जन को लज्जा मालूम होने लगी क्योंकि जंगल के सभी जीवों में मनुष्य से बढ़ कर घृणित और कोई भी जीव टार्जन को दिखाई नहीं देते थे हाँ लकड़बग्घे अवश्य मनुष्य के समान ही घृणित जीव थे क्योंकि संसार में केवल मनुष्य तथा लकड़बग्घे ही ऐसे थे जो तब तक बराबर खाते ही चले जाते थे जब तक कि उनका पेट फटने पर न आ जाय बल्कि ऐसी हालत होने पर भी उनकी तृष्णा नहीं भरती थी ! एक बार तो टार्जन ने एक लकड़बग्घे को मरे हुए हाथी का मांस खाते खाते उसके पेट के अंदर घुस जाते देखा था किन्तु वहाँ बैठ कर भी वह इतना अधिक मांस खा गया कि जिस छेद की राह वह हाथी के पेट में गया था उस राह से फिर उसका बाहर निकलना असंभव हो गया। वे जानते थे कि यदि मनुष्य को भी ऐसा मौका मिल जाय तो वह भी बिना ऐसा किये न छोड़ेगा। ओह, मनुष्य भी कैसा घृणित जीव है !

सहसा टार्जन का ध्यान उस योद्धा की ओर चला गया जो जमीन पर गिरे बरतन में से मांस निकाल निकाल जबर्दस्ती अपने गले के नीचे

उतारे जा रहा था बल्कि यों कहिये कि मुँह में ठूँसे जा रहा था क्योंकि बहुत प्रयत्न करने पर भी अब ये मांस के टुकड़े उसके गले के नीचे नहीं उतर रहे थे। टार्जन अब और न देख सके। वे चुपचाप जमीन पर उतर आये और सावधानी से कदम रखते हुए उस आदमी की ओर बढ़े।

उस आदमी की पीठ टार्जन की ओर थी। टार्जन चुपचाप उसके समीप जा पहुँचे और उनकी लोहे के समान उँगलियों ने उसका गला पकड़ कर जोर से दबा दिया। कुछ ही देर बाद बिना किसी तरह का भी शब्द किये वह मुर्दा हो कर जमीन पर लम्बा हो गया।

उसे जमीन पर पटक टार्जन ने मांस के कुछ बड़े बड़े टुकड़े उस वरतन में से निकाल लिये और इसके बाद उस जंगली को उठा कर उन्होंने उसी मांस के वरतन में डाल दिया। यह सोच कर कि सुबह उठते ही उसे वरतन में पड़ा देख हवशियों को कैसी घबड़ाहट पैदा होगी उनके चेहरे पर एक हलकी मुस्कुराहट आई और तब वे वहाँ से वापस लौट कर पुनः उस पेड़ पर जा चढ़े तथा तेजी के साथ एक ओर को चल दिये।

लगभग आध मील तक टार्जन बराबर आगे ही बढ़े चले गये और तब एक ऊँचे पेड़ पर बैठ कर उन्होंने भोजन करना शुरू किया। खाते समय उन्हें ऐसा मालूम हुआ मानों उन मांस के टुकड़ों में से एक विचित्र प्रकार की सड़ी हुई गंध निकल रही है पर इसका कारण उन्होंने यही समझा कि पानी में डाल कर आग पर चढ़ाने ही से कदाचित् उसमें इस प्रकार की वाहियात गंध आ गई है। टार्जन को आग पर पका हुआ खाना जरा भी पसन्द न था परन्तु इस समय उन्हें बेहद भूख लगी हुई थी अस्तु मांस के कई टुकड़े जल्दी जल्दी पेट में उतार लेने बाद तब कहीं उन्हें मालूम हुआ कि उन टुकड़ों में से वास्तव में ऐसी बुरी गंध निकल रही है कि अब उन्हें खाना उनके लिये असम्भव है।

बाकी बचे हुए मांस के टुकड़ों को जमीन पर फेंक देने बाद वे पत्तों तथा डालियों की एक ऊँची मचान पर जा लेटे और निद्रादेवी का आवा-

हन करने लगे किन्तु न मालूम क्यों आज उन्हें नींद नहीं आ रही थी। और दिन तो वे रात के समय मचान पर लेटते ही सो जाते थे परन्तु आज बहुत प्रयत्न करने पर भी सो नहीं पाते थे। साथ ही उनकी तबीयत ऐसी मचला रही थी मानों उसके पेट में पड़े हुए मांस के टुकड़े थोड़ी देर में उस हाथी को खोजते हुए बाहर निकल आवेंगे जिसमें से काट कर वे पकाये गये हैं। परन्तु टार्जन दृढ़ थे। दाँत पर दाँत जमाये वे मांस के उन टुकड़ों को बाहर निकलने से रोक रहे थे। इतनी मुश्किल से प्राप्त किये हुए भोजन को वे इतनी आसानी से खो देने के लिये किसी प्रकार भी तैयार न थे।

बड़ी मुश्किल से उन्हें कुछ कुछ निद्रा आने लगी थी कि सहसा किसी सिंह की दहाड़ से पुनः उनकी नींद उचट गई। यह देख वे उठ कर बैठ गये कि दिन काफी चढ़ आया था। टार्जन अपनी आँखें मलने लगे। उन्हें आश्चर्य हुआ कि क्या वे वास्तव में इतनी देर तक सोये रहे। सोने के बाद जिस तरह की शान्ति उन्हें मिलती थी वह आज उन्हें जरा भी मालूम नहीं हो रही थी। पुनः सिंह की दहाड़ उनके कानों में पड़ी और उन्होंने झुक कर नीचे की ओर देखा। पेड़ के नीचे खड़ा हुआ एक सिंह अपनी भूखी आँखों से उनकी ओर देख रहा था। टार्जन उसे मुँह चिढ़ाने लगे परन्तु यह देख उन्हें बड़ा ही आश्चर्य हुआ कि वह सिंह धीरे धीरे पेड़ पर चढ़ने की कोशिश कर रहा है! आज से पहले उन्होंने कभी किसी भी सिंह को पेड़ के ऊपर चढ़ते नहीं देखा था।

जैसे जैसे वह सिंह पेड़ पर चढ़ने लगा टार्जन पेड़ की ऊँची डालों पर चढ़ने लगे परन्तु यह देख उन्हें बड़ी ही निराशा हुई कि वह सिंह भी बराबर उनके पीछे पीछे ऊपर की ओर चढ़ा चला आ रहा है। अब वे पेड़ के एकदम सिरे पर की बहुत ही पतली डालों पर चले गये फिर भी सिंह ने उनका पीछा न छोड़ा, वह भी उन्हीं पतली पतली डालों पर चढ़ने लगा। टार्जन को आश्चर्य हो रहा था कि आखिर पेड़ की ये पतली डालें इतने भारी सिंह का बोझ क्योंकर सभाल रही हैं। अब इससे अधिक

र टार्जन नहीं चढ़ सकते थे अस्तु लाचार वे अपने स्थान पर ही रुके गये । सिंह अब उनके एकदम समीप पहुँच गया था । एक क्षण बाद उसके मजबूत पंजे टार्जन को खींच कर उसके मुँह के समीप पहुँचा देते हैं । इसी समय अपने सिर की ओर होने वाली एक बड़ी तेज फटफटाहट ने आवाज ने टार्जन का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया । उन्होंने आश्चर्य से अपना सिर उठा कर ऊपर की ओर देखा । एक बड़ी भारी चिड़िया उनके सिर के ऊपर चक्कर काट रही थी । अपने समूचे जीवन में कभी भी टार्जन ने इतनी भारी चिड़िया नहीं देखी थी फिर भी उन्होंने शीघ्र ही उसे पहचान लिया । ठीक ऐसी ही चिड़िया का एक चित्र वे कितनी ही बार समुद्र किनारे वाले अपने पिता के केबिन में देख चुके थे ।

तस्वीर में वह चिड़िया एक छोटे से बच्चे को अपने पंजों में लिये हुए उड़ती दिखाई गई थी और उसके ठीक नीचे की ओर खड़ी उसकी माँ निराश आँखों से अपने दोनों हाथ ऊपर आसमान की ओर उठाये खड़ी थी । सिंह का पंजा उनके शरीर तक पहुँचा ही चाहता था कि उस चिड़िया ने झपट्टा मार कर अपने पंजे टार्जन की पीठ में गड़ा दिये । पीड़ा से टार्जन बेचैन हो गये परन्तु यह देख उन्हें थोड़ा बहुत सन्तोष अवश्य हुआ कि वह चिड़िया उन्हें अपने पंजों से पकड़ सिंह की पहुँच के बाहर आसमान की ओर ले उड़ी ।

अपने पंखों की भारी फटफटाहट के बाद वह चिड़िया इतनी तेजी के साथ उन्हें अपने पंजे में लिये आसमान की ओर उड़ी कि कुछ ही देर बाद नीचे के जंगल उस ऊँचाई से केवल एक हरे धब्बे के समान दिखाई पड़ने लगे । टार्जन ने अपनी सांस रोक ली । चिड़िया लगातार ऊपर की ओर बढ़ी चली जा रही थी । सूर्य भगवान इस समय बहुत ही समीप नजर आ रहे थे । अपने ठंडे हाथ बाहर निकाल टार्जन उन्हें उस कड़ी धूप में सेकने लगे । सहसा एक नवीन पागलपन ने उनके मस्तिष्क पर अपना अधिकार जमा लिया । वे सोचने लगे कि आखिर वह चिड़िया

उन्हें लिये कहाँ जा रही है ! चाहे वह चिड़िया कितनी ही बड़ी क्यों न हो क्या वे बिना उससे युद्ध किये ही अपना जीवन खो देंगे ! नहीं ऐसा कभी भी नहीं हो सकता !

फौरन ही अपने कमर में लगा हुआ अपने पिता का शिकारी छुरा उन्होंने बाहर खींच लिया और उसे एक दो तीन बार अपने ठीक ऊपर वाले चिड़िया के पेट में भोक दिया ! वे विशाल डैने दस पाँच बार और फटफटाये और तब पंजों की पकड़ ढीली पड़ गई और टार्जन लुढ़कते-हुये नीचे की ओर गिरने लगे ।

न मालूम कितनी देर तक इसी प्रकार नीचे गिरते रहने के बाद तब जा कर कहीं उनका शरीर एक विशाल वृक्ष की फुनगी से टकराया । उनके बोझ से पेड़ की कितनी ही छोटी छोटी डालियाँ टूट कर नीचे की ओर गिर पड़ीं यहाँ तक कि वे गिरते पड़ते ठीक उसी डाल पर आ पहुँचे जिस पर कि वे रात में सोये थे । बहुत प्रयत्न करने बाद तब कहीं वे एक डाल हाथों से पकड़ पाये और तब उसी को पकड़ नीचे की ओर लटक गये ।

अब उन्होंने पुनः अपनी आँखें खोलीं जो उनके नीचे गिरते समय एकदम से बन्द हो गई थीं । पुनः उन्हें अपने चारो ओर रात्रि का अंधकार दिखाई दिया । बड़ी ही सावधानी से ऊपर चढ़कर वे उसी मचान पर जा पहुँचे जिस पर पिछली रात वे सोये थे । उनके नीचे जमीन पर खड़ा एक सिंह दहाड़ रहा था । टार्जन ने देखा अन्धकार में भी उस भयंकर जीव की पीली आँखें आग के दो छोटे गोलों की भाँति चमक रही थी ।

टार्जन ने एक गहरी साँस ली । पसीने की बड़ी बड़ी बूँदें उनके माथे पर चुहचुहा आईं । उनके पेट में दर्द हो रहा था । अपने जीवन में टार्जन ने यह पहला स्वप्न देखा था ।

बहुत देर तक अपने स्थान पर बैठे वे न्यूमा सिंह के पेड़ पर चढ़ने की राह देखते और उस विशाल चिड़िया के पंखों की आवाज सुनने का

प्रयत्न करते रहें क्योंकि टार्जन के लिये स्वप्न भी सत्यता का ही स्वरूप था ।

जो कुछ भी उन्होंने अब तक देखा था उस पर उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था किन्तु वे उस पर अविश्वास भी कैसे कर सकते थे ? स्वयं अपनी आँखों से उन्होंने वे दृश्य देखे थे । अपने जीवन भर में टार्जन की ज्ञान-शक्तियों ने उन्हें इस प्रकार का धोखा कभी भी नहीं दिया था । उन्हें उन पर पूरा विश्वास था । अब तक के उनके जीवन में जो भी दृश्य उन्हें दिखाई दिये थे वे एक दम सच्चे थे । उन्हें इस समय अपने जीवन की कोई भी ऐसी घटना नहीं याद आ रही थी जिसमें उनकी देखी हुई कोई भी बात झूठी साबित हुई हो । फिर भी इस समय जो जो दृश्य उन्होंने देखे थे वे उनके अब तक के अनुभव के एकदम विपरीत थे । वे अच्छी तरह जानते थे कि न्यूमा सिंह पेड़ पर नहीं चढ़ सकता, यह भी वे जानते थे कि उस जंगल में ऐसी कोई भी चिड़िया नहीं रहती जैसी कि उन्हें अभी थोड़ी देर पहले आसमान की ओर उड़ा ले गई थी, और वे यह भी समझते थे कि जितनी ऊँचाई से वे नीचे गिरे हैं उसके पचासवें हिस्से की ऊँचाईसे गिरने पर भी उनके शरीर की एक हड्डी भी समूची नहीं बच सकती ।

टार्जन का माथा चक्कर खाने लगा । असल बात उनकी समझ में ही नहीं आ रही थी । लाचार सोने के लिये वे पुनः उसी मचान पर लेट रहे । पर अभी उन्हें वहाँ लेटे अधिक देर नहीं हुई थी कि उन्होंने पुनः एक विचित्र दृश्य देखा । एक हिस्टा अर्थात् अजगर पेड़ पर चढ़ता हुआ ठीक उसी डाल की ओर चला आ रहा था जिस पर टार्जन लेटे हुए थे, पर सब से भारी आश्चर्य की बात यह थी कि उसका समूचा शरीर तो अजगर की भाँति था परन्तु सिर ठीक उसी आदमी के सिर के ऐसा था जिसे वे मोंगा के गाँव में मार कर माँस के बरतन में डाल आये थे । जैसे ही वह भयानक सिर जिसकी आँखें बाहर निकली हुई थीं टार्जन के समीप पहुँचा उसने उन्हें निगलने के लिये अपना मुँह खोल दिया । टार्जन

ने अपनी समूची ताकत खर्च कर के एक मुक्का उसके मुँह पर मारा परन्तु मुक्का चलाते ही वह मुँह तथा उसके साथ ही साथ वह अजगर एकदम से अदृश्य हो गया ।

टार्जन घबड़ा कर उठ बैठे । उनका समूचा शरीर काँप रहा था । उन्होंने अपने चारो ओर निगाह दौड़ाई परन्तु अजगर उन्हें किसी ओर भी दिखाई नहीं दिया । वे पुनः लेट गये ।

इसी प्रकार रात धीरे धीरे बीतने लगी और उन्हें स्वप्न पर स्वप्न दिखाई देने लगे यहाँ तक कि हवा चलने से होने वाली पत्तों की खड़-खड़ाहट तक से वे चौंक उठने लगे । अन्त में किसी तरह सवेरा हुआ और टार्जन जमीन पर उतर कर जंगल का राह पानी की तलाश में चले । उनके समूचे शरीर में मानों आग लगी हुई थी और तबीयत मिचला रही थी । अन्त में उन्हें एक कै हुई, वे जमीन पर बैठ गये और उनके तमाम शरीर से पसीना निकलने लगा । धीरे धीरे उन्हें निद्रा आने लगी और वे वहीं की एक घनी झाड़ी में लेट कर गहरी निद्रा में मग्न हो गये ।

जब उनकी आँख खुली तो उन्हें बेतरह प्यास लगी हुई थी । एक भरने के किनारे अपनी प्यास बुझाने वाद वे वहाँ से सीधे अपने समुद्र किनारे वाले केन की ओर रवाना हुए । जब कभी भी उन्हें उदासीनता अथवा घबड़ाहट पैदा होती थी तो वे साधे अपने इसा केबिन को ओर चले जाया करते थे । इस समय उनकी तबीयत बहुत कुछ ठीक हो गई थी ।

जिस समय वे अपने केबिन में पहुँचे और उसके दरवाजे में लगी अपने पिता द्वारा आविष्कृत सिटकिनो उन्होंने खोली पास की घनी झाड़ियों में छिपी दो चमकीली आँखें उन्हें ध्यान से देख रही थीं । घनी तथा आगे की ओर झुकी हुई भौंहों के नोचे से ये तेज आँखें उत्सुकता के साथ जंगल के राजा टार्जन को इस कार्रवाई को देखने लगीं । टार्जन ने भीतर जा कर दरवाजा बन्द कर लिया और एक कुर्सी पर जा बैठे । दुनिया के सब प्रपञ्चों से दूर रह कर यहाँ वे एक प्रकार की शान्ति का अनुभव किया

करते थे। बाहर की ओर चाहे सिंह गजें चाहे पत्थर पड़े वे उसकी ओर जरा भी ध्यान नहीं देते थे।

कुर्सी पर बैठ कर वह किताब उन्होंने उठा ली जिसमें उस विशाल चिड़िया की तस्वीर वे कई बार देख चुके थे। उसके पन्ने उलट कर इस बार भी उन्हें ने वही तस्वीर निकाली और ध्यान से उसे देखने लगे। यह चिड़िया ठीक वैसी ही थी जैसी कि आज रात उन्हें अपने पंजे में पकड़ कर उड़ा ले गई थी।

परन्तु जितना ही वे उन घटनाओं पर विचार करते थे उतना ही उनका विश्वास उन बातों की ओर से घटा जाता था। क्या वे वास्तव में गौ-मंगानियों के गाँव में गये थे और वहाँ हाथी का पकाया हुआ मांस उन्होंने खाया था? टार्जन अपना सिर खुजलाते हुए सब बातों पर विचार करने लगे। सभी बातें आश्चर्य की थीं। सिंह का पेड़ पर चढ़ना या अजगर का मुँह ठीक उसी आदमी की सूरत से मिलता जुलता होना जिसे वे मोंगा के गाँव में मार कर मांस वाले बरतन में डाल आये थे, ये सभी बातें विश्वास करने योग्य न थीं पर वे उन पर अविश्वास भी करे तो कैसे? क्या स्वयं अपनी आँखों से वे उन सब दृश्यों को नहीं देख चुके थे?

अन्त में एक लम्बी साँस ले कर उन्होंने इन बातों की ओर से अपना ध्यान खींच लिया। इन बातों का समझना उनकी बुद्धि के बाहर की बात थी, हाँ इतना वे अवश्य अनुभव कर रहे थे कि उनके जीवन में इस बार अवश्य कोई नवीन घटना घटी है जिसका आज से पहले उन्होंने कभी भी अनुभव नहीं किया था और आश्चर्य तो यह कि ये बातें उस समय हुईं जब वे सोये हुए थे और उनका सिलसिला उनके जागने के समय भी जारी रहा!

एक चिन्ता उन्हें यह भी हुई कि वे विचित्र जानवर जिन्हें उन्होंने सोती समय देखा था उन्हें किसी प्रकार की हानि भी पहुँचा सकते हैं या नहीं। संभव है कि वे उनकी जान ही ले लें क्योंकि उनके अनुभव में यह

बात अच्छी तरह आई थी कि जिस समय उनकी आँखों के सामने ये घटनाएँ घट रही थीं उनके शरीर की समूची शक्ति एक प्रकार से नष्ट हो गई सी जान पड़ती थी और वे एक दम निश्चेष्ट मालूम होने लगे थे ।

अस्तु स्वप्न के साथ ही साथ आज टार्जन के मन में भय का भी संचार हुआ । उन्होंने पुनः अपने सामने की किताब उठा ली और उसके पन्ने उलटने लगे । सहसा एक बोल्लानी गोरिल्ले का चित्र उनके सामने आया । यह एक रंगीन चित्र था । गोरिल्ला एक पीजरे में बन्द था और कई आदमी उस पीजरे के सामने लगे कटघरे के सहारे झुके उसे गौर से देख रहे थे । उस पन्ने पर छपे हरूफों को वे गौर से देखने तथा उनका मतलब समझने का प्रयत्न करने लगे । सहसा उन्हें ऐसा मालूम हुआ मानों वे हरूफ धीरे धीरे कुछ धुंधले से हुए जा रहे हों । उन्हें बड़ा ही आश्चर्य हुआ । कुछ देर के लिये उन्होंने अपनी आँखें बन्द कर लीं और अपने माथे पर हाथ फेरने लगे । रात में भी वे आराम से नहीं सोये थे और इस समय भी उनकी आँखें झँपी जा रही थीं ।

टार्जन को ऐसा मालूम हुआ मानों उन्हें धीरे धीरे निद्रा आ रही हो । उनके माथे में इस समय हलका हलका दर्द भी हो रहा था । सहसा केबिन का दर्वाजा खुलने की आवाज उनके कानों में आई । आश्चर्य से घूम कर उन्होंने दर्वाजे की ओर देखा और यह देख कर तो उनका आश्चर्य और भी बढ़ गया कि एक कद्दावर गोरिल्ला किवाड़ का पल्ला खोले दर्वाजे पर खड़ा हुआ है ।

टार्जन इस बात को अच्छी तरह समझते थे कि अपने केबिन के अन्दर गोरिल्ले ऐसे शक्तिशाली जीव से युद्ध कर के वे किसी प्रकार भी उस पर विजय नहीं पा सकते थे फिर भी न मालूम क्यों इस समय उन्हें कुछ भी भय नहीं मालूम हो रहा था । उन्होंने यह भी देखा कि उस गोरिल्ले की आँखों से पागलपन की झलक साफ दिखाई दे रही है । बड़े से बड़े गोरिल्ले भी आम तौर पर किसी से झगड़ा मोल लेना पसन्द

नहीं करते जब तक कि उन पर हमला न किया जाय, अथवा उन पर पागलपन का भूत न सवार हो जाय । जिस मौके पर वे बड़े ही खूँखार हो जाते हैं और जंगल में ऐसा कोई भी जीव नहीं है जो ऐसे समय उनसे अपनी खैरियत समझे ।

परन्तु टार्जन के लिये इस समय बचने का कोई भी उपाय न था । बोलगानी गोरिल्ला उन्हें अपनी क्रोध भरी आँखों से देख रहा था । टार्जन ने शिकारी छुरा उठाने के लिये टेबुल की ओर हाथ बढ़ाया । अभी थोड़ी देर पहले उन्होंने अपना छुरा टेबुल पर रख दिया था किंतु वह उन्हें नहीं मिला अस्तु उसे देखने के लिये उन्होंने एक क्षण के लिये अपनी निगाह उस गोरिल्ले की ओर से हटा कर टेबुल की ओर की । छुरा उन्हें मिला गया परन्तु उनके सामने ही उनकी खुली हुई किताब भी पड़ी थी । उन्होंने देखा कि उस पुस्तक के चित्र तथा इस सामने खड़े गोरिल्ले की शकल में जरा भी अन्तर नहीं है ।

उन्होंने निश्चय कर लिया था कि इस बार वे सोते समय अपने सामने वाले दृश्यों को देख कर न तो उन्हें सत्य ही समझेंगे न उन्हें देख कर घबड़ावेंगे ही । ऐसे दृश्य जिस तेजी के साथ निगाह के सामने आते हैं वैसे ही अपनी सूरत बदल देते हैं या गायब हो जाते हैं और तब उनकी केवल स्मृति मात्र ही रह जाती है । परन्तु इस समय जब कि वह गोरिल्ला उनकी ओर बढ़ रहा था उसने अपनी सूरत जरा भी नहीं बदली ।

टार्जन को बड़ी ही परेशानी हुई । सब से भारी आश्चर्य की बात तो यह थी कि सदा की भाँति गोरिल्ले से अपना बचाव करने के लिये अपने स्थान से उठने का भी इरादा उन्होंने न किया क्योंकि अभी तक उन्हें विश्वास ही न था कि वह गोरिल्ला जो उनके सामने खड़ा है असली हाइ माँस का बना हुआ है ।

टार्जन सोच रहे थे कि अब तक इस सामने के गोरिल्ले की शकल या तो किसी दूसरे ही रूप में परिवर्तित हो जानी चाहिये थी अथवा

एकदम से लापता ही हो जानी चाहिये थी परन्तु दोनों में से एक भी न हुआ। इसके बदले में उलटे वह गोरिल्ला तेजी के साथ उनकी ओर भपटा। दो मजबूत हाथ टार्जन की ओर बढ़े, उनके चेहरे के समीप ही उसके दो नोकीले दाँत दिखाई दिये और उसकी गर्म श्वास टार्जन के गालों पर लगी। परन्तु टार्जन को अभी तक भी अपने सामने के दृश्य पर विश्वास नहीं हो रहा था। वे बई बार बेववूफ बन चुके थे अस्तु इस बार भी बेववूफ बनने के लिये वे किसी प्रकार भी तैयार नहीं थे। वे सोच रहे थे कि वह गोरिल्ला सच्चा नहीं है क्योंकि वोई भी गोरिल्ला उनके केबिन के भीतर नहीं आ सकता कारण केबिन के दरवाजे की सिटकिनी खोलना सिवाय उनके और कोई भी नहीं जानता था !

परन्तु टार्जन को उसी भौंति चुपचाप अपने स्थान पर खड़े देख वह गोरिल्ला भी कुछ देर के लिये अकचका गया। इसके बाद सहसा उसके दिल में किसी प्रकार का ख्याल पैदा हुआ। अपने हाथ के एक ही भटके में उसने टार्जन को उठा कर अपने कंधे पर डाल लिया और केबिन के बाहर निकल गया।

अब टार्जन को निश्चय हो गया कि वे अवश्य निद्रा में हैं। थोड़ी ही देर में उनकी निद्रा भंग हो जायगी और वे अपने को केबिन में पड़े हुए पावेंगे परन्तु उन्हें सब से भारी आश्चर्य इस समय यह हो रहा था कि आखिर निद्रा के समय घटने वाली घटनाओं का आरम्भ तथा अन्त किस ढंग से होता है और इस बात को जानने का तरीका क्या है कि कौन घटनायें सोते समय की हैं और कौन सच्ची। सहसा उनका ख्याल अपने केबिन के खुले हुए दरवाजे की ओर चला गया। उन्हें ख्याल हुआ कि जंगल का कोई भी जीव उस खुले हुए दरवाजे के अन्दर घुस कर उनकी तमाम वस्तुएँ तहस नहस कर सकता है।

उन्होंने गोरिल्ले के कंधे पर से खसक कर अपने केबिन की ओर जाने का निश्चय किया परन्तु उन्हें ऐसा करते देख गोरिल्ले ने एक बार

जोर से गुर्ग कर उन्हें और भी कस कर पकड़ लिया। अपने शरीर की समूची शक्ति खर्च कर के टार्जन ने उसके कंधे से कूद पड़ने का प्रयत्न किया और जैसे ही वे नीचे जमीन पर आये उनका वह स्वप्न का गोरिल्ला झुंझला कर उनकी ओर झपटा और अपने तेज नोकीले दाँत उसने उनके कंधे में धँसा दिये।

अब टार्जन को चेत हुआ। वे समझ गये कि निद्रा हो या सत्य उनके सामने का यह दृश्य मजाक नहीं है। गुर्गते चीखते फाड़ते तथा एक दूसरे को दाँतों से घायल करते वे दोनों ही एक दूसरे पर विजय प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहे थे। गोरिल्ला उनकी गर्दन में अपने नोकीले दाँत धँसाने के प्रयत्न में था और टार्जन उसका गला पकड़ने की कोशिश में थे। अन्त में टार्जन का दाँव चल गया और उन्होंने मजबूती के साथ गोरिल्ले का गला अपने एक मजबूत हाथ से पकड़ लिया। साथ ही उनके दूसरे हाथ का छुरा तेजी के साथ गोरिल्ले की छाती में धुस गया। गोरिल्ले के मुँह से एक तेज चीख निकली और वह लड़खड़ा कर जमीन पर गिर पड़ा।

जंगल के राजा टार्जन कुछ देर तक उस गोरिल्ले की मृत देह की ओर देखते रहे। इसके बाद उन्होंने झुक कर उसकी छाती पर हाथ लगाया। गर्म गर्म लाल रक्त उनकी उँगलियों में उठ आया। अपने नाक के साथ उँगलियाँ लगा कर उन्होंने उसे सूँघा और इसके बाद सिर हिला कर केचिन की ओर खाना हुआ। दर्वाजा अभी तक खुला पड़ा था जिसे बंद कर वे दोबारा उस गोरिल्ले की लाश के पास वापस लौट आये। वहाँ पहुँच कर एक बार पुनः उन्होंने उसे गौर से देखा और तब अपना सिर खुलाने लगे।

वे सोच रहे थे कि यदि यह सोते समय की घटना है तो वास्तव में सत्य क्या वस्तु है और एक से दूसरे की भिन्नता किस प्रकार मालूम हो सकती

है। उनके जीवन में आज तक जितनी घटनायें घटी हैं आखिर उनमें से किन किन में कितना अंश सच का है।

अपना एक पैर गोरिल्ले की लाश पर रख कर उन्होंने अपना मुँह आसमान की ओर उठाया और तब उनके मुँह से एप बन्दरों के भीषण विजय नाद ने निकल कर जंगल को प्रतिध्वनित कर दिया। सुदूर जंगल में सिंह की दहाड़ ने उनकी आवाज का उत्तर दिया। वह आवाज अवश्य सच्ची थी फिर भी उन्हें सन्देह था ! इस गोरखधन्धे को न समझ वे जंगल की ओर खाना हुए।

सत्य क्या है इसे वे बहुत प्रयत्न करने पर भी समझ न सके परन्तु एक बात अच्छी तरह उनकी समझ में आ गई जो यह कि भविष्य में वे कभी भी टैन्टर हाथी का माँस नहीं खायेंगे।

टीका के लिये युद्ध

बड़ा ही सुहावना दिन था। ठण्डी ठण्डी हवा चल रही थी और करचक जाति के एप बन्दर आनन्द के साथ मैदान में इधर उधर घूमते हुए जमीन तथा पौधों के नीचे छिपे कीड़ों को उठा उठा कर अपने मुँह में रख रहे थे। अपनी रक्षा के लिये संतरी बैठाने का उनका नियम अब एक प्रकार से मामूली अभ्यास के रूप में परिणत हो गया था पर इधर बहुत दिनों से उन पर किसी भी जंगली जानवर का हमला न होने के कारण पहरे पर बैठाये संतरी भी अब निश्चिन्ती के साथ इधर उधर घूमा करते थे और इन लोगों की निश्चिन्ती यहाँ तक बढ़ गई थी कि एप जाति के बड़े बड़े बन्दर अपनी मण्डली से भटक कर शिकार की खोज में बहुत दूर दूर तक निकल जाया करते थे और मादाएँ तथा बच्चे आराम से मैदानों में उछल कूद मचाया करते थे। सभी इस प्रकार निश्चिन्त बेमानों जंगल के ऊतरे उनके लिये बने ही न हों।

टीका तथा गाजन भी इसी प्रकार धूमते फिरते अपनी टोली से कुछ दूर निकल गये और टीका गाजन को खेलने के लिये छोड़ कर निश्चिन्ती के साथ कीड़े बीनने में लग गई। कोई भी नर बन्दर इस समय इनके समीप दिखाई नहीं दे रहा था।

इनसे कुछ दूर दक्खिन हट कर एक अन्य जाति का एप बन्दर धीरे धीरे इसी ओर बढ़ा आ रहा था। वह बड़ा ही दृष्ट पुष्ट कढ़ावर और जवानी की उमंग में भरा हुआ था। अपनी जाति के राजा को उसके पद से हटाने के लिये युद्ध कर के इसने गहरी हार खाई थी और बड़ी बेइज्जती के साथ वहाँ से निकाल बाहर किया गया था क्योंकि अपनी जाति की सद्गति के साथ साथ उसने उसकी स्त्रियों पर भी अपना हाथ साफ करना चाहा था अस्तु अब कम से कम पन्द्रह बीस दिनों तक उसे अपने क्रोध में भरे राजा से दूर रहना ही आवश्यक था।

अस्तु इसी प्रकार जंगलों में घूमता फिरता दूग उस मैदान के पास आ पहुँचा जिसमें बैठी हुई टीका अपने काम में मशगूल थी। बगल की एक झाड़ी में घुस कर वहाँ से छिपा छिपा दूग टीका की अपूर्व सुन्दरता को देखने लगा।

परन्तु उसकी निगाहें इस समय केवल टीका ही पर नहीं थीं। इधर उधर निगाहें घुमा कर वह इस बात को भी समझने का प्रयत्न कर रहा था कि अन्य एप बन्दर तो कहीं आस पास में नहीं हैं। मगर उसे पास में कोई भी एप बन्दर दिखाई नहीं दिया। टीका के बालू की उसे चिन्ता न थी क्योंकि चिल्ला कर अन्य एप बन्दरों को खबर देने के पहले ही वह उसे अपने दाँतों की केवल एक चोट से ही दूसरी दुनिया में भेज दे सकता था।

बड़ी ही सावधानी से वह झाड़ी के बाहर निकला। टीका इस समय अपने काम में इतनी मस्त थी कि उसे इस बात का जरा भी ख्याल न था कि वह तथा उसका बालू अन्य एप बन्दरों से बहुत फासले पर निकल

आये हैं। न उसे इसी बात की खबर थी कि किसी अन्य जाति का एप बन्दर धीरे धीरे उसकी ओर बढ़ा चला आ रहा है। टीका की पीठ दूग की ओर थी जब वह तेजी के साथ उसकी ओर झपटा। टीका ने फौरन ही घूम कर उसकी ओर देखा। दूग उससे कुछ फासले पर खड़ा हो गया। उसकी निगाह में टीका अतीव सुन्दरी दीख पड़ी थी अस्तु अपने स्थान से ही वह उसकी रूप सुधा का पान करने लगा।

दूग भी देखने में अच्छा दृष्ट पुष्ट और सुन्दर मालूम होता था। ताकत तथा शरीर की बनावट में वह दाग से किसी भी हालत में कम न था। यदि वह टीका की जाति का होता तो बहुत संभव था कि टीका उसे ही अपना पति चुनती। पर सो सब जो कुछ भी हो वह टीका पर इस समय बेतरह मुग्ध हो रहा था। अपनी छाती फुला कर तथा एक बार इधर उधर चकर काट कर पहले तो उसने टीका को अपने हर एक अंगों की सुन्दरता दिखाई और तब गर्व से अपना सिर ऊँचा कर के बोला, “मै दूग हूँ ! मेरे मजबूत तथा पैने दाँतों की ओर देखो और साथ ही इन मजबूत हाथों तथा पैरों की ओर भी निगाह करो। एक ही दफे की चोट में मै तुम्हारे भारी से भारी एप बन्दर को मार डाल सकता हूँ। अकेले ही मै चीते को मार चुका हूँ। मै दूग हूँ और तुम्हें चाहता हूँ !”

पर उसकी बातों का टीका ने कुछ भी उत्तर न दिया। दूग पर निगाह पड़ते ही उसने आवाज दे कर गाजन को पेड़ पर चढ़ जाने की आज्ञा दे दी थी जिसे सुनते ही वह वहाँ से चम्पत भी हो गया था। अब टीका भी यकायक पीछे की ओर घूमी और तेजी के साथ एक ओर को भाग चली। दूग ने फौरन ही उसका पीछा किया परन्तु टीका उससे कहीं अधिक फुर्तीली थी अस्तु उससे बहुत आगे निकल गई। लाचार दूग एक स्थान पर खड़ा हो गया।

गाजन पेड़ की एक ऊँची डाल पर बैठा हुआ था। उसे पूरा विश्वास था कि दूग उसके पास किसी तरह भी नहीं पहुँच सकता अस्तु

वह अपने स्थान पर ही बैठा बैठा दूग को मुँह चिढ़ाने तथा उसका मजाक उड़ाने लगा। दूग ने ऊपर की ओर देखा। गाजन की इस दुष्टता पर उसे बेतरह क्रोध चढ़ आया। वह धीरे धीरे उस पेड़ के पास जा पहुँचा और उसके ऊपर चढ़ने लगा।

टीका ने अपने बालू का खतरा देख लिया और नीचे ही से उसे सावधान कर उसने उसे पेड़ की सत्र से ऊँची डाल पर चढ़ जाने की आज्ञा दी। गाजन फौरन पेड़ की एकदम ऊपर की डाल पर जा कर बैठ गया।

टीका को विश्वास था कि वह एप किसी प्रकार भी उस पतली डाल पर नहीं चढ़ सकेगा जिस पर उसका गाजन बैठा हुआ है अस्तु वह उसकी ओर से एकदम निश्चिन्त हो गई परन्तु दूग भी कम चलाक न था। वह वहाँ तक ऊपर चढ़ गया जहाँ तक कि डाल उसे मजबूत मिलती चली गई और उसके बाद वह रुक गया। गाजन इस समय उससे लगभग पन्द्रह हाथ की ऊँचाई पर था। अब उसने उस डाल को जोर जोर से झक-झोरना शुरू किया जिस पर गाजन बैठा हुआ था।

टीका ने अपने बच्चे के खतरे को देख लिया। मातृ स्नेह में वह अपने खतरे को एक दम भूल गई और अपने बच्चे की जान लेने का हरादा करने वाले से युद्ध करने के लिये फौरन ही उस पेड़ की तरफ दौड़ी।

परन्तु अभी वह पेड़ के ऊपर नहीं चढ़ी थी कि गाजन एक बार जोर से चिल्लाया और तब अपने स्थान से गिर लुङ्कता पुङ्कता जमीन पर अपनी माँ के समीप ही आ गिरा। गिरने के साथ ही वह निश्चेष्ट हो कर जमीन पर पड़ रहा। बिलखती हुई टीका ने फौरन ही उसे अपनी गोद में उठा लिया और ठीक इसी समय दूग उसके ऊपर टूट पड़ा।

नोचती तथा खसोटती हुई टीका ने दूग के पंजे से निकलने का बहुत प्रयत्न किया परन्तु इससे कुछ भी लाभ न हुआ। दूग ने इस जोर से उसका गला पकड़ लिया कि उसका दम घुटने लगा। लाचार कोई

भी बस न चलता देख वह एक दम ढीली पड़ गई और दूग उसे अपने कंधे पर लाद उसी दक्षिण दिशा की ओर खाना हुआ जिधर से कि वह आया था ।

सूर्य भगवान आसमान पर बहुत ऊँचे उठ आए । जमीन पर गाजन का शान्त देह पड़ा था, एक लकड़बग्घा अपनी नाक ऊपर की ओर उठाये जंगली हवा की गंध ले रहा था । सहसा उसकी चमकती हुई आँखें एक झाड़ी के बाहर निकलीं और जमीन पर पड़े गाजन पर जम गईं । फौरन ही वह उसके पास पहुँच गया और उसका शरीर सूंघने लगा ।

×

×

×

उस दिन टार्जन अपने समुद्र किनारे वाले केबिन में सुबह ही जा पहुँचे और वहीं उन्होंने कई घंटे बिता दिये । कमरे की गच पर किसी मनुष्य की ठठरी पड़ी थी । यह उसी मनुष्य की ठठरी थी जो कुछ दिन पहले लार्ड ग्रेस्टोक के नाम से विख्यात था । आज से बीस वर्ष पहले करचक उन्हें वहीं जमीन पर मुर्दों की भाँति गिरा छोड़ कर चला गया था । टार्जन वर्षों से ही इसे वहाँ पड़े देख रहे थे परन्तु उन्होंने इसे भी जंगलों में कितने ही स्थानों में पड़ी हड्डियों के समान ही समझ इस पर विशेष ध्यान नहीं दिया था । बिस्तरे पर उससे भी छोटी एक ठठरी पड़ी थी । भला टार्जन को क्या मालूम कि इनमें से एक उनके पिता की ठठरी है और दूसरी उनके माता की ! पालने में पड़ा हड्डियों का समूह जिसे लार्ड ग्रेस्टोक ने बड़ी सतर्कता से अपने स्थान पर सजाया था टार्जन के लिये कुछ भी मतलब नहीं रखता था । टार्जन को भला क्या मालूम था कि निकट भविष्य में ही पालने में पड़ी यह छोटी खोपड़ी उनको एक नामी खानदान का एक मात्र उत्तराधिकारी साबित करने का कारण होगी । टार्जन के लिये ये सभी केवल हड्डियाँ ही थीं और बेकार थीं अस्तु आज तक उन्होंने कभी भी उनकी ओर ध्यान तक नहीं दिया था ।

पर आज टार्जन कुछ चंचल थे । कुर्सी पर बैठे वे पुस्तकों के पन्ने

उलट रहे थे पर इन्हें वे कितनी ही बार देख चुके थे अस्तु इस काम में उनका मन न लगा और किताब उछाल कर उन्होंने दूर फेंक दी। अब आलमारी में पड़ी एक चमड़े की थैली उन्होंने बाहर निकाली। इस थैली में पड़े कितने ही प्रकार के सिकों को निकाल निकाल कर टेबुल पर फैलाना और उन्हें तरह तरह के नक्शों का रूप देना उनका एक अभ्यस्त कार्य हो गया था। आज भी उन्होंने ऐसा ही किया। संयोग से उसमें का एक सिका डुलक कर पलंग के नीचे जा पड़ा। टार्जन ने घुटनों के बल जमीन पर बैठ कर पलंग के नीचे भाँका। आज तक इन्हें पलंग के नीचे भाँकने का कोई भी मौका नहीं पड़ा था। आज उसके नीचे भाँकने पर वह सिका तो उन्हें मिल ही गया पर साथ ही उनकी निगाह एक छोटे से संदूक पर भी पड़ी जिसका ढकना खुला हुआ था। टार्जन ने फौरन ही इस संदूक को बाहर खींच लिया। इसमें किसी धातु की बनी छोटी छोटी कितनी ही नालियाँ पड़ी थीं जिनका एक सिरा तो नोकीला था दूसरा चपटा, पर प्रायः सभी पर हरे रंग की काई सी जमी हुई थी।

टार्जन इन्हें खुरच खुरच कर साफ करने लगे। अब वे टुकड़े पहले से कहीं अधिक चमकीले निकल आये। कोने की ओर से कुछ दूर तक उनका रंग भूरा दिखाई दिया। उनके बगल में चमड़े का एक झोला लटक रहा था जिसे उन्होंने एक हवशी को मार कर अपने कब्जे में किया था। इस झोले में उन्होंने मुट्ठी भर वे छोटे छोटे खिलौने रख लिये और तब वह बक्स ज्यों का त्यों पलंग के नीचे रख दिया। आगे दिल बहलाने योग्य वहाँ कोई दूसरी वस्तु अब उन्हें दिखाई नहीं दी अस्तु वे दर्वाजे की सिटकिनी बन्द करते हुए केबिन के बाहर निकल आए और सीधे एप बन्दरों की मंडली की ओर खाना हुए।

जिस समय वे उस मंडली के समीप पहुँचे उन्हें एप बन्दरों बन्दरियाओं तथा बालुओं की किलकिलाहट गुर्राहट तथा क्रीगा क्रीगा की आवाज सुनाई

दी और वे समझ गये कि अवश्य उनकी मंडली में किसी तरह की गड़बड़ी मची है। वे तेजी के साथ उस ओर बढ़े।

जिस समय टार्जन अपने केबिन का आनन्द ले रहे थे टीका का पति टाग अपनी मंडली से लगभग एक मील उत्तर भोजन की तलाश में इधर उधर घूम रहा था। जब उसका पेट भली भाँति भर गया तो वह वापस लौटा परन्तु लौटने पर उसे टीका अथवा गाजन की सूखत आस पास में कहीं भी दिखाई नहीं दी। उसने कितने ही एप बन्दरों से उनके बारे में पूछा परन्तु किसी ने भी उसे सन्तोषजनक उत्तर न दिया अस्तु वह उनकी खोज में खाना हुआ।

रास्ते में मिलने वाले सभी एप बन्दरों से पूछताछ करता वह सीधे आगे बढ़ा जा रहा था परन्तु उन दोनों का पता उसे किसी ओर भी नहीं लग रहा था। एक पेड़ से दूसरे पर उछलता तथा छलांगें मारता वह बहुत दूर तक चला गया। उसके सामने इस समय एक छोटा सा मैदान था। पेड़ की एक डाल पर बैठ कर उसने ध्यान से उस मैदान की ओर देखा। सहसा उसकी निगाह एक लकड़बग्घे पर पड़ी जो पेड़ के नीचे पड़ी किसी चीज को सूँघ रहा था। ध्यान से देखने पर टाग उस चीज को पहिचान गया। वह उसके वच्चे गाजन की निश्चेष्ट देह थी।

बड़े जोर से चारु कर एक ही छलांग में वह उस लकड़बग्घे की पीठ पर जा बैठा। उस खूँखार जानवर ने अपने को उसकी पकड़ से स्वतंत्र करने के लिये कितनी ही उछल कूद मचाई परन्तु टाग के नोकरीले दाँत उसकी गर्दन में जा धँसे और उसने उसे झुकभोर कर उसका निर्जीव देह एक ओर फेंक दिया।

अब टाग ने चिह्ना कर एप बन्दरों को आवाज दी परन्तु आस पास इस समय था ही कौन जो उसकी आवाज सुना। उसने गाजन की देह को सूँघा। करुणा से उसका कले। फटने लगा। जंगली जानवर होने पर भी उसके हृदय में पितृ स्नेह की निर्मल धारा बह रही थी। गाजन

चाहे कैसा भी बदसूरत क्यों न हो परन्तु टीका तथा टाग की निगाहों में वह संसार की सभी चीजों से बढ़ कर सुन्दर था।

कुछ क्षण तक टाग अपने प्यारे बच्चे के शरीर को संघता तथा उसे अपनी जवान से चाटता रहा। उसके गले से कुछ थोड़े से करुणाव्यंजक शब्द निकले और तब यकायक उसके जंगली हृदय में बदला लेने की इच्छा प्रज्वलित हो उठी। गाजन के निश्चेष्ट शरीर पर से वह उठ खड़ा हुआ और उसके गले से बड़ी ही तेज “क्रीगा क्रीगा” की ध्वनि निकली।

उसकी आवाज का उत्तर देते हुए कितने ही एप बन्दर जोर जोर से चिल्ला चिल्ला कर उसी ओर दौड़ते नजर आने लगे। अपने केबिन से लौटते समय टार्जन ने ये ही आवाजें सुनी थीं और इन्हें सुनते ही वे भी तेजी के साथ आगे की ओर दौड़ पड़े थे।

जिस समय टार्जन एप बन्दरों की मंडली के पास पहुँचे उन्होंने कितने ही एप बन्दरों को टाग के चारों ओर घेरा बाँधे खड़े देखा। उनके बीच में कूद कर टार्जन सीधे टाग की ओर बढ़े। टाग अभी तक जोर जोर से चिल्ला रहा था परन्तु टार्जन पर निगाह पड़ते ही उसने गाजन का निश्चेष्ट शरीर जमीन पर से उठा लिया और टार्जन की ओर बढ़ाया।

जैसे ही टार्जन की निगाह गाजन के निश्चेष्ट शरीर पर पड़ी उनके गले से एक हलकी गुर्राहट निकली क्योंकि वे भी उसे हृदय से प्यार करते थे। उन्होंने पूछा, “यह किसका काम है?”

टाग ने उत्तर दिया, “मैं नहीं जानता! मैंने इसे इसी स्थान पर पड़े तथा उस लकड़बग्घे को इसके पास में खड़े इसे सूँघते हुए पाया। परन्तु यह काम लकड़बग्घे का नहीं है क्योंकि इसके शरीर पर दाँतों का कहीं निशान नहीं है।”

टार्जन टाग के नजदीक चले आये और अपना कान उन्होंने गाजन की छाती के साथ लगाया। उसका छोटा कलेजा धीरे धीरे धड़क रहा

था। वे बोल उठे, “घबड़ाओ मत, यह मरा नहीं है और संभवतः मरेगा भी नहीं।”

इतना कह कर टार्जन उस मंडली से बाहर निकल आये और उस स्थान के आस पास की जमीन ध्यान से देखने लगे। थोड़ी ही देर की जाँच के बाद उन्होंने एक स्थान की जमीन को कुछ देर तक सूँघा और इसके बाद एक विचित्र प्रकार की आवाज गले से निकालते हुए वे उछल कर खड़े हो गये। टाग तथा अन्य एप बन्दर उसकी ओर बढ़े क्योंकि उनके गले से निकली हुई आवाज ने सबको बता दिया कि उन्हें शत्रु का पता चल गया है।

टार्जन गंभीर आवाज में बोले, “एक दूसरी जाति का एप बन्दर यहाँ आया था, उसी ने गाजन की यह दशा की है और वही टीका को यहाँ से उठा ले गया है।”

टाग तथा अन्य एप बन्दर क्रोध से बेतरह चिल्लाने तथा उछलने वूदने लगे परन्तु वे कर ही क्या सकते थे? यदि अन्य जाति का वह एप बन्दर इस समय इन लोगों के सामने होता तो कदाचित् वे उसकी धजियों तक उड़ा डालते परन्तु उसका पीछा करने की बात उनके ध्यान तक में न आई।

टार्जन पुनः बोले, “यदि मेरी शिक्षा के अनुसार तीन एप बन्दर सावधानी से पहरा देते होते तो ऐसी घटना कदापि न घटती! जब तक तुममें से तीन एप बन्दर शत्रुओं का ध्यान रखते हुए पहरे पर न रहेंगे बराबर ही ऐसी घटनाएँ घटती रहेंगी। जंगल शत्रुओं से भरा पड़ा है और इस पर भी तुम लोग अपनी मादाओं तथा बच्चों को स्वतंत्र रूप से इधर उधर घूमने की इजाजत दे देते हो। टार्जन अब टीका का पता लगाने जाता है, वह उसे जहाँ से भी हो ढूँढ़ लावेगा।”

अब जा कर एप बन्दरों को भी शत्रु का पीछा करने का ख्याल आया और सभी उनका साथ देने को तैयार हो गये परन्तु टार्जन बोले,

“नहीं, तुम सब के जाने की कोई जरूरत नहीं है। बच्चों तथा मादाओं की रक्षा के लिये ज्यादा लोगों का यहीं ठहरना आवश्यक है नहीं तो कुछ भी काम न बनेगा !”

एप बन्दर अपना अपना सिर खुजलाने लगे। टार्जन की इस सलाह का मतलब अब धीरे धीरे उनकी समझ में आ रहा था। टार्जन इस बात को बखूबी समझते थे कि एक शत्रु का सामना करने के लिये इतने एप बन्दरों के जाने की आवश्यकता नहीं। दो तेज एप बन्दर बहुत शीघ्र उनका पता लगा सकते और दुष्टता करनेवाले को सजा दे सकते हैं।

अब तक यदि कभी एप बन्दरों की मादाएँ लापता हो जाती थीं तो वे इन उड़ा ले जाने वालों का पता लगाने अथवा उन्हें सजा देने का विचार तक भी नहीं करते थे। यदि सिंह चीता तथा किसी अन्य जाति का एप बन्दर उनकी किसी मादा को उठा ले जाता था तो वे एक बार आपस ही में थोड़ा चिल्लपों मचा कर संतुष्ट हो जाते थे और शीघ्र ही उसका ख्याल तक भुला देते थे। जिसकी मादा होती थी वह या तो किसी दूसरी मादा को अपने लिये चुन लेता था अथवा दूसरी जाति के एप बन्दरों में से किसी मादा को अपने लिये पकड़ लाता था, और अब तक टार्जन ने भी इस बात की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया था क्योंकि इस विषय में उनकी कोई विशेष दिलचस्पी नहीं थी परन्तु इस बार सवाल टीका का था और टीका पर उन्होंने सर्व प्रथम प्रेम की निगाह डाली थी। उनके हृदय में टीका के बालू का ठीक वही स्थान था जैसा कि स्वयं अपने बच्चे का होता। आज से पहले भी एक बार बदला लेने की इच्छा उनके हृदय में प्रबल वेग से उठी थी। यह उस समय की बात है जब माँगा के लड़के कुलोंगा ने उनकी माता काला की हत्या की थी और उस समय टार्जन ने अकेले जा कर उससे अपनी माता की हत्या का बदला लिया था। ठीक उसी प्रकार बदला लेने की इच्छा आज पुनः उनके हृदय में जागृत हो उठी।

टाग की ओर घूम कर वे बोले, “गाजन को ममगा के पास छोड़ दो, वह बूढ़ी है और हम दोनों के लौट आने तक भली भाँति उसकी रक्षा कर सकेगी।”

इतना कह कर टार्जन ममगा की ओर घूमे और बोले, “देखो, याद रखना, यदि हम लोगों के पीछे इस बच्चे के ऊपर किसी प्रकार की भी आफत आई तो मैं तुम्हें जिन्दा नहीं छोड़ूँगा।”

टाग ने टार्जन से पूछा, “हम लोग यहाँ से कहाँ जायेंगे?”

टार्जन ने उत्तर दिया, “टीका का पता लगाने बाद हम उस एप बन्दर को जान से मारेंगे जो उसे चुरा ले गया है।”

अब टार्जन उस अजनबी एप बन्दर की गंध का पता लगाते हुए एक ओर खाना हुए और उनके ठोंक पीछे अपना सिर नीचे लटकाये टाग भी चला। वे इस प्रकार शान्ति के साथ आगे बढ़ रहे थे मानों जंगल की दो छायाएँ आगे की ओर बढ़ रही हों। टार्जन के लिये उस अजनबी या एप बन्दर के आगे बढ़ने का रास्ता इस प्रकार स्पष्ट था मानों वे किसी सड़क पर पैरों का निशान देखते हुए आगे बढ़ रहे हों। गंध अभी ताजी थी, फिर इस समय वे अपनी जाति के एप बन्दरों की कड़ी गंध से दूर भी निकल आये थे अस्तु अब वह नई गंध और भी स्पष्ट रूप से उनकी नाक में लग रही थी। उस एप बन्दर के साथ ही साथ टीका की गंध भी इस बात को बता रही थी कि वे दोनों उसी ओर गये हैं।

वे लोग तेजी के साथ आगे की ओर बढ़े जा रहे थे कि सहसा घने बादलों ने आसमान को व्याप्त कर लिया। टार्जन ने और भी जल्दी जल्दी अपने कदम बढ़ाये। कभी जमीन तथा कभी पेड़ों की शाखाओं पर उछलते कूदते ये लोग तेजी के साथ आगे की ओर बढ़े जा रहे थे और इस बात को भलीभाँति समझ रहे थे कि उनका शत्रु क्रमशः समीप होता जा रहा है क्योंकि इन दोनों को अपने शत्रु की भाँति किसी तरह का बोझ उठा कर आगे बढ़ना नहीं पड़ रहा था।

थोड़ी ही दूर और आगे जाने बाद टार्जन को मालूम हो गया कि शत्रु अब अधिक दूरी पर नहीं है क्योंकि उसकी गंध अब तेज हो गई थी पर इसी समय सहसा बड़े जोर से बिजली चमकने लगी और उसकी कड़कड़ाहट ने तमाम जंगल को प्रतिध्वनित कर दिया। इसके बाद ही मूसलधार वर्षा होने लगी। क्षण भर में ही समूचा जंगल पानी से भरा नजर आने लगा।

और इस पानी ने वही किया जिसका टार्जन को भय था। शत्रु की गंध को उसने धो कर एकदम लापता कर दिया। आधे घंटे तक बराबर वर्षा होती रही। जंगल की इस समय विचित्र शोभा हो रही थी परन्तु टार्जन का ध्यान इस शोभा की ओर न था। केवल यही ख्याल इस समय उनके माथे में चक्कर काट रहा था कि पानी ने बरस कर टीका तथा उसे उठा ले जाने वाले की गंध को एकदम से लापता कर दिया।

जमीन ही की तरह पेड़ों की शाखाओं से भी कभी कभी सूक्ष्म गंध का पता चल जाया करता है परन्तु इस प्रकार पता लगाना जरा मुश्किल काम है क्योंकि वहाँ भागने वाले को केवल अगल बगल ही नहीं बल्कि ऊपर नीचे जाने की भी सुविधा रहती है किन्तु पानी बन्द होने बाद इसी प्रकार से उस एप की गन्ध का पता लगाने के लिये टार्जन आगे बढ़े। जिस समय वे जंगल के एक बड़े वृक्ष के पास पहुँचे टार्जन यकायक रुक गये और उस पेड़ की हर एक शाखा को सूँघ सूँघ कर देखने लगे। बड़ी मुश्किल से एक पत्ते के एक कोने पर उन्हें अजनबी बन्दर के शरीर की गंध मालूम हुई जो बहुत संभव है उसके उस पेड़ के नीचे से गुजरते समय उसके शरीर से छू गई हो।

अब पुनः ये लोग आगे की ओर बढ़ने लगे परन्तु अब उनकी गति पहले से बहुत ही धीमी हो गई थी और कभी कभी तो एक दम से रुक जाती थी जब उन्हें गन्ध का कहीं भी पता न लगता था। किन्तु इस समय केवल गंध के ही भरोसे टार्जन अपना काम नहीं कर रहे थे। उन

की तीक्ष्ण दृष्टि में पेड़ों की हर एक डालें अपना अपना किस्सा कह रही थीं। उस एप बन्दर का जहाँ कहीं भी हाथ अथवा पैर पड़ा था उस जगह की पत्तियों की टूटन मुड़ाव तथा झुकाव भी इस बात को टार्जन की निगाह में स्पष्ट रूप से बता रहे थे कि शत्रु किस राह से गया है।

अब कहीं कहीं उन्हें जमीन पर उस एप बन्दर के पिछले दोनों पैरों के बल चलने के चिह्न भी दिखाई देने लगे और इनसे उन्हें बहुत सहायता मिली। प्रायः सभी जाति के एप बन्दर मनुष्यों ही की भाँति अपने दोनों पैरों के बल आसानी के साथ चल सकते हैं।

टार्जन को कुछ फासले तक इसी प्रकार उसके दोनों पैरों का निशान मिलता रहा और इसके बाद कुछ दूर तक दो पैर तथा एक हाथ का निशान भी जमीन पर दिखाई दिया परन्तु हाथ का यह निशान इस ढंग का था मानों वह जमीन पर बहुत जोर दे कर रखा गया हो। टार्जन समझ गये कि उसके दूसरे हाथ में अवश्य कोई भारी चीज थी जिसे लिये हुए वह आगे बढ़ा है। अब कुछ अधिक उत्साह के साथ उसके आगे बढ़ने की राह का पता लगाते लगाते ये दोनों बढ़ने लगे।

उनके ऊपर की ओर छोटे छोटे बन्दर किलकारियाँ मारते इधर से उधर आ जा रहे थे और सुन्दर रंग बिरंगी चिड़ियाँ चहचहाती हुई चारों ओर उड़ रही थीं परन्तु टार्जन का ध्यान इस समय केवल अपने ही काम की ओर था, बाहरी दुनिया से उनका किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध न रह गया था।

और इस बीच में टीका का क्या हाल था ! क्या उसने अपने को एकदम निस्सहाय समझ उस विशाल एप बन्दर के हाथ आत्मसमर्पण कर दिया था ? उसके शरीर पर एक निगाह डालते ही इस बात का उत्तर स्पष्ट मिल सकता था। उसके शरीर पर जगह ब जगह छोटे बड़े घाव लगे दिखाई दे रहे थे जिसमें से निकलने वाले रक्त ने उसके शरीर को रक्तंजित कर दिया था। और दृग भी बचा हुआ न था। अपने बचाव

का उद्योग करते समय टीका के नखों और दातों का जो प्रयोग दूग पर हुआ था उसने उसके शरीर को भी क्षत विक्षत कर दिया था किन्तु इतना होने पर भी उसने टीका को अपने पंजे से बाहर निकलने नहीं दिया था ।

घने जंगल को पार करते हुए वे लोग उस ओर बढ़े जा रहे थे जहाँ दूग के अन्य साथी रहा करते थे । दूग की आशा थी कि उसका राजा उसके अपराधों को अब तक भूल गया होगा और यदि न भी भूला हो तो सिवाय अपने को उसकी दया पर छोड़ने के उसके लिये दूसरा उपाय भी क्या था ? यदि उसका और कुछ बस न चला तो उसने इस उड़ा कर लाई हुई मादा एप को अपने राजा के सपुर्द तक करने का मिश्रचय कर लिया था क्योंकि संभव है कि इससे प्रसन्न हो कर वह उसके अपराधों को क्षमा कर दे ।

अन्त में वे लोग एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जहाँ दूर दूग की जाति के दो अन्य एप बन्दर भोजन की तलाश में इधर से उधर घूमते दिखाई पड़ रहे थे । इन लोगों के आने का शब्द सुन उन दोनों ने अपना सिर उठा कर इनकी ओर देखा । उनके दाँत बाहर निकल आये और तेज गुराहट गले से निकली । परन्तु दूग ने उन दोनों को दूर से ही पहिचान लिया और वह बोला, “मैं हूँ दूग ! दूग एक नई मादा को लिये अपने साथियों के पास आ रहा है ।”

वे दोनों एप बन्दर दूग के समीप आने की राह देखने लगे । खून से लथपथ रहने पर भी उन्होंने टीका की सुन्दरता को देख लिया था । उन्हें दूग की किस्मत पर रश्क हुआ । परन्तु अफसोस यही था कि वे टीका के स्वभाव से बिल्कुल ही अपरिचित थे ।

अपने अपने स्थान पर बैठे वे लोग इन दोनों की ओर देख ही रहे थे कि एक छोटा सा बन्दर पेड़ों पर उछलता कूदता उन दोनों के पास आ पहुँचा । वह इस समय बढ़े ही आवेश में था । इनके ठीक ऊपर

वाली डाल पर पहुँचते ही वह रुक गया और बोला, “दो अजनबी बन्दर इसी ओर चले आ रहे हैं ! उनमें से एक मंगाना के शरीर पर तो बिल्कुल ही बाल नहीं हैं पर दूसरा बड़ा ही भयानक एप है जिसके शरीर पर बड़े बड़े बाल हैं । वे दोनों दूग का पीछा करते चले आ रहे हैं यह बात मैंने अपनी आँखों से देखी है ।”

चारों एप बन्दरों ने घूम कर पीछे की ओर देखा और तब एक मिनट तक एक दूसरे की ओर देखते रहे, इसके बाद उनमें से जो सब से कहावर था वह बोला, “हम लोग मैदान के बगल वाली झाड़ियों में छिप कर उनके आने की राह देखेंगे !”

इतना कह कर वह पास की झाड़ी की ओर मुड़ा और बाकी ने उसका साथ दिया । वह बन्दर इस समय बड़े आनन्द से पेड़ पर नाच रहा था । एप बन्दरों के दो दलों में लड़ाई करा देना उसका मुख्य काम था और जब उनमें खून खराबी होने लगता था तो वह मजे में पेड़ों पर नाच नाच कर किलकारियाँ भरता था ।

तीनों एप बन्दरों ने अपने को एक घनी झाड़ी में छिपा लिया । इस झाड़ी के बगल से हो कर ही दूग का पीछा करने वालों के जाने का रास्ता था । इस समय टीका का समूचा शरीर आवेश से काँप रहा था । मानू बन्दर के मुँह से बिना रोंएँ वाले मंगाना का जिक्र सुनते ही वह समझ गई कि वह टार्जन के सिवाय और कोई भी नहीं हो सकता और उस दूसरे के बारे में भी वह समझ गई थी कि वह टाग के सिवाय दूसरा कोई नहीं होगा । उसे स्वप्न में भी इस बात का गुमान न था कि उसकी रक्षा के लिये ये लोग इतना कष्ट उठावेंगे । अब तक वह इसी विचार में थी कि वह चुपचाप रहेगी और मौका मिलते ही करचक जाति के एप बन्दरों में वापस चली जायगी यद्यपि यह काम उसे एक प्रकार से असम्भव ही मालूम पड़ रहा था ।

जैसे ही टार्जन तथा टाग उस स्थान पर पहुँचे जहाँ दूग की अपने मित्रों से भेंट हुई थी उन्हें इन दूसरे एप बन्दरों की इतनी तेज गंध आई

कि उन्हें मालूम हो गया कि वे लोग अब अधिक दूरी पर नहीं हैं अस्तु अब वे लोग बड़ी ही सावधानी से आगे बढ़ने लगे क्योंकि टार्जन का इरादा था कि चुपचाप शत्रुओं के पीछे की ओर पहुँच कर उन पर यकायक हमला कर दिया जाय। उन्हें इस बात की भला क्या खबर थी कि मानू बन्दर ने उनके आने की खबर पहले ही से शत्रुओं को दे दी है और वे लोग उनसे युद्ध करने के लिये तैयार बैठे हैं।

जैसे ही ये लोग उस झाड़ी के समीप पहुँचे जिसके भीतर वे एप बन्दर छिपे हुए थे टीका बड़े ही जोर से “क्रीगा क्रीगा” कह कर चिल्ला उठी। दूग तथा उसके साथियों के छोटे दिमाग में यह बात आई भी न थी कि टीका इस प्रकार उन लोगों का बना बनाया खेल चौपट कर देगी अस्तु उसे ऐसा करते देख वे लोग क्रोध से उबल उठे और टीका के ऊपर जोर से हमला करने के बाद टार्जन तथा टाग से मुकाबला करने के लिये दौड़े। मानू बन्दर इस समय पेड़ के ऊपर जोर जोर से नाच कूद रहा था और उसका प्रसन्न होना भी वाजिव ही था क्योंकि थोड़ी ही देर में उस स्थान पर ऐसा घोर युद्ध आरम्भ हुआ और गुराहट तथा चिल्लाहट से वह स्थान ऐसा गूँज उठा कि जंगल में दूर दूर के जीवों के कानों तक वे शब्द अवश्य पड़े होंगे। पाँच मिनट के भीतर ही सब के सभी खून से लथपथ दिखाई देने लगे।

टाग इस समय दूग तथा उसके साथी से अकेला युद्ध कर रहा था और टार्जन तीसरे एप बन्दर से भिड़े हुए थे। यह एप बड़ा ही लम्बा चौड़ा तथा एक मजबूत मैंसे के समान बली था। ऐसे बलवान एप बन्दर से सामना करने का टार्जन की आज से पहले कभी भी मौका नहीं पड़ा था। उनके तमाम शरीर पर पसीने की बड़ी बड़ी बूँदें चुहचुहा आईं। बार बार वे उस एप बन्दर की पकड़ से अपने को छुड़ा छुड़ा कर बाहर निकलने लगे और हर बार अपने कमर में लगे शिकारी छुरे को म्यान से निकालने का प्रयत्न करते रहे।

अन्त में वे सफल भी हो गये। उनके एक हाथ ने हवा में उछल कर उस एप बन्दर का गला पकड़ लिया और दूसरा जिसमें शिकारी छुरा था तीन बार ऊपर उठा और तीनों ही बार शत्रु के कलेजे में जा घुसा। उनका विपक्षी एक बार तो जोर से चिल्लाया और तब निश्चेष्ट हो कर जमीन पर गिर पड़ा पर टार्जन इस समय रुके नहीं बल्कि फौरन ही उछल कर टाग की सहायता करने के लिये उसके बगल में जा पहुँचे। उन्हें आता देख दूग फौरन उनकी ओर झपटा और इस झमेले में उनके हाथ वाला छुरा छूट कर जमीन पर गिर पड़ा। अब इन दोनों में बराबरी का युद्ध था। दोनों ओर के दो दो योद्धा आपस में एक दूसरे से गुथे हुए थे। टीका इस समय झाड़ी के बाहर निकल आई थी और एक ओर खड़ी हो कर उत्सुकता के साथ इन लोगों का युद्ध देख रही थी। उसने टार्जन का छुरा जमीन पर गिरा देखा और झपटकर उसे उठा लिया। वह उस छुरे के गुणों से भली-भाँति परिचित थी और जानती थी कि उसकी एक ही चोट से टार्जन जंगल के भयानक से भयानक जीवों को भी मार गिराता है।

टार्जन के बगल में लटकने वाला बटुआ भी उसने जमीन पर गिरते देखा और दौड़ कर उसे भी उठा लिया। ये चारो बहादुर इस समय खून से लथपथ हो रहे थे। टार्जन तथा टाग अपने विपक्षियों को ढकेलते हुए पीछे की झाड़ियों तक पहुँच गये थे। टीका भी उन्हीं लोगों की ओर बढ़ी। उसके शरीर पर भी इस समय तक काफी जख्म लग चुके थे फिर भी वह मौका पड़ने पर स्वयं भी युद्ध करने के लिये तैयार थी।

युद्ध करने वालों के गले से निकली आवाजें सुदूरस्थित पहाड़ियों से टकरा के प्रतिध्वनित हो रही थीं। टार्जन के विपक्षी के मुँह से अब तक बीस पचीस बार “क्रीगा क्रीगा” निकल चुका था और अब पीछे की ओर से उसकी इन आवाजों का वह उत्तर आया जिसकी कि अब तक वह राह देख रहा था। दूग की जाति के बीस पचीस मोटे ताजे लड़ाके

बंदर अपने साथियों की सहायता करने के लिये तेजी के साथ उसकी ओर आ रहे थे ।

सब से पहले टीका की निगाह उन पर पड़ी और उसने चिल्ला कर टार्जन तथा टाग को सावधान किया पर इसके बाद ही वह इन लड़ाकों के पास से हट कर मैदान के दूसरी ओर दौड़ी । उसके मन में बेतरह भय समाया हुआ था ।

एप बन्दरों का वह झुंड शीघ्र ही इन लोगों के समीप आ पहुँचा । निश्चित था कि थोड़ी ही देर बाद टार्जन तथा टाग के शरीर की धज्जियाँ धज्जियाँ उड़ जायँगी । टीका ने भी अपने रक्तकों के इस भयानक खतरे को देख लिया और वीर औरतों की भाँति आत्मबलिदान का भाव उसके हृदय में उत्पन्न हो गया । परन्तु अपने सहायकों की किस प्रकार रक्षा की जाय यह बात उसकी समझ में बिल्कुल ही नहीं आ रही थी । सहसा टार्जन की थैली में पड़ी कुछ कड़ी चीजों पर उसका हाथ जा पड़ा । वह क्या कर रही है इसका उसे ज्ञान न था । कल के पुर्जे की भाँति उसका हाथ थैली के भीतर जा पड़ा और उसमें रखे धातु के टुकड़े मुट्ठी में भर कर उसने शीघ्रता से विपक्षियों की ओर फेंक दिये ।

परन्तु उसके इस काम का जो नतीजा हुआ उसने टीका तथा एप बन्दरों दोनों ही को आश्चर्य में डाल दिया । एक बड़ा भारी धड़ाका हुआ जिससे सभी लड़ाकों के कान बहरे हो गये और एक विचित्र प्रकार के काले तथा कड़ुएँ धूँ से वह स्थान भर गया । भय से घबड़ा कर टार्जन के सभी विपक्षी तेजी के साथ पीछे की ओर भागे और वे दोनों जमीन से उठ कर खड़े हो गये । यदि उन दोनों ने टीका को छुरा तथा भोला लिये अपने सामने खड़े न देखा होता तो कदाचित वे भी भाग खड़े होते ।

टार्जन ने उससे पूछा, “यह कैसी आवाज थी ?”

भोले में पड़ी वस्तु की ओर उँगली से इशारा करती हुई टीका बोली, मैंने इसे उन एप बन्दरों की ओर फेंक दिया था ।”

टार्जन अपने भोले की ओर देख सिर खुजलाने लगे। टाग ने उनसे पूछा, “यह क्या चीज है?”

टार्जन बोले, “मालूम नहीं, वे मुझे ऐसे ही मिल गये थे।”

भला टार्जन को क्या मालूम कि वास्तव में उनके पूज्य पिता ही इस समय उनकी प्राणरक्षा के कारण हुए थे।

जंगल का मजाक

नित्य एक ही प्रकार के जंगलों में घूमते फिरते भी टार्जन की तबीयत घबराती नहीं थी। वे प्रायः नित्य ही कोई न कोई ऐसा काम कर बैठते थे जिससे मृत्यु में और उनमें अधिक फासला नहीं रह जाता था और नित्य ही कुछ न कुछ जीवों को हत्या के घाट भी उतार दिया करते थे परन्तु उनकी हत्या करने के दंग में अवश्य हर बार कुछ न कुछ नवीनता रहा करती थी। यही उनका दिलबहलाव था और इसी में उन्हें आनन्द मिलता था।

टार्जन अब पूर्ण युवा थे और उनका प्रत्येक अंग बड़ा ही सुन्दर तथा सुडौल था परन्तु उनके स्वभाव से लड़कपन अभी तक गया नहीं था और उनकी यह बात उनके लड़कपन के साथियों को बहुत बुरी मालूम होती थी क्योंकि उम्र के साथ ही साथ उनमें गंभीरता बढ़ गई थी और टार्जन में अभी तक लड़कपन होने के कारण वे उनसे बराबर छेड़खानी किया करते थे।

परन्तु इन एप बन्दरों के दिमाग की बनावट अभी तक उनकी समझ में नहीं आई थी। अभी कुछ दिन पहले अपने साथी टाग के पैर में घास का रस्सा डाल उन्होंने उसे घास पर अच्छी तरह घसीटा था और वह कुछ भी नाराज नहीं हुआ। परन्तु आज जैसे ही उन्होंने टाग के पीछे

पहुँच कर उसे धक्का दिया वह बेतरह क्रुद्ध हो उठा और अपने दाँत निकाले गुराँता हुआ उन पर दूट पड़ा ।

टार्जन उछल कर उसके सामने से हट गये और फौरन ही दाग का क्रोध शान्त भी हो गया परन्तु टार्जन समझ गये कि अब उनके साथियों को उनका मजाक पसन्द नहीं आ सकता । इसमें से उन्हें बड़ा ही दुःख हुआ और अपने दिलबहलाव का कोई दूसरा रास्ता निकालने का उन्होंने निश्चय कर लिया । उनके बालों की एक मोटी लट बार बार उनकी आँखों के सामने आ गिरा करती थी । फौरन ही उन्होंने अपने तरकश के सब तीर बाहर निकाल डाले और उसे उलट कर भाड़ने लगे । अन्य खेलवाड़ की वस्तुओं के साथ ही साथ एक बहुत ही चिकना पत्थर का टुकड़ा तथा एक सफेद रंग की सीपी भी उसमें रक्खी हुई थी । उन्होंने उसमें से वे दोनों चीजें चुन कर उठा लीं और एक किनारे बैठ कर उस सीपी का किनारा पत्थर पर उसी प्रकार घिसने लगे जैसे एक हजाम पत्थर पर अपना उस्तरा तेज करता है । वर्षों के अनुभव के बाद उन्हें औजार तेज करने का यह ढंग मालूम हुआ था । बीच बीच में वह उस सीपी की धार को अपनी उँगली पर आजमाते भी जाते थे । जब सीपी उनके मन मुताबिक तैयार हो गई तो उन्होंने अपने बालों की एक लट को बायें हाथ से पकड़ लिया और दूसरे हाथ से उस सीपी की धार उस पर फेरी । फौरन ही बालों की वह लट कट कर उनके हाथ में आ गई । इसी प्रकार एक एक कर के उन्होंने अपने सामने की सभी लटें काट काट कर छोटी कर लीं । इससे उनके बाल बदसूरत तो अवश्य मालूम पड़ने लगे परन्तु आराम बहुत मिला । उन युद्धों में जिनमें मृत्यु और जीवन में अधिक अन्तर नहीं रह जाता था इन बालों की लटों का आँख के आगे आ जाना भारी अन्तर पैदा कर सकता था और टार्जन के लिये सुरक्षा सुन्दरता की अपेक्षा कहीं अधिक मूल्यवान वस्तु थी ।

अपनी इच्छानुसार बाल काटने बाद एप बन्दरों की मण्डली में अपने

दिलबहलाव के लिये किसी प्रकार का भी मसाला न पा टार्जन पेड़ों ही पेड़ों पर होते हुए अपने केबिन की ओर खाना हुए परन्तु रास्ते में ही उत्तर की ओर से आती हुई हवशियों की कड़ी गंध का एक भोंका उनकी नाक में आया। वे रुक गये। उत्सुकता टार्जन को सदा इन गोमंगानियों की कार्यप्रणाली ध्यान से देखने के लिये बाध्य किया करती थी। उनके प्रत्येक कामों में उन्हें किसी न किसी प्रकार की नवीनता दिखाई देती थी और इन नवीनताओं को देख देख कर वे कितने ही तरह की शिद्दाएँ भी ग्रहण किया करते थे। कई बार इन गोमंगानियों के साथ रहने की इच्छा भी उनके मन में उत्पन्न हुई परन्तु जैसे ही अपनी माता काला की मृत्यु का चित्र उनकी आँखों के सामने आता था अपने इन चिर-शत्रुओं की ओर से उनके चित्त में घृणा का भाव उत्पन्न हो जाया करता था। परन्तु उनके प्रत्येक कामों पर निगाह रखने का उन्हें अभ्यास सा हो गया था और उससे भी अधिक आनन्द उन्हें उन हवशियों को तंग करने में आता था। उन्हें परेशान करने के लिये वे नित्य एक न एक नवीन ढंग का आयोजन किया करते थे।

टार्जन को मालूम हो गया कि हवशी लोग इस समय बहुत दूर नहीं हैं और अधिक संख्या में भी हैं अस्तु वे सावधानी के साथ उनकी ओर बढ़ने लगे। शीघ्र ही उनकी निगाह उन पर जा पड़ी। वे इस समय न्यूमा सिंह को पकड़ने के लिये एक पींजरा जंगली जानवरों के चलने की राह के बीचोबीच में बैठा रहे थे। साथ ही उसमें वे बकरी के एक बच्चे को इस ढंग से बाँध रहे थे कि उस पर हाथ पड़ते ही पींजरे का फाटक नीचे गिर कर बन्द हो जाय। इन जंगली जानवरों को इस प्रकार पकड़ कर निर्दयता के साथ उनकी हत्या करने में इन जंगलियों को बड़ा ही आनन्द मिलता था।

अपना काम समाप्त कर जंगली लोग वहाँ से अपने गाँव की ओर खाना हो गये पर टार्जन समझ गये कि कल सुबह वे लोग फिर लौटेंगे।

उन्होंने उन जाते हुए लोगों पर एक तीखी निगाह डाली, उनके होठों पर इस सयय हलकी मुस्कराहट थी ।

उनके मन में एक नवीन विचार उठ रहा था । एक बार उन्होंने उस भय से काँपते हुए बकरी के बच्चे की ओर देखा जिसे मानों अपने भविष्य की सूचना पहले ही से मिल गई थी । वे फौरन जमीन पर कूद पड़े और पींजरे के भीतर जा घुसे । बिना उस रस्सी को छूए ही, जिसका सिलसिला पींजरे के दर्वाजे के साथ था, उन्होंने बकरी के बच्चे को अपने स्थान से खोल लिया और बगल में दाब कर पींजरे के बाहर निकल आये ।

अपने शिकारी छुरे से उन्होंने उस निरीह जानवर की यातना समाप्त कर दी और उसकी रक्त रंजित देह घसीटते हुए पानी के उस झरने के किनारे ले गये जो उस स्थान से लगभग आध मील के फासले पर था । इस प्रकार तमाम रास्ते उसका रक्त चिह्न बनता गया । झरने के किनारे पहुँच उन्होंने छुरे से उसकी आँतें बाहर निकाल डालीं और बालू हटा उसे जरा नीचे की ओर गाड़ दिया, तब उसका बाकी शरीर कंधे पर डाल पेड़ पर जा चढ़े ।

अब वे पेड़ों ही पेड़ों पर होते हुए उस ओर चले जिधर वे हबशी लोग गये थे । रास्ते में ही एक स्थान पर उतर कर उन्होंने बकरे का शरीर एक सुरक्षित स्थान पर गाड़ दिया, ताकि वहाँ के जंगली जानवर उसे उखाड़ कर न ले जायँ, और तब वे पुनः मौंगा के गाँव की ओर बढ़े । यद्यपि इस समय उन्हें जोरों की भूख लगी हुई थी फिर भी जो काम करने का उन्होंने निश्चय किया था बिना उसे पूरा किये भोजन करना उन्होंने उचित न समझा ।

हबशी लोग अभी तक अपने गाँव नहीं पहुँचे थे । अभी वे पींजरे से दो या तीन मील के ही फासले पर थे कि टार्जन उनके समीप जा पहुँचे और पेड़ों ही पेड़ों पर उन लोगों का पीछा करने लगे । इस समय वे अपना काम पूरा करने का मौका ढूँढ़ रहे थे ।

इन हवशियों के बीच में उस गाँव का जादूगर रब्बा केगा भी था । न मालूम क्यों टार्जन सब से बढ़ कर इसी से नफरत करते थे । जिस समय हवशी लोग पगडंडी की राह आगे बढ़ रहे थे, रब्बा केगा आलसी तथा सुस्त होने के कारण सब से पीछे पड़ गया । यह देख टार्जन को बड़ी ही प्रसन्नता हुई । मौत के दूत की भाँति वे रब्बा केगा के ठीक ऊपर ऊपर जाने लगे ।

यह देख कर कि गाँव अब अधिक दूर नहीं है रब्बा केगा सुस्ताने के लिये एक पेड़ के नीचे बैठ गया । बड़ी ही सावधानी से टार्जन भी उस पेड़ पर पहुँच गये । क्रमशः वे नीचे की ओर उतरने लगे और जब रब्बा केगा के ठीक ऊपर जा पहुँचे तो पत्तियों के बीच अपने को छिपा कर चुपचाप बैठ रहे ।

इस समय रब्बा केगा पेड़ के सहारे ऊपर की ओर ही मुँह किये बैठा था और यह बात टार्जन के मतलब की न थी अस्तु वे मौके की राह देखते हुए चुपचाप अपने स्थान पर डटे रहे ।

इसी प्रकार लगभग आध घण्टा बीत गया । रब्बा केगा इस समय ऊँच रहा था कि सहसा एक जहरीले कीड़े ने बड़े जोर से उसके गाल पर डंक मारा । कष्ट से चिल्ला कर वह उठ खड़ा हुआ और उधर एक ही छलांग में टार्जन उसकी पीठ पर जा बैठे । जैसे ही उसने चिल्लाना चाहा, मजबूत उँगलियों ने उसका गला धर दबाया । रब्बा केगा ने अपने को छुड़ाने की बहुतेरी कोशिश की किन्तु अपने विपक्षी के मुकाबले वह एक छोटे से बच्चे के समान था ।

अन्त में टार्जन ने उसके गले पर से अपना हाथ हटा लिया परन्तु जब जब वह चिल्लाने की कोशिश करता था वे पुनः उसका गला दबा दिया करते थे । लाचार रब्बा केगा ने चिल्लाने का इरादा छोड़ दिया । इस रस्से से बकरी का बच्चा पींजरे में बाँधा गया था उसे टार्जन अपने साथ लेते आये थे । उसी से उन्होंने रब्बा केगा के हाथ पीठ की ओर

मजबूती के साथ बाँध दिये । इसके बाद उसके ऊपर से हट गं जोर से धक्का दे कर उसे उन्होंने खड़ा कर दिया ।

खड़े होने बाद तब कहीं जा कर खड़ा केगा की निगाह २ चेहरे पर पड़ी । जैसे ही उसने जंगल के संफंद दैत्य को पहिचाना । कलेजा एक दम बैठ गया और घुटने कांपने लगे किन्तु जब टार्जन प्रिना किसी तरह का भी नुकसान पहुँचाये ढकेलते हुए एक ओर को ले जाने लगे तो उसे धीरे धीरे अपने जीवन की आशा बँधने लगी कि बहुत संभव है कि संफंद दैत्य उसकी जान न ले । उसे याद आया कि टीबो तथा मोमाया को अपने कब्जे में पा कर भी उसने उनकी जानें नहीं ली थीं अस्तु कदाचित उसकी भी जान लेने का उसका इरादा न हो ।

अस्तु इसी प्रकार आगे की ओर ढकेलते हुए टार्जन जब उसे उस पींजरे तक ले आये जो शेर को पकड़ने के लिये लगाया गया था तो खड़ा केगा की निगाह पींजरे के भीतर की ओर गई । बकरी का बच्चा लापता था और पींजरे का दर्वाजा खुला हुआ था । खड़ा केगा को आश्चर्य तथा भय दोनों ही हुआ । उसे यह भी ख्याल हुआ कि कहीं बकरी के बच्चे की जगह बाँधने के लिये ही तो टार्जन उसे वहाँ तक नहीं ले आये हैं ।

इस ख्याल के आते ही उसके माथे पर पसोने की बड़ी बड़ी बूँदें चुहचुहा आईं और तमाम शरीर कांपने लगा । टार्जन ने उसे उठा कर पींजरे के भीतर ढकेल दिया और तब स्वयं भी भीतर घुस उसे उन्होंने उसी स्थान पर कस कर बाँध दिया जहाँ वह बकरी का बच्चा बँधा हुआ था । उस जादूगर ने कितनी ही विनितियें की, हाथ पैर जोड़े, परन्तु टार्जन भला उसकी बातों को समझ ही किस प्रकार सकते थे !

अपना काम पूरा करके टार्जन पींजरे के बाहर निकल आये और पेड़ों ही पेड़ों पर होते हुए उस स्थान पर पहुँचे जहाँ बकरी का माँस जमीन के नीचे गाड़ा था । उसे निकाल कर वे पास के एक पेड़ पर

पर अपनी क्षुधा निवारण करने लगे। जो कुछ मांस बाकी बचा : जमीन में गाड़ दिया और पानी के चश्मे के पास पहुँच हाथ बाढ़ पेट भर पानी पीया, इसके बाद एक ऊँचे पेड़ पर चढ़ कर आराम से सोये।

सिंह के गरजने की आवाज सुन कर उनकी नींद खुल गई। अभी दूर नहीं हुआ था किन्तु आसमान पर धीरे धीरे सुर्खी फैलने लग गई थी। गुर्राता हुआ वह सिंह पानी की ओर जा रहा था। दर्जन के होंठों पर एक हलकी मुस्कराहट दिखाई दी परन्तु एक बार अपनी करवट बदल कर वे पुनः सो गये।

जब मोंगा के लड़ाके गांव के भीतर पहुँचे उन्हें यह देख आश्चर्य हुआ कि रब्बा केगा उनके साथ नहीं है और जब कई घंटे बीत गये और रब्बा केगा नहीं आया तब तो उन्हें उसके सम्बन्ध में तरह तरह की चिन्ताएँ होने लगीं। सब लोगों की यही राय हुई कि जरूर उसका पता लगाना चाहिये क्योंकि संभव है उसके ऊपर किसी तरह की आफत आ गई हो। यद्यपि उस जादूगर से सभी चिढ़ते थे परन्तु मोंगा ने कुछ आदमी उसकी खोज में रवाना कर ही दिये।

एक घंटे तक तो वे लोग जंगल में रब्बा केगा को खोजते रहे परन्तु मनुष्य की किस्मत भी कैसे कच्चे धागे से बँधी हुई होती है। रब्बा केगा की मौत आ गई थी क्योंकि सहसा उनमें से एक का ध्यान एक उड़ती हुई मधुमक्खी की ओर चला गया और अपना काम भूल सब के सब शहद के छत्ते की तलाश में निकल पड़े।

जब वे लोग गांव में पहुँचे तो मोंगा उनके ऊपर बेतरह बिगड़ा परन्तु शहद के खजाने पर निगाह पड़ते ही जिसे वे लोग अपने साथ लाये थे उसका क्रोध शान्त हो गया।

सुबह होते ही मोंगा के सैनिक उस पींजरे की ओर चले जिसे शेर पकड़ने के लिये वे जंगल के बीच लगा आये थे। अभी वे पींजरे से कुछ

फासले ही पर थे कि उनके कानों में किसी सिंह के उछलने कूदने तथा गरजने की आवाज पड़ी। वे समझ गये कि उनकी मेहनत सफल हुई है और प्रसन्नता से फूले हुए सब के सब तेजी के साथ पींजरे के समीप जा पहुँचे।

एक बड़ा भारी सिंह पींजरे के भीतर बन्द क्रोध की निगाहें इन लोगों पर डाल रहा था। प्रसन्नता से उछलते हुए वे लोग पींजरे के पास पहुँचे किन्तु उनकी प्रसन्नता एक दम गायब हो गई जब उनकी निगाहें रब्बा केगा के नुचे चुये शरीर पर पड़ीं जिसे सिंह ने यद्यपि खाया नहीं था फिर भी एक दम चीथ फाड़ डाला था।

पेड़ की डाल पर बैठे टार्जन यह सब तमाशा देख रहे थे। मन ही मन उन्हें अपनी इस दिल्लगी पर हँसी आने लगी।

कुछ देर बाद जब उन जंगलियों के होश कुछ ठिकाने हुए तो उन्हें यह उत्सुकता हुई कि आखिर रब्बा केगा पींजरे के अन्दर किस प्रकार जा पहुँचा और वह बकरी का बच्चा किधर लापता हो गया। लड़कों में से भाँक कर उन्होंने भीतर की ओर देखा और तब उन्हें मालूम हुआ कि रब्बा केगा उसी रस्सी से बँधा हुआ है जिससे कि वह बकरी का बच्चा बाँधा गया था। आश्चर्य से उन्होंने एक दूसरे की ओर देखा, वे सोच रहे थे कि आखिर यह काम किसका हो सकता है !

इसी समय डुबूटो नामक एक हवशी बोल उठा, “यह काम सिवाय उस सफेद दैत्य के और किसी का नहीं हो सकता !”

किसी ने भी उसकी बात नहीं काटी क्योंकि सिवाय सफेद दैत्य के ऐसा काम और कर ही कौन सकता था ? इसी समय से टार्जन के प्रति उनकी घृणा का भाव और भी तीव्र हो उठा। उधर टार्जन पेड़ के ऊपर बैठे मुस्करा रहे थे।

यद्यपि रब्बा केगा की मृत्यु का विशेष दुःख किसी को भी नहीं हुआ परंतु इस बात का भय जरूर सभी को सताने लगा कि अब भविष्य में वह

सफेद दैत्य उनमें से न मालूम किसको उस जादूगर से भी अधिक कष्ट देने वाली मौत के घाट उतारेगा। शेर का पींजरा अपने गाँव की ओर खींच कर ले जाते समय प्रायः सभी हथियारों का दिमाग इसी चिन्ता में व्यस्त था।

गाँव के फाटक के भीतर पहुँच जाने पर उन लोगों ने सन्तोष की साँस ली। शीघ्र ही बच्चों औरतों तथा मर्दों की खासी भीड़ पींजरे के पास एकत्रित हो गई किन्तु जैसे ही उनकी निगाह रब्बा केगा की तुची तुथी देह पर पड़ी सभी रोंन पीटने लगे।

गाँव की सड़क के ठीक ऊपर वाले वृक्ष पर बैठे हुए टार्जन गाँव के बच्चों तथा औरतों का लकड़ियों द्वारा सिंह को तंग करना देख रहे थे। कितनी ही औरतें बड़े बड़े पत्थरों के टुकड़े सिंह के ऊपर फेंक रही थीं। इन जंगलियों की यह क्रूरता देख टार्जन को उनसे भारी घृणा पैदा होती थी किन्तु इसका भी एक कारण था। वे स्वयं क्रूर थे, जंगल के सभी जीव क्रूर थे, परन्तु उनकी तथा जंगली जानवरों की क्रूरता जीवन रक्षा के लिये एक आवश्यक वस्तु थी और इन जंगलियों की क्रूरता एक मात्र दिल बहलाव के लिये हुआ करती थी।

अस्तु गोमंगानियों के प्रति उत्पन्न हुए क्रोध तथा घृणा के साथ ही साथ उस सिंह के प्रति उन्हें सहानुभूति भी उत्पन्न हो गई। न्यूमा उनका शत्रु था परन्तु इस समय वह विपत्ति में था अस्तु जंगलियों को तंग करने तथा सिंह को पींजरे में से स्वतंत्र कर देने की इच्छा उनके मन में प्रबल हो उठी किन्तु इस काम को भी उन्होंने ऐसे ढंग से पूरा करना चाहा जिससे गोमंगानियों को अधिक से अधिक क्लेश हो सके।

अभी वे अपने स्थान पर बैठे इस बात का मनसूबा बाँध ही रहे थे कि उन्होंने जंगलियों को सिंह का पींजरा घसीट कर एक ओर ले जाते देखा। पींजरा ले जा कर उन लोगों ने दो झोपड़ियों के बीच में रख दिया। टार्जन समझ गये कि अब वह शाम तक वहीं पड़ा रहेगा। दो आदमी पींजरे के पाप पहरा देने के लिये छोड़ दिये गये और उन्होंने

सिंह को तंग करने वाले औरतों बच्चों को पींजरे के पास से भगा दिया। सिंह का उस समय तक सहाल कर रक्खा जाना आवश्यक था जब तक कि उसके पकड़े जाने की खुशी के जलसे का पूरा इन्तजाम न हो जाय और ये तमाशगीर यदि पींजरे के पास ही छोड़ दिये जाते तो सिंह को कभी भी जिन्दा न छोड़ते। असल में उनका इरादा ऐन जलसे के मौके पर सिंह को बड़े ही क्रूर ढंग से मारने का था। इसी में उन्हें आनन्द मिलता था।

इस बात से निश्चिन्त हो कर कि अब कम से कम शाम तक सिंह से कोई छेड़छाड़ न करेगा टार्जन वहाँ से जंगल की ओर रवाना हुए परन्तु उनका शरास्ती दिमाग इस समय जंगलियों को तंग करने का कोई रास्ता ढूँढ़ रहा था।

आर अन्त में एक तरीका उन्हें सूझ ही गया। पहले तो अपने इस काम का नतीजा सोच उनके चेहरे पर एक हलकी मुस्कुराहट आई और तब अपने भोजन का ख्याल छोड़ कर वे करचक जाति के एप बन्दरों की मंडली की ओर रवाना हुए।

अपने सदा के स्वाभाविक मजाकिया मिजाज के अनुसार वे एक बार बड़े ही जोर से चिल्ला कर उस मैदान में कूद पड़े जहाँ एप बन्दर इधर से उधर घूम रहे थे। करचक जाति के एप बन्दर बड़े ही भाग्यवान थे कि हृदय को गति रुक जाने के कारण मनुष्यों की भाँति यकायक उनकी मृत्यु नहीं हुआ करती थी फिर भी टार्जन के इस ढंग से वे सदा तंग रहते थे, अस्तु जब उन्होंने देखा कि इस प्रकार जोर से चिल्ला कर उनके बीच में कूदने वाले टार्जन हैं तो पहले तो वे क्रोधित हो कर कुछ देर तक गुर्गते रहे इसके बाद इस ओर से अपना ध्यान हटा पुनः अपने अपने कामों में लग गये।

अपनी इस छोटी सी दिखगी से फारिग हो कर टार्जन उस पेड़ के पास जा पहुँचे जहाँ अपने साथी एप बन्दरों की निगाहों से छिपा कर पेड़

के खोखले में उन्होंने अपने हरबे तथा बाकी के सामान रखे हुए थे। अन्य सामानों के साथ साथ सिंह की वह खाल भी उन्होंने रख छोड़ी थी जो वास्तव में रब्बा केगा की जमा थी और जिसे कुछ दिन पहले मोंगा के गाँव से चुरा ला कर उन्होंने एप बन्दरों के बीच दिहली कराने जा कर अपने को मुसीबत में डाल लिया था।

इस खाल को उन्होंने उस खोखले में से निकाल लिया और पुनः मोंगा के गाँव की ओर खाना हुआ। रास्ते में शिकार करते तथा आनन्द से खाते पीते सन्ध्या के समय वे पुनः मोंगा के गाँव के ऊपर पेड़ पर जा बैठे और तमाशा देखने लगे।

सिंह अभी तक अपने पींजरे में यथास्थान बन्द पड़ा हुआ था और उसके रत्नक बैठे ऊँध रहे थे। गाँव के किसी आदमी का भी इस पींजरे के पास पता न था क्योंकि सिंहीं से भरे जंगलों के बीच में रहने वाले इन हबशियों की निगाह में सिंह कोई अजूबा जीव नहीं था अस्तु उसे तंग करने की भूझक एक बार निकल जाने बाद गाँव वाले उसे जलसे के समय तक एक प्रकार से भूल ही गये थे।

सन्ध्या होते ही जलसे का काम आरम्भ हो गया। बाजे इस समय जोरों के साथ बज रहे थे, और खेल शुरू हो गया था। सहसा एक सैनिक हाथ में बरछा लिये आग की रोशनी में एकत्रित जंगलियों के घेरे के बीच आ खड़ा हुआ। यह जंगली एक शिकारी की पौशाक में था और देखने में बड़ा ही फुर्तीला तथा दृष्ट-पुष्ट मालूम पड़ता था। वह नीचे की ओर झुका मानों जमीन पर सिंह के पैरों का निशान खोज रहा हो। थोड़ी देर इधर उधर जमीन पर कुछ ढूँढ़ने बाद वह यकायक तन कर खड़ा हो गया। अपने चेहरे पर इस समय उसने ऐसा भाव बना लिया था मानों उसे अपने शिकार का निशान मिल गया हो। इसके बाद बढ़ी ही शान के साथ उपस्थित मंडली पर उसने अपनी खोज का परिणाम प्रगट कर

दिया। फौरन ही तीस चालीस योद्धा हाथ में लम्बे लम्बे बरछे लिये उसके पीछे हो गये और सिंह के शिकार के लिये बढ़े।

पेड़ के ऊपर पत्तों की आड़ में छिपे टार्जन यह सब तमाशा देख रहे थे। जंगलियों का यह नाटक देख वे समझ गये कि ये सब लोग अब वहाँ से सीधे सिंह के पींजरे के पास पहुँचेंगे और अपने बरछों से उसका काम तमाम करेंगे अस्तु उन्हें अपने काम में फुर्ती करना आवश्यक था।

बड़ी ही सावधानी से वे जमीन पर कूद पड़े और सिंह की खाल कंधे पर डाले तथा भोपड़ियों की आड़ में अपने को छिपाते उस जगह जा पहुँचे जहाँ सिंह का वह पींजरा रक्खा हुआ था। वहाँ उस समय एक दम सन्नाटा था और पींजरे के रक्षक तक वहाँ मौजूद न थे क्योंकि जलसे का समय होने के कारण वे लोग भी वहाँ से हट कर तमाशबीनों में जा मिले थे।

टार्जन सीधे सिंह के पींजरे के पीछे की ओर चले गये और वह सिंह की खाल उन्होंने अपने शरीर के चारों ओर उसी प्रकार लपेट ली जिस प्रकार एप बन्दरों को डराने की नीयत से एक बार कर चुके थे। जंगली योद्धा हाथ में बरछे लिये सिंह के पींजरे के समीप पहुँच ही रहे थे कि सहसा टार्जन पींजरे के पीछे से निकल उनके सामने आ खड़े हुए और एक भारी गुराँहट उनके गले से निकली।

सिंह को पींजरे के बाहर देख वे योद्धा घबड़ा उठे। पींजरे में बन्द जिस सिंह का शिकार करने के लिये वे वहाँ तक आये थे अब यकायक उसी सिंह को स्वतन्त्र रूप से अपने सामने देख उनकी अकल ही गुम हो गई। भय से चिल्लाकर वे सब के सभी भाग खड़े हुए।

सिंह की खाल ओढ़े टार्जन चुपचाप अपने स्थान पर खड़े हुए थे। कितने ही जंगली इस समय हाथ में भाला लिये यह जानने की इच्छा से भोपड़ियों के दरवाजे से झाँक रहे थे कि आखिर वह सिंह अब किस ओर जाता है। सहसा टार्जन खड़े हो गये और सिंह की खाल उन्होंने कंधे पर

डाल ली। अब जंगलियों को मालूम हुआ कि वह सिंह नहीं वही सफेद दैत्य था जिसके भय से उन्हें रात भर नींद नहीं आती।

कुछ देर तक वे लोग चुपचाप अपने स्थान पर ही छिपे रहें क्योंकि सिंह को अपेक्षा वे इस जंगली दैत्य से और भी अधिक डरते थे परन्तु थोड़ी देर बाद वे सब के सब हिम्मत बाँधकर अपने अपने दरवाजे से बाहर निकलने लगे। अपने इस भारी शत्रु का आज जिस तरह भी हो खातमा ही कर डालने का उन्होंने निश्चय कर लिया था।

सिंह की खाल एक डाल के ऊपर फेंक टार्जन पुनः पेड़ की छाया में जमीन पर उतरे और उस ओर दौड़े जिधर सिंह का पींजरा था। पींजरे की छत पर पहुँच कर उन्होंने वह रस्सा खींचा जिससे पींजरे का दरवाजा खुलता था और दूसरे ही क्षण वह भयानक सिंह कूद कर बीच सड़क में आ खड़ा हुआ।

टार्जन की खोज में निकले जंगली उस जगह पहुँच ही रहे थे कि आग की चमक में उन्होंने सिंह को सड़क पर आ कर खड़े होते देखा। जंगल का वह सफेद दैत्य इस समय पुनः उनके सामने था और इस बार वे बेवकूफ बनने के लिये तैयार न थे। बहुत दिनों से वे ऐसे ही किसी मौके की खोज में थे जब वे अपने इस भारी कंठक को अपनी राह से दूर कर सकें क्योंकि इस जंगली दैत्य का भय कभी भी उन्हें सुख की नींद सोने नहीं देता था। अपने अपने बरछे ऊपर की ओर उठा कर वे सब के सब एक साथ ही उस सिंह पर टूट पड़े जिसे वे वह सफेद दैत्य ही समझे हुए थे।

औरतें तथा बच्चे जंगल के सफेद दैत्य की मृत्यु देखने के लिये अपनी अपनी भोपड़ियों से बाहर निकल आये और एक बार उन योद्धाओं की ओर क्रोध से देख कर सिंह जोर से उनकी ओर झपटा।

प्रसन्नता से चिल्ला कर वे योद्धा हाथ में बरछा लिये और भी तेजी के साथ सिंह की ओर बढ़े। अब उनका शिकार वह सफेद दैत्य किसी प्रकार भी उनसे बच कर नहीं जा सकता था।

मोंगा के ये थोड़ा निर्भय भाव से अपने अपने बरछे लिये एक स्थान पर अड़ कर खड़े हो गए । उस सफेद दैत्य से भला इस समय उन्हें डरने की क्या आवश्यकता थी ? वे जानते थे कि सम्मुख युद्ध में इस समय वह उन लोगों का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता, क्योंकि उन्हें अब तक यही विश्वास था कि सिंह की खाल के नीचे अवश्य उस सफेद दैत्य का मुला-यम मांस ही छिपा हुआ है ।

उन सभी के आगे एक लम्बा चौड़ा तगड़ा थोड़ा खड़ा हुआ था । सिंह सब से पहले उसी की ओर झपटा, परन्तु भला वह डरे क्यों ! सफेद दैत्य की इस धृष्टता पर उसे हँसी आ रही थी । केवल अपने बरछे का मुँह उसने सिंह के कलेजे की ओर कर लिया था । एक क्षण में सिंह उसके ऊपर आ धमका । उसके पंजे की एक ही चपेट ने उसके हाथ का बरछा इस प्रकार दूर फेंक दिया मानों वह एक छोटी सी छड़ी हो ।

दूसरी चपेट ने उसकी खोपड़ी चकनाचूर कर दी और खून से लथ-पथ उसकी लाश जमीन पर गिर पड़ी । क्रुद्ध सिंह इस समय उन थोड़ाओं के बीच में था । कुछ ही मिनटों में आठ दस थोड़ाओं का खातमा कर के उसने उन्हें जमीन पर ढेर कर दिया और बाकी बचे हुए लोग चिछाते हुए वहाँ से भाग निकले । इन भागने वालों में से भी कितने उसके भयानक पंजों के शिकार बने ।

भय से पागल जंगली इधर उधर भागे जा रहे थे । गाँव के घेरे के भीतर उन्हें अपने लिये कोई भी स्थान सुरक्षित नहीं दिखाई देता था और बीच सड़क में वह सिंह खड़ा हुआ था ।

अन्त में एक जंगली ने घेरे का फाटक खोल दिया और दौड़ कर बाहर के एक पेड़ पर चढ़ गया । धीरे धीरे कर के सभी ने उसका साथ दिया और एक एक कर के सब फाटक के बाहर निकल आस पास के पेड़ों पर जा बैठे । केवल मुर्दे और उनके पास खड़ा हुआ वह सिंह भर उस समय गाँव में रह गया था ।

पेड़ों पर चढ़े हुए मोंगा के साथियों ने उस सिंह को एक मृत व्यक्ति की देह अपने मुँह में उठाते देखा। इसके बाद अपनी शानदार चाल से गाँव की सड़क पर होता हुआ वह फाटक के बाहर निकला और पास के जंगल में जा घुसा। टार्जन पेड़ पर बैठे इन सब कांडों को देखते हुए मुस्कुरा रहे थे।

सिंह को जंगल में घुसे जब एक घंटे से भी अधिक समय बीत गया तब जा कर कहीं जंगलियों की पेड़ से उतरने की हिम्मत पड़ी। फिर भी उतरते समय वे अपनी भयभीत निगाहें चारों ओर डाल रहे थे। उनमें से एक कह रहा था, “मेरा तो अभी तक यह ख्याल है कि वह वही जंगली सफेद दैत्य था !”

दूसरा बोला, “वही पहले सिंह से आदमी हो गया और तब आदमी से पुनः सिंह हो गया !”

तीसरा कहने लगा, “इस समय मोजा की लाश को ले जाकर वह कहीं बैठा खा रहा होगा !!”

इसी समय चौथा बोल उठा, “अब हम लोग इस गाँव में निश्चिन्ती के साथ नहीं रह सकते, शीघ्र ही कोई अन्य स्थान निश्चित कर के हमें दुबारा अपना गाँव बसाना चाहिये।”

परन्तु सुबह होते ही उनमें नवीन साहस का सञ्चार हुआ और यद्यपि उस दिन से जंगल के उस सफेद दैत्य का भय उनके हृदय में पहले से भी अधिक बढ़ गया फिर भी ज्यों ज्यों दिन पर दिन बीतने लगे वे इस घटना को क्रमशः भूलने लगे।

चन्द्रमा की रक्षा

स्वच्छ आसमान में चन्द्रदेव अपनी पूर्ण कला से विराजमान थे। और दिनों की अपेक्षा आज वे पृथ्वी के अधिक समीप मालूम हो रहे

थे । टार्जन इतनी रात गये भी सोये नहीं थे । वे घूमने फिरने के लिये जंगल में निकले थे । ऐसे समय में इस तरह वे क्यों घूम रहे थे इसे कोई नहीं कह सकता, वे भी पूछने पर कदाचित इसका कोई उत्तर न दे सकते । वे भूखे भी नहीं थे, आज दिन को उन्हें भरपेट भोजन मिल चुका था बल्कि बचा हुआ माँस उन्होंने कल के लिये गाड़ भी रक्खा था । संभवतः विमल चाँदनी का आनन्द लेने के लिये ही वे निकले हों ।

सूर्यदेव के उदय होने पर जंगल की जो शोभा रहती है उससे चन्द्रदेव के उदय होने पर की शोभा एकदम भिन्न ही होती है । गोरो चन्द्रमा के समय की चीजें जैसे फूल चिड़ियाँ जानवर आदि सूर्य के समय के फूलों चिड़ियाँ अथवा जानवरों की भांति नहीं होते ।

इस अन्तर को समझने के लिये ही आज टार्जन जंगल में निकले थे । पूरब दक्खिन और उत्तर दिशाओंका चक्कर काटते हुए इस समय वे सीधे पश्चिम की ओर जा रहे थे । चन्द्रदेव की इस रात्रि में चारो ओर जो शब्द सुनाई दे रहे थे उनको उत्पत्ति कहाँ से हुई है इसे बहुत प्रयत्न करने पर भी वे अभी तक नहीं समझ पाये थे और उन्होंने यह समझ लिया था कि केवल चन्द्रदेव का प्रभाव ही इन आवाजों को उत्पन्न करता है ।

उत्तर की ओर थोड़ा ही आगे बढ़ने पर टार्जन की नाक में गोमं-गानियों तथा उसके साथ धूँ की कड़ी गंध भी आई । रात्रि की हलकी हवा जिस ओर से इस गंध को ले कर आ रही थी टार्जन उसी ओर खाना हुआ । सहसा अग्नि की रोशनी उन्हें एक स्थान पर दिखाई दी और वे उस स्थान के समीप एक पेड़ पर जा कर रुक गये । उन्हें लगभग छः हवशी अग्नि के समीप सिकुड़े हुए बैठे दिखाई दिये । यह शायद मोंगा के गाँव से शिकार के लिये निकली हुई कोई टोली थी जिसे लौटते समय जंगल में ही रात्रि हो जाने के कारण एक स्थान पर रुक जाना पड़ा था । अपने चारो ओर एक काँटेदार घेरा बना तथा जंगली जानवरों से बचने के लिये उसके बीच में अग्नि प्रज्वलित कर वे पास पास बैठे हुए थे ।

परन्तु वे जंगली जानवरों से बच सकेंगे इस बात का उन्हें पुरानिश्चय नहीं था जिसका कारण कदाचित् सिंह चीतों आदि की वे आवाजें थीं जो उन्हें रह रह कर चारो ओर से सुनाई पड़ रही थीं। कुछ दूर के फासले पर कुछ और जानवर भी खड़े मालूम हो रहे थे क्योंकि अन्धकार में उनकी पीली पीली आँखें तेजी के साथ चमकती दिखाई दे रही थीं। जंगलियों में से एक ने खड़े हो कर एक जलती हुई लकड़ी उठा ली और उन चमकती आँखों की ओर फेंका। फौरन ही वे लापता हो गईं। हबशी पुनः अपने स्थान पर जा बैठा पर कुछ ही देर बाद पुनः वे आँखें दो दो चार चार कर के आगे बढ़ती दिखाई दीं।

इसके बाद न्यूमा सिंह तथा सेबर शेरनी भी उस ओर आई। चमकती हुई अन्य आँखें धीरे धीरे अपने स्थान से दाहिने बायें खसकने लगीं और तब इन भयंकर जानवरों की आँखें स्पष्ट रूप से अन्धकार में चमकती दिखाई दीं। इन आँखों को उन जंगलियों ने फौरन ही पहिचान लिया और भय के मारे अपने दोनों हाथों से सब ने अपनी अपनी आँखें ढक लीं। उस पहले हबशी ने पुनः एक जलती हुई लकड़ी उठा ली और इन बड़ी बड़ी चमकती हुई आँखों की ओर जोर के साथ फेंका। फौरन ही ये आँखें भी लापता हो गईं। टार्जन को बड़ी ही उत्सुकता हुई। आज उनकी समझ में आया कि जंगली लोग रात के समय आग क्यों बाला करते हैं। जंगल के जानवर आग से डरते हैं और जंगलियों के लिये यह मानों प्राणरक्षा का साधन है।

जलती हुई लकड़ी के उस हबशी द्वारा फेंके जाने के कुछ देर बाद तक वे आँखें दिखाई नहीं दीं फिर भी गद्देदार पैरों की आवाजें टार्जन के कानों में पड़ रही थीं। थोड़ी ही देर बाद सिंह तथा सिंहनी की आँखें पुनः अन्धकार में चमक उठीं।

कुछ देर तक तो वे दोनों आँखें अपने स्थान पर ही अड़ी रहीं पर इसके बाद सिंह धीरे धीरे उस घेरे की ओर बढ़ने लगा। उस हबशी ने

सिंह को घेरे की ओर बढ़ते देख पुनः एक बलती हुई लकड़ी उसकी ओर फेंकी । सिंह फिर पीछे हट गया और उसकी तथा सिंहनी दोनों ही की आँखें अन्धकार में लुप्त हो गईं । टार्जन ने देखा कि इस बार बार जलती लकड़ी फेकने वाले हबशी के सिवाय बाकी के सभी हबशी एक दूसरे से सटे तथा हाथों में मुँह छिपाये बेंत की तरह काँप रहे थे ।

वह हबशी बार बार जलती हुई लकड़ी सिंह तथा शेरनी की ओर फेंकता रहा परन्तु टार्जन ने देखा कि अब ये दोनों जीव प्रथम की भाँति आग को देख कर डर नहीं रहे थे । न्यूमा के गले से निकली हुई आवाज सुन कर ही टार्जन समझ गये कि वह बेतरह भूखा है और गोमंगानियों को खाकर अपनी भूख मिटाने का उसने निश्चय कर लिया है परन्तु सवाल यह था कि क्या वह आग के समीप जाने की हिम्मत करेगा ?

टार्जन के दिमाग में अभी ये विचार घूम ही रहे थे कि सिंह खड़ा हो गया । सिंहनी इस समय उससे कुछ फासले पर खड़ी थी । सिंह को इतने नजदीक देख उस हबशी ने अपने साथियों को सावधान किया परन्तु वे सब के सब इतना डरे हुए थे कि सिवाय एक दूसरे के साथ और भी सट जाने के उन्होंने अपनी आँखें उठा कर सामने की ओर देखा तक नहीं ।

उस हबशी ने एक बलती लकड़ी लेकर सीधे सिंह के मुँह पर फेंकी । बड़े जोर से दहाड़ कर सिंह एक ही छलांग में घेरे के भीतर आ गया परन्तु उसी के समान फुर्ती के साथ वह हबशी एक ओर को हट गया ।

सिंह जिस फुर्ती के साथ घेरे के भीतर घुसा था उसी फुर्ती के साथ उसके बाहर भी निकल गया परन्तु लौटती बार उसके मुँह में एक हबशी का शरीर था जो जोर जोर से चिल्ला रहा था । बाहर निकल कर अपने शिकार को उसने जमीन पर रख दिया और उसे धसीटता हुआ सिंहनी की ओर चला ।

कुछ देर तक सिंह तथा सिंहनी दोनों ही के गरजने की आवाजें सुनाई देती रहीं । इसके बाद शीघ्र ही न्यूमा पुनः आग के पास वापस लौट

आया । एक बार पुनः कूद कर वह घेरे के अन्दर पहुँचा और उसी प्रकार एक दूसरे हवशी को मुँह में दाब कर बाहर निकल गया ।

टार्जन ने बड़े जोर से अंगड़ाई ली । यह दृश्य देखते देखते उनकी तबीयत अब एक प्रकार से ऊब उठी थी । वे वहाँ से उस ओर खाना हुए जहाँ एप बन्दर पेड़ों के बीच में इधर उधर सोये हुए थे और यहाँ पहुँच स्वयं भी एक विशाल वृक्ष की मचान पर जा लेते । परन्तु न मालूम क्यों आज उन्हें बिल्कुल ही नींद नहीं आ रही थी । अपने स्थान पर लेटे ही लेटे वे चन्द्रदेव तथा उनके आस पास आसमान पर फैले हुए सितारों की ओर देखने लगे । उन्हें आश्चर्य हो रहा था कि आखिर ये सब हैं क्या वस्तु और कौन सी शक्ति उन्हें नीचे की ओर गिरने से रोके हुई है । लड़कपन से ही नई नई बातें जानने की प्रबल इच्छा उनके मन में थी और अब बड़े हो जाने पर उनकी यह इच्छा दबी नहीं वरन् द्विगुण वेग से जागृत हो उठी थी ।

केवल इतना ही जान कर उन्हें सन्तोष नहीं होता था कि घटनायें घटीं । उन्हें उसका कारण जानने की उत्सुकता होती थी, जीवन तथा मृत्यु का भेद आज तक उनकी समझ में नहीं आया था । कई बार जीवों की हत्या करते समय उनका शरीर चीर कर भीतर हरकत करते हुए कलेजे को वे देख चुके थे और उन्हें निश्चय हो गया था कि कलेजे की यह हरकत ही जीवन है और इसका बन्द हो जाना ही मृत्यु है ।

अनुभव से ही यह बात भी उन्हें मालूम हो गई थी कि शरीर के इस भाग में छुरे के घुसने से दस में नौ मृत्युएँ बहुत शीघ्र ही हो जाया करती हैं । अन्य भागों में छुरा घुसाने से मृत्यु तो क्या शत्रु की विशेष हानि तक होती नहीं दिखाई देती थी । अस्तु हृदय के सम्बन्ध में उनका विचार था कि “वही लाल वस्तु सांस लेती है और जीवन के रहने का स्थान है ।”

दिमाग और उसकी कार्यप्रणाली बिल्कुल ही उनकी समझ में नहीं आती थी । उन्हें भला क्या मालूम कि इन्द्रियों का जितना भी ज्ञान है

वह सीधे दिमाग तक पहुँच जाता है। उनका ख्याल यही था कि उँगलियाँ किसी चीज को छू कर पहिचान लेती हैं, आँखें देख कर पहिचानती हैं, और कान सुन कर पहिचानते हैं, इनके इलावा नाक गन्ध से वस्तुओं को पहिचानता है।

वे गले शरीर के चमड़े तथा बालों को भिन्न भिन्न चित्तवृत्तियों का केन्द्रस्थान समझते थे। अपनी माता काला के मरने पर उनका गला एक दम से भर आया था, हिस्टा अजगर के शरीर के स्पर्श से उनके शरीर में एक विचित्र प्रकार को सनसनाहट पैदा हो जाती थी, और शत्रु का सामना होते ही उनके सिर के बाल खड़े हो जाते थे।

उत्सुकता से भरे टार्जन नित्य नवीन बातें जानने का उद्योग करते थे। मनुष्य का दिमाग उन्नति की ओर बढ़ा चाहता था परन्तु उचित शिक्षा तथा शिक्षक दोनों ही का अभाव था। यदि वह गुट्टो से पूछते कि पानी कौन बरसाता है तो वह इस बात का कोई भी उत्तर न दे एक बार आश्चर्य से उनकी ओर देख अपना मुँह फेर लेता था, और यदि वह ममगा से, जो बहुत ही बूढ़ी हो जाने के कारण बुद्धिमान होनी चाहिये थी, यह सवाल करते कि कुछ फूल सन्ध्या होते ही क्यों बन्द हो जाते हैं और कुछ सन्ध्या होने पर खिल क्यों जाते हैं तो उन्हें पता चलता कि ममगा को इन बातों का आज तक न तो पता ही था न उसने ऐसी बातों की ओर कभी ध्यान ही दिया था।

टार्जन के लिये ये सभी बातें अद्भुत थीं। उन्होंने अपनी बुद्धि और कल्पनाशक्ति से सहायता लेनी चाही। उन्होंने फूलों को खुलते और बन्द होते देखा। कितने ही फूलों को उन्होंने सदा ही सूर्य की ओर मुँह किये पाया। हवा न रहने पर भी उन्होंने कुछ पत्तियों को हिलते देखा और लताओं को पेड़ों पर लिपटते देखा। टार्जन को ये सभी चीजें जानदार माछूम हुईं। वे अकसर उनसे बातें किया करते थे परन्तु यह देख उन्हें बड़ा ही दुःख होता था कि वे लोग उनकी बातों का कुछ भी उत्तर नहीं

देते थे। वे उनसे सवाल किया करते थे परन्तु कुछ भी जवाब नहीं पाते थे। तथापि उन्होंने यह समझा कि पत्तियों का खड़खड़ाना ही उनका आपस में बातें करना है।

हवा चलने का कारण वे पेड़ों तथा घासों को समझते थे। उनका ख्याल था कि पेड़ तथा घास हिल हिल कर हवा को पैदा करते हैं। पानी बरसने का कारण वे चन्द्र सूर्य तथा सितारों को समझते थे परन्तु निश्चित रूप से वे इस बात को भी नहीं कह सकते थे। ये सभी बातें स्वयं उन्हीं के दिमाग की उपज थी और उनकी ताईत करने वाला कोई भी न था।

आज रात में जब टार्जन चन्द्रमा तथा सितारों की ओर देखते लेटे हुए थे, यकायक उन्हें चन्द्रमा तथा सितारों का भेद समझ में आ गया। वे एक दम से उत्तेजित हो उठे। टाग पास के ही एक पेड़ पर बैठा हुआ था। उछल कर टार्जन उस पेड़ पर जा बैठे और जोर से बोले, “टाग !”

घबड़ा कर टाग उठ बैठा, उसने समझा कोई भारी खतरा सिर पर आ पहुँचा। इसी समय टार्जन आसमान की ओर उँगली दिखाते हुए बोले, “देखो टाग ! वह ऊपर न्यूमा मिह, सेबर सिंहनी, तथा डांगो लकड़-बग्घे को आँखें चमकती हुई दिखाई दे रही हैं। वे सभी गोरो चन्द्रमा को घेरे हुए खड़े हैं और उसकी हत्या किया चाहते हैं। वह देखो चन्द्रमा की आँख नाक मुँह सब साफ दिखाई देता है और उसके चेहरे पर जो चमक है वह उस रोशनी की है जो उसने अपनी रक्षा के लिये अपने चारो ओर बाल रखी है ताकि सिंह सिंहनी तथा अन्य हिंसक जन्तु उसके भय से भाग जायँ।

“तुम देख सकते हो टाग ! गोरो के चारो ओर आँखें हैं परन्तु वे आग के नजदोक नहीं आतीं। चन्द्रमा के एकदम सनीप भी कुछ आँखें हैं परन्तु वे भी आग से डर रही हैं। आग ही गोरो की न्यूमा से रक्षा कर रही है। देखते हो न टाग ! किसी रात में न्यूमा को गहरी भूख लगेगी और वह उछल कर गोरो के चारो ओर बने काँटेदार घेरे को पार कर के उसे खा

जायगा । तब हम लोगों को गोरो की रोशनी न मिल सकेगी और तमाम रात अन्धकारमय हो जायगी ।”

टाग ने एक बार आश्चर्य से आसमान की ओर और तब टार्जन के चेहरे की ओर देखा । इसी समय एक तारा टूट कर नीचे की ओर गिरता दिखाई दिया । टार्जन बोले, “वह देखो गोरो ने बलती हुई लकड़ी न्यूमा के ऊपर फेंकी ।”

टाग ने उत्तर दिया, “तुम्हारी बात मेरी समझ में नहीं आती । सिंह तो जमीन पर शिकार करता है !!” परन्तु इतना कहने पर भी वह बराबर अपनी भयभीत आँखें आसमान के सितारों पर डाल रहा था क्योंकि उसे इस बात का सन्देह हो रहा था कि आज से पहले उसकी निगाह कभी भी उन सितारों पर नहीं पड़ी है । टाग की दृष्टि में वे सितारे जंगली फूल थे जिन्हें वह खा नहीं सकता था और इस लिये उस ओर उसने कभी भी ध्यान नहीं दिया था ।

टाग बड़ी देर तक आसमान की ओर देखता हुआ टार्जन की बातों पर विचार करता रहा । उसने सोचा यदि टार्जन का ही कहना सच निकला और गोरो को न्यूमा खा गया तो फिर न गोरोकी रोशनी ही रहेगी न फिर हम लोगों का दमदम नाच ही हो सकेगा । उसने आश्चर्य से टार्जन की ओर देखा । टार्जन के से विचार आज तक उसने कभी किसी अन्य एप बन्दर में नहीं देखे थे । वह अपना सिर खुजलाता हुआ सोचने लगा कि टार्जन किस प्रकार के जीव हैं और कहीं उनके द्वारा कभी उसकी जान पर तो किसी तरह का खतरा नहीं आ जायगा । परन्तु धीरे धीरे उसे ख्याल आने लगा कि टार्जन ने समय समय पर उसकी कितनी सहायता की है । उतनी सहायता तो उसको जाति के एप बन्दरों में से किसी ने भी आज तक नहीं की । उन्होंने उस समय हवशियों से उसकी प्राणरक्षा की थी जब टार्जन स्वयं टीका को प्रेम की निगाहों से देखते थे । टार्जन ही ने टीका को भगा ले जाने वाले एप का पीछा कर के तथा अपने प्राणों पर

संकट भेल कर टीका को उसके पंजे से छुड़ाया था। अपने खतरे की जरा भी परवाह न कर के टार्जन ने इतनी बार टाग टीका तथा गाजन की सहायता की थी कि टाग को उन पर हृद से ज्यादा प्रेम तथा भक्ति हो गई थी और यह भक्ति किसी प्रकार भी कम नहीं हो सकती थी। टार्जन से उसकी मित्रता एक प्रकार की आदत के समान हो गई थी जो टाग के समूचे जीवन भर कायम रहने वाली थी। यद्यपि टार्जन पर भी वह उसी प्रकार गुर्वाता था जिस तरह अन्य एप बन्दरों को देख देख कर, परन्तु उनके लिये वह समय पर अपनी जान तक देने के लिये भी तैयार रहता था। टार्जन भी इस बात को जानते थे, परन्तु एप बन्दर इन बातों का जिक्र कभी मुँह से नहीं करते। उनकी यह भावना शब्दों के बजाय कामों से अधिक स्पष्ट प्रगट होती है। परन्तु इस समय टाग का भी माथा चक्कर खा रहा था। टार्जन की बातों पर विचार करता करता वह पुनः सो गया।

दूसरे दिन भी टाग टार्जन की कही हुई बातों को नहीं भूला। उसने गुन्टो को टार्जन की वे सब बातें सुना दीं। गुन्टो को भी टार्जन की एक बार पहले कही हुई एक बात इस समय स्मरण आ गई। उन्होंने उससे कहा था कि पेड़ आपस में बातें किया करते हैं। गाजन ने एक बार चाँदनी रात में टार्जन को एक चीते के सामने नाचते देखा था यद्यपि असल बात यह थी कि टार्जन ने चीते के गले में रस्से का फन्दा डाल उसे पेड़ के साथ बाँध दिया था और उसके सामने उछल कूद कर उसे चिढ़ा रहे थे।

कुछ एप बन्दरों का कहना था कि उन्होंने टार्जन को टैन्टर हाथी की पीठ पर चढ़े देखा है। कितनी ही विचित्र विचित्र चीजें उनमें से कितनों ही ने टार्जन को समुद्र किनारे वाले अपने बंगले से लाते देखी थीं। टार्जन ने कई बार अपनी किताबें भी ला लाकर इन एप बन्दरों को दिखाई थीं परन्तु जब उन्हें मालूम हो गया कि उनके दिमाग में उसमें की कोई भी चीज नहीं बैठ सकती तो उन्होंने ऐसा करना बन्द कर दिया।

गुन्टो एक दिन बोला, “टार्जन एप बन्दरों की जाति का नहीं है, उसे मार डालना चाहिये । किसी दिन वह न्यूमा को वैसे ही पकड़ लावेगा जैसे कि गोरो चन्द्रमा को ले आया है और तब न्यूमा हम लोगों को भी खा जायगा । इस लिए हम लोगों को चाहिये कि टार्जन को मार डालें ।”

फौरन ही टाग को क्रोध चढ़ आया और उसके शरीर के रोखें खड़े हो गये । वह बोला, “टार्जन को मार डाला जाय ! उसे मारने के पहले तुम्हें टाग को मारना होगा ।” इतना कह कर टाग भोजन की खोज में वहाँ से रवाना हो गया ।

परन्तु शीघ्र ही बहुत से एप बन्दर इस बन्दिश में शामिल हो गये और टार्जनकी हत्या के लिये आपस में बांधनू बाँधने लगे । टीका इस समय इनके पास बैठी थी । उसने टाग को इन लोगों की बन्दिशें बता दीं । टाग को बड़ा ही क्रोध आया ।

उस स्थान से कुछ मील दूर टार्जन टैन्टर हाथी के मस्तक पर सवार एक और को चले जा रहे थे । रास्ते में वे अपने इस मित्र से बातें भी करते जाते थे । न्यूमा सिंह की नाक में मनुष्य की गंध गई और वह उनका पता लगाता सामने आ पहुँचा परन्तु जब उसने उस आदमी को टैन्टर हाथी के मस्तक पर बैठे पाया तो निराशा से मुँह बनाता हुआ दूसरी ओर चला गया ।

हाथी के नाक में सिंह की गंध गई । वह सँड़ उठा कर जोर से चिल्ला उठा । टार्जन उसकी पीठ पर हाथ फेरते हुए बोले, “टैन्टर ! जीवन भी कैसा आनन्दमय है ! पेड़ों की छाया, हरे भरे पहाड़, रंगविरंगे फूल तथा पत्तियाँ, सभी चीजें ईश्वर ने हम लोगों के लिये बना दी हैं । तुम्हारे खाने के लिये भी उसने पहले ही से पत्तियाँ तैयार कर रखी हैं । वह हम लोगों का बड़ा ही ख्याल रखता है । टैन्टर जीवन में बड़ा सुख है और कम से कम मैं तो मरना नहीं चाहता ।”

टैन्टर उनकी बातों के उत्तर में अपनी सूँढ़ उठा कर आवाज करने लगा। उसके माथे पर हाथ फेरते हुए टार्जन बोले, “चलो दोस्त उधर चलो जहाँ एप बन्दरों की मण्डली आनन्द कर रही है।” टैन्टर उनकी बात समझ कर उसी ओर रवाना हुआ।

ये लोग उस ओर बढ़ ही रहे थे कि दक्षिण की ओर से एक हबशी बड़ी ही सावधानी से जंगल के बीच से होता हुआ एक ओर जाता दिखाई दिया। जिस समय वह एप बन्दरों के मैदान के समाप पहुँचा तो दक्षिण ओर के पधरे पर बैठे हुए एप बन्दर की निगाह उस पर पड़ी और वह जोर से “क्रीगा” चिल्ला उठा। शीघ्र ही चारों ओर से क्रीगा क्रीगा की आवाजें सुनाई देने लगीं।

वह हबशी पहली ही आवाज सुन कर अपने स्थान पर खड़ा हो गया था। उसे दिखाई तो कोई नहीं दिया किन्तु वह एप बन्दरों की आवाज से भलीभाँति परिचित था और उनसे बहुत डरता भी था। वह समझ गया कि अब वहाँ से सही सलामत निकल भागना उसके लिये सहज काम नहीं है।

टार्जन तथा टैन्टर अभी वहाँ से कुछ फासले ही पर थे कि एप बन्दरों की “क्रीगा क्रीगा” आवाजें टार्जन के कानों में पड़ीं। फौरन ही वे उछल कर एक पेड़ पर जा चढ़े और वहाँ से तेजी के साथ उस ओर चले जिधर से वे आवाजें आ रही थीं।

वहाँ पहुँचते ही टार्जन ने देखा कि पन्द्रह बीस एप बन्दर एक गोमंगानी को घेरे हुए खड़े हैं। गोमंगानी टार्जन के प्रधान शत्रु थे और उनकी हत्या करनेमें उन्हें बड़ा ही आनन्द आता था अस्तु खुले मैदान में हबशी की हत्या करने की सुविधा देख टार्जन एक ही छलांग में उन लोगों के बीच जा खड़े हुए। वहाँ पहुँचते ही उन्होंने एक एप बन्दर से सवाल किया—“इसने क्या किया है? क्या तुममें से किसी को इसने मार डाला है?”

उन्हें बताया गया कि इस गोमंगामी ने एप बन्दरों को किसी प्रकार की भी हानि नहीं पहुँचाई है जिसे सुन वे ध्यान से उस हबशी के चेहरे की ओर देखने लगे। सहसा वे उसे पहिचान गये। यह वही हबशी था जो उस रात जलती लकड़ी उठा उठा कर सिंह की ओर फेंक रहा था और सो भी ऐसी हालत में जब उसके सभी साथी हिम्मत छोड़ चुपचाप पड़े हुए थे।

टार्जन साहस और बीरता के भक्त थे। किसी भी साहसी जीव को देखकर उन्हें उसके प्रति श्रद्धा उत्पन्न हो आती थी। इस हबशी के प्रति भी उन्हें श्रद्धा उत्पन्न हुई। एप बन्दरों की ओर देख कर वे बोले, “इस गोमंगामी ने हम लोगों में से किसी का भी कुछ नहीं दिगाड़ा है अस्तु इसे चले जाने दो। पिछली रात मैंने इसे हाथ में केवल आग लिये अकेले न्यूमा तथा सेबर से लड़ते देखा है।”

एप बन्दरों की टार्जन की बात पसन्द न आई, उनमें से एक बोल उठा—“इस गोमंगामी को जरूर मार डालना चाहिये।”

साथ ही गोजन चिल्ला उठा, “और इस सफेद बन्दर को भी मार डालना चाहिये ! वह हमलोगों की जाति का नहीं है !”

गुन्टो भी चिल्ला कर बोला, “ठीक है, टार्जन को मार डालना चाहिये, मार डालना चाहिये, मार डालना चाहिये !”

एप बन्दर अब धीरे धीरे आवेश में आ रहे थे। उनका भाव देख कर ही टार्जन समझ गये कि अब उनके जान की खैरियत नहीं है। अकेले टाग पर भला वे कहाँ तक भरोसा कर सकते थे। उन्हें स्मरण हो आया कि अभी कुछ ही देर पहले वे टैन्टर हाथी से कह रहे थे कि वे मरना नहीं चाहते, परन्तु अब उन्हें लाचार हो कर मृत्यु का सामना करना पड़ेगा।

वह हबशी बड़े ध्यान से इन लोगों की ओर देख रहा था। उसने उस सफेद देव के सम्बन्ध में बातें तो बहुत कुछ सुनी थीं। परन्तु इतने समीप से उन्हें देखने का मौका उसे आज तक कभी भी प्राप्त नहीं हुआ था।

टार्जन और एप बन्दरों में क्या बातें हो रही हैं इसे तो वह समझ न सका फिर भी इतना अवश्य जान गया कि वह सफेद देव तथा एक भारी एप बन्दर अन्य एप बन्दरों से किसी बात पर वादविवाद कर रहे हैं। उसने देखा कि वे दोनों उसकी ओर पीठ किये खड़े हैं। थोड़ी देर के लिये उसके दिल में यह भी खयाल पैदा हुआ कि सम्भव है कि वे दोनों उसकी रक्षा करने के विचार से ही अन्य बन्दरों से वादविवाद कर रहे हों। उसे मालूम था कि टार्जन ने एक बार मोंगा को कब्जे में पा कर भी उसे जिन्दा छोड़ दिया था। टीबो की माँ की रक्षा करते भी उसने उन्हें अपनी आँखों से देखा था परन्तु इतने एप बन्दरों के खिलाफ वह सफेद देव कैसे उसकी रक्षा कर सकेगा यह बात उसकी समझ में बिल्कुल ही नहीं आ रही थी।

गुन्टो तथा अन्य एप बन्दर टाग तथा टार्जन को पीछे हटाते हटाते मैदान के किनारे की झाड़ियों तक पहुँच गये थे और अब गुन्टो उनके ऊपर हमला किया ही चाहता था। टार्जन जानते थे कि गुन्टो के साथ ही साथ अन्य एप बन्दर भी एक साथ ही हमला कर देंगे और तब उनके जान की खतर नहीं। अस्तु वे इधर उधर देख अपने बचाव का कोई ढंग सोचने लगे। सहसा उनकी निगाह सामने को ओर जा पड़ी। कोई काली शक्ल धीरे धीरे उसी ओर बढ़ी चली आ रही थी। टार्जन के साथ ही साथ गुन्टो की निगाह भी उस काली शक्ल पर पड़ी। एक विचित्र प्रकार की आवाज गले से निकाल कर टार्जन एप बन्दरों पर टूट पड़े। टाग ने भी उनका साथ दिया और वह हबशी भी जिसे अब इस बात का पक्का विश्वास हो गया था कि वे दोनों उसी की रक्षा करने के लिये अपने प्राण संकट में डाल रहे हैं, अपना बरछा सीधा कर के शत्रुओं का पहला मोर्चा बर्दाश्त करने के लिये उन लोगों के बगल ही में आ डटा।

सहसा वह भारी काली शक्ल तेजी के साथ आगे बढ़ने लगी। टैन्डर हाथी की चिंगाड़ चारो ओर गूँज उठी और क्षण भर में ही टैन्डर अपने

त्र की सहायता करने के लिये उनके बगल में आ खड़ा हुआ ।

गुन्टो टार्जन पर हमला न कर सका । उसके मन का इरादा मन में ही रह गया । हाथी की आवाज सुनने के साथ ही साथ वह तथा बाकी के सभी बन्दर वहाँ से भाग भाग कर आस पास के पेड़ों पर जा चढ़े । टाग भी भाग खड़ा हुआ, परन्तु वह हबशी टार्जन को खड़ा देख स्वयं भी अपने स्थान पर ही खड़ा रह गया । उसमें इतनी हिम्मत थी कि अपने रक्त की प्राणरक्षा के लिये स्वयं अपना भी बलिदान कर दे ।

परन्तु उसे यह देख आश्चर्य हुआ कि टार्जन के इशारा करते ही टैन्टर ने उन्हें उठा कर अपने मस्तक पर बैठा लिया । हबशी को हाथ का इशारा करते हुए टार्जन बोले, “अब तुम चले जाओ !” वे जानते थे कि अब एप बन्दर उसका पीछा नहीं करेंगे ।

हबशी ने फौरन ही टार्जन के हुक्म की तामीली की और एक ओर को चल दिया । जब वह आँखों से ओझल हो गया तो एप बन्दरों को सम्बोधन करते हुए टार्जन बोले, “टार्जन अपने समुद्र किनारे वाले मकान में जाता है । टाग और टीका को छोड़ बाकी के तुम सभी लोग मानू बन्दर से भी अधिक बेवकूफ हो । टाग और टीका टार्जन से मुलाकात करने के लिये उसके मकान पर आ सकते हैं परन्तु और किसी को भी वहाँ आने की जरूरत नहीं । आज से टार्जन करचक जाति के एप बन्दरों से अपना सम्बन्ध तोड़ता है !”

इतना कह कर टार्जन ने टैन्टर को वहाँ से खाना होने का इशारा किया और वह उन्हें ले कर जंगल में घुस गया । एप बन्दर चुपचाप बैठे यह सब हाल देख रहे थे ।

परन्तु रात होने के पहले ही टाग टार्जन पर हमला करने का अभियोग गुन्टो पर लगा कर उससे भिड़ गया और अन्त में उसे जान से ही मार डाला ।

पन्द्रह दिनों तक उन लोगों को टार्जन की सूरत नहीं दिखाई दी ।

कितने तो उन्हें एक दम ही से भूल गये परन्तु उनमें से कुछ ऐसे भी थे जिन्हें टार्जन की जुदाई बहुत ही खलने लगी। टाग और टीका तो बराबर यही मनाते थे कि टार्जन उन लोगों के पास वापस लौट आवें। कई बार उन लोगों ने टार्जन के पास जाने का इरादा भी किया परन्तु हर बार ही किसी न किसी बखेड़े में फँस कर उन्हें रुक जाना पड़ा।

एक दिन टाग की आँखों में नींद नहीं थी और वह आसमान की ओर देख रहा था। उसे उन बातों का स्मरण हो आया था जो टार्जन ने एक बार उससे कही थीं कि आसमान की चमकती हुई चीजें जङ्गली जानवरों की आँखें हैं और न्यूमा सिंह किसी न किसी दिन चन्द्रमा को खा जायगा। ज्यों ज्यों वह इस बात पर विचार करता था उसकी घण्टा-घट बढ़ती जाती थी।

इसी समय एक आश्चर्यमयी घटना घटी। टाग को सहसा चन्द्रमा का एक हिस्सा इस प्रकार लापता होता दिखाई दिया मानों कोई उसे निगल रहा है। क्रमशः चन्द्रमा लापता होने लगा। जोर से चिड़हा कर टाग खड़ा हो गया। उसकी भयमिश्रित “क्रीगा क्रीगा” की आवाज ने अन्य एप बन्दरों को गुराँते तथा किलकारियाँ मारते उसके बगल में ला कर खड़ा कर दिया।

टाग चन्द्रमा की ओर इशारा कर के बोला, “देखो टार्जन की बात सच निकली या नहीं! न्यूमा गोरो पर झपट पड़ा है और धीरे धीरे उसे खा रहा है। तुम लोग टार्जन से नफरत करते थे, अब देखें तुममें से कौन गोरो की जान बचाता है? न्यूमा थोड़ी ही देर में गोरो को खा जायगा और तब चारो ओर अन्धकार हो जायगा। बताओ तो सही तब दमदम नाच कैसे होगा?”

एप बन्दर थर थर काँपने लगे। प्रकृति की कोई भी शक्ति उन्हें बेतरह भयभीत कर देती थी क्योंकि उसका रहस्य उनकी समझ में नहीं आता था।

उनमें से एक चिल्ला कर बोला, “जाओ टार्जन को बुला लाओ ।” और इसके बाद सभी के मुँह से आवाजें निकलने लगीं—“टार्जन को बुलाओ, टार्जन को बुलाओ ! वह गोरो की सिंह से रक्षा करेगा !!”

इसी समय एक ने पूछा, “परन्तु आखिर टार्जन को बुलाने के लिये इतनी दूर जायगा कौन ?”

“मैं जाऊँगा !” कह कर टाग पल पल में बढ़ते जाते हुए अन्धकार में टार्जन के समुद्र किनारे वाले केबिन की ओर रवाना हुआ ।

और इधर एप बन्दरों की वह मगडली अपनी भयभीत आँखों से सिंह द्वारा गोरो का खाया जाना देखती रही । अब तक न्यूमा चन्द्रमा का एप काफी हिस्सा खा चुका था । यह सोचते हुए कि अब सदा के लिये जंगल में अन्धकार छा जायगा बेतरह डरे हुए वे एप टाग तथा टार्जन के आने की बाट जोहने लगे ।

गोरो करीब करीब लापता हो चला था जब एप बन्दरों के कान में उन दोनों के आने की आवाज पड़ी और क्षण ही भर बाद टार्जन जिनके पीछे पीछे टाग था उनके सामने वाले वृक्ष पर आ धमके ।

टार्जन ने बेकार बातों में अपना जरा भी समय बर्बाद न किया । उनके हाथ में उनकी भारी कमान थी और पीठ पर तीरों से भरा तरकश। ये वेही जहरीली तीर तथा कमान थी जिन्हें टार्जन मोगा के गाँव से चुरा लाये थे । इन्हें लिये हुए टार्जन पेड़ की सब से ऊँची चोटी पर जा पहुँचे ।

चन्द्रमा की ओर मुँह कर के टार्जन ने अपने मुँह से एप बन्दरों का विजयनाद निकाला । उनकी इस आवाज के उत्तर में बहुत दूर से न्यूमा सिंह का उत्तर सुनाई दिया । एप बन्दर काँप उठे । उनकी समझ में आसमान के न्यूमा ने टार्जन को उत्तर दिया था ।

इसके बाद ही टार्जन ने अपने तरकश से एक तीर निकाल कर अपने हाथ की कमान पर चढ़ाया और जोर से खींच कर उस ओर छोड़ दिया

सिंहासनासन पर सिंह गोरो को खा रहा था। बार बार टार्जन अपने जहरीले तीर छोड़ने लगे। सभी एप बन्दर इस समय मारे भय के काँप रहे थे।

अन्त में टाग जोर से चिल्ला उठा, “देखो देखो, न्यूमा मर गया! टार्जन ने न्यूमा को मार डाला! वह देखो गोरो न्यूमा के से पेट निकला चला आ रहा है!!” और बात भी सच थी। चन्द्रमा धीरे धीरे उसमें से बाहर निकल रहा था जिसमें वह घुस गया था। चाहे वह न्यूमा सिंह हो, पृथ्वी की छाया हो, अथवा कोई भी चीज क्यों न हो परन्तु यदि आप एप बन्दरों को इस बात के सिवाय और कुछ समझाना चाहेंगे कि गोरो को न्यूमा ने खाया था और टार्जन ने न्यूमा को मार के उसका उद्धार किया है तो वे हरगिज न मानेंगे बल्कि गुस्ते हुए आप पर टूट पड़ेंगे।

इस प्रकार टार्जन करचक जाति के एप बन्दरों में वापस लौट आये परन्तु आज से उनकी इज्जत एप बन्दरों की निगाहों में बहुत अधिक हो गई और वे उन्हें बहुत बड़ा बली समझने लगे। उनकी इज्जत यहाँ तक बढ़ी कि क्रमशः एप बन्दरों ने उन्हें अपना राजा बनाने का भिश्चय कर लिया।

परन्तु एक आदमी जिसने टार्जन द्वारा गोरो की रक्षा होने वाली बात में पूरा पूरा सन्देह था वह था स्वयं जंगल का राजा टार्जन!

